आर्थिक और औद्योगिक जीवन

अुसकी समस्यायें और हल

भाग – १

गांधीजी

संग्राहक और संपादक

व्हो० बी० खेर



नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद–१४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

पहली आवृत्ति ३

रु० ४००

अगस्त १९६१

प्रकाशकका निवेदन

आर्थिक और औद्योगिक जीवनसे सम्बन्धित प्रश्नों पर गांधीजीकी रचनाओंका श्री व्हा० वी० खेर द्वारा सम्पादित यह संकलन प्रकाशित करते हुअे हमें बहुत खुशी होती है। दुनियामें और अपनी पंचवर्षीय योजनाओंके द्वारा सरकारने जो औद्योगिक और आर्थिक नीति अपनायी है अुसके कारण खासकर हमारे देशमें आजकल अिस विषयका बहुत महत्त्व है। अिसलिअे अिस संग्रहका प्रकाशन बहुत समयोचित है और हम आशा करते हैं कि अिस पुस्तकसे अुन लोगोंकी अेक बड़ी आवश्यकताकी पूर्ति होगी जो अिस सम्बन्धमें राष्ट्रपिताके विचारों और आदर्शोंको जानना चाहते हैं और अुनके अनुसार योजना करना चाहते हैं।

वैसे अिस विषय पर हमारे द्वारा प्रकाशित यह पहली पुस्तक नहीं है। गांधी-साहित्यके पाठक जानते हैं कि अिस विशाल और महत्त्वपूर्ण विषय पर और अिसके विभिन्न पहलुओं पर हम अभी तक काफी पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं — जैसे सेंट परसेंट स्वदेशी, खादी क्यों और कैसे, हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण, अहिंसक समाजवादकी ओर आदि। अिस संग्रहकी विशेषता यह है कि यह अिस प्रश्नके सारे पहलुओंको अेक सुनियोजित क्रमके अनुसार अेक ही पुस्तकमें अुपलब्ध कर देता है और अुसका सम्पादन अत्यंत योग्यतापूर्वक असे ढंगसे किया गया है कि सामान्यतः आधुनिक दुनियाके और खासकर भारतके सामाजिक-आर्थिक और औद्योगिक सवालों पर गांधीजीके विचार हमारे सामने बिलकुल स्पष्ट हो जाते हैं।

पुस्तकके परिश्रमी सम्पादकने अिस विषय पर गांधीजीके विचारोंको अेक साथ और सुसम्पूर्ण रूपमें पेश करनेके लिअे जो सामग्री अिकट्ठी की वह बहुत ज्यादा थी अिसलिअे यह ज्यादा अच्छा समझा गया कि अुसका ठीक ढंगसे विभाजन कर लिया जाय और अुसे खंडोंमें प्रकाशित किया जाय। विद्वान सम्पादकने यह काम बहुत अच्छी तरह कर दिया है।

सारी सामग्री अठारह विभागोंमें बांट दी गयी है और चुने हुअे अंश प्रत्येक विभागमें अेक निश्चित क्रमके अनुसार रखे गये हैं। अिसके सिवा, विद्वान सम्पादकने अेक लम्बी भूमिका लिखकर अिन सब विभागोंकी सारी सामग्रीका सार

और गांधीजीके विचारोंकी अेक स्पष्ट तसवीर दे दी है। ये अठारह विभाग अुनकी अुपयुक्तताके अनुसार तीन खंडोंमें बांट दिये गये हैं जिनकी पृष्ठसंख्या कुल मिलाकर करीब ८००* हो गयी है।

पहले खंडमें गांधीजीकी आर्थिक और औद्योगिक विचारधाराके बुनियादी सिद्धांतोंका विवरण है। अिस पहले खण्डमें सम्पूर्ण संग्रहके पहले चार विभाग आ जाते हैं।

गांधीजीके अनुसार स्वदेशी अपने पड़ोसीके प्रति मनुष्यका कर्तव्य बतानेवाला सिद्धान्त है। अिस दृष्टिसे देखा जाय तो यह सिद्धान्त मनुष्यके आर्थिक धर्मका निरूपण करता है। आर्थिक और औद्योगिक संघटनका सही ढांचा, आर्थिक सत्ता और अुत्पादनका विकेन्द्रीकरण, खादी और ग्रामोद्योग आदि विषयों पर गांधीजीके विचारोंका स्रोत यही बुनियादी सिद्धान्त था। गांधीजीके दर्शनके अिस व्यापक पहलू और खादी तथा ग्रामोद्योग आदि अुसकी निष्पत्तियोंका संग्रह संपादकने दूसरे खण्डमें किया है। अिस दूसरे खण्डमें अगले सात विभागोंका समावेश हुआ है।

अिस समस्याका सारा विवेचन पश्चिमी अुद्योगवादकी पृष्ठभूमिमें किया गया है। आजकल हम सब यह स्वीकार करने लगे हैं कि यह पश्चिमी अुद्योगवाद आर्थिक जीवन और आर्थिक संघटनका अेक बहुत ज्यादा केन्द्रीकरणकी दिशामें ले जानेवाला सिद्धांत है। और अिसमें कारणभूत हैं आधुनिक विज्ञान, यंत्र विज्ञान, साम्राज्यवादी व्यापार और व्यवसाय तथा राजनीति। ब्रिटिश शासनमें आर्थिक और औद्योगिक संघटनकी अिस प्रणालीका — जो अपनी अनोखी समस्याओंको जन्म देती है — हमने काफी अनुभव लिया है। गांधीजीने अिन सब समस्याओंको भी छुआ है और सत्य तथा अहिंसाके अपने जीवनदर्शनके अेक हिस्सेके तौर पर सत्याग्रहके अपने अनुपम शस्त्रका प्रयोग अुन पर किया है। अुनके विचारोंका यह हिस्सा अिस पुस्तकके तीसरे खण्डमें संगृहीत हुआ है जिसमें बाकी सात विभाग हैं।

अिन तीनों खण्डोंमें से प्रत्येकके साथ अुसकी अपनी सूची जोड़ दी गयी है। प्रत्येक खण्डमें पृष्ठोंकी गिनती अलग अलग हुअी है।

संग्रहका यह सारा काम संपादकने शुद्ध प्रेमकी भावनासे किया है और अिसमें अनेक कुछ कीमती वर्ष खर्च हुअे हैं। अुन्होंने अिस विषय पर गांधीजीके

---

* नये परिवर्धित संस्करणमें पृष्ठसंख्या करीब ९   हो गयी है। यह हिन्दी अनुवाद सितंबर १९५९ में छपे नये संस्करणका ही है।

विचारोंका वैज्ञानिक अध्ययन करनेका निश्चय किया और इसके लिए आवश्यक अनुसंधान-कार्यकी एक योजना बनायी। उसका परिणाम अब इस पुस्तकके रूपमें भेंट किया जा रहा है। श्री [illegible] ने पुस्तकके लिए प्रस्तावना लिखनेकी मेहरबानी की है, जिसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूं। मैं श्री डॉ० [illegible] का भी धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने अपने सुदीर्घ अध्ययनका यह फल प्रकाशनके लिए नवजीवन ट्रस्टको सौंपा। हम यह पुस्तक इस आशासे प्रकाशित कर रहे हैं कि हमारे राष्ट्रीय पुनर्निर्माणकी आजकी स्थितिमें हमारे लिए और एक हद तक दुनियाके लिए भी — जो अनजाने ही सही, शान्तिकी अर्थ-व्यवस्थाकी खोजमें है — यह उपयोगी सिद्ध होगी।*

१५–१–५७

---

* प्रथम अंग्रेजी संस्करणका निवेदन।

आभार-प्रदर्शन

आर्थिक और औद्योगिक जीवन — अुनकी समस्यायें और हल का यह पहला भाग गांधीजीकी कल्पनाके अहिंसक समाजवादके ध्येय और अुसके साधनका वर्णन करता है। दूसरे भागमें गांधीजीकी आर्थिक शिक्षाओंका वर्णन है। तीसरे भागमें सत्ता और अुद्योगसे सम्बन्धित समस्याओं पर अुनके विचार पेश किये गये हैं। अुनको अिन रचनाओंमें हमें गांधीजीके तत्सम्बन्धी सिद्धान्तोंका और अिन सिद्धान्तोंका व्यवहारमें कैसे अुतारा जा सकता है तथा हमें जिन समस्याओंका सामना करना पड रहा है अुन्हें हल करनेमें अुनका प्रयोग कैसे किया जा सकता है अिस प्रश्नका अुत्तर भी मिलेगा। संक्षेपमें वे हमें अपने आर्थिक आदर्शोंकी झांकी भी कराते हैं और अुन्हें मूर्तिमान करनेके अुपाय भी बताते हैं।

गांधीजीके अपने लेखोंके सिवा अुनके भाषणों या मुलाकातियोंके साथकी अुनकी बातचीतके दूसरे लोगों द्वारा दिये गये विवरणोंका भी समावेश अिस पुस्तकमें किया गया है। अिन लेखोंके मूल शीर्षक हमेशा अुन अुन लेखके मुख्य विषयको प्रगट नहीं करते थे। वे प्रायः अमुक तात्कालिक प्रश्नकी ही सूचना करते थे। अतः कभी जगह मैंने मूल शीर्षक बदल दिये हैं।

मैं श्री शंकरलाल भाअीका बड़ा आभारी हूं जिन्होंने अिस पुस्तकके सम्पादनमें मेरा मार्गदर्शन किया है, बहुत कृतज्ञ हूं। गांधीजीकी राजनीतिक लड़ाअियोंमें चरखा प्रचारमें और अुनके द्वारा मजदूरोंके हितके लिअे किये गये कामोंमें वे गांधीजीके अत्यंत पुराने और निकटतम साथियोंमें से हैं। वे यंग अिण्डिया पत्रके पहले प्रकाशक थे। वे अहमदाबादके कपड़ा मजदूर संघके संस्थापक सदस्योंमें से हैं और आज भी अुसके पीछे रही हुअी सच्ची शक्ति वे ही हैं। गांधीजीने अुन्हें अखिल भारत चरखा संघका पहला मंत्री चुना था। अिस पद पर काम करते हुअे अुन्हें गांधीजीके विचारोंको समझने और आत्मसात करनेका अद्वितीय अवसर मिला। अिस पुस्तकके लिअे प्रस्तावना लिखकर अुन्होंने मुझे बहुत अुपकृत किया है।

नवजीवन ट्रस्टके व्यवस्थापक श्री जीवणजीभाअी देसाअीने मुझे यंग अिण्डिया' और हरिजन'की फाअिलोंका अुपयोग करनेकी सुविधा दी अुसके

लिअ म अुनका ऋणी हू। मरी पत्नी अिंदिरान मूमिकाकी नकल करनमें मथ जा सहायता दी असके लिअ म अुस भी धयवाद देता हू।

जा० अ नटेसन अण्ड क न मुझे स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज आफ महात्मा गाधी (चौथा सस्करण) से जिच्छानमार अुसके अश अुद्धत करनकी अनुमति दी। अनकी यन सहायता म सधयवाद स्वीकार करता हू। म श्री डी० जी० तेंदुलकरको अुनकी पुस्तक महात्मा खड १ २ ३ और ४ स अुसके अश अुद्धत करनकी अनमतिके लिअ श्री अस राधाकृष्णन और अनके प्रकाशका जाज अलन अण्ड अनविनका महात्मा गाधी — असेज अण्ड रिफ्लेक्शन्स आन हिज लाअिफ अण्ड वक में स असके अश अद्धत करनकी अनमतिके लिअे और मि० विन्सेन्ट शीन तथा अनक प्रकाशका कसेल अण्ड क० लि का लीड काअिडली लाअिट में स अनक अश अद्धत करनेकी अनमतिके लिअ धयवाद देता हू। म 'मॉडन रिव्यू' का असके अक्तूबर १९३५ के अकसे अक अश अुद्धत करनकी अनमतिके लिअ और अमृतबाजार पत्रिका का असके २ अगस्त १९३४ के अकसे अक अश अद्धत करनकी अनमतिके लिअ आभारी हू।

बम्बअी २७ जून १९५६ — म्हो० बी० कर

प्रस्तावना

किसी महापुरुषकी महत्ताका सही माप परवर्ती पीढ़ियों पर अुसके जीवन और अुसके विचारोंके प्रभावमें दिखता है। हम गांधीजीको अिस कसौटी पर परखें तो हमें यही कहना होगा कि वे युग-पुरुष थे अपने युगके निर्माता थे। समयके साथ अुनके विचारोंके प्रभावका विस्तार ही हुआ है। भारतमें और दूसरे देशोंमें भी अधिकाधिक लोग अिन विचारोंकी ओर आकृष्ट हो रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय और वैदेशिक नीतिका प्रेरणा-स्रोत अुनकी शिक्षायें ही हैं। लेकिन यह भी सच है कि हम अभी भी सर्वोदय समाजकी या सच्चे कल्याण राज्यकी अुनकी कल्पनासे बहुत दूर हैं। अितिहास बतायेगा कि किस तरह हमें अपना यह अुद्देश्य प्राप्त करनेके पहले प्रेरणा और मार्गदर्शनकी खोजमें बार बार अिस महान शिक्षकके ही पास आना पड़ेगा। अुन्होंने अनेक समस्याओं पर गहराअीसे विचार किया था और अुनमें से कभी पर प्रत्यक्ष प्रयोग भी किये थे। जिन परिणामों पर वे पहुंचे अुन्हें अुन्होंने अपने जीवनमें सावधानीके साथ अुतारा था और अपनी विविध प्रवृत्तियोंके द्वारा प्रभावकारक ढंगसे दुनियाके सामने अुन्हें पेश किया था। जाहिर है कि मनुष्यके बुनियादी सवालों पर अुनके ये विचार हमारे लिअे बहुत महत्त्व रखते हैं और अिनका अध्ययन सबके लिअे अवश्य लाभकारी सिद्ध होगा।

गांधीजी मूलतः धर्म परायण व्यक्ति थे। सार्वजनिक कार्यके क्षेत्रमें अुन्होंने प्रवेश किया तबसे अपने जीवनका प्रत्येक क्षण अुन्होंने दरिद्रनारायणकी सेवामें लगाया। समाजके अिस दलित वर्गके साथ संपूर्ण तादात्म्य साधकर तथा घनिष्ठ संपर्क और अनवरत प्रयत्नके द्वारा अुन्होंने अुन लोगोंकी चेतनाको जगाया तथा अुन्हें न्याय और जीवनकी सुख-सुविधाओंकी प्राप्तिके लिअे कोशिश करनेकी ताकत और हिम्मत दी। वे जीवनकी वास्तविकताओंसे प्रेरणा ग्रहण करते थे लोगोंकी शक्ति और अुनकी कमजोरियोंका धर्मके प्रति अुनकी स्वाभाविक रुचिका और सृष्टिके शाश्वत नियमोंमें अुनकी निष्ठाका विचार करते थे और अिस तरह अुन्हें आचार धर्मके स्वाभाविक नियम प्राप्त हुअे थे। वे जीवनको अुसके समग्र रूपमें देखने थे खंडोंमें नहीं और अिसलिअे अुन्होंने हमें जीवनके सारे विविध पहलुओं पर नैतिक

प्रदान किया है। अपने आश्रमके अन्तेवासियोंके लिअ अुन्होंने जो नियम निर्धारित किये थे अुनमें हमें अुनके बुनियादी आदर्शोंका मर्म मिलता है।

अुनके आर्थिक और राजनीतिक विषयों पर लिखे गये लेखोंके अध्ययनसे हमें अुनके अुन सामान्य विचारोंका पता चल जाता है, जो जीवनके विविध प्रश्नों पर अुनके मतामतोंके मूलमें निहित हैं। परिस्थितियोंके अनुसार वे अुन पर कहीं कम और कहीं अधिक जोर देते दिखेंगे लेकिन अनके अिन आधारभूत विचारोंका स्रोत अेक ही है — पीड़ित मानवताके प्रति अुनका गहरा और सक्रिय प्रेम तथा सत्य और अहिंसाके बुनियादी सिद्धान्तोंमें अुनकी यह अविचल निष्ठा कि अपने लक्ष्योंकी प्राप्तिके लिअ अेकमात्र विहित साधन ये ही हैं।

गांधीजी जन्मजात आशावादी थे। और अुनका मानव-प्रेम पापीका भी बहिष्कार नहीं करता था। कारण वे मानते थे कि कोअी भी मनुष्य स्वभावसे दुष्ट नहीं होता, वह सिर्फ अपनी परिस्थितियोंका या वातावरणका शिकार होता है। अुन्होंने लोगोंको मनुष्यमें रही हुअी बुराअी और मनुष्यमें भेद करना सिखाया। अिसीलिअ अुन्होंने जहां अेक ओर लोगोंको विदेशी सरकारसे अुसके अत्याचारोंके खिलाफ लड़नेके लिअ अुत्साहित किया वहां दूसरी ओर शासनाधिकारियोंके प्रति आदर और सद्भाव रखना भी सिखाया। राजाओं, जमींदारों और अमीरोंके प्रति भी अुनका अैसा ही रुख था। वे अुनके दुरभिमान तथा सत्ता और अधिकारके प्रदर्शनकी कड़ी टीका करते थे लेकिन अुनके साथ मित्रताका नाता जोड़नेमें अुन्हें कोअी संकोच नहीं होता था।

लोग अुन्हें सर्वत्र राजनीतिक नेता, आध्यात्मिक विचारक और रचनात्मक समाज-सुधारकके रूपमें ही पहचानते हैं। यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि अुद्योगों और मजदूरोंसे सम्बन्धित समस्याओंसे भी अुनका गहरा सम्बन्ध रहा था। अिस क्षेत्रमें गांधीजीके योगदानका विदेशोंमें लोगोंको बहुत ही कम ज्ञान है। यह पुस्तक अिस अज्ञानको दूर करनेमें बहुत अुपयोगी सिद्ध होगी।

संपादकने अिस पुस्तकके तीन खंडोंमें सामाजिक-आर्थिक और औद्योगिक सवालों पर गांधीजीके विचारोंका संकलन करके जनताकी और खासकर गांधीजीकी शिक्षाओंके अध्येताओंकी बहुत कीमती सेवा की है। अुन्होंने पुस्तककी रचना अिस विषयसे सम्बन्धित गांधीजीके लेखोंके विवेकपूर्ण अध्ययनके बाद की है और वह अुन सब लोगोंके लिअ बहुत अुपयोगी मार्गदर्शिकाका काम देगी जो अिन सवालोंके हलके लिअ गांधीजीसे प्रेरणा ग्रहण करना चाहते हैं।

जैसा कि संपादकने अपनी भूमिकामें कहा है, 'गांधीजीके विचारोंके साथ अज्ञानके कारण प्राय: बहुत अन्याय किया जाता है।' यहां गांधीजीके अिन लेखोंको व्यवस्थित रूपमें अिस तरह पेश करनेका प्रयत्न किया गया है, जिससे कि अिस विषयके विविध पहलुओं पर अुनके विचार स्पष्ट रूपसे सामने आ जायें और पाठक अुन्हें आसानीसे समझ सकें। गांधीजी अत्यंत गतिशील पुरुष थे। अुनके जीवनमें हम निरन्तर विकास करते रहनेका गुण देखते हैं। अुनके विचारोंमें समय समय पर परिवर्तन हुआ दिखता है, यद्यपि जीवनके बुनियादी सिद्धान्तोंमें अुनकी निष्ठामें न तो कभी कोअी परिवर्तन हुआ और न अुसमें कभी कमी आयी। अिस संकलनमें लेखोंको जिस क्रमसे सजाया गया है अुसके कारण अपने जीवन-कालमें विविध प्रवृत्तियोंके दरमियान गांधीजीके विचारोंमें होनेवाले अिस विकासको पाठक आसानीसे देख सकेंगे।

श्री खेरने अत्यंत परिश्रमपूर्वक पाठकोंके लिअे गांधीजीके विचारोंको यह व्यवस्थित संकलन सुलभ कर दिया अिस बात पर मैं अुन्हें बधाअी देता हूं। अनेक वर्षोंके लेखों और भाषणोंके रूपमें फैली हुअी विपुल सामग्रीमें से अुन्होंने आवश्यक अंशोंका विवेकपूर्वक चुनाव किया और फिर अुन्हें पद्धतिपूर्वक अिस तरह सजाया है कि पाठकोंको अुन्हें समझनेमें बहुत सहायता मिलती है। अिसके सिवा श्री खेरके अिस परिश्रमके फलस्वरूप हमें अपने जीवनके अनेक महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर गांधीजीके विचारोंका अुनके अपने ही शब्दोंमें अेक अमूल्य कीमती संकलन मिल गया है, जिसका हम अपनी आवश्यकताके अनुसार जब चाहें तब आसानीसे अुपयोग कर सकते हैं। अुन सब लोगोंके लिअे, जो गांधीजीके विचारों और अुनकी शिक्षाओंका अध्ययन करना चाहते हैं और खास कर अुन सामाजिक कार्यकर्ताओंके लिअे जो सब हित कारी न्यायपूर्ण समाजकी स्थापनामें अनुराग रखते हैं, मैं अिस पुस्तककी सिफारिश करता हूं।

अहमदाबाद २३-३-'५६ शंकरलाल जी० बैंकर

२२ पुलिस-दलकी मेरी कल्पना ६३
२३ कांग्रेसी मंत्री और अहिंसा ६६
२४ सत्य और अहिंसाको न छोड़ें ६८
२५ मैं अहिंसक साम्यवादमें विश्वास रखता हूं ७०
२६ हृदय-परिवर्तन बनाम वैज्ञानिक समाजवाद ७२
२७ क्या आप वर्गयुद्धको टाल सकते हैं? ७५
२८ वर्ग-विग्रह अनिवार्य नहीं है ७६
२९ क्या समाजवादी क्रांति रामराज्यकी ओर ले जायगी? ७८
३० सेवा और स्वावलम्बनका सिद्धान्त ७९
३१ बोल्शेविज्म ७९
३२ बोल्शेविज्मका अर्थ ८०
३३ युवा साम्यवादियोंके साथ प्रश्नोत्तर ८७
३४ अपनी बुद्धि पर ताला न लगाइये ९१
३५ साम्यवादियोंका मुकाबला कैसे करें? ९४

दूसरा विभाग : शरीर-श्रम

३६ शरीर-श्रम क्या है? ९५
३७ 'शरीर-श्रम' के कानूनकी खोज ९६
३८ 'सर्वोदय' की शिक्षायें ९८
३९ शरीर-श्रमका सुनहला नियम ९९
४० श्रमयज्ञ १
४१ शरीर-श्रमकी आवश्यकता १ २
४२ शरीर-श्रमका कर्तव्य १०४
४३ अमरी शरीर-श्रम १ ६
४४ मेरा शरीर-श्रम १ ७
४५ आश्रम-जीवनमें शरीर-श्रमका स्थान १०८
४६ श्रम और बुद्धिके बीच अलगाव ११२
४७ बुद्धि-विकास या बुद्धि-विलास? ११३
४८ बुद्धिपूर्वक किया हुआ शरीर-श्रम — समाज-सेवाका उच्चतम प्रकार ११५
४९ बौद्धिक और शारीरिक श्रम १२०
५० बौद्धिक विषय बनाम उद्योग १२०
५१ अहिंसक उद्योग १२२

५२ यज्ञ	१२४
५३ श्रमका गौरव	१२८
५४ श्रमकी प्रतिष्ठाको पहचानें	१३०
५५ कर्मयोगका सिद्धान्त	१३१
५६ मेहनत नहीं तो खाना भी नहीं	१३२
५७ नमक	१३३
५८ पूर्ण प्रायश्चित्त	१३४
५९ रोटीकी समस्या	१३५
६० शरीर-श्रम ही अेकमात्र हल	१३५
६१ काम ही गरीबीका अेकमात्र अिलाज है	१३६
६२ अेक महान समता-स्थापक	१३७
६३ स्वावलम्बन और परावलम्बन	१३८
६४ नौकरों पर अवलम्बन	१३९
६५ काम और फुरसतका दर्शन	१४०
६६ फुरसतका मोह	१४२
६७ फुरसतकी कीमत	१४५

तीसरा विभाग आर्थिक समानता

६८ आर्थिक समानताका अर्थ	१४७
६९ आर्थिक समानताके लिअे प्रयत्न	१४८
७० आर्थिक समानता प्राप्त करनेकी पद्धतियां — गांधीजीकी और साम्यवादियोंकी	१५०
७१ आर्थिक समानताकी प्राप्ति	१५१
७२ समान वितरण	१५१
७३ मजदूरीकी समानता	१५४
७४ समान वेतन	१५५
७५ मन्त्रियोंके वेतन	१५६

चौथा विभाग संरक्षकता

७६ संरक्षकताका सिद्धान्त	१५९
७७ ट्रस्ट क्या है?	१६०
७८ संरक्षकताके बारेमें कुछ प्रश्न	१६१
७९ मैं क्या संरक्षकताके सिद्धान्तको तरजीह देता हूं?	१६२

८	खाओीको पाटनेके लिअ पुल	१६६
८१	कानूनी ट्रस्टीशिप	१६६
८२	सरक्षकताका व्यावहारिक फामूला	१६७
८३	अहिंसक समाजमें सरक्षकका स्थान	१६८
८४	अपने धनका सरक्षक	१६९
८५	अस्तेय और अपरिग्रह	१७
८६	अस्तेय-व्रत	१७१
८७	अच्छिक गरीबी	१७२
८८	आशीर्वादरूप गरीबी	१७६
८९	धनिकाका प्रश्न	१७७
९	धनी सरक्षक हू	१८१
९१	अच्छिक गरीबी बनाम धनवानाकी सरक्षकता	१८१
९२	गरीबाके सरक्षक और सेवक बनें	१८३
९३	अपनी दौलतका त्याग करके तू असे भोग	१८४
९४	कलकी चिन्ता न करे	१८७
९५	अपरिग्रहकी ओर	१८७
९६	पूजीपतियाका कतव्य	१८८
९७	विशेष प्रतिनिधित्व	१८९
९८	वैध परिग्रह	१९
९९	वैध परिग्रहका बचाव	१९२
१०	अन्यायपूर्वक कमाये हुअे धनका त्याग	१९४
१०१	अगर धनवान सरक्षक न बनें तो	१९४
१ २	विपत्तिमें बचे	१९५
	सूची	१९७

भूमिका

अक अन्य कारणसे भी, महात्मा गांधी — व्यक्तिशः मुझे जिस बातका पूरा विश्वास है — अक महान अैतिहासिक विभूतिके रूपमें पूजे जायेंगे। वह कारण यह है कि वे दो अत्यंत विभिन्न युगोंकी ठीक संधिरेखा पर खड़े हुअे हैं। अेक ओर तो वे भारतकी संत-सम्बन्धी परम्परागत धारणाको मूर्तिमान करते हैं और दूसरी ओर अुनमें हमें जननेताका भी अत्यंत आधुनिक और अुत्कृष्ट नमूना मिलता है। अिस हद तक अुनकी अैतिहासिक स्थितिकी तुलना जॉन दि बेप्टिस्टसे की जा सकती है। बहुत संभव है कि मनुष्य भविष्यमें जैसा बननेवाला है, उसकी अुस भावी स्थितिमें पुराने किस्मके अवतारी सन्तका घटनाओंके निर्माणमें या अितिहासकी रचनामें विशेष स्थान नहीं होगा। भावी मनुष्य संपूर्ण मनुष्य होगा, जिसमें आत्मतत्त्व और जड़ तत्त्वका सन्तुलन होगा। लेकिन जिस नये मनुष्यके लिअे अभीष्ट परिस्थितियोंका निर्माण दोनों युगोंके संधिस्थल पर आसीन गांधी जितना कर रहे हैं, अुतना कोअी अन्य नहीं। *

— काअुण्ट हरमान कैसरलिंग

गांधीजी अक जटिल और अनबूझ पहेली थे। वे संत भी थे और जननेता भी थे। किसी अेक व्यक्तिमें संत और जननेताका यह सम्मिश्रण अविश्वसनीय मालूम होता है लेकिन गांधीजी तो अद्भुत थे और यह अविश्वसनीय सम्मिश्रण वे सचमुच सिद्ध कर सके थे। विविध धर्मोंके लम्बे अितिहासमें सामान्यतः यही माना जाता रहा है कि आध्यात्मिक मूल्य साधुओं और संन्यासियोंकी ही चिंताका विषय हैं, और लोगोंको अुनकी खास परवाह नहीं करनी है। लोगोंका परम्परागत विश्वास यही रहा है कि धर्मका क्षेत्र अलग है और व्यवहारका अलग है, दोनोंमें कोअी पारस्परिक सम्बन्ध नहीं है। गांधीजी शायद पहले अैतिहासिक व्यक्ति थे जिन्होंने जीवनके अिन दो महत्त्वपूर्ण क्षेत्रोंके अिस कृत्रिम विभाजनको चुनौती दी। अुन्होंने सामान्य दुनियादारीके जीवनमें आध्यात्मिक मूल्योंका प्रचार किया और अुनकी

* अस० राधाकृष्णन् द्वारा सम्पादित 'महात्मा गांधी — अेसेज अेण्ड रिफ्लेक्शन्स आन हिज लाअिफ अेण्ड वर्क' (जार्ज अेलन अेण्ड अनविन), पृ० १६९।

स्थापनाका प्रयत्न किया। लोकमान्य तिलक जैसे महान विद्वान और राष्ट्रीय नेता भी धर्म और व्यवहारको अलग अलग माननेवाली अुसी पुरानी दृष्टिके समर्थक थे। अिससे सिद्ध होता है कि परम्परागत विचारोंकी जड़ें कितनी मजबूत होती हैं और वे कितनी मुश्किलसे मिटते हैं। जाहिर है समाजमें यह बुराअी बहुत गहरी पैठी हुअी है। लोकमान्य तिलकके अिस कथन पर कि 'राजनीति दुनियादारोंके व्यवहारमें निपुण दुनियादार लोगोंका विषय है साधुओंका नहीं' लोकमान्यकी आलोचना करते हुअे गांधीजीने लिखा था

> लोकमान्यके प्रति पूर्ण आदरका भाव रखते हुअे मैं यह कहनेका साहस करता हूं कि यह विचार कि दुनिया साधुओंके लिअे नहीं है बौद्धिक आलस्यका द्योतक है। सब धर्मोंकी सारभूत शिक्षा यही रही है कि पुरुषार्थका विकास करो और पुरुषार्थका अेकमात्र अर्थ है — साधु बननेके लिअे शब्दके पूरे अर्थमें सज्जन बननेके लिअे तीव्र प्रयत्न। और अन्तमें जब मैंने वह वाक्य लिखा जिसमें यह कहा गया था कि लोकमान्यकी मान्यताके अनुसार तो राजनीतिमें जो भी किया जाय मब अुचित ही है, अुस समय मेरे मनमें अुनके द्वारा अक्सर व्यवहृत यह अुक्ति थी — 'शठं प्रति शाठ्यम्'। मैं मानता हूं कि यह अुक्ति अेक अनिष्ट नियमका विधान करती है। और मैं तो यह आशा करता हूं कि अपनी विचक्षण बुद्धिके बल पर लोकमान्य स्वयं ही अेक दार्शनिक प्रबंध लिखकर अिस नियमकी असत्यता सिद्ध कर दिखायेंगे और अिस तरह अपने देशवासियोंको चकित तथा प्रसन्न कर देंगे। जो भी हो 'शठं प्रति शाठ्यम्' के नियमके खिलाफ मैं अपना तिहाअी सदीका परखा हुआ अनुभव रखता हूं और कहता हूं कि सच्चा नियम 'शठं प्रति शाठ्यम्' नहीं 'शठं प्रत्यपि सत्यम्' है। *

---

* यंग अिंडिया २८–१–२० 'शठं प्रति शाठ्यम्' का अर्थ है — शठके प्रति शठताका ही व्यवहार होना चाहिये। जिसके खिलाफ गांधीजी 'शठं प्रत्यपि सत्यम्' यानी शठके प्रति भी सत्यके ही व्यवहारकी हिमायत करते हैं।

धम्मपदकी नीचे दी जा रही गाथाओंमें भगवान बुद्धने भी यही विचार प्रगट किया है

> न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं।
> अवेरेन च सम्मन्ति अेस धम्मो सनन्तनो॥
> अक्कोधेन जिने कोधं असाधुं साधुना जिने।
> जिने कदरियं दानेन सच्चेनालिकवादिनं॥

व्यावहारिक आदर्शवादी अूपर दिये गये अुद्धरणसे पाठकके मन पर असी छाप नहीं पड़नी चाहिये कि गांधीजी स्वप्नसेवी थे या कि आदर्शकी कल्पनाओंमें विहार किया करते थे। असा मान लेना बिलकुल गलत होगा। गांधीजी स्वप्नसेवी कदापि नहीं थे। अुनका दावा था कि वे व्यावहारिक आदर्शवादी हैं।*

गांधीजीके विचारोंके बारेमें अज्ञान गांधीजीके विचारोंके साथ अज्ञानके कारण प्रायः बहुत अन्याय किया जाता है। विविध विषयों पर गांधीजीके मतामतोंके बारेमें अधिकांश लोगोंकी धारणायें बहुत अस्पष्ट हैं। यह अज्ञान सामान्य लोगों तक ही सीमित हो, सो बात नहीं; वह विद्वान माने जाने वालोंमें भी पाया जाता है। अिस स्थितिका कारण गांधीजीकी शिक्षाओंके वैज्ञानिक अध्ययनका अभाव है।

गांधीजीके विचारोंके अध्ययनकी सही पद्धति गांधीजीकी शिक्षाओंके वैज्ञानिक अध्ययनकी सही पद्धति यह होगी कि अुनके वचनों या लेखोंको समयानुक्रमके अनुसार अिकट्ठा किया जाय और अुन्हें अुन परिस्थितियोंके साथ जोड़ा जाय जिसमें वे कहे गये अथवा लिखे गये थे। अिस तरह हम हरअेक वचनको अुसके अुचित सन्दर्भमें देख सकेंगे। अिस पद्धतिका अनुगमन किया जाय, तो हम जान सकेंगे कि किसी विषय पर अुनके विचारोंमें समयके साथ कैसा और कितना परिवर्तन हुआ है। अनेक अुदाहरणोंमें हम देखेंगे कि अुनके विचारोंमें कोअी विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। दूसरी ओर हम यह भी देखेंगे कि अमुक शब्दोंके आशयमें तो अुन्होंने थोड़ा-बहुत फर्क किया है, किन्तु अुनके बुनियादी विश्वास ज्योंके त्यों कायम रहे हैं।

गांधीजी जैसे किसी भी महापुरुषकी शिक्षाओंमें हमें अेक विशेषता और भी दीखती है। अुनका अेक हिस्सा तो असा होता है जो सारी मानव-जातिसे सम्बन्ध रखता है और स्थायी होता है और दूसरा हिस्सा अुस समय विशेषकी परिस्थितियोंसे संबंधित होता है और अस्थायी होता है। हमें चाहिये कि हम अुनकी शिक्षाओंके अिन स्थायी और अस्थायी हिस्सोंको अलग-अलग रखें, ताकि अुनके तुलनात्मक महत्त्वकी कीमत हम सही सही आंक सकें। गांधीजीकी शिक्षाओंके अिन दो पहलुओं पर आगे हम बादमें और ज्यादा विचार करेंगे, खासकर अुनके आर्थिक विचारोंके सिलसिलेमें जो कि भारतकी बीसवीं सदीकी परिस्थितियोंसे विशेष तौर पर सम्बन्धित थे।

* यंग अिंडिया ११–८–२०

गांधीजीके आदर्शवादकी विशिष्टता

अनके आदर्शवादके मुख्य स्रोत यहां हम गांधीजीके आदर्शवादकी विशिष्टताका विश्लेषण करेंगे। अनके धार्मिक विचारोंमें अथवा सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रोंसे सम्बन्धित अनके आदर्शवादमें सर्वत्र हम कुछ सामान्य सिद्धान्त पाते हैं। संक्षेपमें ये सिद्धान्त अिस प्रकार हैं।

आदर्श अपने अंतिम रूपमें तो युक्लिडके बिन्दुकी तरह — जिसे कोअी मनुष्य अंकित ही नहीं कर सकता — अेक कल्पनाकी वस्तु है। अर्थात् युक्लिडके अस बिन्दुकी तरह असे भी मूर्त रूपमें पाया नहीं जा सकता। यही विचार किसी अंग्रेजी कविकी जिस पंक्तिमें प्रगट हुआ है

> ' A man s reach should exceed his grasp
> Else what is heaven for? *

आदर्शका निश्चय करनेके बाद हमारा कर्तव्य है कि हम असे अपनी शक्तिके अनुसार आचरणमें अुतारें। आदर्श अप्राप्य होता है जिसलिअे असा नहीं होना चाहिये कि हम अुसे पानेकी कोशिश ही नहीं करें। रास्ता कठिनाअियोंसे घिरा हुआ हो तो भी हमें अपने मनुष्यत्वकी रक्षाके लिअे अस पर चलनेकी कोशिश तो करनी ही चाहिये। यही पुरुषार्थ है। आनन्द प्राप्तिमें नहीं प्रयत्नमें है। आशा और अुत्साहके साथ यात्रा करते रहना लक्ष्य पर पहुंच जानेसे कहीं ज्यादा अच्छा है। हमें अपने साधनोंकी और अुनके अधिकाधिक अुपयोगकी चिन्ता करनी है। लक्ष्यकी ओर हमारी प्रगति ठीक अतनी होगी जितनी हमारे साधनोंकी शुद्धि होगी। यह रास्ता लम्बा मालूम होता है परन्तु वस्तुतः वह सबसे छोटा सिद्ध होता है।

अपनी अनन्तताके कारण आदर्श ज्यों ज्यों हम अुसकी ओर बढ़ते हैं त्यों त्यों हमसे दूर हटता हुआ मालूम होता है। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिये कि रात ठीक अरुणोदयके पूर्व सबसे ज्यादा अंधेरी होती है। यदि हम सही प्रयत्न करें तो हम अपने आदर्शकी दिशामें काफी दूर तक बढ़ सकेंगे और यह प्रगति ही वास्तविक प्रगति होगी।

मनुष्यके स्वभावकी मर्यादायें जब गांधीजी हमें आदर्शसे चिपटे रहनेकी सलाह देते हैं तब क्या वे मनुष्यके स्वभावकी मर्यादाओंका पूरा खयाल करते हैं? या वे मनुष्यके स्वभावके विषयमें अपनी कल्पित और झूठी आशाओंको

---

* मनुष्यके हाथकी पहुंच अुसकी मुट्ठीकी पकड़से कहीं ज्यादा बड़ी होनी ही चाहिये। अन्यथा स्वर्गका क्या अुपयोग है?

ही पकड़ रहते है। अिस सवाल पर अुनका मंतव्य अुनके ही शब्दोंमें अिस प्रकार है

"यह बात सच है कि बहुत बार लोगोंने मेरे साथ दगाबाजी की है। बहुतोंने मुझे धोखा दिया है और कितने ही कच्चे साबित हुअे हैं। लेकिन अुनके संसर्ग पर मुझे पछतावा नहीं है। क्योंकि जिस तरह मैं सहयोग करना जानता था, अुसी तरह असहयोग करना भी जानता था। अिस दुनियामें रहने और बरतनेका सबसे व्यावहारिक और गौरवपूर्ण तरीका यही है कि लोग जो मुंहसे कहें अुस पर विश्वास करें — जब तक कि अुसके खिलाफ पक्के कारण आपके पास न हों।"*

व्यक्ति और प्रणालीमें भेद मनुष्यके स्वभावमें गांधीजीको सच्चा विश्वास था। अत्यंत कसौटीकी घड़ियोंमें भी अुनका यह विश्वास कभी विचलित नहीं हुआ। मनुष्यकी बुनियादी अच्छाअीमें अुनकी पूरी निष्ठा थी और अिस लिअे वे किसी भी मनुष्यको अुद्धारके परे नहीं मानते थे। अुनका कहना था कि अन्याय करनेवाला अक्सर किसी दूषित प्रणालीका पुर्जा या परिस्थितियोंका शिकार-मात्र होता है। अिसलिअे हमें मनुष्य और प्रणालीमें भेद करना चाहिये। अन्यायीको शत्रु मानना अुचित नहीं है। अुसे न सिर्फ समझा-बुझाकर बल्कि जरूरत हो तो अहिंसक असहयोगके द्वारा सही रास्ते पर लाया जा सकता है। अन्यायीके हृदयमें अपना दोष देखने और अुसे पश्चात्तापके आंसुओं द्वारा धो डालनेकी बुद्धि जगानेके अिस प्रयत्नमें यह जरूर संभव है कि हमें खुद काफी कष्ट सहना पड़े। लेकिन यदि हम कष्ट सहनेके लिअे तैयार हों तो निश्चय है कि अहिंसक असहयोग व्यर्थ नहीं जायगा। अिसलिअे जरूरत दूषित प्रणालीका नाश करनेकी है व्यक्तिका नाश करनेकी नहीं। असा किया जाय तो विपक्षी हमारा शत्रु नहीं बनता और अिस बातकी काफी गुंजाअिश रहती है कि हम न केवल अुसका हृदय जीत लें, बल्कि वह सामान्य लक्ष्यकी प्राप्तिके लिअे हमारे साथ काम करनेके लिअे भी राजी हो जाय।

मनुष्यके स्वभावमें श्रद्धा गांधीजीने श्री जयप्रकाश नारायणको जिन्होंने गांधीजीके सामने भारतीय आजादीकी अपनी तसवीर विचारार्थ पेश की थी जो जवाब दिया था अुसमें मनुष्यकी बुनियादी अच्छाअी और अहिंसक साधनोंकी अमोघ क्षमतामें अुनकी अमिट श्रद्धा बहुत अच्छी तरह प्रगट हुअी है। गांधीजीने लिखा था

---

* हिंदी नवजीवन, १-१-२१

शायद श्री जयप्रकाशको यह विश्वास नहीं है कि राजा लोग स्वेच्छासे अपनी निरंकुशताका त्याग कर देंगे। मुझे यह विश्वास है। अेक तो अिसलिअे कि वे भी हमारी ही तरह भले आदमी हैं और दूसरे अिसलिअे कि मेरा शुद्ध अहिंसाकी अमोघ शक्तिमें सम्पूर्ण विश्वास है। *

मनुष्यके स्वभावमें हमारी श्रद्धा अुत्पन्न हो अुसके पहले हमारी श्रद्धा अपने-आपमें और अपने ध्येयमें होनी चाहिये। गांधीजीको अपने-आपमें और अपने ध्येयमें पूरी श्रद्धा थी, जिसमें किसे सदेह हो सकता है? परवर्ती घटनाओंने सिद्ध कर दिया है कि अुनकी यह श्रद्धा कितनी सही थी। हमने अपनी आंखोंके सामने ही यह देखा कि राजाओंने स्वेच्छापूर्वक अपनी सत्ता जनताके चुने हुअे प्रतिनिधियोंको सौंप दी। अेक विदेशी प्रवासीने अुनसे अपनी भेंटके दरमियान जब अुनसे पूछा कि वे क्या असा मानते हैं कि अुनके अहिंसक आंदोलनके फलस्वरूप अंग्रेज भारतको शांतिपूर्वक छोड़कर चले जायेंगे, तो अुन्होंने दृढ़तापूर्वक अुत्तर दिया कि हां, मैं असा मानता हूं। प्रश्नकर्ताने फिर पूछा, आपके अिस विश्वासका आधार क्या है? गांधीजीने जवाब दिया, अीश्वर और अुसके न्यायमें मेरी निष्ठा ही मेरे अिस विश्वासका आधार है। × गांधीजीने अपने जीवन-कालमें ही हथियारको छुअे बिना भारतकी आजादी प्राप्त कर ली। अंग्रेज शासक भारतीयोंके हाथमें शासन-सत्ता शांतिपूर्वक सौंपकर भारतसे विदा हो गये। ये तो केवल दो ही अुदाहरण हैं। लेकिन गांधीजीका जीवन असे असंख्य अुदाहरणोंसे भरा पड़ा है, जिनमें हिंसाकी वृत्तिके दुनियादार आदमीको अनका व्यवहार मूर्खताकी हद तक दुस्साहसपूर्ण मालूम होगा। लेकिन सत्य यह है कि क्वचित् ही कोअी प्रसंग असा हो जिसमें गांधीजीको अपने प्रयत्नमें सफलता न मिली हो। जो भी आदमी भारतके हालके अितिहासके पृष्ठ अुलटेगा अुसे अिस कथनकी सचाअीके चाहे जितने प्रमाण मिल जायेंगे।

गांधीजी अहिंसामें मानते थे, लेकिन वे अिस तथ्यको स्वीकार करके चलते थे कि मनुष्य अपूर्ण है। यदि कोअी कमजोर आदमी हमारे साथ कदम मिलाकर न चल सकता हो और पीछे रह जाता हो तो यह जरूरी हो जाता है कि अुसकी कमजोरीका खयाल किया जाय। लेकिन सिद्धान्तों पर कोअी समझौता कैसे हो सकता है? सिद्धान्तों पर तो चट्टानकी तरह दृढ़ ही रहना होगा। अिसके सिवा बुराअीके साथ भी कोअी समझौता नहीं हो सकता। लेकिन मनुष्यकी कमजोरियोंका खयाल करके किंचित विवेक अवश्य

* हरिजनसेवक २-४-४

× हरिजन १३-२-३७

रखना चाहिये। सिद्धान्तोंके बारेमें किसी तरहकी शिथिलताकी सलाह नहीं दी जा सकती और न अुसे प्रोत्साहन ही दिया जा सकता है किन्तु साथ ही हमें यह भी देखना होगा कि किसी भी छोटी बातको सिद्धान्तका दर्जा न दे दिया जाय। समझौतेके लिअे गांधीजी जिन शर्तोंका होना आवश्यक मानते थे अुन पर निम्नलिखित अुद्धरणसे काफी प्रकाश पड़ता है

> 'सच तो यह है कि जीवन असे समझौतोंसे ही बना हुआ होता है। चूंकि अहिंसा अत्यंत विशुद्ध और निःस्वार्थ प्रेम ही है, जिसलिअे अुसमें अक्सर असे समझौते आवश्यक भी होते हैं। अलबत्ता अुसकी कुछ शर्तें हैं जिनका पालन अवश्य होना चाहिये। हम जो कुछ भी कर रहे हों अुसमें कोओ स्वार्थ, भय या असत्य नहीं होना चाहिये और अुसमें हमारा लक्ष्य अहिंसाकी ओर अधिकाधिक बढ़नेका ही होना चाहिये। यह समझौता स्वाभाविक यानी स्वेच्छा प्रेरित होना चाहिये बाहरसे लादा हुआ नहीं। *

गांधीजीका राजनीतिक आदर्शवाद हम गांधीजीकी स्वराज्यकी कल्पनाका विश्लेषण करें अुसके पहले अुनके राजनीतिक आदर्शवादका मुख्य स्रोत समझ लेना अुपयोगी होगा। गांधीजीके राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखलेने भारत-सेवक-समाजके संविधानकी प्रस्तावनामें जो कि अुन्होंने १९०५ में लिखी थी सार्वजनिक जीवनमें आध्यात्मिक मूल्योंको दाखिल करनेकी आवश्यकता प्रगट की थी। अुन्होंने जिस बात पर जोर दिया था कि देशकी सेवा अुसी निष्काम वृत्तिसे की जानी चाहिये जिस निष्काम धर्मकी सेवा की जाती है। गोखलेजी यह परम्परा अनके शिष्यने जारी रखी। गांधीजी राजनीतिमें क्यों पड़े — जिस प्रश्नका अुत्तर गांधीजीके अपने शब्दोंमें जिस प्रकार है

> असे सर्वव्यापी सत्यनारायणका साक्षात्कार करनेके लिअे मनुष्यके मनमें छोटेसे छोटे प्राणीके प्रति अपने ही जैसा प्रेम होना चाहिये। और जो मनुष्य जिसकी आकांक्षा रखता है वह जीवनके किसी क्षेत्रसे बाहर नहीं रह सकता। जिसी कारणसे मेरे सत्यप्रेमने मुझे राजनीतिक क्षेत्रमें घसीट लिया है और मैं बिना किसी संकोचके किन्तु पूरी नम्रताके साथ कह सकता हूं कि जो लोग यह कहते हैं कि धर्मका राजनीतिके साथ कोओ संबंध नहीं है वे नहीं जानते कि धर्मका क्या अर्थ है। ×

---

* हरिजन १७–१०–३६

× आत्मकथा (अंग्रेजी), पृ० ३५ १९४८।

धम और राजनीति धम और राजनीतिको अेक-दूसरेसे अलग नही किया जा सकता। अनमें अटूट सम्बन्ध है। धमके बिना राजनीति निर्जीव हो जायगी। धमके अभावमें राजनीति खोखली और निरथक होगी

> मुझ अिस नाशवान अहिक राज्यकी कोअी अभिलाषा नही है। म तो अीश्वरीय राज्यको पानका प्रयत्न कर रहा हू। वह है मोक्ष। मेरे लिअ तो मुक्तिका माग है अपने देशकी और अुसके द्वारा मनुष्य जातिकी सवा करनेके लिअे सतत परिश्रम करना। म ससारके भूत मात्रसे अपना तादात्म्य कर लेना चाहता हू। म गीताकी भाषामें — सम शत्रौ च मित्रे च हो जाना चाहता हू। अिस प्रकार मेरी देशभक्ति और कुछ नही अपनी चिर मुक्ति और शान्तिके देशकी मजिलका अक विश्राम-स्थान है। अिससे यह मालूम हो जाता है कि मेरे नजदीक धमशून्य राजनीति कोअी चीज नही। राजनीति धमकी अनुचरी है। धमहीन राजनीतिको अक फासी ही समझिये। वह आत्माका नाश कर देती है।*

अक विदेशी अीसाअी सतान जो दिसम्बर १९३८ में गांधीजीसे चचा करनेके लिअ यहा आया था अुसने पूछा था कि भारतके लिअ आपने जो काम किया है अुसमें आपका मुख्य प्रेरक हेतु क्या था? वह राजनीतिक था या सामाजिक या धार्मिक? गांधीजीने जवाब दिया — विशुद्ध धार्मिक। यही प्रश्न अुनसे स्व ० श्री माटग्यून किया था जब वे अक राजनीतिक प्रतिनिधि मण्डलके साथ अुनसे मिले थ। अुन्होंने आश्चर्य व्यक्त करते हुअ पूछा आप तो समाज-सुधारक ह आप राजनीतिकी अिस भीड भाडमें कसे आ पहुचे? गांधीजीने जवाब दिया कि अुनका राजनीतिमें आ पडना अुनके समाज-सुधार कायका ही विस्तार है। अुन्होंने कहा कि जब तक म सारी मानव जातिके साथ अकात्मता सिद्ध न कर लू तब तक म धार्मिक जीवन नही बिता सकता और मानव-जातिके साथ अकात्मता स्थापित करनेके लिअे यह जरूरी है कि म राजनीतिमें भाग लू। आज मनुष्यकी सारी प्रवृत्तिया मिलकर अविभाज्य हो गअी ह। सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और धार्मिक कार्योंको अक-दूसरेसे बिलकुल अलग नही किया जा सकता। म मानव-सेवासे भिन्न किसी धमको नही जानता। मानव-सेवा ही दूसरी सारी प्रवृत्तियाको नतिक आधार प्रदान करती है। मानव-सेवाका लक्ष्य न रहने पर ये सारी प्रवृत्तिया निराधार हो जायेंगी और जीवन अथहीन शोरगुलका रूप ले लगा।×

---

* हिन्दी नवजीवन ६–४–२४
× हरिजन २४–१२– ३८

धर्मका अर्थ : यहाँ धर्म शब्दका अुपयोग शाश्वत मूल्योंके अर्थमें किया गया है, विविध धर्मोंकी रूढ़ मान्यताओंके अर्थमें नहीं। धार्मिक मामलोंमें गांधीजीकी दृष्टिकी अुदारता और सबकी परमत-सहिष्णुताकी बात सुप्रसिद्ध है। वे अीश्वरको सत्यके रूपमें ही पहिचानते थे। धर्मका अर्थ है मनुष्यके द्वारा अतिमानवी नियामिका शक्ति या अीश्वरका स्वीकार। अीश्वरसे गांधीजीका क्या तात्पर्य था?

> अगर मानव-वाणीके लिअे अीश्वरका संपूर्ण वर्णन करना संभव हो, तो मैं अिस निश्चय पर पहुँचा हूँ कि अीश्वर सत्य है — सत्य शब्द ही अुसका सर्वोत्तम वाचक है। परन्तु दो वर्ष पूर्व मैं अेक कदम और आगे बढ़ा। मैंने कहा कि न केवल अीश्वर सत्यरूप है, बल्कि सत्य ही अीश्वर है। अीश्वर सत्य है और सत्य ही अीश्वर है, अिन दोनों वचनोंके सूक्ष्म भेदको आप समझ लें। अिस नतीजे पर मैं सत्यकी पचास वर्षकी सतत, अनवरत और कठिन खोजके बाद पहुँचा हूँ। जिसके बाद मुझे पता चला कि सत्य तक पहुँचनेका निकटतम मार्ग प्रेम है। परन्तु मैंने यह भी पाया कि कमसे कम अंग्रेजी भाषामें 'लव' (प्रेम) शब्दके अनेक अर्थ हैं और विकारके अर्थमें मानव प्रेम तो अेक मलिन चीज है जो मनुष्यका पतन करती है। मैंने यह भी देखा कि अहिंसाके अर्थमें प्रेमके पुजारियोंकी संख्या दुनियामें गिनीगिनी ही है। परन्तु सत्यके बारेमें दो अर्थ नहीं हैं और नास्तिकों तकने सत्यकी आवश्यकता या शक्ति स्वीकार की है। परन्तु सत्यकी खोज निकालनेकी अपनी लगनमें नास्तिकोंने अीश्वरके अस्तित्वसे भी अिनकार करनेमें संकोच नहीं किया है और अपने दृष्टिकोणसे अुन्होंने ठीक ही किया है। अिस तरह सोचते हुअे मेरी समझमें आया कि 'अीश्वर सत्यरूप है' यह कहनेके बजाय मुझे यह कहना चाहिये कि सत्य ही अीश्वर है।'*

अीश्वरकी अपनी कल्पना अुन्होंने अुपयुक्त शब्दोंमें समझायी है। अुनकी धार्मिक भावनाकी मौलिकता और प्रगल्भता अिस अुद्धरणके प्रत्येक शब्दसे टपकती है।

स्वराज्य

अुनकी कल्पनाका स्वराज्य : गांधीजी ब्रिटिश साम्राज्यके अेक राजभक्त नागरिकसे अेक राजद्रोही — और अैसा राजद्रोही जो अिस बातका प्रचार करता था कि ब्रिटिश शासन ही भारतके राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक नाशके लिअे अुत्तरदायी है — कैसे बन गये, अिस बातकी कहानी

* सत्य ही अीश्वर है, पृ० १३, १९५९।

जिस देशका हालका अितिहास जाननवाले जानते ही हैं। जिस स्वराज्यको लाने और जिसका निर्माण करनेके लिअ अुन्होंने अपना सारा जीवन लगाया वह नकारात्मक नहीं था। स्वराज्यकी अनकी कल्पना महज यह नहीं थी कि सत्ता विदेशियोंके हाथसे भारतीयोंके हाथमें आ जाय। यह तो अुनके कल्पनाके स्वराज्यकी मात्र पहली मंजिल थी। सब लोग जानते हैं कि १५ अगस्त १९४७ को जब ब्रिटिश सम्राटके आखिरी प्रतिनिधिने शासनकी बागडोर भारतकी राष्ट्रीय सरकारको सौंपी अुस समय सारा राष्ट्र तो आजादीका अुत्सव मना रहा था और खुशीसे नाच रहा था पर बापूका संत दुःखी मनसे किन्तु अत्यंत वीरतापूर्वक अपनी सारी शक्ति देशभरमें फैली हुअी साम्प्रदायिक दावाग्निको बुझानेमें लगा रहा था।

स्वराज्यका अर्थ स्वराज्य समाजकी अुस स्थितिका नाम है जिसमें जनता अपना शासन स्वयं करना सीख लेती है। अिस स्वराज्यका अनुभव हरअेक व्यक्तिको होना चाहिये

> स्वराज्यका असली मतलब आत्म-संयम है। आत्म-संयम वही रख सकता है जो सदाचारके नियमोंका पालन करता है किसीको धोखा नहीं देता सत्यका त्याग नहीं करता और अपने माता पिता पत्नी बच्चों नौकरों और पड़ोसियोंके प्रति अपना फर्ज अदा करता है। अैसा आदमी भले वहां भी रहे स्वराज्यका सुख भोगता है। जो राज्य बड़ी संख्यामें अिस तरहके भले नागरिकोंके होनेका गर्व कर सकता है वह स्वराज्यका अुपभोग करता है। *

गांधीजीके स्वराज्यकी नींवका पत्थर—व्यक्ति गांधीजीने स्वराज्य रूपी भवनकी नींवका पत्थर व्यक्ति है। अुसे चाहिये कि वह अपनेको अच्छा नागरिक बननेकी तालीम दे और अुसके लिअ आवश्यक योग्यताओंका अपनेमें विकास करे तभी वह स्वराज्यका लाभ अुठा सकता है। समाज व्यक्तियोंका समूह है। समाज शासनके लिअ और कानूनका पालन करवानेके लिअे राज्यकी स्थापना करता है। जिस राज्यमें अच्छे नागरिक बड़ी संख्यामें मौजूद हों वही स्वराज्य भोगनेका दावा कर सकता है। स्वराज्य तभी कायम रखा जा सकता है जब कि राज्यमें अैसे देशभक्त नागरिकोंकी बहुसंख्या मौजूद हो जो अपने हितकी तथा और दूसरी सारी चीजोंकी तुलनामें देशके हितको ही सर्वोपरि महत्त्व प्रदान करते हों। × अैसी स्थिति न हो तो राजनीतिक स्वतन्त्रताके होने हुअे भी अुन लोगोंको स्वतन्त्र नहीं कहा जा सकता।

* गांधीजी ज पराफ्रेज आफ रस्किन्स अन्टु दिस लास्ट के कन्क्लूजन नामक अध्यायसे पृ० ६५।

× यंग अिन्डिया २८-७-२१

राजनीतिक स्वतंत्रताका महत्त्व कम है, असी बात नहीं है। गांधीजी अिस बातको खूब समझते थे कि राजनीतिक आजादी तो होनी ही चाहिये। किसी अेक देशका दूसरे देश पर राज्य करना गलत है और विदेशी शासन अेक असह्य बुराओ है। अिसलिअे वे भारतके लिअे राजनीतिक आजादी अवश्य चाहते थे। लेकिन वे यह भी समझते थे कि अंग्रेजोंके भारत छोड देने मात्रसे जादूकी तरह यहां सुखकी वर्षा नहीं होने लगेगी। यूरोपकी हालतने अुन्हें सावधान कर दिया था। अुन्होंने समझ लिया था कि केवल राजनीतिक आजादी मिल जानेसे असी परिस्थितियां पैदा नहीं हो जातीं जिनमें जनता अपना शासन आप करने लगे। राजनीतिक आजादी मिलनेके बाद भी वह चंद लोगोंके द्वारा पासी जाती रहती है। अिसलिअे अुन्होंने लिखा था :

> केवल राजनीतिक सत्ताके अेक हाथसे निकल कर दूसरे हाथमें चले जानेसे मेरी महत्त्वाकांक्षाको सन्तोष न होगा, हालांकि मैं भारतके राष्ट्रीय जीवनके लिअे सत्ताका अिस प्रकार हस्तान्तरित होना परम आवश्यक मानता हूं। यूरोपके लोग निस्सन्देह राजनीतिक सत्ता तो रखते हैं पर स्वराज्य नहीं। अेशिया और अफ्रीकाके लोगोंको वे अपने आर्थिक लाभके लिअे लूटते हैं और अुनके शासक-वर्ग अुन्हें प्रजा सत्ताके पवित्र नाम पर लूटते हैं। तो यदि जड़को देखें तो रोग वहां दिखाओ देता है जो कि भारतवर्षको है। अिसलिअे अिलाज भी वही काम दे सकेगा। *

अिससे प्रगट हो जाता है कि सरकार जनताकी ही हो अिस बातका वे काफी नहीं मानते थे, वे चाहते थे कि वह जनताकी तो होनी ही चाहिये लेकिन जनताके लिअे और जनताके द्वारा चलायी जानेवाली भी होनी चाहिये।

स्वराज्यमें विशिष्ट वर्ग और सामान्य जनता : स्वराज्यमें सामान्य जनताके हितोंको कम लोगों या वर्गोंके हितों पर तरजीह मिलनी चाहिये। स्वराज्य पर निहित स्वार्थवालोंका अेकाधिकार हो या वे लोग ही अुसका सारा लाभ अुठायें असा नहीं होना चाहिये। स्वराज्यकी योजनामें सामान्य जनताका हित ही सर्वोपरि होना चाहिये। ... असा प्रत्येक हित जो मजदूर करोड़ोंके हितके विरुद्ध हो या तो बदला जाना चाहिये या यदि वह बदला न जा सकता हो तो अुसमें कमी की जानी चाहिये। × अिसका यह अर्थ

* हिन्दी नवजीवन ३–९–२५
× यंग अिंडिया, १७–९–'३१

नही कि शेष वर्गोंको — मध्यम वर्ग पूजीपतियो जमीदारो आदिको — मिटा दिया जाय। अुद्देश्य अितना ही है कि अिन सब वर्गोंको गरीबोंके हितको मुख्य मानकर असकी सेवा करनी चाहिये। *

सरकार जनताके द्वारा चलायी जाय अब हम अिस सवाल पर आते है कि सरकार जनताके द्वारा चलायी जाय — अिस बातका सही आशय क्या है। गाधीजीका अुत्तर अिस प्रकार है

> स्वराज्यसे मेरा अभिप्राय है लोक-सम्मतिके अनुसार होनेवाला भारतवर्षका शासन। लोक-सम्मतिका निश्चय देशके बालिगोकी बडीसे बडी तादादके मतके जरिये हो वे चाहे स्त्री हो या पुरुष अिसी देशके हो या अिस देशमें आकर बस गये हो। वे लोग असे हो जिन्होने अपने शारीरिक श्रमके द्वारा राज्यकी सेवा की हो और जिन्होने मतदाताओंकी सूचीमें अपना नाम लिखवाया हो। मै यह सिद्ध करनेकी आशा रखता हू कि सच्चा स्वराज्य थोडे लोगोंके द्वारा सत्ता छीन लेनेसे नही बल्कि जब सत्ताका दुरुपयोग होता हो तब सब लोगोंके द्वारा असके प्रतिकार करनेकी क्षमताको प्राप्त करके हासिल किया जा सकता है। दूसरे शब्दोंमें स्वराज्य जनतामें अिस बातका ज्ञान पैदा कराके प्राप्त किया जा सकता है कि सत्ता पर कब्जा करने और अुसका नियमन करनेकी क्षमता अुनमें है। ×

नागरिकोंकी सजगता जहा नागरिक अपनी आजादीकी रक्षाके विषयमें सजग होंगे वहा लोगोंकी सारी आवश्यकतायें पूरी करनेका काम राज्य नही करेगा और न वह जनतासे सत्ताको हथियानेकी अनधिकार चेष्टा ही करेगा। सत्ता पर स्वामित्व जनताका ही है और होना चाहिये। स्वराज्यका अर्थ यह है कि जनता सरकारके नियत्रणसे — सरकार विदेशी हो या स्वदेशी — मुक्त होनेके लिअ लगातार प्रयत्न करती रहेगा। जिस स्वराज्यमें लोग अपने जीवनके छोटे छोटे कामोंके लिअ भी सरकारका मुह ताका करे वह स्वराज्य किसी कामका नही होगा। —

कमसे कम शासन करनेवाली सरकार ही अुत्तम सरकार है जहा राजनीतिक सत्ता जाग्रत शिक्षित और अनुशासनकी तालीम पायी हुआ असी जनताके हाथमें होती है जिसने सत्ताका नियमन और नियत्रण सीख लिया है वहा फिर अिस बातका डर नही रह जाता कि राज्य निरकुश बन जायगा

* यग अिण्डिया १६–४–३१

× हिन्दी नवजीवन २९–१–२५

— यग अिडिया ६–८–२५

यह अपनी जड़ें अितनी मजबूत कर लेगा कि वर्गहीन समाजकी अुस स्थितिकी ओर, जिसमें राज्यका विलय हो जाता है, जनताकी प्रगतिमें वह सहायक अुपस्थित कर सके। निम्नलिखित शब्द बताते हैं कि गांधीजी अुस प्रकारके लोकतन्त्रके हिमायती थे, जिसमें सामान्य मनुष्यको अुसकी पूरी प्रतिष्ठा प्राप्त होगी :

मेरी दृष्टिमें राजनीतिक सत्ता कोअी साध्य नहीं है, परन्तु जीवनके प्रत्येक विभागमें लोगोंके लिअे अपनी हालत सुधार सकनेका अेक साधन है। राजनीतिक सत्ताका अर्थ है राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय जीवनका नियमन करनेकी शक्ति। अगर राष्ट्रीय जीवन अितना पूर्ण हो जाता है कि वह स्वयं आत्म-नियमन कर लेता है, तो किसी प्रतिनिधिकी आवश्यकता नहीं रह जाती। अुस समय ज्ञानपूर्ण अराजकताकी स्थिति हो जाती है। असी स्थितिमें हरअेक अपना राजा होता है। वह अिस ढंगसे अपने पर शासन करता है कि अपने पड़ोसियोंके लिअे कभी बाधा नहीं बनता। अिसलिअे आदर्श व्यवस्थामें कोअी राजनीतिक सत्ता नहीं होती, क्योंकि कोअी राज्य नहीं होता। परन्तु जीवनमें आदर्शकी पूरी सिद्धि कभी नहीं होती। अिसीलिअे थोरोने कहा है कि जो सबसे कम शासन करे वही अुत्तम सरकार है। *

अिसका मतलब यह है कि जब राजनीतिक सत्ता जनताके हाथमें होती है, तब जनताकी आजादीमें राज्यका हस्तक्षेप कमसे कम हो जाता है। दूसरे शब्दोंमें, जो राष्ट्र अपना कामकाज राज्यके ज्यादा हस्तक्षेपके बिना ही अच्छी तरह और सफलतापूर्वक चला लेता है, वही सही अर्थमें लोकतान्त्रिक है। जहां यह बात पूरी नहीं होती, वहां शासनका स्वरूप नाममें लोकतान्त्रिक भले हो, वस्तुतः वह लोकतान्त्रिक नहीं होता। ×

सच्चा लोकतन्त्र : गांधीजीकी कल्पनाका सच्चा लोकतन्त्र अनगिनत ग्राम पंचायतोंका बना हुआ गणराज्य होगा। शासनकी अिकाअीके रूपमें गांधीजी गांवका आग्रह क्यों करते हैं? अिस प्रश्नका अुत्तर अुनके अपने ही शब्दोंमें अिस प्रकार है :

आजादी नीचेसे शुरू होनी चाहिये। हरअेक गांवमें जमहूरी सल्तनत या पंचायत राज होगा। अुसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी। अिसका मतलब यह है कि हरअेक गांवको अपने पांव पर

---

* सर्वोदय पृ० ८२, १९५८।

× हरिजन, ११-१-३६

खड़ा होना होगा — अपनी जरूरतें खुद पूरी कर लेनी होंगी, ताकि वह अपना सारा कारोबार खुद चला सके। यहां तक कि वह सारी दुनियाके खिलाफ अपनी हिफाजत खुद कर सके। असे तालीम देकर अिस हद तक तैयार करना होगा कि वह बाहरी हमलेके मुकाबलेमें अपनी रक्षा करते हुअे मर मिटनेके लायक बन जाय। अिस तरह आखिर हमारी बुनियाद व्यक्ति पर होगी। अिसका यह मतलब नहीं कि पड़ोसियों पर या दुनिया पर भरोसा न रखा जाय या अुनकी राजी-खुशीसे दी हुअी मदद न ली जाय। खयाल यह है कि सब आजाद होंगे और सब अेक-दूसरे पर अपना असर डाल सकेंगे। जिस समाजका हरअेक आदमी यह जानता है कि अुसे क्या चाहिये और अिससे भी बढ़कर जिसमें यह माना जाता है कि बराबरीकी मेहनत करके भी दूसरोंको जो चीज नहीं मिलती है वह खुद भी किसीको नहीं लेनी चाहिये, वह समाज जरूर ही बहुत अूंचे दर्जेकी सभ्यतावाला होना चाहिये।

स्वार्थत्यागकी आवश्यकता　असा समाज अनगिनत गांवोंका बना होगा। असका फैलाव अेकके अूपर अेकके ढंगका नहीं, बल्कि लहरोंकी तरह अेकके बाद अेककी शकलमें होगा। जीवन मीनारकी शकलमें नहीं होगा, जहां अूपरकी तंग चोटीको नीचेके चौड़े पाये पर खड़ा रहना पड़ता है। वहां तो जीवन समुद्रकी लहरोंकी तरह अेकके बाद अेक घेरेकी शकलमें होगा, जिसका केन्द्र व्यक्ति होगा। व्यक्ति गांवके लिअे और गांव ग्राम-समूहके लिअे मर मिटनेको हमेशा तैयार रहेगा। अिस तरह अंतमें सारा समाज असे व्यक्तियोंका बन जायगा, जो अहंकारमें आकर कभी किसी पर हमला नहीं करेंगे, बल्कि सदा विनीत रहेंगे और अुस समुद्रके गौरवके हिस्सेदार बनेंगे, जिसके वे अविभाज्य अंग हैं।*

आदर्श गांव　आदर्श भारतीय गांवकी रचना अिस तरह की जायगी कि वहां संपूर्ण स्वच्छता रखी जा सके। अुसके घरोंमें पर्याप्त हवा और प्रकाशकी व्यवस्था होगी और अुनके निर्माणमें असी चीजोंका अपयोग होगा जो अस गांवके आसपासके पांच मीलके क्षेत्रमें मिल जायें। अिन घरोंमें आंगन होंगे, जहां घर-मालिक घरके अपयोगके लिअे आवश्यक प्रमाणमें साग-सब्जी पैदा कर सकेगा और वहां वह अपने मवेशी आदिको भी रखेगा। गांवकी गलियां और रास्ते धूल और कचरेसे मुक्त होंगे। अुसमें अुसकी जरूरतके अनुसार काफी कुअें होंगे

* हरिजनसेवक २८-७-४६

और ये कुअें सबके लिअे खुले होंगे। अुसमें वहां बसनेवाले सब लोगोंके पूजास्थान होंगे, सब लोगोंका अेक सामान्य सभास्थान होगा, गांवके पशुओंके लिअे गोचर भूमि होगी, सहकारी डेरी होगी और प्राथमिक तथा अुच्च पाठशालायें होंगी। जिन पाठशालाओंमें दी जानेवाली शिक्षाका केन्द्रबिन्दु औद्योगिक शिक्षण होगा। गांवमें ग्रामवासियोंके आपसी झगड़ोंका निपटारा करनेके लिअे ग्राम-पंचायत होगी। गांव अपना अनाज, साग-भाजी, फल-फूल और अपनी खादी खुद पैदा करेगा।*

पंचायतराजमें समानता : अिस पंचायतराजमें देशके बड़से बड़े और छोटेसे छोटे आदमीके बीचमें भी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक — यानी हर तरहकी समानता होगी। शरीर-श्रमकी कीमत की जायगी और अुसे प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। नागरिक अपनी जीविका प्रामाणिक परिश्रमके द्वारा कमायेंगे। अफीम और शराब जैसे नशीले द्रव्यों पर पूरी रोक रहेगी। स्वदेशी जीवनका अेक अनिवार्य नियम बन जायगा। स्त्रियां अपनी पराधीनताकी स्थितिसे मुक्त होंगी और अुन्हें समाजमें सम्मानका स्थान प्राप्त होगा। और नागरिक अहिंसाके द्वारा सत्यकी रक्षा करनेके लिअे तथा अिस प्रयत्नमें आवश्यकता होने पर अपने प्राणोंकी बाजी लगानेके लिअे तैयार रहेंगे। ये वे आधार-स्तम्भ हैं जिन पर कि गांवोंके गणराज्यका भवन खड़ा होगा।

क्या अैसा गणराज्य सेना रखेगा? क्या सेना रखना नैतिक आजादीके साथ सुसंगत माना जा सकता है? नैतिक आजादीकी गांधीजीकी कल्पनामें शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित सेनाओंके लिअे कोअी स्थान नहीं है। अुनकी नैतिक आजादीकी व्याख्या यह है :

> रामराज्यकी मेरी कल्पनामें ब्रिटिश फौजी हुकूमतकी जगह राष्ट्रीय फौजी हुकूमतको बैठा देनेकी कोअी गुंजाअिश नहीं। जिस मुल्कमें फौजी हुकूमत होती है, फिर वह फौज मुल्ककी अपनी ही क्यों न हो, वह मुल्क नैतिक दृष्टिसे कभी आजाद नहीं हो सकता और अिसलिअे अुसके सबसे कमजोर कहे जानेवाले नागरिक कभी पूरी तरहसे नैतिक अुन्नति नहीं कर सकते। ×

भावी भारतकी सेना : यह याद रखना चाहिये कि गांधीजी देशको बलपूर्वक अधिकृत करनेके काममें लायी जानेवाली सेनाके खिलाफ हैं, फिर वह सेना देशी ही क्यों न हो। लेकिन वे स्वयंसेवकोंकी अैसी सेना मंजूर करनेके लिअे तैयार हैं, जिसका अुपयोग देशमें जान-मालकी सुरक्षा बनाये

* डी॰ जी॰ तेन्दुलकर : महात्मा, खंड ४, पृ॰ १४४।

× हरिजनसेवक, ५-५-'४६

रखनके लिअ किया जाय। नीचे दिय जा रहे अुद्धरणसे यह बात स्पष्ट हो जायगी

> जल-सेनाके विषयमें म नही कह सकता लेकिन स्थल-सेनाके विषयमें म कह सकता हू कि भावी भारतकी स्थल-सेना किरायेके असे सनिकोकी नही होगी जिनका अुपयाग भारतको गुलामीमें रखनके लिअ या दूसरे राष्ट्रोंसे अुनकी आजादी छीननके लिअ किया जाता है। बल्कि वह बहुत हद तक कम कर दी जायगी अधिकाशत स्वय सेवकोंसे बनी हुअी होगी और अुसका अुपयाग देशमें सुरक्षाकी व्यवस्था बनाये रखनके लिअ ही होगा। *

सन १९४६ में केबिनट मिशन भारत आया अुसक ठीक पहले गाधीजीने देशको चेतावनी दी थी कि यदि स्वतत्रताकी प्राप्तिके बाद भारतन सनिक दष्टिसे शक्तिशाली बननकी कोशिश की तो आजकी दुनियामें वह बहुत हुआ तो पाचवे दर्जेका सनिक राष्ट्र बन सकेगा और वह दुनियाको कोअी सदेश देन योग्य भी नही रह जायगा। लेकिन यदि वह अपनी अहिंसाकी ही नीति पर कायम रहे और अुसे अधिकाधिक परिशुद्ध करता जाय तो वह अपनी कीमती आजादीका अुपयोग दुनियाको अुस बोझसे मुक्त करनमें कर सकेगा जिसमे आज वह दबी जा रही है और दूसरे देशोंके सामने अक अुज्वल अुदाहरण भी पेश कर सकेगा। ×

गाधीवादी आदश और समाजवादी तथा साम्यवादी आदशमें फक

समाजवाद अीशोपनिषदमें अतर्हित है गाधीवादी आदश समाजवादी तथा साम्यवादी आदर्शोंसे किन बातोंमें भिन्न है? दोनोंके बीचमें रहे हुअ फकको समझनके लिअे हमें पहले यह जानना चाहिय कि समाजवादके सम्बधमें गाधीजीके विचार क्या ह। गाधीजीका दावा था कि पश्चिमसे समाजवाद भारतमें आया अुसके बहुत पहलेसे ही वे समाजवादी रहे ह। समाजवादियोंके सिद्धातको व दक्षिण अफ्रीकामें रहते हुअ ही अपना चुके थ। लेकिन अुनका समाजवाद किसी पुस्तकसे नही लिया गया था वह अुनके अनभव और अवलोकनकी अपज था और जिस तरह अुन्ह स्वाभाविक तौर पर प्राप्त हुआ था। वह अहिंसामें अुनक अविचल विश्वाससे पदा हुआ था। पश्चिमी समाजवादियोंसे अपना भद स्पष्ट करते हुअ गाधीजी लिखते ह

---

* यग अिडिया ९–३–२२

× हरिजन ५–५–४६

समाजवादका जन्म अुस वक्त नही हुआ था जब यह पता लगा कि पूजीपति पजीका दुरुपयोग करते ह। जसा कि मने कहा है समाजवाद ही नही साम्यवाद भी ओीशोपनिषदके पहले मनमें स्पष्ट है। सच बात ता यह है कि जब कुछ सुधारकोका विचार-परिवतनकी पद्धतिमें विश्वास नहा रहा तब जिसे वज्ञानिक समाजवाद कहत ह अुसका जन्म हुआ। म अुन्ही समस्याओको हल करनेमें लगा हुआ हू जो वज्ञानिक समाजवादियोंके सामने है। लेकिन यह सही है कि मेरी दृष्टि मनसे अकमात्र शुद्ध अहिंसाकी रही है। *

अुद्देश्यकी अकता साम्यवादियोंकी तरह गाधीजीका भी अुद्देश्य अस वर्गविहीन समाजकी स्थापनाका ही है जिसमें राजशक्ति क्रमश क्षीण होकर प्राय निःशेष हो गयी होगी। लेकिन अिस अुद्देश्य तक पहुचनेके अुनके रास्तामें बुनियादी फर्क है। जिसलिअे यात्राके आरभमें ही वे अेक दूसरेसे अलग हो जाते ह। पश्चिमी समाजवाद और साम्यवादके खिलाफ गाधीजीके विरोधको हम समझ ले।

साधन वे कहते ह हिंसाके द्वारा कोओी स्थायी सुधार किया जा सकता है जिस बातको म अस्वीकार करता हू। समाजवादियों और अुसी श्रेणीके दूसरे लोगोंसे मेरा विरोध अिसी बातमें है। ×

रूसका समाजवाद यानी जनता पर जबरदस्ती लादा जानेवाला साम्यवाद भारतको रुचेगा नही भारतकी प्रकृतिके साथ अुसका मेल नही बठ सकता। म अहिंसक साम्यवादमें विश्वास करता हू। यदि साम्यवाद बिना किसी हिंसाके आय तो हम अुसका स्वागत करेंगे। +

गाधीजी समाजवादियोंके आत्मत्याग और अुनकी बलिदानकी भावनाका बहुत आदर करते थे लेकिन अुनकी और अपनी कार्य-पद्धतिमें रहे हुअे तीव्र विभेदको अुन्होंने कभी छिपाया नहा। समाजवादी हिंसामें और हिंसाके मारे फलितार्थोंमें खुल्कर विश्वास करते ह जब कि गाधीजी पूरी तरह अहिंसामें मानते ह। — वे कहते थे भारतको स्वराज्य अवश्य मिलना चाहिये लेकिन यह स्वराज्य अुसे शुद्ध साधनोंके द्वारा प्राप्त करना चाहिये। क्योंकि सच्चा स्वराज्य हिंसाके द्वारा प्राप्त किया ही नहा जा सकता। † भारत हिंसाके

* हरिजन २०–२–४७

× हरिजन १–६–४७

\+ हरिजन १३–२–३७

— हरिजन ४–८–४६

† गाधीजी अे पराफ्रेज ऑफ रस्किन्स अटु दिस लास्ट के 'वकव्हजन नामक अध्यायसे।

द्वारा अपनी आजादी प्राप्त कर सकता है, अिस बातका अुन्हें यकीन दिलाया जाता तो भी वे अुस आजादीका स्पष्ट अिनकार कर देते। कारण, वह सच्ची आजादी होती ही नहीं।* हिंसा और उपायोंसे भारतको अंग्रेजोंके शासनकी जगह कोअी दूसरा शासन मिल सकता है पर जनताकी दृष्टिसे जिसे स्वशासनका नाम दिया जा सके अैसा स्वशासन कदापि नहीं मिल सकता।† अुनका दृढ़ विश्वास था कि हिंसाकी बुनियाद पर किसी स्थायी वस्तुका निर्माण नहीं हो सकता।‡ शरीरकी तरह शारीरिक शक्ति भी क्षणस्थायी ही है।

जब स्वराज्य हिंसाके द्वारा प्राप्त किया जाता है तब सत्ता अुन अिने गिने लोगोंके हाथमें चली जाती है जिन्होंने अुस शक्तिका नेतृत्व किया हो। हिंसाके अुपयोगका यह अेक अनिवार्य परिणाम है। जो तलवार अुठायेगा अुसका विनाश भी तलवारके द्वारा ही होगा। — अीसाका यह वाक्य अत्यंत अर्थपूर्ण है। अब अिटलीका ही अुदाहरण लीजिये। अिटलीके स्वातन्त्र्य-युद्धके पश्चात् वहां क्या हुआ?

अिटलीमें अिटालियन राज करते हैं अिसलिअे अिटलीकी प्रजा सुखी है अैसा अगर आप मानते हों तो मैं आपसे कहूंगा कि आप अंधेरेमें भटकते हैं। मॅजिनीने साफ साफ बताया है कि अिटली आजाद नहीं हुआ है। विक्टर अिमेन्युअलने अिटलीका अेक अर्थ किया, मॅजिनीने दूसरा। अिमेन्युअल, कावूर और गॅरीबाल्डीके विचारसे अिटलीका अर्थ था अिमेन्युअल या अिटलीका राजा और अुसके हुजूरी। मॅजिनीके विचारसे अिटलीका अर्थ था अिटलीके लोग — अुसके किसान। अिमेन्युअल वगैरा तो अुनके (प्रजाके) नौकर थे। मॅजिनीका अिटली अब भी गुलाम है। दो राजाओंके बीच शतरंजकी बाजी लगी थी। अिटलीकी प्रजा तो सिर्फ प्यादा थी और है। अिटलीके मजदूर अब भी दुखी हैं। अिटलीके मजदूरोंकी दाद फरियाद नहीं सुनी जाती अिसलिअे वे लोग खून करते हैं, विरोध करते हैं, सिर फोड़ते हैं और वहां बलवा होनेका डर आज भी बना हुआ है। आस्ट्रियाके जानेसे अिटलीको क्या लाभ हुआ? जिन सुधारोंके लिअे जंग मचा वे सुधार हुअे नहीं, प्रजाकी हालत सुधरी नहीं।

हिन्दुस्तानकी अैसी दशा करनेका तो आपका अिरादा नहीं ही होगा। मैं मानता हूं कि आपका विचार हिन्दुस्तानके करोड़ों लोगोंको सुखी करनेका होगा, यह नहीं होगा कि आप या मैं राजसत्ता ले

* हरिजन १५-२-'७
† यंग अिंडिया २१-५-'२५
‡ यंग अिंडिया १५-११-'२८

हूँ। अगर असा है तो हमें अब यह विचार करना चाहिये। वह यह कि प्रजा स्वतंत्र कैसे हो?'' *

साम्यवादियोंका सिद्धान्त — साम्यवादी दलील करते हैं कि वे लोग व्यवहारवादी हैं, काल्पनिक आदर्शवादी विचारोंका अुनके लिअे कोअी अुपयोग नहीं है। ये समाजवादी क्रान्तिके द्वारा मनुष्यके वर्तमान स्वभावको बदलनेकी अिच्छा और आशा रखते हैं। मनुष्य अपनी विवेक-बुद्धिके बजाय अपनी आदतोंसे अधिक परिचालित होता है। और अिसलिअे अुसकी वर्तमान आदतोंको बदलनेके लिअे शक्तिका अुपयोग करना जरूरी है। समय पाकर लोगोंको नये मूल्योंका पालन करनेकी अुनके अनुसार चलनेकी आदत पड़ जायगी। पूंजीवादी समाजमें लोग दूसरोंके शोषण और अपने स्वार्थोंकी सिद्धिकी वृत्ति रखते हैं, अुसके बजाय अुस समय वे समाजके लाभके लिअे काम करनेकी वृत्ति अपनायेंगे। अिस स्थितिके निर्माणकी दिशामें पहला कदम यह है कि समाजका सर्वहारा वर्ग अर्थात् मजदूर वर्ग हिंसाके द्वारा राज्य पर अधिकार कर ले। साम्यवादियोंकी मान्यताके अनुसार पूंजीवादी राज्यकी जगह मजदूर वर्गके राज्यकी स्थापना हिंसक विद्रोहके बिना नहीं हो सकती। मजदूर वर्गके राज्यकी स्थापना पहली मंजिल है अुसके बाद रास्ता आसान हो जाता है। फिर अुसका अुपयोग समाजको शोषणकी बुराअीसे मुक्त करनेके लिअे होना चाहिये। पूंजीवादी शोषण जब तक बिलकुल खतम न हो जाय तब तक हिंसाका अुपयोग करते रह सकते हैं। मजदूर वर्गका राज्य सदा कायम रखनेकी बात नहीं है अुसकी कल्पना पहली मंजिलके तौर पर की गयी है। आखिरी मंजिल राज्यके विलयकी होगी। असी आशा की जाती है कि शोषणकी बुराअीके निर्मूलन और लोगोंके मनमें नये मूल्योंकी प्रतिष्ठाके परिणाम-स्वरूप राज्यके विलयकी यह आखिरी मंजिल आ जायगी।

तानाशाही — अत्याचारका साधन — गांधीजी साम्यवादियोंके अिस सिद्धान्तका खंडन करते हैं। वे अुनकी अिस मान्यताका अस्वीकार करते हैं कि हिंसा हमें राजनीतिक अराजकताकी दिशामें ले जा सकती है। चाहे तानाशाहीमें वह मजदूर वर्गकी हो या किसी और वर्गकी बिलकुल भी विश्वास नहीं है। असा राज्य तानाशाहके हाथमें अत्याचारका ही साधन बन रहेगा। अिसलिअे गांधीजी तानाशाहका अथवा राज्यको असे अपरिमित अधिकार देनेके पक्षमें नहीं हैं। दूसरे शब्दोंमें वे किसी भी तरहकी सत्ता द्वारा शासन-व्यवस्थाकी वेदी पर जनताका बलिदान नहीं करना चाहते। वे यह तो मानते हैं कि मनुष्य ज्यादातर अपनी पड़ी हुअी आदतोंसे परिचालित

* हिन्द स्वराज्य प्र० १५, १९५९।

होता है किन्तु साथ ही वे यह भी महसूस करते हैं कि मनुष्य अपनी बुद्धि और सकल्प-शक्तिका असा विकास कर सकता है कि शोषणकी बुराअीको अहिंसाके द्वारा ही बहुत दूर तक कम करना सभव हो जाय। यह प्रक्रिया शायद धीमी सिद्ध हो किन्तु अतिम सफलता निश्चित है — अुतनी ही निश्चित जितनी की कहानीके खरगोशकी। और अन्तमें गाधीजीका स्वराज्य देशवासियोंके किसी अेक या अेकाधिक वर्गोंके लिअे नहीं है वह सबके लिअे है। शर्त अितनी ही है कि सब वर्गोंको सामान्य जनताके हितोंको सर्वोपरि स्वीकार करना होगा।

अब हम साम्यवादियोंकी विविध मान्यताओंके विषयमें गाधीजीके विचार अुन्हींके शब्दोंमें सुनें

साम्यवादी सिद्धात पर गाधीजीके विचार

(अ) साधनोंकी शुद्धिका महत्त्व

१ समाजवाद अेक सुदर शब्द है और जहा तक मुझे मालूम है, समाजवादमें समाजके सब सदस्य बराबर होते हैं — न कोअी नीचा होता है न कोअी अूचा। किसी व्यक्तिके शरीरमें सिर सबसे अूपर होनेके कारण अूचा नहीं होता और न पैरके तलवे जमीनको छूनेके कारण नीचे होते हैं। जैसे व्यक्तिके शरीरके सब अग बराबर होते हैं वैसे ही समाजरूपी शरीरके सारे अग भी बराबर होते हैं। यही समाजवाद है।

यह समाजवाद स्फटिककी तरह शुद्ध है। अिसलिअे असे सिद्ध करनेके साधन भी शुद्ध ही होने चाहिये। अशुद्ध साधनोंसे प्राप्त होनेवाला साध्य भी अशुद्ध ही होता है। अिसलिअे राजाका सिर काट डालनेसे राजा और प्रजा बराबर नहीं हो जायेंगे। और न मालिकका सिर काटनेसे मालिक और मजदूर बराबर हो जायेंगे। हम असत्यसे सत्यको प्राप्त नहीं कर सकते। सत्यमय आचरण द्वारा ही सत्यको प्राप्त किया जा सकता है। क्या अहिंसा और सत्य दो चीजें हैं? हरगिज नहीं। अहिंसा सत्यमें और सत्य अहिंसामें छिपा हुआ है। अिसलिअे मैं कहता हूँ कि वे अेक ही सिक्केके दो पहलू हैं। वे अेक दूसरेसे अभिन्न हैं। सिक्केको किसी भी तरफसे पढ़ लीजिये। केवल पढ़नेमें ही फर्क है — अेक तरफ अहिंसा है दूसरी तरफ सत्य। दोनोंका मूल्य अेक ही है। सम्पूर्ण शुद्धताके बिना यह दिव्य स्थिति अप्राप्य है। मन या शरीरकी अशुद्धि रखी और आपमें असत्य और हिंसा आअी।

'अिसलिअ सत्य-परायण अहिंसक और शुद्ध हृदय समाजवादी ही भारत और संसारमें समाजवादी समाज स्थापित कर सकेंगे। जहां तक मैं जानता हूं संसारमें कोओी भी देश असा नहीं है जो शुद्ध समाजवादी हो। अपरोक्त साधनोंके विना असे समाजवादका अस्तित्वमें आना असंभव है।' *

२ 'अपने अुद्देश्यकी हम अत्यंत स्पष्ट व्याख्या कर लें और अुसे अच्छी तरह समझ लें फिर भी यदि हम अुसे प्राप्त करनेके साधनोंको जानते न हों या जानते हुअे भी अुनका अुपयोग न करते हों, तो हम अुसको पार नहीं कर सकते। अिसलिअ मैंने अपना प्रयत्न मुख्यतः साधनों पर व अुनके क्रमिक अुपयोग पर ही केन्द्रित किया है। मैं जानता हूं कि यदि हम अपने साधनोंकी ठीक परवाह करें, तो अुद्देश्यकी प्राप्ति सुनिश्चित है। मैं यह भी महसूस करता हूं कि अुद्देश्यकी दिशामें हमारी प्रगति ठीक अुसी अनुपातमें होगी जितने कि हमारे साधन शुद्ध होंगे। ... हम जानते हैं कि राजा, जमींदार और वे सभी जो अपने अस्तित्वके लिअ जनताके शोषण पर निर्भर करते हैं हमारा अविश्वास करना या हमसे डरना छोड़ देंगे, यदि हम अुन्हें अपने साधनोंकी पवित्रताका विश्वास दिला दें। हम किसीके साथ जोर जबरदस्ती नहीं करना चाहते। हम तो अुनका हृदय-परिवर्तन करना चाहते हैं। यह कार्य-पद्धति शायद लम्बी मालूम हो, और संभव है बहुत ज्यादा लम्बी मालूम हो लेकिन मेरा निश्चित विश्वास है कि वही सबसे छोटी है।' †

३ 'हम कार्य-पद्धति या साधनोंकी शुद्धता पर जोर देते हैं। साधनोंको मैं अुद्देश्य जितना ही बल्कि अुससे भी ज्यादा महत्त्व देता हूं। कारण साधनों पर तो हमारा कुछ काबू होता है किन्तु यदि साधनों परसे हमारा काबू अुठ जाय तो अुद्देश्य पर बिलकुल ही नहीं होता।' ‡

४ 'अब छिपकर गुप्त रूपसे काम करनेका सवाल है। मेरा हमेशा यह दृढ़ मत रहा है — और आज भी वह अुतना ही दृढ़ है — कि गुप्त रूपसे काम करनेकी पद्धतियोंका संपूर्ण बहिष्कार होना चाहिये। अिस सिद्धान्तमें मैं कोओी अपवाद नहीं कर सकता। गुप्तताके कारण हमें बहुत कठिनाओी अुठानी पड़ी है और यदि दुश्मनके साथ

---

* हरिजन १३-७-'४७

† डी० जी० तेन्दुलकर, महात्मा खं० ३ पृ० ३७६।

‡ वही, पृ० ३८४।

अुसका विरोध करके हमने अुसे बंद नहीं किया तो हमारा आन्दोलन नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा। असी विशेष परिस्थितियोंकी कल्पना की जा सकती है जिनमें गुप्त कार्य-पद्धतियां आवश्यक मालूम हों और अुनकी जरूरत जान पड़े। लेकिन मैं जनताके हितके लिअ जिसे हम निडर होना सिखाना चाहते हैं अुस लाभका त्याग कर दूंगा। मैं यह कहूं असा सोचनेका अवसर देकर कि विशेष परिस्थितियोंमें वे गुप्त कार्य-पद्धतियोंका आश्रय ले सकते हैं अुनके मनमें भ्रम पैदा नहीं करूंगा। गुप्तता सविनय प्रतिरोधकी भावनाके विकासमें बाधक है। *

५ मैं छिपकर किये जानेवाले किसी कामकी सराहना नहीं करता। मैं जानता हूं कि देशके करोड़ों स्त्री-पुरुष छिपकर काम नहीं कर सकते। कुछ मुट्ठीभर लोग यह सोच सकते हैं कि पानीदार हलचलोंके जरिये वे करोड़ोंके लिअ स्वराज्य ला सकेंगे। लेकिन क्या यह बच्चोंको चम्मचसे दूध पिलाने जैसी बात न होगी? आम जनता तो खुली चुनौती और खुले कामोंका रास्ता ही अपना सकती है। असली स्वराज्यकी झांकी तो स्त्रियों पुरुषों और बच्चों सभीको होनी चाहिये। अस मकसदके लिअ मेहनत करना ही सच्ची क्रान्ति होगी। हिन्दुस्तान दुनियाकी सभी शोषित जातियोंके लिअ अेक नमूना बन गया है क्योंकि हिन्दुस्तानकी लड़ाअी खुली है और बिना हथियारोंके लड़ी जा रही है। अिस लड़ाअीमें आजादीको हड़प कर बैठे हुओंको चोट पहुंचानेमें बिना किसीसे कुरबानी चाही जाती है। अगर यह लड़ाअी खुली और निर्भयी न होती तो करोड़ों हिन्दुस्तानियोंमें आजकी जागृति न आअी होती। जब जब अिस सीधे रास्तेको छोड़ा गया तब तब थोड़ी देरके लिअे विकासशील क्रान्तिमें रुकावट पड़ी है। ‡

६ मुझे स्वीकार करना चाहिये कि बोल्शेविज्म शब्दका अर्थ मैं अभी तक पूरा पूरा नहीं समझा हूं। मैं अितना ही जानता हूं कि अुसका अुद्देश्य निजी सम्पत्तिकी संस्थाको मिटाना है। यह तो अपरिग्रहके नैतिक आदर्शको अर्थके क्षेत्रमें प्रयुक्त करना हुआ और यदि लोग अिस आदर्शको स्वेच्छासे स्वीकार कर लें या अुन्हें शांतिपूर्वक समझाया जाय और अुसके फलस्वरूप वे असे स्वीकार करें तो अिससे अच्छा कुछ हो ही नहीं सकता। लेकिन बोल्शेविज्मके बारेमें मुझे जो कुछ जाननेको मिला है अुससे असा प्रतीत होता है कि यह न केवल हिंसाके प्रयोगका बहिष्कार नहीं करता बल्कि निजी

---

* डी० जी० तेन्दुलकर महात्मा खं० ३ पृ० ३७७।

‡ हरिजनसेवक ३-३-४६

सम्पत्तिके अपहरणके लिअे और अुसे राज्यके स्वामित्वके अधीन बनाये रखनेके लिअे हिंसाके प्रयोगको खुली छूट देता है। और यदि असा है तो मुझे यह कहनेमें कोअी संकोच नहीं कि बालशेविक शासन अपने मौजूदा रूपमें ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकता। कारण मेरा दृढ़ विश्वास है कि हिंसाकी नींव पर किसी भी स्थायी रचनाका निर्माण नहीं हो सकता। *

(आ) तानाशाही और राज्य नियंत्रित समाजवादकी बुराअियां

७ मैं अुदार अथवा किसी तरहकी तानाशाहीको मंजूर नहीं कर सकता। अुसमें धनियोंका लोप नहीं होगा और न गरीबोंकी हिफाजत होगी। निश्चय ही कुछ धनी मारे जायेंगे और गरीब मोहताज असहाय हो जायेंगे। अब बदले रूपमें धनिक रह जायेंगे और अुदार विज्ञापनके बावजूद गरीबोंका वर्ग भी बना रहेगा। असली दवा अहिंसात्मक लोकतंत्र है जिसे दूसरे रूपमें सबका सच्चा शिक्षण कह सकते हैं। धनियोंको गरीबोंकी सेवाके और गरीबोंको स्वावलम्बनके सिद्धान्तकी शिक्षा दी जानी चाहिये। †

८ मेरे समाजवादका अर्थ है सर्वोदय। मैं गूंगे, बहरे और अंधोंको मिटाकर अुठना नहीं चाहता। अुनके समाजवादमें अिन लोगोंके लिअे कोअी जगह नहीं है। भौतिक अुन्नति ही अुनका अेकमात्र मकसद है। मसलन अमरिकाका मकसद है कि अुसके हर शहरीके पास अेक मोटर हो। मेरा यह मकसद नहीं। मैं अपने व्यक्तित्वके पूर्ण विकासके लिअे आजादी चाहता हूं। अगर मैं चाहूं तो आसमानमें टिमटिमाते तारों तक पहुंचनेकी निसैनी बनानेकी आजादी मुझे मिलनी चाहिये। अिसका मतलब यह नहीं कि मैं अभी कोअी बात करूंगा ही। दूसरी तरहके समाजवादमें व्यक्तिगत आजादी नहीं है। अुसमें आपका कुछ नहीं होता, आपका अपना शरीर भी आपका नहीं होता। ‡

(अि) आदतके बजाय विवेक बुद्धिके अनुसार आचार जीना

९ यह स्वीकार करते हुअे भी कि मनुष्य वास्तवमें आदतोंके बल पर जीवित रहता है, मेरा विचार है कि अुसका अपनी संकल्प शक्तिको आचरणमें अुतारकर जीना अधिक अच्छा है। मैं यह भी विश्वास रखता हूं कि मनुष्यमें अपनी संकल्प शक्तिको अिस हद तक

---

* यंग अिंडिया, १५-११-२८

† हरिजनसेवक ८-६-४०

‡ हरिजनसेवक ४-८-४६

विकसित करनेकी क्षमता है जो शोषणको घटाकर कमसे कम कर दे। मैं राज्यकी सत्ताकी वृद्धिको बड़ेसे बड़े भयकी दृष्टिसे देखता हूं। क्योंकि जाहिरा तौर पर तो वह शोषणको कमसे कम करके लाभ पहुंचाती है, परन्तु व्यक्तित्वको नष्ट करके — जो सब प्रकारकी अुन्नतिकी जड़ है — वह मानव-जातिको बड़ीसे बड़ी हानि पहुंचाती है। *

१० जिस बाद तक पहुंचनेके लिअ हम अेक-दूसरेकी तरफ ताकते न बैठें। जब तक सारे लोग समाजवादी न बन जायं तब तक हम कोअी हलचल न करें, अपने जीवनमें कोअी फेरफार न करके हम भाषण देते रहें, पार्टियां बनाते रहें और बाज पक्षीकी तरह जहां शिकार मिल जाय वहां अुस पर टूट पड़ें — यह समाजवाद हरगिज नहीं है। समाजवाद जैसी शानदार चीज झपट्टा मारनेसे हमसे दूर ही जानेवाली है।

समाजवादकी शुरुआत पहले समाजवादीसे होती है। अगर अेक भी असा समाजवादी हो तो अुस पर सिफर बढ़ाये जा सकते हैं। पहलेसे सिफरसे अुसकी कीमत दसगुनी बढ़ती जायगी। लेकिन अगर पहला सिफर ही हो दूसरे शब्दोंमें अगर कोअी आरंभ ही न करे तो अुसके आगे कितने ही सिफर क्यों न बढ़ाये जायं अुनकी कीमत सिफर ही रहेगी। सिफरोंको लिखनेमें मेहनत और कागजकी बरबादी ही होगी। ‡

११ यह प्रश्न हो सकता है कि जिस प्रकार मनुष्य-स्वभावमें परिवर्तन होनेका अुल्लेख अितिहासमें कहां देखा गया है? व्यक्तियोंमें तो असा हुआ ही है। लेकिन बड़े पैमाने पर समाजमें परिवर्तन हुआ है, यह शायद सिद्ध न किया जा सके। जिसका अर्थ अितना ही है कि व्यापक अहिंसाका प्रयोग आज तक नहीं किया गया। हम लोगोंके हृदयमें अिस झूठी मान्यताने घर कर लिया है कि अहिंसा व्यक्तिगत रूपसे ही विकसित की जा सकती है और वह व्यक्ति तक ही मर्यादित है। दरअसल बात असी नहीं है। अहिंसा सामाजिक धर्म है। सामाजिक धर्मके तौर पर अुसे विकसित किया जा सकता है यह मनवानेका मेरा प्रयत्न और प्रयोग चल रहा है। †

(आ) गांधीजीका मार्ग — शिक्षा और सत्याग्रह

१२ स्वराज्यकी तीर्थयात्रा बड़ी कठिन और बड़ी कष्टप्रद चढ़ाअी है। अुसके मानी हैं देहातियोंकी सेवा करनेके ही अुद्देश्यसे

* दि माडर्न रिव्यू अक्तूबर १९३५।
‡ हरिजन १३–७–४७
† हरिजन २५–८–४०

देहातमें प्रवेश करना — दूसरे शब्दोंमें जिसका अर्थ है राष्ट्रीय शिक्षा — जनताकी शिक्षा। जिसका अर्थ है जनताके अन्दर राष्ट्रीय चेतना और जागृति उत्पन्न करना। वह काओी जादूके आमकी तरह अचानक नहीं टपक पड़ेगा। वह तो वटवृक्षकी तरह प्रायः बे मालूम — अनन्त रूपसे बढ़ेगा। खूनी क्रान्ति कभी चमत्कार नहीं दिखा सकती। *

१३ लेकिन यह याद रखना चाहिये कि जिस तरहके सुधार तुरन्त नहीं किये जा सकते। अगर ये सुधार अहिंसात्मक तरीकोंसे करने हैं, तो जमींदारों और गैर-जमींदारों दोनोंको सुरक्षित बनाना लाजिमी हो जाता है। जमींदारोंको यह विश्वास दिलाना होगा कि अुनके साथ कभी जोर-जबरदस्ती नहीं की जायगी और गैर जमींदारोंको यह सिखाना और समझाना होगा कि अुनसे अुनकी मरजीके खिलाफ अवश्य कोअी काम नहीं ले सकता और कष्ट-सहन या अहिंसाकी कलाको सीखकर वे अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। अगर जिस लक्ष्यको हमें प्राप्त करना है तो ऊपर मैंने जिस शिक्षाका जिक्र किया है अुसका आरम्भ अभीसे हो जाना चाहिये। जिसके लिअे पहली जरूरत असा वातावरण तैयार करनेकी है जिसमें पारस्परिक आदर और सद्भावना सुमेल हो। अुस अवस्थामें वर्गो और आम जनताके बीच किसी प्रकारका अहिंसात्मक संघर्ष हो ही नहीं सकता। ‡

१४ अहिंसक कार्यकर्ताका अुद्देश्य हमेशा हृदय-परिवर्तन करना होना चाहिये। लेकिन अुस अनन्त काल तक प्रतीक्षा करते रहनेकी आवश्यकता नहीं है। जिसलिअे जब असे असा महसूस हो कि प्रतीक्षाकी सीमा आ गअी है तब वह खतरा अुठाता है और सक्रिय सत्याग्रहकी योजना बनाता है, जिसका रूप सविनय आज्ञाभंगका या असी ही किसी दूसरी चीजका हो सकता है। अुसका धीरज कभी भी अिस हद तक खतम नहीं होना कि वह अपने सिद्धान्तका त्याग कर दे। †

१५ कोअी आदमी सक्रिय रूपसे अहिंसक हो और फिर भी सामाजिक अन्यायके खिलाफ — भले वह कहीं भी घटित हुआ हो — खड़ा न हो, असा नहीं हो सकता, बल्कि अुसका विरोध अवश्य करेगा। दुर्भाग्यवश जहां तक मैं जानता हूं पश्चिमी समाजवादी समाजवादी सिद्धान्तोंको मूर्त रूप देनेके लिअे हिंसाकी आवश्यकतामें विश्वास करते हैं

* हिन्दी नवजीवन २१–५–२५

‡ हरिजनसेवक २०–४–४०

† यंग अिंडिया, ६–२–३०

मै सदासे यह मानता आया हू कि नीचेसे नीचे और कमजोरसे कमजोरके प्रति हम जोर-जबरदस्तीसे सामाजिक न्यायका पालन नही कर सकते। मै यह भी मानता आया हू कि पतितसे पतित लोगोको भी मुनासिब तालीम दी जाय तो अहिंसक साधना द्वारा सब प्रकारके अत्याचारोका प्रतिकार किया जा सकता है। अहिंसक असहयोग ही अुसका मुख्य साधन है। कभी कभी असहयोग भी अुतना ही कर्तव्यरूप हो जाता है जितना कि सहयोग। अपनी विफलता या गुलामीमें खुद सहायक होनेके लिअे कोअी बधा हुआ नही है। जो स्वतत्रता दूसरोंके प्रयत्न द्वारा — फिर वे कितने ही अुदार क्यो न हो — मिलती है वह अुन प्रयत्नोके न रहने पर कायम नही रखी जा सकती। दूसरे शब्दोंमें असी स्वतत्रता सच्ची स्वतत्रता नहीं है। लेकिन जब पतितसे पतित भी अहिंसक असहयोग द्वारा अपनी स्वतत्रता प्राप्त करनेकी कला सीख लेते है तो वे अुसके प्रकाशका अनुभव किये बिना नही रह सकते। *

१६ यह मै बिना किसी भयके और दृढतापूर्वक कहता हू कि हरअेक योग्य अुद्देश्य सत्याग्रहके द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। वह अुच्चतम और अमोघ अुपाय है और सबसे बडा बल है। समाजवादको हम किसी अन्य साधनसे नहीं पा सकते। सत्याग्रह समाजको राजनीतिक आर्थिक और नैतिक सारी बुराअियोसे मुक्त कर सकता है। ‡

समाजवादके नये युगका आरभ करनेके लिअे गाधीजी दुहरा हल सुझाते है (१) जनताकी शिक्षा और (२) सत्याग्रह। शिक्षा अेक लम्बी दीर्घकालीन प्रक्रिया है जब कि सत्याग्रह शिकायतके निराकरणका शीघ्र फलदायी और अचूक अुपाय है।

सत्याग्रहका सच्चा स्वरूप सत्याग्रहके सच्चे स्वरूपका वर्णन करते हुअे बरसों पूर्व श्री गोपाल कृष्ण गोखलेने कहा था कि वह मरल रक्षाका साधन है और नैतिक तथा आध्यात्मिक हथियारोंसे लडता है। सत्याग्रही अन्यायके खिलाफ लडता है और अिस प्रसगमें असे जो भी कष्ट सहना पडे खुशीसे सहता है। वह पशुबलके मुकाबलेमें आत्मबलको रखता है वह मनुष्यमें रहे पशुत्वके खिलाफ अुसके देवत्वको खडा करता है अत्याचारके खिलाफ कष्ट-सहन शक्तिके खिलाफ अपनी अन्तरात्मा अन्यायके खिलाफ अपनी श्रद्धा और असत्यके खिलाफ सत्यका भिडाता है। सत्याग्रहमें सत्यकी

* हरिजन २०-४-४
‡ हरिजन २०-७-४

स्थापनाके लिअे आवश्यक अहिंसक प्रतिरोधके सब सभव अुपायोका अन्तर्भाव होता है। असहयोग सविनय अवज्ञा या सविनय प्रतिरोध — वैयक्तिक या साम्प्रदायिक ये सब सत्याग्रहकी शाखायें है। अहिंसाके अुद्यानमें पनपनेवाले ये सब पौध सत्याग्रहकी ही सतान है। यहा अिनके लक्षणो और प्रयोगोकी चर्चाके लिअे स्थान नही है। लेकिन अितना कह देना आवश्यक है कि ये सब निर्दोष है। अिनमें से कुछ दूसरोकी तुलनामें अधिक शक्तिशाली है लेकिन अुनके प्रयोगमें विवेक और चतुराअीकी अपेक्षा अवश्य है। आवश्यकता होने पर अिन सबका प्रयोग अेकसाथ भी किया जा सकता है। यह तो स्पष्ट ही है कि सत्याग्रहकी कल्पना कमजोरोके हथियारके रूपमें नही की गयी है। सत्याग्रहीके कोशमें हारके लिअे कोअी स्थान नही है।

व्यावहारिक राजनीतिके बारेमें मतभेद व्यावहारिक राजनीतिमें भारतीय समाजवादियो और साम्यवादियोकी नीतियोके खिलाफ गाधीजीका विरोध वास्तविकताओकी सुदृढ और सही नीव पर आधारित था। सन १९३४ में काग्रेसके अदर समाजवादी पक्षके अुदयका अुन्होने स्वागत तो किया था, किन्तु अुनके कार्यक्रमसे अुन्होने अपनी असहमति प्रगट की थी। अुनकी असहमतिके कारण अिस प्रकार थे (१) अुसमें भारतीय परिस्थितियोकी अवगणना की गयी थी। (२) कार्यक्रममें बताये गये अनेक विधान यह मानकर किये गये थे कि विशिष्ट वर्गों और सामान्य जनतामें तथा मजदूरो और पूजीपतियोमें काफी जरूरी विरोध है और वे पारस्परिक लाभके लिअे कभी मिलकर काम नही कर सकते। (३) मजदूरोके अधिकारो पर अुचितसे ज्यादा जोर दिया गया था जब कि अुनके कर्तव्योके बारेमें कोअी निर्देश नही किया गया था। (४) अेक पक्षके रूपमें समाजवादी ज्यादा जल्दी कर रहे थे। (५) समाजवादी परिणामो पर ज्यादा जोर देते थे, जब कि गाधीजी साधनो पर जोर देते थे।

ये सब कारण भारतीय साम्यवादियोके बारेमें और भी ज्यादा सही थे। साम्यवादी अुचित और अनुचित अथवा सत्य और असत्यमें कोअी फर्क नही करते थे। दूसरी महत्वकी बात यह थी कि भारतके बजाय अुनकी भक्ति अुस विदेश या अुस विदेशी पार्टीके प्रति थी जिससे वे अपनी विचारधारा ग्रहण करते थे। अुनकी यह बात गाधीजीकी स्वाभिमानकी कल्पनाके बिलकुल विरुद्ध थी और वे अिसे अत्यत अपमानजनक मानते थे। गाधीजीका मत था कि जो देश स्वतत्र होते हुअे भी विदेशोके दानका मोहताज हो अुसे जीनेका हक नही है। यही बात विदेशी विचारधाराओके लिअे भी लागू है। वे अुन्हें असी हद तक ग्राह्य मानते थे जिस हद तक वे भारतीय परिस्थितियोंके अनुकूल बनाअी जा सकें और हजम की जा सकें।

शरीर श्रम

हमारे जीवनका बुनियादी नियम गांधीजीके कल्पनाके पंचायत राजमें हरअेक नागरिकसे यह आशा की जायगी कि वह शरीर-श्रमके द्वारा ईमानदारीसे अपनी जीविका कमाय। रस्किनकी 'अन्टु दिस लास्ट' पुस्तक पढ़नेके बाद गांधीजीने शरीर-श्रमके सिद्धान्तका आदर करना शुरू कर दिया था। और टाल्स्टायकी रचनाओंसे परिचित होने पर अुसने अनके लिअे अेक बुनियादी कानूनका रूप ले लिया। प्रत्येक पुरुष और स्त्रीको अपने हाथोंसे परिश्रम करके और काम करके ही अपनी जीविका कमाना चाहिये अिस सिद्धान्तका प्रतिपादन पहली बार टी० अेम० बान्दरेव्ह नामक अेक रूसी लेखकने किया था। टाल्स्टायने असे अपनाया और असे व्यापक प्रसिद्धि दी। अिस सिद्धान्तके पीछे विचार यह है कि प्रत्येक स्वस्थ व्यक्तिको अुतना शारीरिक परिश्रम अवश्य करना चाहिये जितना भोजनकी प्राप्तिके लिअे आवश्यक है और अपनी बौद्धिक क्षमताओंका अुपयोग असे अपनी जीविकाके अुपार्जन अथवा धन-संग्रहके लिअे नहीं बल्कि सिर्फ मनुष्य-समाजकी सेवाके लिअे ही करना चाहिये। * यह हमारे जीवनका बुनियादी नियम है।

रस्किनकी पुस्तक 'अन्टु दिस लास्ट' की शिक्षायें रोटीके लिअे किये जानेवाले अिस शरीर-श्रमके कअी रूप हो सकते हैं। अिस विषयमें गांधीजीका मार्गदर्शन 'अन्टु दिस लास्ट' की शिक्षाओंने किया था और अुन शिक्षाओंको गांधीजीने अिस प्रकार समझा था

(अ) सबकी भलाअीमें हमारी भलाअी निहित है।

(ब) वकील और नाअी दोनोंके कामकी कीमत अेकसी होनी चाहिये क्योंकि आजीविकाका अधिकार सबको अेक समान है।

(स) सादा मेहनत मजदूरीका किसानका जीवन ही सच्चा जीवन है। ×

आदर्श अुद्योग — खेती सच कहा जाय तो रोटीके लिअे किये जानेवाले शरीर-श्रमका सही रूप केवल खेती ही है। परंतु चूंकि हरअेक आदमीका खेती करना संभव नहीं है अिसलिअे खेतीके बदले वह कात सकता है बुन सकता है बढ़अीका काम कर सकता है या लुहारका काम कर सकता है। लेकिन आदर्श अुद्योग तो खेती ही है। अिसके सिवा हरअेकको अपना भंगी भी खुद ही होना चाहिये यानी अपना मैला स्वयं साफ करना चाहिये। दूसरे शब्दोंमें मानवीय

---

* हरिजन १४-११-४८

× आत्मकथा भाग चार प्र० १८ १९५७।

जीवनकी अनिवार्य आवश्यकताओंकी पूर्ति जिन चीजोंसे होती है अुनका निर्माण या अनिवार्य अुद्योगोंमें किया जानेवाला परिश्रम रोटीका श्रम माना जा सकता है।

जरूरी शर्तें — शरीर-श्रममें अपने-आपमें कोअी सेवा नहीं है। कामको कष्ट मानकर लाचारीसे अरुचिपूर्वक भी किया जा सकता है। यह तो गुलामोंकी ही हालत होगी। अिसलिअे रोटीके लिअे किये जानेवाले अिस शरीर-श्रमकी पहली शर्त यह है कि वह स्वेच्छापूर्वक किया जाना चाहिये। अधिकांश लोगोंको काममें आनन्द नहीं आता और महज कामके लिअे काम वे नहीं करते। अगर अपनी रोटी कमानेके लिअे काम करनेकी अुन्हें जरूरत न हो तो अुन्हें काम करनेकी प्रेरणा ही नहीं होती। गांधीजीकी तरह हमें परिस्थितियोंकी लाचारीके कारण नहीं बल्कि स्वेच्छापूर्वक श्रमिक बनना चाहिये।

गांधीजी कहते हैं कि "लाचारीसे मालिककी आज्ञा मानना गुलामीकी स्थिति है, जब कि स्वेच्छापूर्वक अपने पिताकी आज्ञाके पालनमें पुत्रत्वकी शोभा है। अिसी तरह शरीर-श्रमके नियमके लाचारीपूर्ण पालनसे गरीबी, बीमारी और असन्तोष पैदा होते हैं। यह गुलामीकी ही स्थिति है। किन्तु अुसका पालन स्वेच्छापूर्वक किया जाय तो वह सन्तोष और स्वास्थ्यको जन्म देता है।" *

रोटीके लिअे श्रमकी दूसरी विशेषता यह है कि वह बुद्धिपूर्वक किया हुआ होना चाहिये। बुद्धि और परिश्रममें कोअी विच्छेद नहीं है। अिस सिद्धान्तकी अवगणनाके कारण ही भारतीय गांवोंकी भयंकर अुपेक्षा हुअी है।

> "श्रमके साथ जो 'बुद्धिपूर्वक किया हुआ' विशेषण लगाया है वह यह बतलानेके लिअे लगाया है कि समाज-सेवामें श्रम तभी खप सकता है जब अुसके पीछे सेवाका कोअी निश्चित हेतु हो। नहीं तो यह कहा जा सकता है कि हरअेक मजदूर समाजकी सेवा करता है। अेक प्रकारसे तो वह समाजकी सेवा करता ही है, पर जिस सेवाकी यहां बात हो रही है वह बहुत अूंचे प्रकारकी सेवा है। जो मनुष्य सबके हितके लिअे सेवा करता है वह समाजकी सेवा करता है और जितनेसे अुसका पेट भर जाय अुतनी मजदूरी पानेका अुसे हक है। अिसलिअे अिस प्रकारका ब्रेड-लेबर समाज-सेवासे भिन्न नहीं है।" †

यह तो स्पष्ट ही है कि शरीर-श्रमके अिस सिद्धान्तका समाज-सेवासे कोअी विरोध नहीं है। सोच-समझकर किया हुआ शरीरका परिश्रम किसी भी समय समाज-सेवाका अुच्चतम रूप है। ‡ अुससे देशकी संपत्ति बढ़ती है।

* हरिजन २९–६–३५
† हरिजनसेवक १४–६–३५
‡ हरिजन १–६–३५

ग्रामोद्योगसे संबंधित सारी संस्थाओंमें स्वावलम्बी खादीको पहला स्थान दिया गया।*

जब जोर स्वावलम्बी खादी पर दिया जाने लगा तब व्यापारिक अुत्पादन शहरी लोगोंकी वास्तविक आवश्यकताओं तक सीमित हो गया।+ स्वावलम्बी खादी और बिक्रीवाली खादीका अुत्पादन दोनों साथ साथ चलते रहे। बिक्रीवाली खादीका अुत्पादन स्वावलम्बी खादीके अुत्पादनका गौण परिणाम हो गया।×

प्रारंभिक वर्षोंमें गरीबोंको राहत पहुंचाने पर जोर था। प्रसंगतः वह अमीरों और गरीबोंको जोड़नेवाली सजीव कड़ी बन गया और अुसे राजनीतिक महत्त्व प्राप्त हो गया। अभी तक सूत कातने और बुननेका काम सामान्य जनता करती थी। नयी योजनामें भी सामान्य जनता ही करती रही, किन्तु अुसका अुद्देश्य बदल गया। अब वह मुख्यतः अपने ही अुपयोगके लिअे कातने-बुनने लगी। गांधीजीने खादीके विकासमें जो दोष देखे अुनके कारण अिस परिवर्तनकी आवश्यकता हुअी। गांवोंके जो लोग सूत कातते और बुनते थे, वे अुसका अुपयोग खुद नहीं करते थे। वे खादीके अुपयोगकी कीमतको न तो समझते थे और न अुसकी कद्र करते थे। अिसलिअे अखिल भारत चरखा-संघने अपने सारे साधन गांववालोंको खादीधारी बनानेके प्रयत्नमें लगा दिये।—

खादीका अुद्देश्य आरम्भसे ही मौजूदा अस्वाभाविक रचनाको अुलटना था यद्यपि अुसमें शहरी लोगोंको बरबाद करनेका विचार कदापि नहीं था। मौजूदा रचनाको अुलटनेका अर्थ था गांवों और शहरोंके स्वाभाविक सम्बन्धको पुनः स्थापित करना।† खादीका यह अुद्देश्य लगभग वैसा ही था जैसा कि अस्पृश्यता निवारणका। तथाकथित अुच्च वर्गोंने वर्षों तक निचले वर्गोंकी अुपेक्षा की थी। खादीने अुच्च वर्गवालोंको निचले वर्गोंके हितमें प्रायश्चित्त करनेका मौका देकर अिस दुहरी बुराअीको निर्मूल करनेका काम किया।‡

> खादीके फलितार्थ "खादीमें जो चीजें समायी हुअी हैं अुन सबके साथ खादीको अपनाना चाहिये। खादीका अेक मतलब यह है कि

* हरिजन २६–१०–'३५
\+ हरिजन ६–३–३५
× हरिजन २६–१०–'३५
− हरिजन २१–३–४६
† वही
‡ हरिजन ६–७–'३५

हममें से हरअेकको सम्पूर्ण स्वदेशीकी भावना बढ़ानी और टिकानी चाहिये यानी हमें अिस बातका दृढ़ संकल्प करना चाहिये कि हम अपने जीवनकी सभी जरूरतोंको हिन्दुस्तानकी बनी चीजोंसे और अुनमें भी हमारे गांवोंमें रहनेवाली आम जनताकी मेहनत और अकलसे बनी चीजोंके जरिये पूरा करेंगे। अिस बारेमें आजकल हमारा जो रवैया है, अुसे बिलकुल बदल डालनेकी यह बात है। मतलब यह कि आज हिन्दुस्तानके सात लाख गांवोंको चूसकर और बरबाद करके हिन्दुस्तानके जो दस-पांच शहर मालामाल हो रहे हैं अुनके बदले हमारे सात लाख गांव स्वावलम्बी और स्वयंपूर्ण बनें और अपनी राजी खुशीसे हिन्दुस्तानके शहरों और बाहरकी दुनियाके लिअे अिस तरह अुपयोगी बनें कि दोनों पक्षोंको फायदा पहुंचे। *

खादी देशमें रहनेवाले सब लोगोंकी आर्थिक आजादी और समानताका आरम्भ बतलाती है। वह भारतीय मानव-समुदायकी अेकता और समानताकी प्रतीक है और अिसलिअे पंडित नेहरूके शब्दोंमें अुसे भारतीय आजादीकी पोशाक कहा जा सकता है। †

अेडम स्मिथने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'वेल्थ आफ नेशन्स' में आर्थिक प्रक्रियाका नियंत्रण करनेवाले सिद्धान्तोंका निरूपण किया है। अुसमें असने अेन बातोंका भी वर्णन किया है जो अिन आर्थिक सिद्धान्तोंके व्यापारमें बाधा अुपस्थित करती हैं। वह अिन बातोंमें मानवीय अपादान को मुख्य मानता है। दूसरी ओर खादीका सारा अर्थशास्त्र अिस मानवीय अपादान पर ही आश्रित है। खादीके अर्थशास्त्रके अनुसार बाधा अुपस्थित करनेवाली बात मनुष्यका स्वार्थ है जिसे अेडम स्मिथ शुद्ध आर्थिक हेतु बताता है। अिस तरह खादीके अर्थशास्त्रकी दृष्टि अेडम स्मिथकी अथवा प्रचलित अर्थशास्त्रकी दृष्टिसे ठीक अुलटी है। अिसलिअे मिलके कपड़के अुत्पादनमें जो आर्थिक नियम लागू होते हैं वे खादीके अुत्पादनमें लागू नहीं होते। व्यापारिक दृष्टिसे किये जानेवाले अुत्पादनमें मालकी गुणवत्ताको कम करना असमें घटिया किस्मके मालका मिश्रण करना और लोगोंकी कुरुचिको अुभाडने और तृप्त करनेवाले मालका निर्माण करना आदि अुपायोंका सदा प्रयोग होता है। खादीमें मालकी खपतके लिअे अिन अुपायोंके अवलम्बनका अुपयोग अेकदम वर्जित है। अिसी तरह असमें कारीगरोंको कमसे कम मजदूरी देने और ज्यादासे ज्यादा मुनाफा कमानेके नियमका भी कोअी स्थान नहीं है। खादीमें बिक्रीसे होनेवाली सारी आय मूल अुत्पादकोंको पहुंचा दी जाती है

---
* रचनात्मक कार्यक्रम १९९९।
† वही

बीचवाल लागाको अनका मेहनताना भर मिलता है असमे अधिक कुछ नही। *
'खादी यापारिक युद्धकी नही यापारिक शातिकी निशानी है।' +

सबसे बडी सहकारी मडली कताओके अुद्योगकी सफलताके लिअे सहकारकी अनिवाय आवश्यकता है। हाथ-कताओका प्रचार करके गाधीजी अपने गव्दमें दुनियाकी सबसे बडी सहकारी मडलाको स्थापना कर रहे थे। अनका यह दावा बहुत बडा जरूर था, किन्तु वह गलत नही था। वह गलत नही था क्याकि हाथ-कताओ अपना माना हुआ मकसद तब तक पूरा नही कर सकती जब तक कि अुसमें लगे हुअे लाखा लोग सचमुच सहयोगसे काम न करे। अिस अुद्यागमें सहयोग आरम्भसे ही जरूरी है। हाथ-कताओ आदमीको आत्म निभर बनाती है पर साथ ही वह अुसे अिस बातको समझनेकी सुविधा और प्ररणा भी देती है कि अिस अुद्योगमें हर कदम पर परस्परावलम्बनकी और मालके अुत्पादन तथा वितरणकी प्रक्रियामें अयत विशाल पमाने पर लाखा लोगोंके सहयोगकी आवश्यकता है। ×

सामान्य खादी केन्द्रका चित्र सामान्य खादी-केन्द्र कसा होना चाहिये अिसका वणन गाधीजीने अिस तरह किया है

> खादी-केन्द्रको शब्दके प्रत्यक अथमें स्वच्छ होना चाहिये तभी वह अुपयोगी हो सकता है। अुसके और अिस विशाल सघटनके दूसरे घटकोंमें जो सम्बन्ध है वह सवथा आध्यात्मिक और नतिक है। अिसलिअे प्रत्यक खादी-केन्द्र अेक सहकारी मडली है। ओटनेवाले धुनने वाले कातनेवाले बुननेवाले और खरीदनेवाले अिस मडलीके सदस्य है और व सब सेवा तथा पारस्परिक सद्भावनाके बधनोंसे अेक-दूसरेके साथ बधे हुअे है। †
>
> खादी सघटन अेक सेवा सस्था है खादी स्वराज्य प्राप्तिका सरल साधन है तो भी हमें अपनी खादी सस्थाओंको सिफ आर्थिक प्रवृत्तिके रूपमें ही चलाना है। असी सस्थाओंमें लोकशाहीका तत्त्व अेक अमुक अशमें ही दाखिल किया जा सकता है। लोकशाहीमें सघष और प्रतिस्पर्धाके लिअे भी स्थान होता है किन्तु आर्थिक सस्थामें यह बात कहा चल सकती है? यापारिक क्षत्रमें क्या हम अलग अलग दलों या परस्पर विरोधी पक्षोंकी कल्पना कर सकते है? अगर असा हो तो सारा यापार ही अस्तव्यस्त हो जाय। फिर खादीकी सस्थामें

---

* हरिजन २१-९-'३४
\+ यग अिंडिया ८-१२-'२१
× यग अिंडिया, १०-६-२६
† वही

तो महज आर्थिक संस्थायें नहीं हैं। उससे बढ़कर वे पारमार्थिक संस्थायें भी हैं। उनका उद्देश्य किसी भी प्रकारके स्वार्थ-साधनका नहीं किन्तु लोकहित-साधनका है। हमारी खादी संस्थाओंका ध्येय तो जनताके प्रेय साधनका नहीं किन्तु उसके श्रेय-साधनका है। इसलिए उन्हें रोज बदलते हुए लोकमतसे स्वतंत्र रहकर भी उसे कितनी ही बार अपना काम चलाना पड़ेगा। इन संस्थाओंको व्यक्तियोंकी महत्त्वाकांक्षा पोसनेका साधन तो बनना ही नहीं चाहिये। *

खादी और राजनीतिक संघटन खादी और राजनीतिक संघटन दो अलग अलग वस्तुयें हैं और बिल्कुल अलग अलग रखी जानी चाहियें। इस बातमें गलतफहमीके लिए कोई स्थान नहीं है। खादीका उद्देश्य मानव-सेवा है, लेकिन जहाँ तक भारतका सम्बन्ध है उसका राजनीतिक असर भी जरूर होगा और बहुत ज्यादा होगा। +

खादीकी एक आनुषंगिक विशेषता यह थी कि वह जन सम्पर्कका साधन थी। इसलिए यदि खादीके द्वारा लोगोंका आलस्य दूर किया जा सके तो यह आशा रखी जा सकती थी कि वे उनकी बात ध्यानसे सुनेंगे जो उनके पास उनकी जीविकाका साधन लेकर पहुँचते हैं। खादीके प्रचारका कार्यक्रम कार्यान्वित करते हुए तो यही ठीक था कि उद्देश्य शुद्ध मानव सेवाका हो यानी आर्थिक हो और उसमें किसी तरहका राजनीतिक हेतु न हो। खादीके द्वारा लोगोंको जिस संस्थाका उन्होंने खुद ही निर्माण किया हो आवश्यकता होने पर उसके खिलाफ सविनय भंगकी कला सिखाई जा सकती थी। यह कला सीखनेके बाद ही वे उस चीजको सफलतापूर्वक अमान्य कर सकते थे जिसका वे अहिंसक रीतिसे नाश करना चाहते हों। ×

अहिंसाका प्रतीक चरखा हमें सारी जनताकी भलाई करनेवाला राज्य दिलायेगा। वह गांवोंको राष्ट्रकी अर्थ रचनामें उनका उपयुक्त स्थान देता है और ऊँच नीचका भेदभाव मिटाता है। सन १९१९ में भारतकी स्वतंत्रताके प्रेमियोंको अहिंसा और चरखेका संदेश मिला और उन्हें यह बताया गया कि अहिंसा ही स्वराज्यका एकमात्र साधन है और चरखा अहिंसाका प्रतीक है। अहिंसाका चरखेके सिवा कोई दूसरा साधन नहीं है। चरखेके सार्वत्रिक प्रचारके बिना अहिंसाकी मूर्त अभिव्यक्ति संभव नहीं है। –

---

* हरिजनसेवक २६–१०–३४
+ मॉडर्न रिव्यू अक्तूबर १९३५।
× वही
– हरिजन १३–४–४०

अहिंसा पर आधारित समाज असे समुदायोंका ही बना हुआ हो सकता है जो गांवोंमें रहते हों और जो स्वेच्छापूर्ण सहयोगके द्वारा मनुष्यको शोभा देनेवाला शान्तिपूर्ण जीवन बिताते हों।*

स्वातंत्र्योत्तर युगमें खादीका स्थान स्वातंत्र्योत्तर युगमें खादीका कोओ स्थान है या नहीं, यह बेशक उपयुक्त सवाल है। अिस सवालका गांधीजीने निम्नलिखित जवाब दिया था:

'खादी अहिंसाके आधार पर खड़ी अेक जीवन-पद्धतिको प्रगट करती थी और करती है। सही हो या गलत, मेरी यह राय है कि खादी और अहिंसाके बराबर बराबर साथ हो जानेसे यह साबित होता है कि अिन तमाम वर्षोंमें हमने खादीके मुख्य गुणोंको अच्छी तरह नहीं समझा था। अिसलिअे कअी दिशाओंमें हम भाओ भाओकी लड़ाओ और अराजकताका दुःखद दृश्य देख रहे हैं। मुझे कोओ शंका नहीं कि कातना और खादीका बुनना पहलेसे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, यदि हमें असी आजादी लेनी है जिसे भारतकी ग्रामीण जनता अन्तःस्फूर्तिसे महसूस कर ले। यही अिस धरती पर आदर्श राज्य या रामराज्य कहा जायगा। खादीके द्वारा हम मनुष्य पर शक्ति द्वारा संचालित यंत्रोंका आधिपत्य स्थापित करनेके बजाय यंत्रों पर मानवकी प्रभुता स्थापित करनेकी कोशिश कर रहे हैं। खादीके द्वारा हम श्रम पर पूंजीकी धृष्ट विजयके स्थान पर पूंजीको श्रमके अधीन बनानेका प्रयत्न कर रहे हैं। अिसलिअे यदि भारतमें पिछले तीस सालोंमें की गओी कोशिश प्रतिगामी कदम नहीं था, तो हाथ-कताओ और असके साथ लगी हुओ सब बातोंको पहलेसे कहीं ज्यादा जोरसे और व्यापक बुद्धिके साथ आगे बढ़ाना चाहिये। ×

खादी ग्रामोद्योगोंका मध्यबिन्दु है। खादी केन्द्रीय सूर्य है और दूसरे ग्रामोद्योग ग्रहोंकी तरह असके चारों ओर घूमते हैं। अनका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। अिसी तरह खादी भी दूसरे अुद्योगोंके बिना नहीं जी सकती। वे पूरी तरह परस्परावलम्बी हैं। सच तो यह है कि हमें गांववाले भारत या शहरवाले भारत — अिन दोमेंसे अेकका चुनाव कर लेना है। गांव तबसे हैं जबसे भारत है। शहरोंको विदेशी आधिपत्यने पैदा किया है। आज तो शहरोंका बोलबाला है और वे गांवोंको जिस तरह चूस रहे हैं कि गांव जर्जर होकर नष्ट होते जा रहे हैं। मेरी खादी मनोवृत्ति मुझे बताती है कि जब यह आधिपत्य

* हरिजन १३-१-४०

× हरिजन २१-१२-४७

नही रहेगा तब शहरोको गावोकी मातहती करनी होगी। गावोका शोषण स्वय अेक संगठित हिंसा है। अगर हम चाहते है कि स्वराज्यका निर्माण अहिंसाके आधार पर ही हो तो हमें गावोको अनका अुचित स्थान देना पडेगा। यह हम कभी नही कर सकेंगे यदि हम देशी या विदेशी शहरो कारखानोमें तैयार हुई चीजोके बजाय ग्रामोद्योगकी वस्तुओका अुपयोग करके ग्रामोद्योगोका पुनरुद्धार नही करेंगे। *

अब यह बात स्पष्ट हो जायगी कि गाधीजी खादी और अहिंसाको अभिन्न क्यो मानते थे। खादी मध्य ग्रामोद्योग है। खादीका नाश हो जाय तो असके साथ गावोका और अहिंसाका नाश अनिवार्य हो जायगा। यह बात आकडोसे सिद्ध नही की जा सकती। जिसका प्रमाण तो हमारी आखोंके सामने मौजूद है।×

अन्य ग्रामोद्योग

रचनात्मक कार्योकी आवश्यकता सन् १९३३ के अंतिम और १९३४ के प्रारभिक दिनोमें गाधीजीका चलाया हुआ सविनय अवज्ञा आन्दोलन अपने सर्वोच्च बिंदुको पार कर चुका था और देशभरमें काग्रेस-जन यह सोच रहे थे कि अब क्या होगा। असा मालूम होता था कि जेलसे बाहर जो लोग रह गये थे वे सब किंकर्तव्य विमूढ हो गये थे। यो तो गाधीजी रचनात्मक काम पर हमेशा जोर देते ही थे किन्तु अिस समय अुन्हे अुसकी आवश्यकताका जैसा भान हुआ वैसा पहले कभी नही हुआ था। वास्तव रचनात्मक काम सन १९२० में काग्रेसका जो कार्यक्रम तैयार हुआ था अुसका अभिन्न अंग बन गये थे। लेकिन चूकि अनमें बाहरी तडक भडकका अभाव था अिसलिअ वे अुपेक्षाके शिकार हो गये थे। लेकिन सविनय अवज्ञा आन्दोलनको सफल बनाना हो तो राष्ट्रका काम रचनात्मक काय किये बिना नही चल सकता था। अगर प्रत्येक नागरिक स्वराज्यकी अिमारतके निर्माणमें रचनात्मक प्रवृत्तिके द्वारा अपना अपना हिस्सा देना सीख ले और असका महत्व समझने लगे तो क्षितिज पर फिलहाल प्रकाशका कोअी चिह्न न होते हुअ भी निराश होनेका कोअी कारण नही रहेगा। अिसलिअ सन १९३४ में गाधीजीने अखिल भारत ग्रामोद्योग संघकी स्थापना की। अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघका अहेश्य भारतके मरते हुअ ग्रामोद्योगोको पुन जीवित करना था।

ग्रामोद्योग खादीके पूरक ग्रामोद्योगोका दर्जा खादीसे अलग है। अनमें स्वेच्छापूर्वक किये जानेवाले कामके लिअ ज्यादा स्थान नही है। अुनमें से

* हरिजन २०-१-४०

× वही

प्रदेशमें काम करनेवालोंकी अेक सीमित संख्या ही समा सकती है। अुनका महत्त्व खादीके रूपमें सहायक पूरक अुद्योग होनेमें है। व खादीके बिना नहीं टहर सकते और अुनके अभावमें खादी अपनी शान खो देगी। गांवकी अर्थ रचना हाथ पिसाओ, हाथ कुटाओ, साबुन-साजी, कागज, दियासलाजी चमड़ेका काम तेलघानी आदि आवश्यक अुद्योगोंके बिना सम्पूर्ण नहीं हो सकती। यदि माग हो तो अिसमें शक नहीं कि हमारे गांव हमारी अधिकांश जरूरतोंकी पूर्ति कर सकते है।*

अुद्योग और खेती

सच्चा सामाजिक अर्थशास्त्र सच्चा सामाजिक अर्थशास्त्र हमें यह सिखाता है कि मालिक और मजदूर अेक ही अखंड शरीरके दो हिस्से है। अुनमें से कोओ भी अेक दूसरेसे बड़ा या छोटा नहीं है। अुनके हित अेक दूसरेके विरोधी नहीं बल्कि समान और अन्योन्याश्रित है।×

मालिकोंका कर्तव्य मालिकसे क्या अपेक्षा है? पहली अपेक्षा तो यह है कि वह अपने सब कार्योंमें पूरा आमानदारीका पालन करे। व्यापार पूरा आमानदारीके साथ चलाना कठिन तो है पर असंभव नहीं है। हां, यह बात सही है आमानदारीके द्वारा बहुत ज्यादा पैसा कमाना संभव नहीं है।+

व्यापारमें बेआमानी क्षम्य नहीं मानी जानी चाहिये। विशुद्ध आमानदारीका सिद्धान्त जैसा जीवनके दूसरे क्षेत्रोंको लागू है वैसा ही अिस क्षेत्रके लिअे भी वह आवश्यक है और व्यापारीको चाहिये कि अुसे कितना ही नुकसान क्यों न हो रहा हो वह अपने सिद्धान्तकी हत्या न करे।–

अिस बातमें दो मत नहीं हो सकते कि दूसरे व्यापारियोंकी तरह मिल मालिकोंको भी अपने मजदूरों और दूसरे कर्मचारियोंके कल्याणमें माता पिता जैसी दिलचस्पी रखनी चाहिये। अुनके सम्बन्ध मात्र मालिकों और नौकरोंके नहीं होने चाहिये।†

कभी मालिक अैसा समझते है कि अपने कामगारोंके प्रति अुनका कर्तव्य अुनकी भौतिक आवश्यकतायें पूरी कर देना है, अुससे अधिक कुछ नहीं। अिसी तरहके विचार रखनेवाले किसी चाय-बागानके मालिकने अेक बार गांधीजीको बिन-मांगी सलाह देते हुअे यह लिखा था कि वे असहयोग

* कन्स्ट्रक्टिव प्रोग्राम (१९४१), पृ० ११।
× यंग अिंडिया ३–५–२८
+ हरिजन २८–६–४६
– हरिजन १३–३–'३७
† यंग अिंडिया, ३–५–'२८

आन्दोलन स्थगित कर दें और मजदूरोंकी दशा सुधारनेके लिअ कानूनका आश्रय लें। अिसके बारेमें गांधीजीने यह लिखा था

> लेखक जिस स्वभावका प्रतिनिधित्व करता है असके नमूने मैंने नेटालमें और यहां चम्पारनमें दोनों जगह देखे हैं। अुसका हेतु शुभ है लेकिन अुसे नहीं मालूम कि वह अेक सहृदय या दयालु पशुपालमात्र है, अससे अधिक कुछ नहीं। अेक बार यह स्वीकार कर लिया जाय कि मनुष्योंके साथ पशुओं जैसा व्यवहार किया जा सकता है तो कितने ही यूरोपीय व्यवस्थापकोंको पशुओंके साथ किया जानेवाला निर्दयतापूर्ण व्यवहार रोकनेका ध्येय रखनेवाली संस्थाओंकी ओरसे दयालुताका प्रमाणपत्र दिया जा सकता है। मैं अपने अनुभवसे जानता हूं कि निःशुल्क दवा, निःशुल्क डाक्टरी सेवा, निःशुल्क आवास आदि सब अैसी युक्तियां मात्र हैं जिनका अुद्देश्य कुली को हमेशा गुलाम बनाये रखना है। मेरी रायमें अगर अुसे अपने कामका पूरा पारिश्रमिक दिया जाय और घर तथा दवा आदिका मूल्य अुससे वसूल किया जाय तो वह आजकी अपेक्षा कहीं ज्यादा स्वतंत्र होगा।*

गांधीजीकी रायमें डाक्टरी सहायता आदिकी सुविधायें मुफ्त नहीं दी जानी चाहियें। अलबत्ता अैसी व्यवस्था जरूर होनी चाहिये कि सुविधायें अुन्हें सरलतासे और सस्ते दामोंमें मिल सकें। मुफ्त दी जानेवाली सहायता जिन्हें यह सहायता दी जाती है अुनके स्वाभिमानको नष्ट कर देती है। अिसके सिवा अैसी सहायता कभी तो भावनाशून्य मनसे दी जाती है और कभी लेनेवाले अुसका दुरुपयोग करते हैं। तो यह जरूरी है कि अिन दोनों बुराअियोंका निराकरण हो और लोगोंको अुनसे बचाया जाय।×

मजदूरोंके अधिकार और कर्तव्य मजदूरोंके अधिकार और कर्तव्य क्या हैं? यह समझनेमें कोअी कठिनाअी नहीं होनी चाहिये कि अुन्हें अुतना अूंचीसे अूंची मजदूरी पानेका अधिकार है जितनी कि अुद्योग अपनी शक्तिके अनुसार दे सकता हो। और अुनका कर्तव्य यह है कि वे अपनी मजदूरीके अवजमें अपनी पूरी योग्यताके अनुसार काम करें।+

मजदूर जो चीज चाहते हैं और जो अुन्हें मिलनी चाहिये वह मात्र रोटियां नहीं है। असलमें वे समान दरजेके स्वमानी नागरिकोंकी हैसियतसे सम्योचित जीवन चाहते हैं, मनुष्यकी हैसियतसे न्याय चाहते हैं, अकस्मात् भयसे त्राण चाहते हैं। अिसके सिवा अेक स्वच्छ और आरोग्यकी दृष्टिसे

* यंग अिंडिया २९-६-२१

× यंग अिंडिया ३-५-२८

\+ स्पीचेज अॅंड राअिटिंग्स आफ महात्मा गांधी पृ० १०४५।

अुपयोगी आदतें सीखनेकी मितव्ययिता और अुद्योगपरायणता आदि गुणोंका विकास करनेकी तथा शिक्षाप्राप्तिकी आवश्यकता है।* अुन्हें सस्कारवान बनना चाहिये और अपने आचरणमें आत्म पवित्रता और ओमानदारी प्रगट करना चाहिये। और जिसके लिये अुनमें अखड अुद्योग आत्मत्याग और धैर्यके साथ तथा बुद्धिपूर्वक श्रम करनेकी शक्ति होनी चाहिये।

कामकी परिस्थितिया गाधीजीने मजदूरोंके हिताहित पर प्रभाव डालनेवाले दूसरे कओी सवालों — जैसे मजदूरोंके चुनावमें भ्रष्टाचारकी बुराओी, कामके घटे, अुनकी सुरक्षितता स्वास्थ्य आवासकी व्यवस्था आदि — पर भी विचार किया है, अुनके सम्बन्धमें लेख लिखे हैं। अुन्होंने सरदारों के जरिये मजदूरोंके चुनावकी प्रथाकी निन्दा की। अुन्होंने कहा कि मजदूरोंका चुनाव सरदारोंके यानी अैसे दलालोंके जरिये हो जिनका अुद्देश्य मजदूरोंको किसी भी तरह भर देना होता है तो मजदूरोंकी अिकरार (कान्ट्रेक्ट) की स्वतत्रता नहीं रहती। दलाल नौकरोंकी अिच्छा रखनेवाले आदमीके सामने कारखानेकी नौकरीकी बहुत बढिया तसवीर पेश करता है और अिस तरह अुसे अपना गाव छोडनेके लिअे ललचाता है लेकिन अतमें जब नौकरी स्वीकार करनेके बाद अुस आदमीको वस्तुस्थितिका पता चलता है तो वह बहुत निराशा अनुभव करता है। जब तक आसपास वहा अैसे गरीब लोग हो जो बेकार हैं और काम चाहते हैं तब तक बाहरसे मजदूर लाना गलत है।×

अुन्होंने कामके घटे — जो अुस समय बहुत ज्यादा थे — कम करनेके लिअे भी कहा। दुनियाका अनुभव बताता है कि कामके घटे ज्यादा होनेसे काम ज्यादा नहीं होता बल्कि कम ही होता है।+ जिन्हें ज्यादा घटे काम करना पडता है अुन्हें बौद्धिक और नैतिक विकासके लिअे काफी समय नहीं मिलता। जिसमें कोओी आश्चर्य नहीं कि अुनकी दशा पशुकी जैसी हो जाती है।— अिस अत्यन्त जरूरी सुधारको स्वेच्छापूर्वक कर डालनेके लिअे केवल थोडेसे साहस और आरम्भ-शक्तिकी ही जरूरत है। मालिक लोग अैसे अुदारता पूर्वक शुरू न करेंगे तो वह आगे-पीछे होनेवाला है ही। लेकिन अगर वह दबावके परिणामस्वरूप होगा तो अुसमें शोभा नहीं होगी। मजदूरोंके कामके घटे कम होने चाहिये यह अेक जगद्व्यापी आन्दोलन है जिसे कोओी रोक नहीं सकता।† सन् २० के अपने अेक भाषणमें गाधीजीने अहमदाबादके मिल

* हरिजन २९-९-'४६
× यग अिडिया २-९-२६
+ यग अिडिया २७-१०-२५
— यग अिडिया २८-४-२०
† यग अिडिया २२-१०-२५

मालिकोंसे कामके घंटे १२ से १० करनेके लिअे और मजदूरोंसे १० घण्टेमें ही १२ घण्टे जितना काम कर देनेका आग्रह किया था।*

अक दूसरी बुराओी जिसके कारण अमुक वर्गके मजदूरोंको बहुत कष्ट भोगना पड़ता है हदसे ज्यादा महनतवाला काम करनेकी है। रिक्शा खींचनेका काम करनेवालोंके बारेमें यह बात खास तौर पर सही है। अुन्हें मर्यादाके बाहर अितनी सख्त मेहनत करनी पड़ती है कि वे चार छह सालमें ही हृदय अथवा फेफड़ेके रोगके शिकार हो जाते हैं और मर जाते हैं। यह बात अुन्होंने अक पार्वतीय नगरमें रिक्शा खींचनेवाले मजदूरोंकी दशाका अध्ययन करनेके बाद कही थी। अुन्होंने कहा था मुझे आश्चर्य होता है कि रिक्शाका अुपयोग करनेवाले अितने निष्ठुर कैसे हो जाते हैं कि अुन्हें यही दिखाओ नहीं देता कि रिक्शा चालकोंको हदसे ज्यादा कठोर परिश्रम करना पड़ता है।×

बालकों द्वारा मजदूरी अुन्होंने अिस बातकी हिमायत की कि कारखानोंमें मजदूरोंके तौर पर लिये जानेवाले बालकोंकी अुम्र बढ़ा दी जाय।+

> छोटे छोटे बालक स्कूलोंसे अुठा लिये जायें और अुन्हें पैसा कमानेके लिअे मजदूरीके काममें लगा दिया जाय — यह वस्तु राष्ट्रीय पतनकी निशानी है। कोओ भी राष्ट्र अपने बालकोंका असा दुरुपयोग नहीं कर सकता। यदि वह असा करे तो अपने राष्ट्र-पदके अयोग्य ठहरेगा। कमसे कम सोलह वर्षकी अुम्र तक तो बालकोंको स्कूलोंमें रहनेका अवसर मिलना ही चाहिये। —

सुरक्षितता अपने अक लेखमें अुन्होंने अिंग्लैंडकी सरकार कारखानोंमें काम करनेवाले मजदूरोंकी सुरक्षितताका जैसा ध्यान रखती है अुसकी प्रशंसा की थी। न केवल गंदे अथवा हानिकर धंधोंमें लगे हुअे मजदूरोंकी सुरक्षाकी बल्कि जनताकी सुरक्षाकी योग्य व्यवस्थाके लिअे भी जो अुपाय किये जाने चाहियें अुन्हें ढूंढ़ निकालनेमें खूब सावधानी रखी गओी है। भारतमें हरिजनोंके साथ किये जानेवाले व्यवहारके साथ अिस बातकी तुलना करते हुअे अुन्होंने अिस लेखमें कहा था कि भारतकी आबहवामें भले और गंदे कामोंमें लगे हुअे तथाकथित अछूतोंकी सुरक्षाके लिअे और असा काम करनेवालोंकी छूतसे जनताकी सुरक्षाके लिअे अिंग्लैंडमें जितना ध्यान दिया जाता है अुससे भी ज्यादा ध्यान देनेकी जरूरत है। असे ध्यानके अभावमें ये मजदूर धूल और

---

* यंग अिंडिया २८–४–२०

× हरिजन १६–६–४६

\+ यंग अिंडिया २५–७–२९

— यंग अिंडिया २८–४–२० और ५–५–२०

गन्दगीके जीवित वाहन बन जायेंगे।* महतरोंकी सुविधा और सुरक्षाके लिअे अुन्होंने अैसे नियम बनानेको कहा कि अुन्हें अमुक प्रकारके जूते, बरतन और झाड़ू आदि दिये जायें जिससे अुन्हें गन्दगीको हाथसे स्पर्श करनेकी जरूरत न रहे। अिसके सिवा अुन्हें अैसी खास पोशाक भी दी जानी चाहिये जिसे वे कामके समय पहिनें। चालू पद्धतिका नतीजा यह होता है कि काम कमसे कम होता है, अस्वच्छता ज्यादासे ज्यादा होती है और साथ ही रिश्वत चलती है, भ्रष्टाचार फैलता है और सम्बद्ध लोग अशिष्टता सीखते हैं। अिसलिअे निरीक्षकों या अधिकारियों (अिन्स्पेक्टरों या ओवरसियरों) को खुदको अिस मानवोपयोगी कामको दूसरोंसे किसी भी तरह करा लेनेके बजाय खुद करनेकी तालीम मिलनी चाहिये।×

निर्धारित अल्पतम श्रेणीके घरोंकी व्यवस्था — औद्योगिक प्रतिष्ठान ३० से लगाकर ४०% तकका मुनाफा घोषित करते हैं, लेकिन अपने सबसे कम वेतन पानेवाले कर्मचारियोंके लिअे वे घरकी कोअी सुविधा नहीं देते। कअी जगह तो ये लोग जो मालिकोंको अितना मुनाफा कमाकर देते हैं बिलकुल अंधेरी और गन्दी कोठरियोंमें रहते हैं। कअी म्युनिसिपैलिटियां भी अपने कम वेतन पानेवाले कर्मचारियोंकी आवास-सम्बन्धी जरूरतोंके बारेमें अुपेक्षाका व्यवहार करती हैं। अिस सम्बन्धमें अुन्होंने अिस बातका आग्रह किया कि अविवाहित, विवाहित और बाल-बच्चेवाले लोगोंके लिअे अमुक अल्पतम श्रेणीके घरोंकी व्यवस्था होनी ही चाहिये। मालिकोंको कर्मचारियोंकी यह प्राथमिक जरूरत अवश्य ही पूरी करनी चाहिये।+

वेतन — वेतनके सवाल पर लिखे गये गांधीजीके लेखोंमें बहुत थोड़े ही अैसे हैं जिनमें अहमदाबादके कपड़ा-अुद्योग जैसे किसी बड़े अुद्योगमें प्रचलित वेतन-स्तरके बारेमें विचार किया गया हो। अिस विषयसे सम्बद्ध बापूके लेखोंमें हाथ-कताअी तथा अन्य गृह-अुद्योगोंमें अल्पतम वेतन या वेतनोंके मानीकरणकी चर्चा है।

अहमदाबादके कपड़ा-अुद्योगमें वेतनोंके झगड़े पर अपना निर्णय देते हुअे निर्णायकने यह सिद्धान्त पेश किया था कि जहां मजदूरको अितना वेतन नहीं मिलता जिससे वह समुचित जीवन-मानका निर्वाह कर सके वहां अुसे अपने मालिकसे वेतनको अुस हद तक बढ़ानेके लिअे कहनेका अधिकार है।– गांधीजीने निर्णायकके अिस साहसपूर्ण निर्णयका स्वागत किया था। मजदूरी

* हरिजन १–४–३९

× हरिजन ६–१०–४६

+ हरिजन ११–७–'४६

– यंग अिंडिया १२–१२–'२९

करके अपना पेट पालनेवाले अिन लाखों-करोड़ोंके साथ न्याय करनेके लिअे हमें अुन्हें अैसा वेतन देना ही चाहिये जिससे अुनका निर्वाह हो जाये। हमें अुनकी असहायताका लाभ नहीं अुठाना चाहिये।* सच तो यह है कि यदि कोअी अुद्योग यह अल्पतम जीवन-वेतन न दे सकता हो तो अुसे अपनी दुकान अठा लेनी चाहिये।×

यह अल्पतम वेतन अितना अवश्य होना चाहिये कि (१) मजदूरोंको अैसा सतुलित पर्याप्त और पोषक आहार मिल जाय + जिससे आदमी रोज आठ घटे अच्छी तरह काम कर सके अितना सशक्त बना रहे (२) अुसे पर्याप्त कपड़ा मिलता रहे और (३) ज्यादा अच्छा घर और दूसरी सामान्य सुविधायें मिलती रहें।−

हाथ-कताअीवालोंके लिअे अल्पतम मजदूरी तय करनेका विरोध कुछ लोगोंने अिस आधार पर किया था कि बुनकर खुद कम मजदूरीके पक्षमें अपना मत देंगे और किसी भी हालतमें कतैयेकी मजदूरी किसानकी मजदूरीसे अधिक नहीं होना चाहिये।† अिनमें से पहली दलील तो वही है जो सब शोषक और अत्याचारी दिया करते हैं। दूसरी दलीलके जवाबमें गाधीजीका यह कहना था कि किसानकी मजदूरी जैसी कोअी चीज नहीं है और किसानकी हालतको दूसरोंकी हालत कैसी होना चाहिये अिसका मानदण्ड (स्टैण्डर्ड) नहीं माना जा सकता। किसानको तो अपनी जमीनसे अितना भी नहीं मिलता कि वह भरपेट खा सके या अपनी जमीनका पूरा लगान भी चुका सके।‡ अखिल भारत चरखा-सघ और अखिल भारत ग्रामोद्योग-सघ जैसी जन हितकारी सस्थायें सस्ता खरीदने और महगा बेचनेकी व्यापारिक नीतिका अनुसरण नहीं कर सकतीं। कारण अुनका अुद्देश्य ग्रामोद्योगकी वस्तुओंका सस्ता अुत्पादन नहीं बल्कि बेरोजगारीसे पीड़ित गाववालोंको जीवन-वेतन दे सकनेवाला काम देना है।§ अिसलिअे मानदण्ड तो असी वेतनको माना जा सकता है जिससे किसानको अपनी रोजी रोटी मिल जाय। अिससे कुछ भी कम देनेकी कोशिश गुनाह जैसी ही है।⊕

* हरिजन १३–७–३५
× हरिजन ३१–८–३०
+ हरिजन १६–१–३७
− यग अिडिया १२–१२–२९
† हरिजन १४–९–३५
‡ वही
§ हरिजन १०–७–३५
⊕ हरिजन १४–९–३५

गांधीजीके सामने सबसे कठिन सवाल हाथ-कताओी और दूसरे ग्रामोद्योगोंके लिअ अल्पतम राष्ट्रीय वेतन निर्धारित करनेका था। और अुन्होंने अन्तमें यह निर्णय किया कि आठ घंटे डटकर काम करनेका मेहनताना आठ आना होना चाहिये। आठ घंटेके कामका अर्थ अच्छी योग्यतावाले कारीगरके द्वारा अुतने समयमें तैयार किया गया माल माना गया।*

अिसके सिवा अुन्होंने यह भी तय किया कि बिहारके कतवैयेको गुजरातके कतवैयेसे कम मजदूरी देनेका कोअी कारण नहीं है। अिसमें सन्देह नहीं कि जीवन मानमें अन्तर होनेके कारण अलग-अलग प्रान्तोंमें चीजोंके दामोंमें अन्तर है। लेकिन अखिल भारत चरखा-संघ परिस्थितियोंको अुनके मौजूदा रूपमें स्वीकार करनेके लिये बाध्य नहीं है। यदि वे अन्यायमूलक हैं तो संघको चाहिये कि वह अुन्हें बदले।×

यह याद रहे कि सन ३० और ४० के दरमियान गांवके कारीगरके लिअ आठ आने रोजकी मजदूरी नगण्य नहीं थी। अुस समय कारखानोंमें काम करनेवाले मजदूरोंको जो अल्पतम वेतन मिलता था अुससे यह अधिक ही था कम नहीं। अिस निश्चयके अनुसार अखिल भारत चरखा-संघने तीन चार सालके अंदर कताओीकी मजदूरी क्रमशः बढ़ाकर आठ आना प्रतिदिन करनेकी कोशिश की। लेकिन संघ अपने अिस प्रयत्नमें सफल नहीं हुआ। गांधीजीने अिस विषय पर लिखते हुअे निम्नलिखित विचार प्रगट किये:

> सामान्यतः गांवोंमें कहीं भी ग्रामीण मजदूरों अथवा कारीगरोंको आठ घंटेके कामके लिअ आठ आने नहीं मिलते। कतवैयोंको तब तक आठ आने प्रतिदिन देना संभव नहीं होगा जब तक कि दूसरे वर्गोंके मजदूरोंको अितना ही नहीं मिलने लगता। और जब तक परिस्थितियां बिलकुल बदल नहीं जातीं, तब तक खरीदनेवाले वर्गके पास अितना पैसा ही नहीं है कि वे सब किस्मके मजदूरोंको आठ आना रोज दे सकें। सेना पर होनेवाला अत्यंत भारी और अनुत्पादक खर्च देशको अेकदम तबाह कर रहा है। अिसके सिवा बड़े अधिकारियोंको दिये जानेवाले और देशके बाहर खर्च होनेवाले बड़े वेतनों और अुसी अनुपातमें बड़ी पेंशनों पर होनेवाला व्यय भी अेक कारण है। अिस बढ़ती हुअी गरीबीके कअी दूसरे आन्तरिक कारण भी हैं। —

ये सब कारण अपने-आपमें महत्त्वपूर्ण तो हैं लेकिन आठ आना प्रतिदिनकी मजदूरीका लक्ष्य क्यों असफल हो गया अिस बातको वे पूरी तरह

* हरिजन १३-७-३५
× हरिजन ६-७-'३५
— हरिजन २६-८-'३९

नहीं समझाते। पहले दिन गये अेक लेखमें अज्ञान अेक दूसरी महत्त्वपूर्ण बातका अुल्लेख किया था जो कि अिस स्थितिकी असफलताका मुख्य कारण थी। यह बात थी — खादीके शास्त्रका अज्ञान। गांवोंमें जो चरखा चल रहा था वह अुत्पादनका सक्षम (efficient) साधन नहीं था और अिसलिअे वह कातनेवालाको संतोषप्रद कमाओी नहीं दे सकता था। यह स्थिति आज भी कायम है। यही कारण है कि अखिल भारत खादी बोर्डको गम्भीर विचारके बाद अिस निर्णय पर आना पड़ा कि चरखेकी कार्यक्षमता बढ़ाना चाहिये। असने चरखेका अेक सुधरा हुआ रूप चलाया है जिसकी आजकल देशभरमें फैले हुअे दो सौ पचाससे भी ज्यादा केन्द्रोंमें जांच हो रही है। यदि यह प्रयोग सफल हो जाता है तो हाथ-कताओी भविष्यमें टिकेगी और बढ़ेगी तथा गांववालोंके दिलमें अभी भी आशा और आश्वासन देती रह सकेगी।

हरअेक मजदूरको निश्चित अल्पतम मजदूरी देनेके बाद मजदूरोंकी कुशलताके अनुसार अनकी मजदूरीमें फर्क होना चाहिये या नहीं होना चाहिये? हम पहले ही देख चुके हैं कि गांधीजी कुशल कारीगरको ज्यादा मजदूरी देनेके खिलाफ नहीं थे। लेकिन वे असे विचारहीन फर्कोंको जरूर मिटा देना चाहते थे जिनका मूल मात्र अैतिहासिक कारणोंमें है और जिनका मौजूदा परिस्थितियोंमें कोओी औचित्य नहीं रह गया है। कताओीके अेक घंटेके परिश्रमका मूल्य बुनाओीके अेक घंटेके परिश्रमके मूल्यसे कम क्यों होना चाहिये? खादी बुनाओीके बनिस्बत अुतने ही समयकी कताओीकी मजदूरी कम होनेका कोओी कारण नहीं है। खादी बुनाओी अेक यांत्रिक प्रक्रिया है जब कि खादीसे खादी कताओीमें हाथकी चतुराओीकी जरूरत होती है। फिर भी कत्तैयेको प्रतिघंटा अेक पाओी मिलती है जब कि बुनकरको छह पाओी मिलती है। धुनकरको भी कत्तैयेसे ज्यादा मिलता है — लगभग अुतना ही जितना बुनकरको। अिस परिस्थितिके अैतिहासिक कारण हैं। लेकिन कारण अैतिहासिक हों अिसलिअे वे न्याय्य नहीं हो जाते। अिसलिअे चरखा संघ पर यह कर्तव्य आ पड़ा कि वह अपने सभी मजदूरों कारीगरों आदिकी मजदूरी समान कर दे। अिसका अर्थ यह हुआ कि यदि बुनकर स्वेच्छापूर्वक समान वेतन लेना स्वीकार न करें तो अुनसे अपना वेतनमान कम करनेका अनुरोध किया जाय। यदि हरअेक प्रकारके अुत्पादक परिश्रमकी मजदूरी समान ही होना चाहिये यह सिद्धांत सही है तो अिस आदर्शके जितना संभव हो अुतने पास पहुंचनेकी कोशिश होनी ही चाहिये।*

कानूनकी मर्यादायें मजदूरोंकी स्थिति सुधारनेके विविध अुपायोंमें कानून भी अेक है लेकिन कानूनकी अपनी मर्यादायें हैं। जनमतसे आगे बढ़कर

* हरिजन ६–७–३५

जो कानून बनाया जाता है वह अक्सर निकम्मा साबित होता है। जब तक मालिक मजदूरोंको अपने परिवारका सभ्य मानना नही सीख लेते या जब तक मजदूरोंको अपने अधिकार समझने और अुन्हें हासिल करनेके अुपाय जाननेकी तालीम नही दी जाती, तब तक मजदूरोंके लिअ अपनी स्थिति सुधारना संभव नहीं होगा।*

मजदूरोंमें जागृतिकी आवश्यकता आज पूंजी श्रमका नियंत्रण करती है, क्योंकि पूंजीवालोंको अेकताकी कला आती है।+ मजदूरोंको अपनी स्थिति सुधारनेके लिअ कोशिश करना सीखना चाहिये। अुन्हें जिस सत्यको समझ लेना है कि सत्यवान धातुओंकी तरह श्रम भी पूंजी ही है। यह खयाल गलत है कि धातुके टुकड़े या अुत्पन्न मालकी अमुक मात्रा ही पूंजी है। धातुके सिक्कोंकी तरह श्रम भी धन है। यदि पूंजीमें शक्ति है तो श्रममें भी शक्ति है। दोनोंमें से प्रत्येकका अुपयोग निर्माणके लिअ भी किया जा सकता है और नाशके लिअ भी। दोनों अेक-दूसरे पर निर्भर हैं। ज्यों ही मजदूरको अपनी शक्तिका भान हो जायगा त्यों ही वह पूंजीपतिका गुलाम होनेके बजाय अुसका सहकारी और सहभागी बन जायगा। अपनी शक्तिका यह भान अुसे अहिंसाके जरिये ही हो सकता है। मजदूरोंके बड़े समुदायको अैसी तालीम देना बेशक अेक धीमी प्रक्रिया है। लेकिन चूंकि अुसकी सफलता निश्चित है अिसलिअे वही सबसे जल्दीवाली भी है।×

क्या मजदूर सच असहाय हैं? मजदूरोंका यह खयाल कि मालिकोंके सामने वे बिलकुल असहाय हैं अेक अैसा भ्रम है जिसका कोअी आधार नहीं है।— अगर मजदूरोंको यह मालूम हो जाय कि विचारपूर्ण संघटन और तालीमके जरिये वे अपने लिअे क्या कर सकते हैं तो अुन्हें समझमें आ जायगा कि जिस तरह मैनेजर और शेयर-होल्डर आदि कारखानेके मालिक हैं अुसी तरह वे भी अुसके मालिक हैं।† मजदूरोंने अपनी बुद्धिका विकास नहीं किया, सोचना-समझना नहीं सीखा अिसलिअे वे मालिकोंसे डरकर गुलामीका जीवन जीते हैं या फिर चिढ़कर पूंजीपतियोंकी सम्पत्तिको — मशीनरीको और मालको — नुकसान पहुंचाते हैं यहां तक कि अुन्हें मार डालनेमें विश्वास करने लगते हैं। लेकिन हिंसाका रास्ता अुन्हें नहीं बचा सकता। मजदूरोंमें जब आपसमें सहयोग करनेकी बुद्धि आ जायगी, तब वे पूंजीको सम्मानपूर्ण

---

* यंग अिंडिया, २९–६–२१

\+ हरिजन ७–९–४७

× यंग अिंडिया २६–३–३१ और हरिजन २५–६–'३८

— हरिजन, ३–७–३७

† हरिजन १३–६–३६

सहायताके आधार पर अपना सहयोग प्रदान करेगा। ज्यों ही मजदूर शिक्षित और सघटित होंगे और अपनी शक्तिको समझ लेंगे त्यों ही पूजी — अुसका प्रमाण कुछ भी क्यों न हो — अुन्हें दबानेमें असमर्थ हो जायगी। सघटित और शिक्षित मजदूर मालिकोंको अपनी मांगें माननेके लिअे बाध्य कर सकते हैं।

मजदूर अपना अुचित दर्जा कैसे पा सकते हैं? मजदूर अपना अुचित दर्जा कैसे पा सकते हैं? निस्सन्देह अिस दिशामें पहली आवश्यकता अपने सघ बनाकर आपसकी अेकता साधनेकी है। लेकिन अनुभव बतलाता है कि यदि अिसके साथ साथ कुछ दूसरी शर्तें पूरी न की जायें तो सघ बधनका कारण बन सकता है। ये शर्तें अिस प्रकार हैं

(अ) हरअेक आदमीको असा समझना चाहिये कि वह अपने साथी मजदूरोंके कल्याणका ट्रस्टी है। अुसे अपना स्वार्थ नहीं देखना चाहिये। परिस्थितियां कितनी भी गभीर और नुकसानवाली क्यों न हों अुसे हमेशा अहिंसक रहना चाहिये।

(ब) अगर अुसे सच्चे अर्थमें मनुष्य बनना है और अपना मनुष्योचित गौरव प्राप्त करना है, तो अुसे शराब जुआ और अैसी तरहके दूसरे दुर्व्यसन छोड देना चाहिये। शराबका व्यसन हमारी आत्माको कलुषित कर देता है। अुसे सयमका जीवन जीना चाहिये और विवाहकी पवित्रताकी रक्षा करना चाहिये। अैसी कम मजदूरी पर जिससे नीतिके प्राथमिक नियमोंका पालन करना भी असभव हो जाय काम करना स्वीकार करनेके बजाय यह बहतर होगा कि वह भूखा मरना पसन्द करे।*

मजदूरोंको अपने सघोंका अुपयोग जितना बाहरसे होनेवाले आक्रमणोंसे अपनी रक्षा करनेके लिअे करना चाहिये अुतना ही अपने आतरिक सुधारके लिअे भी करना चाहिये। अपने घर अपना शरीर मन और आत्माको स्वच्छ और पवित्र रखनेके लिअे जिस हद तक ज्यादा वेतन और कामके कम घटे सहायक हो सकते हैं अुस हद तक अुन्हें ज्यादा वेतन मिलना चाहिये और कामके घटे कम होने चाहिये। लेकिन यदि ज्यादा वेतन पाने और कामके घटे कम करवानेमें यह अुद्देश्य न हो तब तो अिस तरहकी कोशिश पापपूर्ण होगी।×

अपने अधिकारों और प्राप्य सुविधाओंके लिअे आग्रह करना बिलकुल अुचित है लेकिन अुसके साथ ही यह भी अुतना ही जरूरी है कि हम हरअेक अधिकारके साथ जुडे हुअे कर्तव्यको समझें। दुनियामें अैसा कोअी अधिकार नहीं है जिसके साथ कोअी कर्तव्य सलग्न न हो। पर्याप्त मजदूरी मजदूरोंके साथ मालिकोंके सद्व्यवहार स्वच्छ तथा स्वास्थ्यप्रद आवास आदि पर जोर देना

---

* डी० जी तेंदुलकर महात्मा खड २ पृ ३९३।

× यग अिडिया ५–८–२०

ठीक है लेकिन यह भी समझ लेना चाहिये कि मजदूर मालिकोंके कामको अपना काम मानें और असे पूरा ध्यान देकर आमानदारीके साथ करें।*

अहिंसक लड़ाअीकी तालीम दुर्भाग्यवश हमारे किसानों और मजदूरोंमें से अधिकांशको अहिंसक लड़ाअीकी तालीम नहीं मिली है। अुन्हें लगातार अुत्तेजनाकी स्थितिमें रखा जाता है और दूसरोंके बहकावेमें आकर अुन्होंने असी आशामें पालना शुरू कर दिया है जो अहिंसक लड़ाओ द्वारा पर ही पूरी हो सकती है। समुचित तालीमके द्वारा किसानों और मजदूरों दोनोंको ही प्रभावपूर्ण अहिंसक लड़ाअीके लिअे तैयार किया जा सकता है। अुन्हें अितना ही समझानेकी जरूरत है कि यदि वे सही ढंगसे संघटित हो जायं तो अपनी श्रम-शक्तिके रूपमें अुनके पास पूंजीपतियोंकी अपेक्षा कहीं ज्यादा धन और साधन सम्पत्ति है। बात यह है कि पैसेके बाजार पर पूंजीपतियोंका नियंत्रण है। किन्तु श्रमके बाजार पर मजदूरोंका कोअी नियंत्रण नहीं है। अगर मजदूर वर्गके चुने हुअे नेताओंने मजदूरोंकी समुचित सेवा की होती तो अुन्हें अभी तक अहिंसाकी तालीमसे प्राप्त होनेवाली अनिवार्य शक्तिका भान हो गया होता। अिसके बजाय होता यह है कि अकसर मजदूरोंको मालिकोंसे अपनी मांगें बरबस स्वीकार करानेके लिअे हिंसक अुपायोंका आश्रय लेना सिखाया जाता है। सामान्यतः मजदूरोंको आजकल जो तालीम मिलती है वह अनका अज्ञान दूर नहीं करती। अिसका परिणाम यह होता है कि वे अपने अधिकारोंकी प्राप्तिके लिअे हिंसाको ही अंतिम साधन मानना सीखते हैं।×

आदर्श मजदूर संघ गांधीजीने अहमदाबादके मजदूरोंका संघटन किया था। अुनकी रायमें अहमदाबादके कपड़ा मिल-मजदूरोंका संघ अपने प्रकारकी असी आदर्श संस्था है जिसका भारत भरमें अनुकरण किया जा सकता है।

> यह शुद्ध अहिंसाकी बुनियाद पर खड़ा किया गया है। अपने अब तकके कार्यकालमें अुसे कभी पीछे हटनेका मौका नहीं आया। बिना किसी तरहका शोरगुल धांधली या दिखावा किये ही अुसकी ताकत बराबर बढ़ती गअी है। अुसका अपना अस्पताल है। मिल मजदूरोंके बच्चोंके लिअे अुसके अपने मदरसे हैं, बड़ी अुमरके मजदूरोंको पढ़ानेके वर्ग हैं, अुसका अपना छापाखाना और खादी भंडार है और मजदूरोंके रहनेके लिअे अुसने घर भी बनवाये हैं। अहमदाबादके करीब करीब सभी मजदूरोंके नाम मतदाताओंकी सूचीमें दर्ज हैं और चुनावमें वे पुरअसर तरीकेसे हाथ बटाते हैं। कांग्रेसकी स्थानीय प्रान्त कमेटीके

* डी० जी० तेन्दुलकर महात्मा खंड २ पृ० ३९३–९४।

× हरिजन २९–७–'४९

कहनेसे अहमदाबादके मजदूरोंने मताधिकारके नाते अपने नाम दर्ज करवाये थे। यह मजदूर संघ कांग्रेसकी दलबन्दीवाली राजनीतिमें कभी शरीक नहीं हुआ। शहरकी म्युनिसिपैलिटीकी नीति पर संघका काफी असर पड़ता है। संघ अब तक अनेक हड़तालोंका अच्छी सफलताके साथ चला चुका है और ये सब हड़तालें पूरी तरह अहिंसक रही हैं। यहाँके मजदूरों और मालिकोंने अपने आपसी झगड़े मिटानेके लिअे न्यायोंतर अपनी राजी-खुशीसे पंचकी नीतिको स्वीकार किया है। *

गांधीजी कहते थे कि यदि मेरी चले तो भारतमें जितनी मजदूर-संस्थायें हैं अुनका नियमन अहमदाबादके मजदूर-संघको आदर्श मानकर अुसके अनुसार ही करूँ। अिस मजदूर-संघके द्वारा वे पूंजी और श्रमके बीचमें अुठने वाले सवालोंको अहिंसाके द्वारा हल करनेका प्रयत्न कर रहे थे।×

चम्पारनका किसान आन्दोलन जो लोग गांधीजीकी किसानोंका संघटन करनेकी पद्धति जानना चाहते हैं अुन्हें चम्पारनके किसान-आन्दोलनका अध्ययन करना चाहिये। भारतमें सत्याग्रहका पहला प्रयोग अिसी आन्दोलनमें किया गया था। चम्पारनका आन्दोलन आम जनताका आन्दोलन बन गया था और वह शुरूसे लेकर आखिर तक पूरी तरह अहिंसक रहा था। अुसमें कुल मिलाकर कोअी बीस लाखसे भी ज्यादा किसानोंका सम्बन्ध था। सौ साल पुरानी अेक खास तकलीफको मिटानेके लिअे यह लड़ाअी छेड़ी गयी थी। अिसी शिकायतको दूर करनेके लिअे पहले कअी खूनी बगावतें हो चुकी थीं। किसान बिल्कुल दबा दिये गये थे। मगर अहिंसक अुपाय वहाँ छह महीनोंके अन्दर पूरी तरह सफल हुआ। +

दूसरे किसान आन्दोलन अिनके सिवा खेड़ा, बारडोली और बोरसदमें किसानोंने जो लड़ाअियाँ लड़ीं अुनके अध्ययनसे भी पाठकोंको लाभ होगा। किसान-संगठनकी सफलताका रहस्य अिस बातमें है कि किसानोंकी अपनी जो तकलीफें हैं जिन्हें वे समझते हैं और बुरी तरह महसूस करते हैं अुन्हें दूर करनेके सिवा दूसरे किसी भी राजनीतिक हेतुसे अुनके संघटनका दुरुपयोग न किया जाय। किसी अेक निश्चित अन्यायको या शिकायतके कारणको दूर करनेके लिअे संगठित होनेकी बात वे झट समझ लेते हैं। अुनको अहिंसाका अुपदेश करना नहीं पड़ता। अपनी तकलीफोंके अेक कारगर अिलाजके रूपमें वे अहिंसाको समझकर अुसे आजमा लें और फिर अुनसे कहा जाय कि

* रचनात्मक कार्यक्रम (१९५९) पृ० ४६।
× यंग अिंडिया १४-१-३२
+ रचनात्मक कार्यक्रम (१९५९) पृ० ४३।

अुन्होंने जिसे आजमाया है वही अहिंसक पद्धति है, तो वे फौरन ही अहिंसाको पहचान लेते हैं और अुसके रहस्यको समझ जाते हैं।*

मजदूर संघकी नीतिका आधार-स्तम्भ : अहिंसामें विश्वास रखनेवाली प्रत्येक मजदूर-संस्थाको अपनी नैतिक निश्चयमें अपनी सत्य और न्यायकी भावनाका अनुसरण करना चाहिये, सस्ती प्रसिद्धि पानेके आकर्षणका नहीं। यदि अुसे जिस बातका पूरा विश्वास है कि वह सही रास्ते पर चल रही है, तो वह अुसे छोड़ेगी नहीं, दूसरे लोग चाहे जो करें या न करें। अुदाहरणके लिअे, वह हड़तालोंकी योजना राजनीतिक हेतु या प्रयोजनकी सिद्धिके लिअे नहीं करेगी, अपने सदस्योंकी सामाजिक या आर्थिक स्थिति सुधारनेके लिअे ही करेगी।

हड़तालें

सन १९१८ की स्मरणीय हड़ताल : गांधीजी संघटित हड़तालोंके विशेषज्ञ थे। जिस क्षेत्रमें अुन्होंने पहला प्रयत्न दक्षिण अफ्रीकामें अत्यन्त विपरीत परिस्थितियोंमें किया था और वह प्रयत्न सफल हुआ था। सन १९१८ की अहमदाबादकी हड़तालमें अुन्होंने हड़तालकी अपनी कार्य-प्रणालीमें और सुधार किया। अपने अनुभवके आधार पर वे कह सकते थे कि हड़ताल जिस तरह संघटित की जा सकती है कि अुसकी सफलता किसी प्रकार टाली ही न जा सके।×

यह हड़ताल अिक्कीस दिन तक चली थी। जिस बीचमें गांधीजीने हड़तालियोंके पथ-प्रदर्शनके लिअे अनेक पत्रिकायें निकाली थीं। ये पत्रिकायें मजदूरोंकी न्याय्य मांगोंके लिअे लड़ी जानेवाली लड़ाअियोंकी अहिंसक कार्य-प्रणालीकी महत्त्वपूर्ण हाथ-पोथी कही जा सकती हैं। यह हाथ-पोथी अुन घटनाओंका निरूपण करती है जिनके परिणामस्वरूप आगे चलकर मिल मालिकोंने तालाबन्दी घोषित कर दी और मजदूरोंने यह प्रतिज्ञा ली कि वे तब तक काम पर वापिस नहीं जायेंगे, जब तक कि अुनकी मांगें मंजूर नहीं कर ली जातीं। अपनी प्रतिज्ञाका पालन करनेके लिअे हड़तालियोंको कैसा व्यवहार करना चाहिये, अपनी बेकारीके समयका अुपयोग अुन्हें किस तरह करना चाहिये, संघके नेता मजदूरोंको अुनकी प्रतिज्ञाके पालनमें क्या सहायता दे सकते हैं — अिन सब सवालोंके बारेमें अिन पत्रिकाओंमें विस्तृत सूचनायें हैं। अुनमें अिस प्रश्नकी चर्चा है कि न्याय क्या है, अुनमें दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहियोंकी वीरताकी कहानियां हैं और अुनमें हड़तालियोंको यह बताया गया है कि कठिनाअियां

* रचनात्मक कार्यक्रम (१९५९) पृ० ४४।

× हरिजन २०-४-४०

और प्रलोभनासे लड़ते हुअ व अपनी निष्ठा और अपन मनोबलकी रक्षा कस कर सकते हैं। अन्तमें अुनमें सत्याग्रहकी अुस अद्भुत विजयका वर्णन है जिसमें दोनों पक्षोंकी जीत हुअी।

सफल हड़तालकी शर्तें अहान सफल हड़तालकी सात शर्तें बताओ

१ हड़तालका कारण न्यायपूर्ण होना चाहिये और वाजिब शिकायतके बिना कोअी हड़ताल नहीं होनी चाहिये।*

२ हड़तालियोंमें व्यावहारिक सहमति होना चाहिये।×

हड़तालियोंकी मांगें और मांगोंको स्वीकार करनेके लिअ कामसें लिये गये अुपाय दोनों न्यायपूर्ण और स्पष्ट होने चाहिये। यदि मांगके पीछे पूंजीपतियोंकी स्थितिसे लाभ अुठानेका हेतु है तो वह मांग अनुचित है। +

हड़तालियोंको हड़ताल छेड़नेसे पहले अेक अपरिवर्तनीय न्यूनतम मांग निश्चित कर लेना चाहिये और अुसकी घोषणा कर देना चाहिये। – सन १९१८की अपनी हड़तालमें अहमदाबादके मजदूरोंने जो प्रतिज्ञा ली थी असकी पहली धारामें ही यह स्पष्ट कर दिया गया था कि वे अपने काम पर तब तक वापिस नहीं जायेंगे जब तक अुनके वेतनमें ३५% वृद्धि न हो जाय। ३५% वृद्धिकी मांग मजदूरों और अुनके नेताओंने आपसमें काफी चर्चाके बाद अुचित ठहरायी थी।

३ हड़तालियों और अनके नेताओंमें पूरी पूरी सहमति होनी चाहिये।†

भारतके मजदूरोंके नेता दो प्रकारके हैं — अेक वे जो मजदूरोंमें से ही अूपर आये हैं, दूसरे बाहरवाले जो मजदूरोंमें से आये हुअ नेताओंको सलाह देते हैं और अुनका मार्गदर्शन करते हैं। नेताओंकी अिन दोनों श्रेणियों और मजदूरोंमें जब तक पूरी पूरी सहमति नहीं होगी तब तक मजदूरोंकी लड़ाअियां विफल ही होती रहेंगी।‡

४ हिंसा नहीं होनी चाहिये।⊕

५ हड़तालमें शामिल न होनेवाले या हड़तालका द्रोह करनेवाले मजदूरोंके साथ कोअी दुर्व्यवहार नहीं होना चाहिये।⊗

---

* यंग अिण्डिया २२–९–२१

× यंग अिंडिया १६–२–२१

+ यंग अिण्डिया २८–४–२

– यंग अिंडिया २२–९–२१

† स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गांधी पृ १ ४५।

‡ वही

⊕ यंग अिंडिया १६–२–२१

⊗ वही

हड़ताल मजदूरोंकी अपनी प्रेरणासे होनी चाहिये और अुसके लिअे किसी प्रकारके अनुचित अुपायोंका आश्रय न लिया जाय। यदि अुसकी योजना लोगों पर किसी तरहका दबाव डाले बिना की जाय, तो अुसमें गुंडाशाही या लूट मारके लिअे कोअी अवकाश नहीं होगा। असी हड़तालमें हड़तालियोंमें परस्पर पूरा पूरा सहकार होगा। हड़ताल शांतिपूर्ण होनी चाहिये और अुसमें कहीं भी शक्तिका प्रदर्शन नहीं होना चाहिये।* जिन्हें हड़ताल-द्रोही माना गया हो अुन पर किसी तरहका दबाव नहीं डाला जाना चाहिये। साथी मजदूरों पर असा कोअी दबाव डाला जायगा तो असमें अुलटा हड़तालियोंका ही नुकसान होगा।×

परन्तु आप पूछ सकते हैं कि दगाबाजोंका क्या किया जाय? दुर्भाग्यसे बेवफा मजदूर तो हमेशा ही रहेंगे। परन्तु मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप अुनसे लड़ाअी न करें बल्कि अुन्हें समझायें और अुनसे कहें कि अुनकी नीति संकुचित है जब कि आपकी नीतिमें सारे मजदूरोंका हित समाया हुआ है। संभव है वे आपकी बात न सुनें। अुस सूरतमें आपको अुन्हें बरदाश्त करना चाहिये न कि अुनसे लड़ना चाहिये। + अहमदाबादमें सन् १९१८ की हड़तालके समय मजदूरोंने जो प्रतिज्ञा ली थी असका अेक अंश यह था कि वे किसी प्रकारका कोअी अुपद्रव नहीं करेंगे। मार-पीट, चोरी, मालिककी सम्पत्तिको नुकसान पहुंचाना, गाली-गलौज करना आदि दुष्कृत्योंसे दूर रहेंगे और अुनका व्यवहार शांतिपूर्ण होगा। यदि हड़ताल अुचित है तो जिस संस्थाके खिलाफ अुसका संगठन किया गया हो अस संस्थाके हड़ताल-द्रोहियोंको प्रश्रय देने अथवा हड़तालियोंको दबानेके लिअे दूसरे आ[illegible] अुपायोंका अवलंबन करने पर संस्थाकी निंदा की जानी चाहिये।–

६ हड़तालियोंको हड़तालके दिनोंमें अपने पालन-पोषणके लिअे जनताके चंदे पर दान† पर भीख‡ पर या अपने संघके कोष पर निर्भर नहीं होना चाहिये।§

अगर हड़ताली मजदूर जनताके चंदेसे या अपने संघके कोष आदिसे आर्थिक सहायताकी अुम्मीद करते हों तो वे अपनी हड़तालको अनिश्चित

---

* हरिजन २–६–'४६

× स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज आफ महात्मा गांधी पृ० १०४५।

\+ हरिजन ७–११–३६

– हरिजन ३१–३–'४६

† यंग अिंडिया २२–९–२१

‡ आत्मकथा (अंग्रेजी) भाग पांच प्र० २० १९४८।

§ यंग अिंडिया, १६–२–२१

काल तक टिक नहीं रह सकते। और जो हड़ताल अनिश्चित काल तक न लम्बाई जा सकती हो उसकी सफलता अनिवार्य नहीं हो सकती।*

■ हड़ताल कितनी भी लम्बी चले हड़तालियोंको दृढ़ रहना चाहिये। जिसके लिए हड़तालियोंमें या तो अपने बचाकर रखे पैसे या किसी उपयोगी और उत्पादक अस्थायी धंधेमें लगकर अपना निर्वाह करनेकी शक्ति होनी चाहिये।×

मिल मजदूरोंके जीवनमें सदा उतार चढ़ाव आते ही रहते हैं। किफायत और मितव्यय उसका एक उपाय है और उसकी अवहेलना करना अपराध होगा। परन्तु जिस प्रकार की गयी बचतसे बहुत मदद नहीं मिलती क्योंकि हमारे मिल-मजदूरोंमें से अधिकांशको मुश्किलसे गुजर चलानेके लिए भी सतत संग्राम करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त किसी मजदूरका हड़ताल या बेकारीके दिनोंमें घर पर बेकार बैठ रहनेसे कभी काम नहीं चलेगा। मजबूरन् बेकार रहनेसे अधिक उसके साहस और स्वाभिमानको हानि पहुंचानेवाली कोई और वस्तु नहीं होती। मजदूर-वर्गको तब तक कभी सुरक्षितता अनुभव नहीं होगी और उसमें आत्म विश्वास और बलकी भावनाका तब तक विकास नहीं होगा जब तक कि उसके सदस्योंके पास जीविकाके अक्से अधिक अचूक साधन नहीं होंगे। +

हड़तालियोंको अपने समयका उपयोग किस तरह करना चाहिये

गांधीजीने जितनी भी हड़ताल चलायी उन सबमें उन्होंने एक नियमके पालनका आग्रह अवश्य रखा। नियम यह था कि हड़तालियोंको अपने निर्वाहके लिए अपने ही ऊपर निर्भर रहना चाहिये और अलग अलग अथवा सहकारपूर्वक मिलजुलकर कुछ न कुछ काम जरूर करना चाहिए। हड़तालकी सफलताका रहस्य इसी बातमें है और जिससे हड़तालियोंको आवश्यक तालीम भी मिलती है। शुद्ध समझ सकना चाहिये कि यदि उनमें किसी एक मालिककी नौकरी करने और उसका वेतन कमानेकी योग्यता है तो उनका श्रम इस लायक होना ही चाहिये कि वह वही वेतन अन्यत्र भी मिल सके। इसलिये हड़ताली अपना समय बेकार बितायें और सफल होनेकी उम्मीद भी रखें ऐसा नहीं हो सकता।–

* स्पीचेज़ एण्ड राइटिंग्ज़ आफ महात्मा गांधी पृ १०४५।

× यंग इंडिया १६–२–२१ और २२–९–२१ आत्मकथा (अंग्रेजी) भाग पांच प्र २ १९४८।

+ हरिजन –७– ७

– हरिजन २–६–४६ और स्पीचेज़ एंड राइटिंग्ज़ आफ महात्मा गांधी पृ १०४५।

अहमदाबादके कपडा मिल मजदूर मंडलने सन् १९३७ में गांधीजीकी सूचनासे अक प्रयोग शुरू किया था। अुसने अपने सदस्योंको मिलमें वे लोग जो काम करते थे अुसके अतिरिक्त अक पूरक अुद्योगकी तालीम देना शुरू की थी। अुद्देश्य यह था कि तालाबन्दी, हडताल या नौकरी छूटनेकी स्थितिमें भूखे भूखों मरनेकी नौबत नहीं आयगी अुनके पास हमेशा अिस नये अुद्योगका सहारा रहेगा।* अिस प्रयोगके कभी लाभप्रद परिणाम निकले हैं।

जब हडतालका अिलाज बेकार होता है "जब हडतालियोंकी जगह लेनेके लिअे दूसरे मजदूर काफी हों तब हडतालका अिलाज बेकार होता है। अुस सूरतमें अन्यायपूर्ण व्यवहार हो या नाकाफी मजदूरी मिले या अैसा ही और कोअी कारण हो तो त्यागपत्र ही अेकमात्र अुपाय है।"+

बम्बअीमें सन् १९४६ में जलसेनाके सिपाहियोंके विद्रोह और महतरोंकी हडतालके सिलसिलेमें हम अिस अिलाजकी अुपयुक्तता पर विचार करेंगे।

सफलताके लिअे शर्तोंका पालन जरूरी "अुपरोक्त सारी शर्तें पूरी न होने पर भी सफल हडतालें हुअी हैं। पर अिससे तो अितना ही सिद्ध होता है कि मालिक कमजोर थे और अुनका अंतःकरण अपराधी था। हम अैसे अुदाहरणोंका अनुकरण करके भयंकर भूलें करते हैं। सबसे सुरक्षित बात यह है कि हम अैसे अुदाहरणोंकी नकल न करें जिनका हमें कदाचित् ही पूर्ण ज्ञान होता है परन्तु अैसी शर्तोंका अनुकरण करें जिन्हें हम सफलताके लिअे अत्यावश्यक जानते और मानते हैं।"–

सहानुभूतिजन्य हडतालें कभी कभी मजदूर लोग किसी दूसरे अुद्योगके मजदूरोंकी हडतालमें अुनके कष्टके साथ अपनी सहानुभूति प्रगट करनेके लिअे खुद भी हडताल पर चले जाते हैं। गांधीजीका मत था कि भारतके मजदूरों और कारीगरोंमें राष्ट्रीय चेतनाका विकास अभी अुस हद तक नहीं हुआ है जो सहानुभूतिमें की जानेवाली सफल हडतालोंके लिअे जरूरी होता है। अिसमें दोष राजनीतिक नेताओंका है। अुन्होंने अिन वर्गोंकी आशाओं और आकांक्षाओंका अध्ययन नहीं किया है और न अुन्हें राजनीतिक स्थितिकी जानकारी करानेका कष्ट अुठाया है। अुन्होंने यह माना है कि जो हाअीस्कूल और कालेजोंमें शिक्षित हैं वे ही राष्ट्रीय कार्यमें भाग लेनेके योग्य हैं। अिसलिअे मजदूरों और कारीगरोंसे अेकाअेक यह आशा करना अुचित नहीं है कि

* हरिजन ३–७–'३७

\+ यंग अिंडिया १६–२–'२१

– वही

वे अपने अलावा दूसरोंके हितोंका बड़ा करम और अनके लिये त्याग करेंगे। अिसलिअे राजनीतिक या किन्हीं दूसरे अुद्देश्योंके लिअे अुनका दुरुपयोग नहीं होना चाहिये।* ये शब्द गांधीजीने कोअी ३५ बरस पहले लिखे थे जब कि राजनीति अवकाश भोगी वर्गोंके मनोविनोदका साधन थी। गांधीजीने देशके राजनीतिक आन्दोलनका रंग ही बदल दिया है और मजदूर अपनी गहरी नींदसे जाग गये हैं। लेकिन अभी भी यह नहीं कहा जा सकता कि वे विकासकी अस स्थितिमें पहुंच गये हैं, जहां वे अपने कार्योंके सारे फलितार्थ और परिणाम समझने लग हों।

जल्दीमें सहानुभूतिजन्य हड़ताल समयसे पहले करानेका फल यह होगा कि हमारे कामको असीम हानि पहुंचेगी।× सहानुभूतिजन्य हड़ताल तब तक नहीं होनी चाहिये जब तक यह अन्तिम रूपमें साबित न हो जाय कि संबंधित लोगोंने दुराग्रहों और सहानुभूतिशून्य अधिकारियोंसे न्याय प्राप्त करनेके लिअे सब अुचित अुपाय आजमा लिये हैं।+ असी हड़तालोंका अुद्देश्य आत्मशुद्धि होना चाहिये। सहानुभूतिजन्य हड़तालकी विशेषता सहानुभूति रखनेवालों द्वारा अुठायी गयी असुविधा और कष्टमें है।—

शांतिपूर्ण हड़ताल अुन्हीं लोगों तक सीमित रहनी चाहिये जिन्हें वह कष्ट हो जो दूर कराना है। अुदाहरणके लिअे मान लीजिये कि ट्रिव्हैण्ड्रमके दियासलाअी बनानेवालोंको अपनी स्थितिसे तो पूरा संतोष है परन्तु वहांके मिल मजदूरोंको भूखों मारनेवाली मजदूरी मिलती हैं अिसलिअे अुनकी हमदर्दीमें वे लोग हड़ताल करते हैं तो दियासलाअी बनानेवालोंकी हड़ताल अेक किस्मकी हिंसा होगी। वे ट्रिव्हैण्ड्रमके मिल मालिकोंका माल खरीदना बन्द करके अथवा बारबार अुनसे मदद दे सकते हैं और अुन्हें देनी चाहिये। तब अन पर हिंसाका आरोप नहीं लग सकेगा। परन्तु असे अवसरोंकी कल्पना की जा सकती है जब सीधे कष्ट न भोगनेवालोंका काम बन्द कर देना कर्तव्य हो जाय। अुदाहरणके लिअे यदि अपरोक्त दृष्टान्तमें दियासलाअीके कारखानेके मालिक ट्रिव्हैण्ड्रमके मिल-मालिकोंसे मिल जाय तो मिल-मजदूरोंसे मिल जाना दियासलाअीके कारखानेके मजदूरोंका स्पष्ट कर्तव्य हो जायगा। परन्तु मैंने यह बात जोड़ देनेका सुझाव केवल दृष्टान्तके तौर पर दिया है। आखिर तो हरअेक मामलेकी अुसके अपने ही गुण-दोषोंसे जांचना

---

* यंग अिंडिया २२-९-२१

× वही

+ हरिजन ११-८-४६

— यंग अिंडिया २२-९-२१

पत्था। हिंसा जब सूक्ष्म बल है। अुस सत्य ही देख सकना आसान नहीं होता भले ही आप अुसे महसूस करते रहें। *

मजदूरोंकी सबसे अच्छी सेवा मजदूरोंकी सबसे अच्छी सेवा यह होगी कि अुन्हें स्वावलम्बन सिखाया जाय अुन्हें अनेक कर्तव्यों और अधिकारोंकी कल्पना करा दी जाय अुन्हें असा तयार कर दिया जाय कि वे अपनी न्यायपूर्ण शिकायतोंको खुद दूर करा सकें। असके बाद वे धीरे धीरे राजनीतिक राष्ट्रीय या मानवीय सेवा करनेकी क्षमता खुद प्राप्त कर लेंगे।×

राजनीतिक अुद्देश्योंके लिअ मजदूरोंका दुरुपयोग और देशोंकी तरह भारतमें भी मजदूर-जगत अुन लोगोंकी दया पर निर्भर है जो सलाहकार और पथप्रदर्शक बन जाते हैं। ये लोग सदा सिद्धान्तपालक नहीं होते और सिद्धान्तपालक होते भी हैं तो हमेशा बुद्धिमान नहीं होते। मजदूरोंको अपनी हालत पर असंतोष है। अस असंतोषके लिअ अुनके पास पूरे कारण हैं। अुन्हें यह सिखाया जा रहा है और ठीक सिखाया जा रहा है कि अपने मालिकोंको धनवान बनानेका मुख्य साधन वे ही हैं। राजनीतिक स्थिति भी भारतके मजदूरोंको प्रभावित करने लगी है। और असे मजदूर-नेताओंका अभाव नहीं है जो समझते हैं कि राजनीतिक हेतुओंके लिअे हड़ताल कराअी जा सकती है। +

गांधीजीका मत था कि अस अुद्देश्यके लिअे मजदूर-हड़तालोंका अुपयोग करना गम्भीर भूल होगी। वे असि बातसे अिनकार नहीं करते थे कि असी हड़तालोंसे राजनीतिक हेतु सिद्ध किये जा सकते हैं। पर अहिंसक असहयोगकी योजनामें अनका समावेश नहीं हो सकता। यह समझनेके लिअ बुद्धि पर बहुत जोर डालनेकी जरूरत नहीं है कि जब तक मजदूर देशकी राजनीतिक स्थितिको समझ न लें और सबकी भलाअीके लिअ काम करनेको तैयार न हों तब तक मजदूरोंका राजनीतिक अुपयोग करना बहुत ही खतरनाक बात होगा। अिसकी अुनसे अचानक आशा रखना कठिन है। यह आशा अुस वक्त तक नहीं रखी जा सकती जब तक वे अपनी सुखकी हालत अितनी अच्छी न बना लें कि सभ्य तरीके पर जीवन व्यतीत कर सकें। अिसलिअे सबसे बड़ी सहायता मजदूर यह कर सकते हैं कि वे अपनी स्थिति सुधार लें अधिक जानकार हो जायं अपने अधिकारोंका आग्रह रखें और जिस माल को तैयार करनेमें अुनका अितना महत्त्वपूर्ण हाथ होता है अुसके

* यंग अिंडिया १८-११-२६
× यंग अिंडिया २२-९-२१
+ यंग अिंडिया १६-२-२१

अुचित अुपयोगकी भी मालिकसे माग करें। मजदूर लोग ज्यों ज्यों ज्यादा सघटित होंगे और देशके हितका तथा अपने हितका विचार करना सीखेंगे त्यों त्यों जिस मालके निर्माणमें वे अपने परिश्रमके द्वारा जितना ज्यादा हिस्सा लेते हैं अुसकी कीमतामें अुचित फरफार करनेके लिअ आग्रह करेंगे और जरूरत हुअी तो अुसके लिअ लड़ेंगे। असा समय आना चाहिये — और वह जितनी जल्दी आय अुतना अच्छा — जब कि मालिकोंके मनाफ मजदूरोंके वतना और मालकी कीमतोमें अुचित अनुपात रहेगा। अिसलिअ विकासकी ठीक दिशा यह होगी कि मजदूर लोग अपना दर्जा बढ़ायें और आखिर मालिकोंका दर्जा प्राप्त करें। अत हड़ताल मजदूरोंकी हालतके सुधारके लिअ ही होनी चाहिये और जब अनमें देशभक्तिकी वृत्ति पैदा हो जाय तब अपने तैयार किये हुअ मालकी कीमताके नियत्रणके लिअ भी हड़ताल हो सकती है।*

आर्थिक बहतरीके लिअ होनेवाली हड़तालोंका कोअी राजनीतिक अुद्देश्य हरगिज नहीं होना चाहिये। अिस तरहकी मिलावटसे राजनीतिक अद्देश्य कभी सफल नहीं होता और आम तौर पर हड़ताली विपत्तिमें पड़ जाते हैं। असी हड़तालें तभी होनी चाहिये जब दूसरे सारे वध अुपाय आजमा लिये गये हों और अुनमें सफलता न मिली हो।×

अहिंसक कारवाअीमें राजनीतिक हड़तालोंका स्थान राजनीतिक हड़तालों पर अुनके ही गुण-दोषोंकी दृष्टिसे विचार होना चाहिये। आर्थिक हड़तालोंके साथ अुन्हे न कभी मिलाना चाहिये और न अनसे अिनका सम्बन्ध जोड़ना चाहिये। अहिंसक कारवाअीमें राजनीतिक हड़तालोका अेक निश्चित स्थान होता है। वे गहरे सोच विचारके बाद ही की जाती हैं यो ही नहीं। असी हड़तालें खुली होनी चाहिये और अुसमें गड़बड़ाही नहीं होनी चाहिये। अुनका परिणाम हिंसा हरगिज नहीं होना चाहिये।+ असी राजनीतिक हड़ताल जिसका अद्देश्य सरकारको ठप कर देना हो अेक अत्यत अुग्र राजनीतिक कदम है और यह कदम अुठानेका अधिकार अुसी सस्थाको हो सकता है जो सारी जनताका प्रतिनिधित्व करती हो। मजदूरोंके सघोंको वे कितने ही बलशाली क्यों न हों यह अधिकार नहीं हो सकता।†

बम्बअीमें जल-सेनाके सैनिकोंका विद्रोह सन १९४६ में बम्बअीमें जल-सेनाके सैनिकोंने सरकारको ठप करनेकी कोशिश की थी। अुनका

* यग अिण्डिया १६–२–२१ और ११–८–२१
× हरिजन ११–८–४६
+ वही
† वही

अंग्रेज अथवा ब्रिटिश अधिकारी भारतीय कर्मचारियोंके साथ जिस भेदभावकी नीतिका व्यवहार करते थे उसके खिलाफ अपना असंतोष व्यक्त करते थे लेकिन उनका प्रगट घोषणा यह थी कि वे स्वतंत्रताको लड़ाई लड़ रहे हैं। गांधीजीने जिस विद्रोहको अेक अविचारपूर्ण हिंसक कार्य कहा था और उसकी भर्त्सना की थी। वे नहीं चाहते थे कि कांग्रेस जिस भारतका प्रतिनिधित्व करती है उसके बारेमें लोग यह कहें कि अेक ओर तो वह सारी दुनियामें स्वराज्यकी लड़ाओी अहिंसाके जरिये जीतनेकी बात करता है और दूसरी ओर उसने अपने राजनीतिक जीवनके अेक नाजुक मौके पर अपने ही वचनके खिलाफ कार्य किया। उन्होंने जल-सेनाके भारतीय सदस्योंसे अहिंसक प्रतिरोधका रास्ता अपनानेकी सिफारिश की और बताया कि यह रास्ता ज्यादा गौरवयुक्त और वीरतापूर्ण है और यदि अेक संगठित समूह द्वारा अपनाया जाय तो पूर्णतः प्रभावकारी सिद्ध होता है। यदि ब्रिटेनियाकी नौकरी उनके लिओ या भारतके लिओ अपमानजनक है तो वे उसी नौकरी करते ही क्यों हैं? उन्होंने उन्हें नौकरी छोड़नेकी सलाह दी और बताया कि अहिंसक असहयोगके अनुसार उन्हें अैसा ही करना चाहिये।*

लाला लाजपतरायकी अध्यक्षतामें हुओ १९२० की कांग्रेसके कलकत्ताके विशेष अधिवेशनमें जो प्रस्ताव पास किया गया था उसमें अहिंसक बरताव और कानूनका सिद्धान्त यह प्रतिपादित किया गया था कि हरअेक अपमान जनक कानूनका असहयोग किया जाय। यह याद रखना चाहिये कि शाही भारतीय जलसेना शासितोंके लाभके लिओ स्थापित नहीं की गयी थी। उसमें लोग आजीविकाके लिये भरती होकर गये थे। वहां खुला भेदभाव नजर आता है। जो नौकरी साफ तौर पर भारतको गुलाम बनाये रखनेके लिओ संगठित की गयी है उसमें जानेवाला जिस भेदभावसे बच नहीं सकता। वह जिस स्थितिमें सुधारके लिओ प्रयत्न कर सकता है और उसे करना भी चाहिये। पर यह अेक हद तक ही मुमकिन है और यह विद्रोह सारा नहीं किया जा सकता। संभव है विद्रोह सफल हो जाय परन्तु यह सफलता विद्रोहियोंको और उनके समर्थकोंको ही लाभ पहुंचा सकती है सारे भारतको नहीं। और यह सबसे बुरी विरासत होगी। अनुशासन स्वराज्यमें भी उतना ही जरूरी होगा जितना आज है। सशस्त्र विद्रोहियोंके अधीन भारत अनगिनत टुकड़ोंमें विभक्त हो जायगा और आपसी लड़ाओीमें फंस जायगा। × जिसलिओ गांधीजीने उन्हें यह सलाह दी कि वे बहादुरीके तौर अपनी नौकरियां छोड़ दें। अैसा करके वे बखूबी अपने सम्मान और गौरवकी रक्षा अवश्य कर सकेंगे।

* हरिजन ३-३-४६
× हरिजन १०-३-४६

मेहतरोंकी हड़ताल मेहतरोंको भी अन्होंने असी ही सलाह दी थी। भंगी अेक दिनके लिअे भी अपना काम नहीं छोड़ सकता। * कुछ मामले असे हैं जिनमें हड़ताल बजा होती है। मेहतरोंकी शिकायतें अिस सूचीमें शामिल हैं। मेहतरोंकी हड़तालके विरुद्ध मेरी राय लगभग १८९७ से है जब मैं डरबनमें था। अुस समय वहां आम हड़तालका विचार किया गया और यह प्रश्न अुठा कि मेहतरोंको अुसमें शरीक होना चाहिये या नहीं। मेरा मत अिस प्रस्तावके विरुद्ध रहा। जैसे मनुष्य हवाके बिना नहीं रह सकता, वैसे ही अुसका घर और आसपासकी जगह साफ न हो तो वह बहुत दिन तक जिन्दा नहीं रह सकता। कोअी न कोअी संक्रामक रोग अवश्य फूट निकलता है विशेषतः जब नालियोंकी आधुनिक व्यवस्था काम नहीं करती। ×

तो क्या भंगी गन्दगी और कचरेमें सड़ते हुअे अुसी तनख्वाह पर काम करते रहें जिससे अुनका पेट भी नहीं भरता? असी स्थितिमें अुचित अुपाय हड़ताल करना नहीं है, बल्कि आम जनताको और खास तौर पर नौकर रखनेवाली संस्थाको यह सूचना देना है कि अुन्हें अपना काम छोड़ देना पड़ेगा क्योंकि जिस कामके करनेवालोंको जिन्दगीमें भूखा मरनेके सिवा कुछ नहीं मिलता। हड़ताल करनेमें और नौकरी बिल्कुल छोड़ देनेमें बड़ा अन्तर है। हड़ताल कष्ट निवारणकी आशामें अेक अस्थायी अुपाय होता है। नौकरी छोड़ देना अेक खास धंधेको अिसलिअे बन्द कर देना है कि अुसमें राहत मिलनेकी कोअी आशा नहीं है। काम बन्द कर देनेका ठीक ढंग यह है कि अेक तरफ नोटिस काफी दिन पहले दिया जाय और दूसरी तरफ यह संभावना हो कि किसी दूसरे काममें अधिक मजदूरी और गंदगी तथा कचरेसे मुक्ति मिलेगी। अिससे समाज अपनी बहुयाओंकी नींदसे जाग अुठेगा और परिणाम यह होगा कि जनताकी विवेक-बुद्धि पर आज जो कोअी कमी हुअी है वह साफ हो जायगी। जिस बदबूदार अेक ही सटकमें भंगियोंके कामको अेक सुन्दर कलाका दर्जा मिल जायगा और अुसे वह प्रतिष्ठा भी मिल जायगी जो बहुत पहले मिल जानी चाहिये थी। +

लोकोपयोगी सेवाके महकमोंमें हड़तालें गांधीजीकी यह राय थी कि लोकोपयोगी सेवाके महकमोंमें हड़तालें नहीं होनी चाहिये क्योंकि अिनमें अव्यवस्था अुत्पन्न होनेसे सारा सार्वजनिक जीवन ही अस्तव्यस्त हो जाता है। अलबत्ता वे असा नहीं कहते थे कि अिन महकमोंमें नौकरी करनेवालोंको किन्हीं भी हालतोंमें गुलामोंकी तरह सेवा करते रहना चाहिये। वे कहते थे

---

* हरिजन २१-४-४६

× वही

\+ हरिजन २९- -४६

कि अस मामलामें अपने कष्टके निवारणके लिअे दूसरे असे अुपाय मौजूद हैं जिनके खिलाफ कोओ आपत्ति नहीं अुठायी जा सकती।*

अहिंसक हड़ताल हड़तालोंने आजकल अेक सार्वत्रिक बीमारीका रूप ले लिया है। भारतमें अुनका अेक विशेष अर्थ है। हम अेक अस्वाभाविक अवस्थामें रह रहे हैं। ज्यों ही ढक्कन खुलेगा और जगह पाकर स्वतंत्रताकी ताजी हवा अन्दर आयगी त्यों ही हड़तालोंकी संख्यामें और वृद्धि होगी। हड़तालोंके असि फले हुअे ज्वरका मूल कारण यह है कि यहां और सभी जगह — जीवन अपने आधारसे विचलित हो गया है। यह आधार था — धर्म। अब असि धर्मका स्थान जैसा कि अेक अंग्रेज लेखकने कहा है 'नर्क-नारायण' ने ले लिया है। लेकिन अेक आदमीको दूसरेसे बांध रखनेके लिअे यह आधार बहुत कमजोर है। परन्तु धार्मिक आधारके रहते हुअे भी हड़तालें तो होंगी क्योंकि यह कल्पना नहीं की जा सकती कि धर्म सबके लिअे जीवन्त आधार बन जायगा। असिलिअे अेक ओर शोषणके प्रयत्न होंगे और दूसरी ओर हड़तालें होंगी। परन्तु अुस समय ये हड़तालें शुद्ध अहिंसक ढंगकी होंगी। असी हड़तालोंसे कभी किसीको हानि नहीं होगी।×

हड़तालोंका दुरुपयोग हड़ताल न्यायकी प्राप्तिके लिअे मजदूरोंका स्वतःसिद्ध अधिकार है।+ हड़ताल बहुत बढ़िया अुपाय है, लेकिन अुसका दुरुपयोग कठिन नहीं है। मजदूरोंको मजबूत मजदूर संघोंके रूपमें अपना संघटन करना चाहिये और अिन संघोंकी अनुमतिके बिना हड़ताल कदापि न करना चाहिये। हड़ताल करनेसे पहले मालिकोंके साथ समझौतेकी कोशिश अवश्य करना चाहिये। समझौतेकी चर्चा किये बिना हड़तालकी जोखिम अुठाना अुचित नहीं है।— समझौते पर पहुंचनेके जितने अुपाय हो सकते हैं वे सब समाप्त हो जायं तभी हड़ताल करना अुचित होगा।† बशर्ते यदि मालिक लोग पंच फैसला करवानेकी मांग नामंजूर कर दें तो मजदूर हड़तालका आश्रय ले सकते हैं।‡

कब हड़तालें अपराधरूप होती हैं ज्यों ही पूंजीपति पंच फैसलेका सिद्धान्त स्वीकार कर लें त्यों ही हड़ताल अपराधरूप मानी जानी चाहिये।§ झगड़ोंको निपटानेके लिअे निष्पक्ष न्यायालयका प्रस्ताव हमेशा स्वीकार कर लिया जाना

* हरिजन १०–८–४७
× हरिजन २२–९–४६
+ यंग अिंडिया २८–४–२०
— यंग अिंडिया ११–२–२०
† हरिजन ७–११–३६
‡ वही
§ यंग अिंडिया २८–४–२०

मामलेमें मजदूरोंका प्रतिरोध जिस हद तक अुसे जरूरी समझा गया अुस हद तक पूरी तरह सफल रहा।*

मजदूरोंको मुमकिन है मिल-मालिकोंसे लड़ना पड़े। लेकिन अुन्हें अपनी यह लड़ाओी प्रेम सम्मान और अनिच्छाकी असी भावनासे लड़ना चाहिये जो कि वे अपने सगे-सम्बन्धियोंसे लड़नेमें रखेंगे। लड़ाओीकी अहिंसक पद्धति पूंजीपतिका नाश नहीं करना चाहती क्योंकि पूंजीको वह श्रमका दुश्मन नहीं मानती। अहिंसक पद्धति पूंजीपतियोंका हृदय-परिवर्तन करना चाहती है। जिसमें शक नहीं कि पूंजीवाद और अुसकी सारी बुराअियोंका नाश होना चाहिये। मजदूरोंको चाहिये कि वे अिस प्रयत्नमें पूंजीपतियोंका सहयोग मांगें और अिस विश्वासके साथ मांगें कि पूंजी और श्रमका सहयोग पूरी तरह संभव है।

अुपसंहार

पिछले पृष्ठोंमें मैंने गांधीजीकी अेक असे समाजको दी हुअी शिक्षाओंका जिसके जीवनमें विज्ञानके आविष्कारों और नये नये यंत्रोंने क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिये हैं, सारांश देनेका प्रयत्न किया है। जहां तक हो सका है मैंने विचारोंके वाहनके तौर पर गांधीजीके अपने शब्दोंका ही अुपयोग किया है। अुनके ये विचार रत्न यहां वहां बिखरे पड़े थे। मैंने अुन्हें चुनकर अेक सूत्रमें पिरो लिया है।

गांधीजी राष्ट्रको अेक अत्यंत मूल्यवान विरासत दे गये हैं। अुन्होंने भारतके लिअे और सारी मानव-जातिके लिअे अुद्धारका मार्ग दिखाया है। अिस मार्ग पर गांधीजीने खुद लम्बी यात्रा की और कुछ दूरी तक हमें भी वे अपने साथ ले गये। अब वे हमारे बीचमें नहीं हैं। हमें अुनका निश्चित और हमेशा मिलनेवाला सहारा अब प्राप्त नहीं है। हम अुसका अभाव महसूस करते हैं और अंधेरेमें अपना रास्ता टटोलते फिरते हैं। लेकिन अिस अंधेरेके बावजूद हमें हिम्मत नहीं हारना चाहिये। हिम्मत हार जायें तो हम बरबाद हो जायेंगे। साथ ही हम अंधोंकी तरह अपना मार्ग टटोलते रहें यह भी ठीक नहीं है।

असी स्थितिमें आवश्यकता अिस बातकी है कि हम अपने परिश्रमको शानके अुजालेसे आलोकित करें। प्रश्न खादीका हो या विजलीके अुपयोगका हो या कोअी दूसरा हमें हमेशा अपने प्रयत्नको गतिमान और तेजस्वी बनाना चाहिये। गांधीजी जो कुछ कह गये हैं अुसे मात्र दुहराते रहना काफी नहीं है।

जो आदमी हर बातको शास्त्रीय दृष्टिसे देखनेका आदी है, वह किसी वस्तुको श्रद्धासे शास्त्रीय मानकर संतुष्ट नहीं होगा। वह

---

* यंग अिंडिया १७-३-२७

अुसे बुद्धिकी कसौटी पर कसनेका आग्रह रखना। श्रद्धा जब बुद्धिसे संबंध रखनेवाले मामलोंमें दखल देती है तब वह पंगु हो जाती है। अुसका क्षेत्र वहां शुरू होता है जहां बुद्धिका क्षेत्र खतम होता है। श्रद्धाके आधार पर किये गये निर्णय अटल होते हैं, जब कि बुद्धिके आधार पर किये गये निर्णय अस्थिर और श्रेष्ठ तर्कके सामने मात खा जानेवाले होते हैं। शास्त्रकी मर्यादा बताना अुसकी कीमत घटाना नहीं है। हमारा दोनोंके बिना काम नहीं चल सकता — दोनों अपनी अपनी जगह अुपयोगी हैं। *

अिसलिअे शास्त्रीय ज्ञान और श्रद्धा दोनोंका अपना भाग स्वीकार करके हमें गांधीजी द्वारा जलायी गयी प्रगतिकी मशालको आगे ले जाना चाहिये।

गांधीजी अिस बातसे अनभिज्ञ नहीं थे कि अुनकी लिखावटें अुनके अनुयायियोंके हाथमें पड़कर जड़ मतवादका रूप ले सकती हैं। अिसलिअे अुन्होंने अुन लोगोंको आगाह कर दिया था कि वे अुन्हें बुद्धिपूर्वक समझें, शास्त्रोंकी तरह न पकड़ें। अुन्होंने कहा था :

> अेक दूसरा और ज्यादा गंभीर खतरा भी है। खतरा यह है कि आपका संघ + कहीं सम्प्रदायका रूप न ले ले। जब कभी कठिनाअियां पैदा होंगी आप लोग यंग अिंडिया और हरिजनके मेरे लेखोंमें अुत्तर ढूंढेंगे और अुनका प्रमाण-वाक्योंकी तरह अुपयोग करेंगे। सच तो यह है कि मेरे शरीरके साथ मेरे लेख भी जला दिये जाने चाहियें। जीवित तो वही रहेगा जो मैंने किया है, न कि जो मैंने कहा है या लिखा है। पिछले कुछ दिनोंमें मैंने अक्सर यह कहा है कि हमारे सब धर्मग्रंथ नष्ट हो जायें तो भी अीशोपनिषदका यह अेक मंत्र हिंदू धर्मका रहस्य घोषित करनेके लिअे काफी होगा। लेकिन यदि कोअी अैसा व्यक्ति हो न हो जो अुसे अपने जीवनमें अुतारकर सिद्ध कर दिखाये तो अुस मंत्रसे भी कोअी लाभ न होगा। अिसी तरह मैंने जो कुछ कहा है या लिखा है वह वहीं तक अुपयोगी है जिस हद तक अुसने आपको सत्य और अहिंसाके महान सिद्धान्तोंको आत्मसात् करनेमें मदद दी हो। यदि आपने अिन सिद्धान्तोंको आत्मसात् नहीं किया है तो मेरे लेखोंसे आपको कोअी मदद नहीं मिल सकती। यह बात मैं आपसे अेक सत्याग्रहीकी हैसियतसे कह रहा हूं और मैं अुसमें से अेक भी शब्द छोड़नेके लिअे तैयार नहीं हूं। मैं अिस बातकी परवाह नहीं

* हरिजनसेवक ३१-३-४६

+ गांधी-सेवा-संघ।

करता कि मेरे मरनेके बाद क्या होगा लेकिन मैं यह जरूर चाहता हूँ कि आपका संघ बंध हुअे पानी जैसा नहीं बल्कि हमेशा बहते रहनेवाले वृक्ष जैसा हो। असलिये आप मुझे भूल जाअिये। संघके नामके साथ मेरे नामका योग अनावश्यक चीज है। आप मेरे नामको मत पकड़िये, सिद्धान्तोंको पकड़िये। आप अपने प्रत्येक कार्यकी जांच असी कसौटी पर कीजिये और जो भी समस्यायें खड़ी हों अुनका वीरतापूर्वक मुकाबला करें। *

गांधीजीकी अिस चेतावनीके होते हुअे भी यदि हम अनके शब्दोंको ही पकड़ते रहे तो यह अन शब्दोंके अर्थकी हत्या होगी। अपनी विरासतको भूलना अेक पाप कृत्य है।

खुशीकी बात है कि आजकी हमारी ज्वलंत समस्याओंका हल हम अिसी वृत्तिसे ढूंढ रहे हैं। अुदाहरणके लिअे सुधरे हुअे और ज्यादा सक्षम चरखेकी अर्थशास्त्रीय परीक्षा की जा रही है और अुसके सम्बन्धमें राष्ट्रीय पैमाने पर व्यापक प्रयोग किये जा रहे हैं। निकट भविष्यमें हमारी जल-विद्युत योजनाओंके पूरा होनेकी संभावना दिख रही है। अुस समय गृह-अुद्योगोंमें बिजलीका अुपयोग मात्र बौद्धिक विवेचनका विषय नहीं रह जायगा। अखिल भारत खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड अिस प्रश्नके सारे पहलुओंकी छानबीन कर रहा है। खादी-ग्रामोद्योग प्रतिष्ठानने दिसम्बर १९५४में अखिल भारत खादी-ग्रामोद्योग कार्यकर्ताओंकी पूनामें नवम्बर १९५४में हुअी परिषदके कामकाजका विवरण देते हुअे अेक विशेषांक निकाला था। अिस अंकमें अिस और असे दूसरे प्रश्नों पर बहुत-सी अुपयोगी जानकारी दी गयी है।

राजनीतिक आजादी प्राप्त करनेके बाद अब हम अपने आर्थिक अुद्धारके कार्यमें जुट गये हैं। कुछ लोग आर्थिक आजादीका अर्थ यंत्र-विज्ञान सम्बन्धी प्रगति करते हैं। लेकिन आर्थिक प्रगतिकी कसौटी मानव-कल्याणकी वृद्धि है। हम अपनी आर्थिक नीतियोंको जिस हद तक अिस देशकी जनताकी सुख समृद्धिके रूपमें कार्यान्वित कर सकेंगे अुसी हद तक हमारी प्रगति वास्तविक होगी। गांधीजीकी शिक्षाओंकी तुलना हम शिक्षामूलक तारेसे कर सकते हैं। अुसकी अुपेक्षा करना गलत होगा। हम अुसकी अुपेक्षा करेंगे तो निश्चित है कि हम नुकसान अुठायेंगे। और हम भूल न जायें असलिअे यह याद रखना अच्छा है कि नैतिक आजादीके बिना राजनीतिक और आर्थिक आजादीका कोअी अर्थ नहीं है।

बम्बअी २७ जून १९५६

व्ही० वी० खेर

* डॉ० जी० तेन्दुलकर: महात्मा खण्ड ४ पृ० १८८।

आर्थिक और औद्योगिक जीवन

अुसकी समस्यायें और हल

भाग – १

१

हिन्द स्वराज्य

[सन् १९०९ में गांधीजीने अेस० अेस० किल्डोनन नामक जहाज पर अिंग्लैंडसे दक्षिण अफ्रीका लौटते हुअे 'हिन्द स्वराज्य'* नामक पुस्तक लिखी थी। अिस पुस्तकमें आधुनिक सभ्यता का जोरदार खंडन है। यह संवादके रूपमें लिखी गअी है और गांधीजीका अपने सहयोगियोंके साथ हुअी चर्चाओंका विश्वस्त विवरण है। यह बीस अध्यायोंमें विभाजित है जिनमें स्वराज्य, सभ्यता, वकील, डाक्टर, मशीनरी, शिक्षा, अहिंसक प्रतिरोध आदि विषय हैं। भारतमें अपने अेक मित्रको लिखे गये पत्रमें गांधीजीने अिस पुस्तकके विषय-वस्तुका सारांश दिया था। वह सारांश नीचे दिया जाता है।]

१ पूर्व और पश्चिमके बीच कोअी अगम्य खाअी नहीं है।

२ पश्चिमी या यूरोपीय सभ्यता जैसी कोअी चीज नहीं है; यह नाम भ्रामक है। अुसे आधुनिक सभ्यता कहना चाहिये और अुसकी विशेषता यह है कि वह अत्यन्त भौतिक है।

आधुनिक सभ्यताके संपर्कमें आनेसे पहले यूरोपके लोग पूर्वके लोगोंसे या कमसे कम हिन्दुस्तानियोंसे बहुतसी समानता रखते थे; और आज भी वे यूरोपनिवासी जो आधुनिक सभ्यताके प्रभावमें नहीं आये हैं, अुन शहरियोंकी अपेक्षा जो अिस सभ्यताकी अुपज हैं, हिन्दुस्तानियोंसे ज्यादा अच्छी तरह मिल सकते हैं।

४ हिन्द पर शासन अंग्रेज लोग नहीं कर रहे हैं; शासन कर रही है आधुनिक सभ्यता — अपनी रेल, टेलीग्राफ, टेलीफोन और प्रायः अुन सब आविष्कारोंके जरिये जिन्हें आधुनिक सभ्यताकी विजय माना गया है।

५ बम्बअी, कलकत्ता और हिन्दके दूसरे मुख्य शहर अिस आधुनिक सभ्यता-रूपी महामारीके अड्डे हैं।

६ अगर अंग्रेजी राज्यकी जगह आधुनिक तरीकों पर आधारित हिन्दुस्तानी राज्यमें बदल दिया जाये, तो भी हिन्दुस्तानका ज्यादा भला नहीं होगा

---

* नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद-१४ द्वारा प्रकाशित।

अलबत्ता जो दौलत अिंग्लैंड चली जाती है अुसका कुछ हिस्सा रोकनेकी योग्यता अिसमें आ जायगी। लेकिन तब हिंद यूरोप या अमेरिकाके दूसरी या पाँचवीं श्रेणीके राष्ट्र-जैसा हो जायगा।

७ पूर्व और पश्चिम वास्तवमें तब ही मिल सकते हैं, जब पश्चिम आधुनिक सभ्यताको लगभग पूरी तरह फेंक दे या छोड़ दे। पूर्व आधुनिक सभ्यताको अपना ले तब भी वे मिलते हुअे-से दिखाअी पड़ सकते हैं, लेकिन वह मिलाप सशस्त्र समझौते जैसा होगा, जैसा कि जर्मनी और अिंग्लैंडके बीच है। ये दोनों राष्ट्र दोनोंमें से कोअी दूसरेको निगल न जाय अिस आपत्तिसे बचनेके लिअे मानो मृत्युके निरंतर रहनेवाले खतरेके बीच जी रहे हैं।

८ किसी व्यक्ति या समूहके लिअे सारी दुनियाके सुधारकी शुरुआत करना या अुसकी बात सोचना निरी धृष्टता है। आवागमनके बहुत ज्यादा कृत्रिम तथा तेज साधनोंसे अैसा करनेकी कोशिश करना असंभवको संभव बनानेका प्रयत्न करने जैसा होगा।

९ सामान्य तौर पर यह कहा जा सकता है कि भौतिक सुविधाओंकी वृद्धि किसी भी तरह नैतिक विकासमें कोअी मदद नहीं करती।

१० आधुनिक चिकित्सा विज्ञान जादू-टोनेका केन्द्रीभूत सार है। तथाकथित अुच्च कोटिके डॉक्टरी कौशलकी अपेक्षा नीम-हकीमी कहीं अधिक अच्छी चीज है।

११ अस्पताल वे हथियार हैं जिन्हें शैतान अपने स्वार्थके लिअे यानी अपने राज्य पर अपनी प्रभुता कायम रखनेके लिअे काममें ले रहा है। वे दुर्व्यसन, पीड़ा, नैतिक पतन और सच्ची गुलामीको कायम रखते हैं। अेक समय था जब मैं डाक्टरी तालीम लेना चाहता था। अब मैं समझ गया हूँ कि मेरा वैसा सोचना बिलकुल गलत था। अस्पतालोंमें चलनेवाले घृणित व्यापारोंमें किसी भी रूपमें कोअी हिस्सा लेना मैं पाप समझता हूँ। अगर यौन रोगोंके लिअे, यहाँ तक कि क्षय आदि रोगोंके लिअे भी अस्पताल न होते, तो हमारे बीचमें क्षयकी बीमारी और यौन-दुर्व्यसन आजकी अपेक्षा कम होते।

१२ हिन्दकी मुक्ति जो कुछ अुसने पिछले पचास सालोंमें सीखा है अुसे भूल जानेमें है। रेलवे, टेलीग्राफ, अस्पताल, वकील, डॉक्टर आदिको खतम होना पड़ेगा और तथाकथित अुच्च वर्गोंको सजगतासे, धार्मिक श्रद्धाके साथ तथा विचारपूर्वक किसानका सीधा-सादा जीवन जीना सीखना होगा — यह जानते हुअे कि यही जीवन सच्चा आनंद देनेवाला है।

१३ हिन्दको मशीनके बने कपड़े नहीं पहनना चाहिये, चाहे वे यूरोपीय मिलोंसे आये हों या हिन्दुस्तानी मिलोंसे।

१४ अिंग्लैंड हिन्दको असा करनेमें मदद कर सकता है और तब वह हिन्द पर अपने अधिकारके औचित्यको सिद्ध कर दिखायेगा। असा प्रतीत होता है कि आज अिंग्लैंडमें कभी लोग असे हैं जो अिस प्रकार सोचते हैं।

१५ समाजकी असी व्यवस्था करनेमें जिसमें लोगोंकी भौतिक स्थिति पर रोक लगी रहे, प्राचीन कालके ऋषियोंकी सच्ची बुद्धिमानी थी। पांच हजार साल पहलेकी अनगढ़ हल आज भी हमारे किसानोंका हल है। हमारी मुक्ति — हमारी समस्याओंका हल अिसीमें है। लोग असी परिस्थितियोंमें लम्बी आयु पाते हैं, यूरोपने आधुनिक सभ्यताको अपनाकर जो शांति पायी है अुससे तुलनामें यहीं अधिक शांतिका जीवन जीते हैं और मैं महसूस करता हूँ कि हरअेक विचारवान मनुष्य — विशेष अिंग्लैंडवासी तो जरूर ही — यदि वह चाहे तो अिस सत्यको साफ़ कह सकता है और अिसके अनुसार काम कर सकता है।

अहिंसक प्रतिकारकी सच्ची भावना ही मुझे अुपरोक्त लगभग निश्चित निष्कर्षों तक लायी है। अेक अहिंसक सत्याग्रहीके रूपमें, मैं अिस बातकी परवाह नहीं करता कि असा महान सुधार अुन लोगोंके मध्य हो सकेगा या नहीं जो अपना सन्तोष वर्तमान अुन्मत्त दौड़में पाते हैं। अगर मैं अिसकी सच्चाईको महसूस करता हूँ, तो मैं मानता हूँ कि मुझे अिसी मार्गका अनुगमन करना चाहिये और अुसमें खुश होना चाहिये और अिसलिअे मैं अुस समय तक अिन्तजार नहीं कर सकता जब तक सारे लोग अिस चीजको शुरू न कर दें। हम सब जो अिस प्रकार सोचते हैं अुन्हें यह जरूरी कदम अुठाना है और यदि हम सच्चाई पर हुअे तो मैं मानता हूँ कि बाकीके लोग हमारा अनुसरण अवश्य करेंगे। सिद्धान्त हमारे सामने मौजूद है, हमारे व्यवहारको यथासंभव वहां तक पहुंचना होगा। भाग-दौड़के बीच रहते हुअे संभव है कि हम अपनेको अुसकी बुराअियोंसे पूरी तरह मुक्त करनेमें समर्थ न हो सकें। हर समय जब मैं रेलमें बैठता हूँ या मोटर-बसका अुपयोग करता हूँ, तब अनुभव करता हूँ कि मैं अपनी विवेक-बुद्धिकी हिंसा कर रहा हूँ। मैं अिस आधारके तात्विक नतीजेसे नहीं डरता हूँ। अिंग्लैंडकी यात्रा अनुचित है और दक्षिण अफ्रीका तथा हिन्दके बीच समुद्री जहाजोंके जरिये जाना आना भी अनुचित है। आप और मैं अिन चीजोंका अुपयोग अपने अिसी जीवनमें छोड़ सकते हैं और शायद छोड़ देंगे। लेकिन मुख्य बात तो यह है कि हम अपने सिद्धान्तको स्पष्टतया समझ लें। आप वहां अनेक तरहके मनुष्योंको अनेक अवस्थाओंमें देख रहे होंगे, अिसलिअे मैं अनुभव करता

हूँ कि मैं मानसिक रूपसे (अपने मतानुसार) जो प्रगतिशील कदम उठाया है वह मुझे आपको बता देना चाहिये। अगर आप मुझसे सहमत हैं तो आपका कर्तव्य हो जायगा कि आप क्रांतिकारियोंसे और दूसरे सब लोगोंसे कहें कि जो आजादी वे चाहते हैं — या वैसा मानते हैं — वह लोगोंकी हत्या करने या हिंसा करनेसे नहीं प्राप्त होती लेकिन अपना सुधार करनेसे और सच्चे रूपमें हिंदुस्तानी होने और रहनेसे प्राप्त होती है। तब अंग्रेज शासक सेवक होंगे वे स्वामी नहीं रहेंगे। वे संरक्षक (ट्रस्टी) होंगे न कि अत्याचारी और वे हिन्दके सारे निवासियोंके साथ पूरी तरहसे शांतिपूर्वक रहेंगे। अिसलिअ हमारा भविष्य अंग्रेज जातिके हाथमें नहीं है लेकिन खुद हिंदुस्तानियोंके हाथमें है और अगर अनमें पर्याप्त मात्रामें आत्मत्याग तथा आत्म-संयम है तो वे अिसी क्षण अपनेको आजाद बना सकते हैं। और जब हम भारतमें शान्तीकी उस स्थितिको प्राप्त कर लेंगे जो आज भी हममें काफी मात्रामें है तथा कुछ साल पूर्व तक तो जो हमारे बीच अपनी परिपूर्णावस्थामें थी तब श्रेष्ठ भारतीयों और श्रेष्ठ यूरोपियोंके लिअ भारतमें कहीं भी किसी भी स्थान पर अेक-दूसरेसे प्रेमपूर्वक मिलना संभव होगा। शान्तीके अिस वातावरणमें अेक-दूसरेकी मित्रताका सम्पादन करनेवाले ये भारतीय और यूरोपीय दूसरोंके लिअ प्रेरणारूप सिद्ध होंगे। जब भगवान वाहन नहीं थे तब भी अुपदेशक और प्रचारक देशके अेक कोनेसे दूसरे कोने तक सारे खतरोंका सामना करते हुअ पैदल चलते थे — अपने स्वास्थ्यको फिरसे प्राप्त करनेके लिअ नहीं यद्यपि अुनकी पदयात्राओंसे अुन्हें यह लाभ मिल ही जाता था बल्कि मानव जातिके कल्याणके खातिर। तब बनारस और तीर्थयात्राके अन्य स्थान पवित्र नगर थे जब कि आज वे दूषित हैं।

महात्मा जी डी तेन्दुलकर खंड १ पृ १२९

२

स्वराज्यमें भारतकी क्या दशा होगी?

पाठकोंने मेरे पास ढेरों पर्चे भेजे हैं, जो बोस्टनकी अिंडिया नेशनल लिबरल असोसियेशनकी प्रचार-समिति खूब बांट रही है। पर्चा नं० ६ में यह लिखा है:

> गांधीराज्यकी स्थापना होने पर भारतका क्या स्वरूप होगा?
> रेलें नहीं होंगी। अस्पताल नहीं होंगे। मशीनें नहीं होंगी।
> किसी जल या स्थल सेनाकी जरूरत नहीं होगी, क्योंकि गांधीजी दूसरे राष्ट्रोंको वचन दे देंगे कि भारत अनके कामकाजमें हस्तक्षेप नहीं करेगा और अिसीलिअे वे भारतके कामोंमें हस्तक्षेप नहीं करेंगे।
> न कानूनोंकी जरूरत होगी, न अदालतोंकी, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपना कानून होगा। हरअेकको अपनी मरजीका काम करनेकी आजादी होगी। बड़े आरामका जीवन होगा, क्योंकि हर आदमी खद्दरकी लंगोटीमें घूमेगा और खुलेमें सोयेगा।

मैं यह नहीं कह सकता कि अिसमें कोअी अनुचित है। यह गुमनाम तौर पर बनाया गया व्यंगचित्र है, जो पाश्चात्य युद्धनीतिमें जायज माना जाता है। केवल अिसके भीतरका गूढ़ आशय ही झूठा है। मेरा अभिप्राय मैं यहां स्पष्ट कर दूं। पहली बात तो यह है कि भारतवर्ष 'गांधीराज्य' स्थापित करनेका प्रयत्न नहीं कर रहा है। वह स्वराज्यकी स्थापनाके लिअे जीतोड़ परिश्रम कर रहा है। और स्वराज्य प्राप्तिके खातिर वह खुशीसे और औचित्यके साथ गांधीका बलिदान कर देगा। गांधीराज्य अेक आदर्श स्थिति है और अस स्थितिमें पांचों नकारात्मक बातें सच्चा चित्र अुपस्थित करेंगी। परन्तु कोअी स्वप्नमें भी यह खयाल नहीं करता। मेरा तो कथन नहीं है कि स्वराज्यमें रेलें नहीं होंगी, अस्पताल नहीं होंगे, यंत्र नहीं होंगे, जल और स्थल सेना नहीं होगी, कानून तथा कानूनी अदालतें नहीं होंगी। अिसके विपरीत रेलें होंगी, किन्तु अुनका अुद्देश्य भारतका सैनिक या आर्थिक शोषण नहीं होगा, बल्कि अुनका अुपयोग भीतरी व्यापार बढ़ाने और तीसरे दरजेके मुसाफिरोंके जीवनको काफी आरामदेह बनानेमें किया जायगा। तीसरे दरजेकी मुसाफिरी करनेवाली जनता आज किराया देती है, अुसका कुछ बदला अुसे मिलेगा। कोअी यह आशा नहीं करता कि स्वराज्यमें रोगोंका सर्वथा अभाव होगा; अिसलिअे स्वराज्यमें अस्पताल तो अवश्य होंगे, परन्तु यह आशा रखी जाती है कि तब अस्पतालोंका

अुद्देश्य भोग विलासके रोगियोंकी अपेक्षा दुर्घटनाओंके शिकार होनेवालोंकी सेवा करना अधिक होगा। वणक चरखेके रूपमें यंत्र भी होंगे। आखिर तो चरखा भी अेक नाजुक यंत्र ही है। अिसमें मुझे कोअी शंका नहीं कि स्वतंत्र भारतमें कभी कारखाने खड़े होंगे जिनका अुद्देश्य लोगोंको लाभ पहुंचाना होगा न कि आजकलकी तरह जनसाधारणका खून चूसना। जलसेनाका तो मुझे कुछ पता नहीं है लेकिन अितना मैं अवश्य जानता हूं कि भावी भारतकी स्थलसेनाके सैनिक भारतको गुलाम बनाये रखने और दूसरे राष्ट्रोंकी आजादी छीननेके लिअे रखे गये भाड़के टट्टू नहीं होंगे। तब स्थलसेना बहुत कुछ घटा दी जायगी। अुसमें अधिकांश स्वयंसेवक होंगे और असका उपयोग आंतरिक व्यवस्था रखनेके लिअे पुलिस शक्तिकी तरह किया जायगा। स्वराज्यमें कानून होंगे और कानूनी अदालतें भी होंगी परन्तु वे लोगोंकी स्वतंत्रताके रक्षक होंगे न कि आजकी तरह अेक नौकरशाहीके हथियार होंगे जिसने अेक सम्पूर्ण राष्ट्रको शक्तिहीन बना दिया है तथा जो असे और भी शक्तिहीन बनाने पर तुली हुअी है। अन्तमें स्वराज्यमें जो चाहे असे लंगोटी पहनने और खद्दरमें सोनेकी स्वतंत्रता होगी। लेकिन मुझे आशा है कि आजकलकी तरह लाखों आदमियोंके लिअे अेक मैला-सा चिथड़ा पहनकर घूमना जरूरी नहीं होगा जो आवश्यक कपड़ा खरीदनेका साधन न होनेसे आज लंगोटीका काम देता है। न स्वराज्यमें लाखों लोगोंको मकानोंके अभावमें अपने थके हुअे और भूखे शरीरोंको खुलेमें आराम देना पड़ेगा। अिसलिअे 'हिन्द स्वराज्य' में प्रकट किये गये कुछ विचारोंको सन्दर्भसे अलग करके अुन्हें व्यंग्यात्मक रूपमें जनताके सामने अिस तरह रखना मानो मैं हर आदमीके अपनानेके लिअे अन विचारोंका प्रचार कर रहा होअूं अुचित नहीं है।

यंग अिंडिया ९–३–२२ पृ० १४५

३

स्वराज्यकी व्यावहारिक परिभाषा

स्वतन्त्रता अेक असा शब्द है जो शताब्दियोंके प्रयोगसे पुनीत हो गया है और अिसलिअ अिसके आसपास बहुतेरे लोगोंकी रायोंको अेकत्र कर लेना कोअी बडी बात नहीं है। परन्तु अुसकी असी व्याख्या करनेका साहस कोअी नहीं करेगा जो अन सबको पसन्द हो सके। अिसलिअ मैं सुझाता हूं कि स्वराज्यकी जगह लेनेवाला दूसरा कोअी अच्छा शब्द प्राप्त नहीं है और अुसकी अेक ही मानसिक व्याख्या हो सकती है भारतका वह पद जिसकी अभिलाषा किसी दिये हुअे अवसर पर भारतीय लोग करें।

यदि मुझसे कोअी यह पूछे कि अिस घडी हिन्दुस्तान क्या चाहता है तो मैं कहूंगा कि मुझे पता नहीं। मैं सिर्फ अितना कह सकूंगा कि मैं तो अससे यही चाहता हूं कि वह अिस बातकी अभिलाषा रखे कि हिन्दुओं और मुसलमानोंमें सच्चा सम्बन्ध रहे जनसाधारणको रोटी मिले और छुआछूत दूर हो। अिस घडी तो मैं स्वराज्यकी यही व्याख्या करूंगा। यह व्याख्या मैं अिसलिअ पेश कर रहा हूं कि मैं अेक व्यावहारिक आदमी होनेका दावा करता हूं। मैं जानता हूं कि हम अिंग्लैण्डसे अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता चाहते हैं। वह पूर्वोक्त तीन बातोंके बिना कभी नहीं मिल सकती — यदि हमारे पास हथियार होते और हमें अुनका प्रयोग भी करना आता तब भी नहीं मिल सकती।

हिन्दी नवजीवन २०–७–२४ पृ० ३९४

राष्ट्रीय माग

[१५ सितम्बर १९३१ को लन्दनकी गोलमेज परिषदकी फेडरल स्ट्रक्चर सब-कमेटीके सामने दिया गया गाधीजीका भाषण ।]

आरम्भमें ही मुझे स्वीकार करना चाहिये कि आपके सामने भारतीय राष्ट्रीय काग्रेसकी स्थिति रखते हुअे मै काफी कठिनाअी महसूस कर रहा हू। मै कहना चाहूगा कि मै जिस सब-कमेटीमें और साथ ही जब अुचित समय आयेगा तब गोलमेज परिषदमें शुद्ध सहयोगकी भावनाके साथ शामिल होनेके लिअे और अपनी शक्तिभर सहमतिके मुद्दे खोजनेकी कोशिश करनेके लिअे आया हू। मै सम्राटकी सरकारको यह आश्वासन भी देना चाहूगा कि मेरी अिच्छा हुकूमतको किसी भी समय झझटमें डालनेकी न तो है न होगी और यहा अुपस्थित अपने सहयोगियोको भी मै यही आश्वासन देना चाहूगा कि हमारे दृष्टिकोणोमें चाहे कितना ही अतर हो मै अनके रास्तेमें किसी भी तरह बाधक नही बनूगा। अतअेव यहा मेरी स्थिति पूरी तरह आपकी सद्भावना और सम्राटकी सरकारकी सद्भावना पर निर्भर है। अगर किसी समय मुझे यह मालूम होगा कि मै परिषदकी कोअी भी सेवा नही कर सकता तो मै खुदको अिसमें हटा लेनेमें सकोच नही करूगा। मै अनसे भी जो अिस कमेटी और परिषदके प्रबधके लिअे जिम्मेदार है कह सकता हू कि वे केवल मुझे सकेत भर कर दें और फिर हटनेमें मुझे कोअी झिझक नही होगी।

मुझे असा अिसलिअे कहना पड रहा है क्योकि मै जानता हू कि सरकार और काग्रेसके बीच मौलिक मतभेद है और यह भी सभव है कि मेरे और मेरे सहयोगियोके बीचमें महत्त्वपूर्ण मतभेद है। अिसके सिवा मुझे अपना काम अेक मर्यादाके भीतर रहते हुअे करना होगा। मै काग्रेसका भारतीय राष्ट्रीय महासभाका अेक गरीब और विनम्र प्रतिनिधि-मात्र हू और अिसलिअे यह बता देना अुचित ही है कि काग्रेस वास्तवमें क्या है और असका अुद्देश्य क्या है। तब आप मेरे साथ सहानुभूति रखेंगे क्योकि मै जानता हू कि मेरे कधो पर जिम्मेदारीका जो बोझ है वह बहुत भारी है।

काग्रेस क्या है?

अगर मै गलती नही करता हू तो भारतमें काग्रेस सबसे पुराना राजनीतिक सगठन है। अुसकी अवस्था लगभग ५० सालकी है और अिस अरसेमें

वह बिना किसी रुकावटके बराबर अपने वार्षिक अधिवेशन करती रही है। वह सच्चे अर्थोंमें राष्ट्रीय है। वह किसी खास जाति किसी खास वर्ग किसी विशेष हितकी प्रतिनिधि नहीं है। वह सब भारतीय हितों और सब वर्गोंका प्रतिनिधित्व होनेका दावा करती है। मुझे यह बताते हुअे बहुत आनन्द आता है कि अिसकी अुपज आरम्भमें अेक अंग्रेज मस्तिष्कमें हुअी। अेलन ऑक्टेवियस ह्यूमको हम कांग्रेसके पिताके रूपमें जानते हैं। दो महान पारसियों फिरोजशाह मेहता और दादाभाअी नौरोजीने — जिन्हें सारा भारत वृद्ध पितामह कहनेमें प्रसन्नता अनुभव करता है, अिसका पोषण किया। आरम्भसे ही कांग्रेसमें मुसलमान अीसाअी अॅंग्लो अिडियन वगैरा आदि शामिल थे, बल्कि मुझे यों कहना चाहिये कि अिसमें सब धर्म, पंथ और सम्प्रदायोंका थोड़ा-बहुत पूर्णताके साथ प्रतिनिधित्व होता रहा। स्वर्गीय बदरुद्दीन तैयबजीने अपने आपको कांग्रेसके साथ मिला दिया था। मुसलमान और पारसी भी कांग्रेसके सभापति रहे हैं। अिस समय कमसे कम अेक भारतीय अीसाअी अध्यक्षका नाम मुझे याद आता है। वे थे श्री अुमेशचन्द्र बनर्जी। श्री कालीचरण बनर्जीने जिनसे ज्यादा विशुद्ध चरित्रवाला किसी भारतीयको मैं जानता नहीं अपनेको कांग्रेसके साथ अेक कर लिया था। मैं और निस्सन्देह आप भी अपने बीच श्री के० टी० पॉलका अभाव अनुभव कर रहे होंगे। यद्यपि वे कभी कांग्रेसमें विधिवत शामिल नहीं हुअे फिर भी वे पूरे राष्ट्रवादी थे और कांग्रेससे सहानुभूति रखते थे।

जैसा कि आप जानते हैं स्वर्गीय मौलाना मुहम्मदअली जिनकी अुपस्थितिका भी आज यहां अभाव है कांग्रेसके सभापति थे और अिस समय कांग्रेसकी कार्यसमितिके १५ सदस्योंमें ४ सदस्य मुसलमान हैं। स्त्रियां भी हमारी कांग्रेसकी सभापति रह चुकी हैं — पहली डॉ० अेनी बेसेंट थी और दूसरी श्रीमती सरोजिनी नायडू। श्रीमती नायडू आजकल कार्यसमितिकी सदस्य भी हैं, और अिस प्रकार जहां हमारे यहां वर्ग या पंथका भेदभाव नहीं है वहां किसी प्रकारका स्त्री-पुरुष भेद भी नहीं है।

कांग्रेसने अपने आरम्भसे ही अछूत कहलानेवालोंके अुद्धार-कार्यको अपने हाथोंमें ले रखा है। अेक समय था जब कि कांग्रेस अपने प्रत्येक वार्षिक अधिवेशनके समय अपनी सहयोगी संस्थाकी तरह सामाजिक परिषद्का भी अधिवेशन किया करती थी जिसे स्वर्गीय रानडेने अपने अनेक कामोंमें अेक काम बना लिया था और जिसे अुन्होंने अपनी शक्तियां समर्पित की थीं। आप देखेंगे कि अुनके नेतृत्वमें सामाजिक परिषदके कार्यक्रममें अछूतोंके सुधारके कार्यको अेक खास स्थान दिया गया था। किन्तु सन् १९२० में कांग्रेसने अेक बड़ा कदम अुठाया और अस्पृश्यता निवारणके सवालको राजनीतिक मंचका अेक आधार-स्तम्भ बनाकर राजनीतिक कार्यक्रमका अेक महत्त्वपूर्ण अंग बना

दिया । जिस प्रकार कांग्रेस हिन्दू मुस्लिम-अकताको और मुस्लिम सब सम्प्रदायोंके पारस्परिक अकयको स्वराज्य प्राप्तिके लिअे अनिवार्य समझती थी, असी प्रकार पूर्ण स्वराज्य प्राप्तिके लिअे अस्पृश्यताके निवारणको भी वह अनिवार्य समझने लगी।

सन १९२ में कांग्रेसने जो स्थिति ग्रहण की थी वह आज भी बनी हुआी है और अिस प्रकार कांग्रेसने अपने आरम्भसे ही अपनेको सच्चे अर्थोंमें राष्ट्रीय सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है।

अगर यहां अपस्थित महाराजागण मुझे आज्ञा दें तो मैं यह बतलाना चाहता हूं कि अपने आरम्भमें ही कांग्रेसने अनकी सेवाका काम भी अठा लिया था। मैं अिस कमेटीको याद दिलाना चाहता हूं कि स्व० दादाभाी भारतके वृद्ध पितामह ही थे जिन्होंने काश्मीर और मैसूरके प्रश्नको कायम करके सफलताको पहुंचाया था और मैं अत्यन्त विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि ये दोनों राजवंश भी दादाभाी नौरोजीके और कांग्रेसके प्रयत्नोंके लिअे कम अणी नहीं हैं। अब तक भी राजाओंके घरेलू और आंतरिक मामलोंमें हस्तक्षेप न करके कांग्रेस अनकी सेवाका प्रयत्न करती रही है।

मैं आशा करता हूं कि अिस संक्षिप्त परिचयसे जिसका दिया जाना मैने आवश्यक समझा यह सब-कमेटी और जो कांग्रेसके दावेमें दिलचस्पी रखते हैं वे यह जान सकेंगे कि असने जो दावा किया है असका वह योग्य अधिकारी है। मैं जानता हूं कि कभी-कभी वह अपने अिस दावेको कायम रखनेमें असफल भी हुई है, लेकिन मैं यह कहनेका साहस करता हूं कि अगर आप कांग्रेसका अितिहास देखेंगे तो आपको मालूम होगा कि असफल होनेकी अपेक्षा वह सफल ही अधिक हुी है और समयके साथ असकी सफलता लगातार बढ़ती गयी है। सबसे अधिक कांग्रेस अपने मूल रूपमें देशके अेक कोनेसे दूसरे कोने तक ७ ००० गांवोंमें बिखरे हुअे करोड़ों मूक अधभूखे और भूखे मानवोंकी प्रतिनिधि है फिर चाहे ये लोग ब्रिटिश भारतके नामसे पुकारे जानेवाले प्रदेशके हों अथवा भारतीय भारत अर्थात् देशी राज्योंके। अिसलिअे असा प्रत्येक हित जो कांग्रेसके मतसे रक्षाके योग्य है अिन लाखों मूक लोगोंके हितका साधन होना चाहिये। आप समय समय पर अिन विभिन्न हितोंमें प्रत्यक्ष विरोध देखते हैं। परन्तु यदि वस्तुतः कोअी वास्तविक विरोध हो तो मैं कांग्रेसकी ओरसे बिना किसी संकोचके यह बता देना चाहता हूं कि अिन लाखों मूक मानवोंके हितकी रक्षाके लिअे कांग्रेस प्रत्येक हितका बलिदान कर देगी। अिसलिअे कांग्रेस मूलतः अेक किसानोंका संगठन है या असा कहिये कि वह अधिकाधिक वैसी बनती जा रही है। आपको और कदाचित् अिस समितिके भारतीय सदस्योंको भी यह जानकर आश्चर्य होगा कि कांग्रेसने आज अखिल

भारतमें चरखा संघ आमतौर अपने संगठन द्वारा करीब दो हजार गांवोंकी लगभग ५० हजार स्त्रियोंको रोजगारमें लगा रहा है और अिनमें संभवतः ५० प्रतिशत मुसलमान स्त्रियां हैं। अिनमें हजारों अछूत कहे जानेवाली जातियोंकी भी हैं। अिस प्रकार हम अिस रचनात्मक कार्यके द्वारा रचनात्मक रीतिसे अिन गांवोंमें प्रवेश कर चुके हैं और ७०० ००० गांवोंमें से प्रत्येक गांवमें प्रवेश करनेकी कोशिश की जा रही है। यह काम यद्यपि मनुष्यकी शक्तिके बाहरका है फिर भी यदि मनुष्यके प्रयत्नसे हो सकता हो तो आप शीघ्र ही कांग्रेसको अिन सब गांवोंमें फैली हुअी और घर घर चरखेका संदेश सुनाती हुअी देखेंगे।

कांग्रेसकी मांग

कांग्रेसके प्रतिनिधिके स्वरूपकी अिस विशेषताको समझ लेनेके बाद जब मैं आपको कांग्रेसका आदेश-पत्र सुनाअूंगा तब आपको आश्चर्य न होगा। मैं आशा करता हूं कि यह आपको अरुचिकर नहीं लगेगा। आप मान सकते हैं कि कांग्रेस अेक अैसा दावा कर रही है जो बिलकुल असमर्थनीय है। जैसा भी वह है मुझे यहां कांग्रेसकी ओरसे अुसे यथासंभव अत्यंत विनम्रतापूर्वक लेकिन यथासंभव अधिकसे अधिक दृढ़तासे पेश करना है। मैं यहां अुस दावेको अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा तथा शक्तिके साथ प्रतिपादित करनेके लिअे आया हूं। अगर आप मुझे जो कुछ मैं मानता आ रहा हूं अुससे अन्यथा बातका विश्वास करा सकें और बता सकें कि यह दावा अिन लोगोंकी मूक जनताके हितोंके प्रतिकूल है तो मैं अपनी रायमें संशोधन कर दूंगा। मेरे मनमें कोअी पूर्वग्रह नहीं है और आपकी बात सुनने और स्वीकार करनेके लिअे मैं तैयार हूं। लेकिन फिर भी मुझे अुस संशोधनको स्वीकार करनेके पूर्व अपने प्रधानोंकी सहमति लेनी पड़ेगी जिससे कि मैं कांग्रेसके प्रतिनिधिके रूपमें अुपयुक्त ढंगसे काम कर सकूं। अब मैं आपके सामने अुस आदेश-पत्रको सुनाता हूं जिससे आप अुन मर्यादाओंको स्पष्ट रूपमें समझ सकें जिन्हें मुझ पर लाद दिया है।

यह आदेश भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके कराची अधिवेशनमें स्वीकृत प्रस्तावमें निहित है। प्रस्ताव अिस प्रकार है :

'भारत-सरकार और कांग्रेसकी कार्यसमितिके बीच जो अस्थायी संधि हुअी है अुस पर विचार करके कांग्रेस अुसका समर्थन करती है और यह स्पष्ट कर देना चाहती है कि कांग्रेसका पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करनेका अुद्देश्य ज्यों-का-त्यों बना हुआ है। यदि ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधियोंके बीच सम्मेलनमें कांग्रेसके प्रतिनिधियोंके जानेके मार्गमें

दूसरे प्रकारकी रुकावटें न रह जायें (और कांग्रेसके प्रतिनिधि अुस सम्मेलनमें शरीक हों) तो कांग्रेसके प्रतिनिधि अपने अुसी अुद्देश्यकी पूर्तिके लिअे प्रयत्न करेंगे — खासकर अिसलिअे कि हमारे देशको सेना विदेशी मामले, राष्ट्रीय आय-व्यय तथा आर्थिक नीतिके संबंधमें अधिकार प्राप्त हो जाय और भारतकी ब्रिटिश सरकारने जो लेन-देन किये हैं अुनकी जांच होकर अिस बातका निपटारा हो जाय कि भारत और अिंग्लैण्ड अिन दोनोंमें से कोओ भी जब चाहे तब अेक-दूसरेसे अलग हो जाय। कांग्रेसके प्रतिनिधियोंको अिस बातकी स्वतंत्रता रहेगी कि अिसमें असी घट-बढ़ करें जो भारतके हितके लिअे प्रत्यक्ष रूपसे आवश्यक सिद्ध हो।

अिस प्रस्तावके प्रकाशमें मैंने गोलमेज परिषद द्वारा नियुक्त अनेक सब कमेटियां जिन अस्थायी निर्णयों पर पहुंची हैं अुनका यथाशक्ति सावधानीपूर्वक अध्ययन करनेकी कोशिश की है। मैंने प्रधानमंत्रीके अुस वक्तव्यका भी सावधानीसे अध्ययन किया है जिसमें सम्राटकी सरकारकी सुविचारित नीति दी गयी है। संभव है कि मेरा खयाल गलत हो, लेकिन जहां तक मैं समझ पाया हूं यह दस्तावेज कांग्रेसने जो लक्ष्य रखे हैं और दावे किये हैं अुन्हें पूरा नहीं करता। यह सही है कि मुझे असे परिवर्तनोंको स्वीकार करनेकी स्वतंत्रता है जो प्रत्यक्ष रूपसे भारतके हितमें हों, लेकिन वे अिस प्रस्तावमें अुल्लिखित बुनियादी सिद्धान्तोंसे संगत होने चाहिये। यहां मुझे अुस पवित्र समझौतेकी शर्तोंकी याद हो आती है जो दिल्लीमें भारत-सरकार तथा कांग्रेसके बीच हुआ था। अुस समझौतेमें कांग्रेसने संघके सिद्धान्तको केन्द्रमें जिम्मेदार सरकारके सिद्धान्तको और अिस सिद्धान्तको भी स्वीकार कर लिया है कि भारतके हितोंकी दृष्टिसे जहां तक आवश्यक हो संरक्षण जरूर होने चाहिये।

समान भागीदारी

कल अेक मुहावरेका अुपयोग किया गया था। मैं अुन प्रतिनिधिको भूल रहा हूं लेकिन मुझे अुनका वह मुहावरा बहुत अर्थपूर्ण मालूम हुआ। अुन्होंने कहा था, "हम केवल राजनीतिक संविधान नहीं चाहते हैं।" मैं नहीं जानता अुन्होंने अिस अुक्तिको वही अर्थ दिया था या नहीं जो कि मुझे अेकदम सूझा परंतु मैंने शीघ्र ही अपने-आपसे कहा, अिस मुहावरेने मुझे अेक सुन्दर शब्द प्रयोग दिया है। यह सही है कि कांग्रेस और व्यक्तिशः मैं तो कभी भी केवल राजनीतिक संविधानसे संतुष्ट नहीं हो सकेंगे — असे राजनीतिक संविधानसे जिसे पढ़नेसे असा लगे कि वह भारतको वह सब देता है जिसकी कि राज

नैतिक दृष्टिसे वह जिच्छा कर सकता है लेकिन यथार्थमें कुछ भी नहीं देता। अगर हम पूर्ण स्वराज्यका आग्रह करते हैं तो जिसका कारण हमारी अहंकार भावना नहीं है अुसका कारण यह नहीं है कि हम दुनियाको यह दिखाना चाहते हैं कि हमने ब्रिटिश जनतासे सारा संबंध तोड़ लिया है।

जिस प्रकारकी कोजी बात नहीं है। जिसके विपरीत आप जिस आदर्शमें पायेंगे कि कांग्रेस ब्रिटेनके साथ अेक भागीदारीका विचार रखती है कांग्रेस ब्रिटिश जनतासे संबंध रखनेका विचार करती है लेकिन वह संबंध अैसा होना चाहिये जो दो पूरी तरह समानोंके बीच रह सकता हो। अेक समय था जब मैं ब्रिटिश प्रजाजन होने और कहलानेमें गौरव महसूस करता था। कअी बरसोंसे मैंने खुदको ब्रिटिश प्रजाजन कहना बन्द कर दिया है मैं प्रजाजन कहलानेके बजाय यह ज्यादा पसन्द करूंगा कि मुझे बागी कहा जाय। अब तो मेरी आकांक्षा यह है कि मैं साम्राज्यका नहीं बल्कि संभव हो तो राष्ट्रमंडलका —भागीदारी पर आधारित राष्ट्र-मंडलका —नागरिक बनूं। अगर ईश्वरने चाहा तो वह अेक अटूट भागीदारी होगी अेक राष्ट्र द्वारा दूसरे पर अूपरसे थोपी हुअी भागीदारी नहीं होगी। अतअेव आप यहां देखेंगे कि कांग्रेस चाहती है कि किसी भी पक्षको अिस संबंधका अन्त करने और भागीदारीको तोड़ने या अलग होनेका अधिकार होना चाहिये। अिसलिअे यह भागीदारी अैसी होनी चाहिये कि अुससे दोनोंको लाभ हो। क्या मैं कहूं — मेरा यह कथन प्रस्तुत प्रश्नकी दृष्टिसे अप्रासंगिक हो सकता है पर मेरे लिअे वह अप्रासंगिक नहीं है —कि जैसा मैंने अन्यत्र कहा है मैं अच्छी तरहसे समझता हूं कि आज जिम्मेदार ब्रिटिश राजनीतिज्ञ घरेलू मामलोंके संकटको दूर करनेके प्रयत्नमें पूरी तरह डूबे हुअे हैं। हम अुनसे जिससे कमकी आशा भी नहीं कर सकते और जब मैं लन्दनकी ओर आ रहा था तभी मुझे यह ख्याल आया था कि क्या हम लोग जो अभी जिस सब-कमेटीमें अुपस्थित हैं ब्रिटिश मंत्रियोंके लिअे बाधक नहीं होंगे क्या हमारी स्थिति यहां अुनके बीचमें अनुचित हस्तक्षेप करनेवालोंकी जैसी न होगी? तो भी मैंने अपने आपसे कहा, यह संभव है कि हमारी स्थिति अनुचित हस्तक्षेप करनेवालोंकी जैसी न हो, यह भी संभव है कि ब्रिटिश मंत्री खुद गोलमेज परिषदकी कारवाअीको अपने घरेलू मामलोंके लिअे प्राथमिक महत्त्वका समझें। हां भारतको तलवारके जोरसे दबाकर रखा जा सकता है। लेकिन ग्रेट ब्रिटेनकी समृद्धिके लिअे ग्रेट ब्रिटेनकी आर्थिक आजादीके लिअे ज्यादा लाभदायक क्या होगा गुलाम परन्तु बागी भारत या अैसा भारत जो ब्रिटेनका सम्मानित भागीदार होगा और जो ब्रिटेनके साथ अुसके दुःख बंटायेगा और अुसकी विपत्तिके समयमें भी हिस्सा लेगा?

मेरा सपना

हां, और आवश्यकता होने पर, परन्तु अपनी अिच्छासे, जो ब्रिटेनके साथ कंधेसे कंधा लगाकर लड़ेगा भी — किसी भी जाति या व्यक्तिके शोषणके लिअे नहीं, बल्कि सारी दुनियाकी भलाअीके लिअे। यदि मैं अपने देशके लिअे आजादीकी मांग करता हूं, तो आप विश्वास कीजिये कि मैं यह आजादी अिसलिअे नहीं चाहता कि मेरा बड़ा देश, जिसकी आबादी सम्पूर्ण मानव जातिका पांचवां हिस्सा है, दुनियाकी किसी भी दूसरी जातिका या किसी भी व्यक्तिका शोषण करे। आप विश्वास कीजिये कि मैं अपनी शक्तिभर अपने देशको असा अनर्थ नहीं करने दूंगा। यदि मैं अपने देशके लिअे आजादी चाहता हूं, तो मुझे यह मानना ही चाहिये कि प्रत्येक दूसरी सबल या निर्बल जातिको अुस आजादीका वैसा ही अधिकार है। यदि मैं असा नहीं मानता हूं और असी अिच्छा नहीं करता हूं, तो अुसका यह अर्थ है कि मैं अुस आजादीका पात्र नहीं हूं। और अिसीलिअे मैंने आपके सुन्दर द्वीपके तट पर पहुंचने पर अपने-आपसे कहा कि सद्भाग्यवश ब्रिटिश मंत्रियोंको यह महसूस कराना मेरे लिअे संभव होगा कि भारत अेक मूल्यवान भागीदारके रूपमें — जिसे आप ताकतके जोरसे नहीं बल्कि प्रेमरूपी रेशमकी डोरीसे अपने साथ बांध कर रखेंगे — आपका सच्चा सहायक सिद्ध होगा। असा भारत अिंग्लैण्डके महज अेक सालके बजटको ही नहीं, कअी सालोंके बजटको संतुलित करनेमें सहायक सिद्ध होगा। ये दो राष्ट्र मिलकर क्या नहीं कर सकते? आपका राष्ट्र संख्यामें छोटा है, पर वह बहादुर है। अुसकी बहादुरीका अितिहास शायद बेमिसाल है। वह गुलामीकी प्रथाके खिलाफ लड़ा है और अुसने असंख्य बार कमजोरोंकी रक्षा करनेका दावा किया है। दूसरी ओर हमारा राष्ट्र अत्यन्त प्राचीन और विशाल है। अुसकी जनसंख्या करोड़ों तक पहुंचती है। अुसका अतीत अतिशय अुज्ज्वल है। अिस समय वह दो महान संस्कृतियोंका — मुस्लिम और हिन्दू संस्कृतिका प्रतिनिधित्व करता है। अुसमें रहनेवाले अीसाअियोंकी संख्या भी कुछ कम नहीं है। अिसके सिवा अनेक गुणोंसे सम्पन्न दुनियाकी मशहूर पारसी जाति भी वहां बसी हुअी है। अुसकी संख्या बहुत कम है, लेकिन दानशीलता और व्यापारिक साहसके गुणोंमें यह जाति बेजोड़ है, अग्रगण्य तो निश्चय ही है। भारतमें ये सारी संस्कृतियां अेकत्र हुअी हैं और यदि यहां प्रतिनिधियोंके रूपमें आये हुअे हिन्दुओं और मुसलमानोंको अीश्वर असी ही प्रेरणा दे कि वे आपसमें मिल जायें और दोनोंके लिअे सम्मान्य किसी समझौते पर पहुंच जायें, तो फिर ये दोनों राष्ट्र मिलकर क्या नहीं कर सकते? मैं अपने-आपसे और आप लोगोंसे पूछता हूं कि भारत स्वतंत्र हो, ग्रेट ब्रिटेन जितना ही स्वतंत्र हो, तो अिन दोनों राष्ट्रोंके बीचमें होनेवाली सम्मानपूर्ण

भागीदारी क्या बिस महान राष्ट्रकी घरकी स्थितिकी दृष्टिसे भी परस्पर लाभदायी नहीं होगा? और अिसलिअ यह स्वप्निल आशा लेकर ही मैं यहां आया हूं और अभी भी मैं अिस सपनेको पाल रहा हूं।

अितना कहकर शायद मैंने मुझे जो-कुछ कहना चाहिये था वह सब कह दिया है। बाकी सब आप खुद पूरा कर लेंगे। मैं मानता हूं कि आप मुझसे अैसी आशा नहीं रखेंगे कि मैं अिस सिलसिलेमें आपको हर बातका पूरा ब्यौरा दूं और यह बताअूं कि सेना पर नियंत्रणसे और विदेशी मामलों पर तथा वित्तीय राजस्व-सम्बन्धी और आर्थिक नीति पर या वित्तीय लेन-देन पर नियंत्रणसे मेरा क्या अर्थ है। वित्तीय लेन-देनके मामलोंका अुल्लेख करते हुअे कल अेक मित्रने कुछ पवित्र और परिवर्तनके पर कहा था। मैं अैसा नहीं मानता। मेरे नये आनेवाले और पुराने जानेवाले भागीदारोंके बीचमें हिसाब हो तो अुनके किये हुअे लेन-देनकी जांच की जाती है और अुसमें आवश्यकतानुसार घट-बढ़ भी की जाती है। अिसलिअे अगर कांग्रेस यह कहती है कि राष्ट्र जो बोझ स्वीकार कर रहा है अुसमें से कितना अंश अुठाना चाहिये और कितना अंश नहीं अुठाना चाहिये अितना जानने-समझनेका अुसे अधिकार है तो वह कोअी अपराध नहीं करता। अिस हिसाब और जांचकी मांग केवल भारतके ही हितमें नहीं दोनों देशोंके हितमें की जा रही है। मुझे निश्चय है कि ब्रिटिश जनता भारत पर अैसा कोअी भी बोझ नहीं डालना चाहती जो कि अुसे न्यायकी दृष्टिसे अुठाना नहीं चाहिये। और मैं यहां कांग्रेसकी ओरसे यह घोषणा करता हूं कि कांग्रेस अेक भी अैसे ॠणको अुसका त्याग करनेका विचार भी नहीं करेगी, जो अुसे न्यायकी दृष्टिसे चुकाना ही चाहिये। यदि हमें अेक सम्मानीय राष्ट्रके रूपमें रहना है जिसकी सारी दुनियामें साख हो, तो हम अपने न्याय्य कर्जको पाअी-पाअी, जरूरत हो तो अपने रक्तसे भी भरेंगे और चुकायेंगे।

मुझे लगता है कि अिस आन्दोलनकी धाराओंसे ब्रिटेन शायद समझानेकी और कांग्रेसके लोग अुनका जो अर्थ करते हैं अुसे अथवा आपके सामने और अधिक स्पष्टीकरण करनेकी कोअी जरूरत नहीं है। अगर अीश्वरकी अैसी अिच्छा होगी कि मैं अिन चर्चाओंमें भाग लेता रहूं तो आगे अिन चर्चाओंके दरमियान मैं अिन धाराओंके आशयको सविस्तार समझाअूंगा। आगे अिन चर्चाओंके दरमियान मुझे संरक्षणों (Safeguards) के बारेमें जो कुछ कहना है वह भी कहूंगा। किन्तु चान्सलर महाशय मेरा खयाल है कि आपकी मेहरबानीसे जिस सभाका समय लेकर किंचित् विस्तारसे शायद मैंने जो कुछ कहा है वह फिलहाल काफी है। अिस सभाका अितना

ज्यादा समय ेनका मेरा काओी विचार नही था लेकिन मुझ लगा कि यदि अिस अवसर पर भी मने अपनी प्रिय आकाक्षा अपन हृदयकी सारी भावना अुडलकर आपके सामन नही रखी तो म अुस मामलके प्रति याय नही करुगा जिसे आपको अिस अुप-समितिका और ब्रिटिश राष्ट्रका — जिसक कि हम भारतीय प्रतिनिधि अिस समय मेहमान ह — सम्मानके लिअ म यहा आया हू। मेरी बडी अिच्छा है कि जब म यहासे जाअू तो यह विश्वास लेकर जाअू कि ग्रेट ब्रिटेन और भारतके बीच सम्मानास्पद और समाननामूलक भागीदारीका सम्बध बननवाला है।

अन्तमें म यह कहूगा कि जितन दिन म आप लोगोके बीचमें हू सदव म यह प्राथना करता रहूगा कि भगवान अुपयुक्त शुभ परिणाम लाय। अिससे अधिक तो म क्या कहू? चासलर महोदय म लगभग ४५ मिनट ले चुका फिर भी आपन मुझ बीचमें टोका नहा। अिस तरह आपन मरे प्रति जो मेहरबानी दिखाओी है अुसके लिअ म आपको धयवाद देता हू। म अिस अुदारताका अधिकारी नही था। अिसलिअ आपको फिर अक बार धयवाद देता हू।

स्पाचेज अण्ड राअिटिंग्ज आफ महात्मा गाधी (चौथा सस्करण) जी अ० नटसन अेण्ड क पृ ७८७।

५

मेरे सपनोकी आजादी

दोस्तोने बार-बार मुझ पर जोर डाला है कि म यह बताअू कि आजादी क्या है? बातके दोहराय जानका डर होते हुअ भी मुझ कहना चाहिय कि मरे सपनोकी आजादीका अथ तो रामराज्य यानी दुनियामें अीश्वरका राज्य है। स्वगमें यह राज्य कसा होगा सो म नही जानता। बहुत दूरकी चीज जाननकी मुझ अिच्छा भी नही है। अगर वतमान मनको काफी अच्छा लगता हो तो भविष्य अुससे बहुत अलग नही हो सकता।

अिसलिअ राजनीतिक आर्थिक और नतिक तीनो तरहकी आजादी ही सच्ची आजादी है।

राजनीतिक आजादीका मतलब ही यह है कि देश पर ब्रिटिश फौजोका किसी भी प्रकारका काओी हुकूमत न रहे।

आर्थिक आजादीका मतलब ब्रिटिश पूजीपतियो और ब्रिटिश पूजीक साथ ही अनके प्रतिरूप हिन्दुस्तानी पूजीपतियो और अनकी पूजीसे पूरी

तरह छुटकारा पाना है। दूसरे शब्दोंमें छोटेसे छोटे आदमीको भी यह महसूस होना चाहिये कि वह बड़ेसे बड़े आदमीके बराबर है। यह तभी हो सकता है जब पूंजीपति अपनी कुशलता और अपनी पूंजीमें छोटेसे छोटे और गरीबसे गरीबको अपना हिस्सेदार बना दें।

नैतिक आजादीका मतलब दूसरोंकी रक्षाके लिअ रखे हुअे हथियारबन्द फौजोंसे छुटकारा पाना है। रामराज्यकी मेरी कल्पनामें ब्रिटिश फौजी हुकूमतकी जगह राष्ट्रीय फौजी हुकूमतको बैठा देनेकी कोअी गुंजाअिश नहीं है। जिस देशमें फौजी हुकूमत होती है, फिर वह फौज उसकी अपनी ही क्यों न हो, वह देश नैतिक दृष्टिसे कभी आजाद नहीं हो सकता और अिसलिअे अुसके सबसे कमजोर कहे जानेवाले नागरिक कभी पूरी तरहसे नैतिक अुन्नति नहीं कर सकते।

यद्यपि यह दावा किया जाता है कि श्री चर्चिलने ब्रिटेनके लिअ लड़ाअी जीती है, तो भी अेक सच्चे अहिंसावादी सुधारककी दृष्टिकोणसे अुन्होंने अबर्डीनके अपने भाषणमें बुद्धिमत्ताकी बातें नहीं कहीं। किसी हथियारोंसे लैस सिपाहीकी तरह ही श्री चर्चिल भी जानते हैं कि हमारे जमानेकी पिछली दोनों लड़ाअियोंमें कितनी तबाही और बरबादी हुअी है। अखबारोंमें अुनके भाषणका जो सार छपा है अुसे मैं अिसी अंकमें दूसरी जगह दे रहा हूं। अुनके भाषणसे निराशावादकी जो गूंज अुठती है अुसके खिलाफ मुझे जनताको सावधान कर देना चाहिये। अगर मनुष्य-समाज लड़ाअियोंसे मुंह मोड़ ले तो अुसका कुछ भी नुकसान नहीं होगा। अिन्सानने आखिरी बूंद तक अपना जो खून बहाया है वह बेकार गया नहीं कहा जायगा, अगर अुससे हम यह सीख लेते हैं कि अच्छा या बुरा कैसा भी कारण क्यों न हो, हमें दूसरोंका खून लेनेके बजाय खुद अपना ही खून खुशीसे देना चाहिये।

अगर ब्रिटिश मंत्रियोंका मिशन हिन्दुस्तानको स्वराज्य दे देता है, तो हिन्दुस्तानको यह तय करना पड़ेगा कि अब फौजी राष्ट्र बननेकी कोशिशमें वह कमसे कम कुछ सालोंके लिअे दुनियामें पांचवें दरजेकी ताकत बना रहना चाहेगा और अिस तरह अूपर जिस निराशावादका जिक्र हुआ है अुसके जवाबमें वह दुनियाको आशाका कोअी सन्देश नहीं देगा, या अपनी अहिंसाको और भी सुधारकर वह अपनेको दुनियाका अैसा सबसे पहला राष्ट्र बननेके लायक साबित करेगा जो बड़ी मुश्किलोंसे प्राप्त की हुअी अपनी आजादीका अुपयोग दुनियाके सिरसे अुस बोझको अुतारनेमें करेगा जो लड़ाअियोंमें प्राप्त की गअी विजयके बावजूद अुस पर रहा है।

हरिजनसेवक ५-५-४६ पृ० ११०

श्री चर्चिलके भाषणका अखबारी सारांश

दुनियाकी हालत आज बहुत नाजुक है। वह नफरतसे भरी पड़ी है। मानव-परिवारकी बड़ी-बड़ी शाखायें — जीती हुआी या हारी हुआी, निर्दोष या गुनहगार — आज घबराहट, दुःख और तबाहीमें डूबा पड़ा है। हमारे जीवनमें दो भयानक लड़ाअियोंने मानव हृदयको असकी मान्यता और सभ्यतासे अलग कर दिया है।

जिसका १९वीं सदी अीसाअी सभ्यता कहती है असे अपार हानि पहुंची है। क्योंकि सब बड़ी-बड़ी कौमें अेसे तनावोंमें से गुजर रही हैं कि अुनकी भावनायें कुन्द हो गअी हैं और सामाजिक व्यवहारके सुन्दर ढंग तबाह हो गये हैं।

सिर्फ विज्ञान घातक युद्धकी जबरदस्त हवाओंका मार खाता हुआ आगे बढ़ा है। अिसने आदमियोंके हाथमें संहारके असे साधन दिये हैं जो मनुष्य द्वारा सामान्य ज्ञान या सद्गुणमें की हुआी अुन्नतिसे कहीं ज्यादा शक्तिशाली हैं।

अब असी दुनियामें जहां कि पहले जरूरतसे ज्यादा खुराककी अुपज समय-समय पर अेक समस्या बन जाती थी, आज कअी देशोंके लोगों पर अकालने अपना सूखा और डरावना पंजा फैला दिया है और खुराककी कमी तो सभी देशोंमें पैदा कर दी है।

मनुष्य-जातिकी आत्मिक शक्तियोंको अिन सब तकलीफोंने खतम कर दिया है, जिनमें से वह गुजर चुकी है और आज भी गुजर रही है। सिर्फ खूरेजीने ही हमें कमजोर और निबल नहीं बनाया है।

मानव प्रकृतिके मर्म स्रोत फिलहाल तो सूख चुके हैं। मानव जातिको असा समय मिलना ही चाहिये, जिसमें वह अपनी पुरानी शक्तियां फिरसे प्राप्त कर सके। अपनी आजकी हालतमें मनुष्य-जाति नये आघात और नअी लड़ाअियां बिल्कुल बरदाश्त नहीं कर सकती। नहीं तो वह बिल्कुल शून्यकी और भद्दी दशामें पहुंच जायगी।

फिर भी हम नहीं जानते कि जो घृणा और अनिश्चितताकी भावनायें आज सब देशोंमें फैली हुआी हैं, वे अन कसौटियोंसे अधिक कड़ी कसौटियां हमारे सामने पेश नहीं करेंगी, जिनमेंसे अभी तक कष्टसे निकलकर हम बाल-बाल बचे हैं।

बहुतसे मुल्कोंमें जब कि सबका संगठित और मिला-जुला प्रयत्न भी पूरा नहीं पड़ता, पार्टियोंके झगड़े और आपसी फूटको भड़काया जाता है और कठपुतलियों-जैसे मताग्रहियोंको खड़ा किया जाता है, जो अपनी विरोधी विचारधाराओंको चिल्ला चिल्लाकर अेक-दूसरे पर थोपनेका प्रयत्न करते हैं।

फिर भी हर मुल्कके आम लोग अपनी दयालुता, बहादुरीको और अपने साथियोंकी सेवाकी भावनाको प्रकट करते हैं। लेकिन पार्टियां, संस्थायें और सिद्धान्त अनका अेक-दूसरेके खिलाफ बिना कारण और बेदर्दीसे अिस तरह भिड़ा रहे हैं, जैसे बिलकुल निरंकुश राजाओं और बादशाहोंके जमानेमें वे भिड़ाये जाते थे।

हरिजनसेवक ५-५-४६ पृ० ११६

६

हिंदुस्तानकी आजादीकी मेरी कल्पना

प्र० — आपने १५ जुलाओके 'हरिजन' में 'सच्चा खतरा' नामक लेखमें कहा है कि आम तौर पर कांग्रेसवाले जानते ही नहीं हैं कि अुन्हें किस किस्मकी आजादी चाहिये। क्या आप अपनी कल्पनाके आजाद हिंदुस्तानका नापाक चित्र देंगे?

अु० — हिंदुस्तानकी आजादीके बारेमें अपने विचार मैं समय-समय पर बता चुका हूं। मगर चूंकि यह सवाल कुछ सिलसिलेवार पूछे गये सवालोंमें से अेक है, अिसलिअे यहां अुन्हीं बातोंको दोहराकर भी अिसका जवाब देना बेहतर होगा।

हिंदुस्तानकी आजादीसे मतलब है सारे हिन्दुस्तानकी आजादी। अुसमें हिन्दुस्तानकी रियासतें भी आ जाती हैं और दूसरी विदेशी हुकूमतें भी। अुदाहरणके लिअे फ्रांसीसी और पुर्तगाली हुकूमत। मैं समझता हूं कि ये परदेशी हुकूमतें तो ब्रिटेनकी सरकारके सहारे ही यहां टिक रही हैं। आजादीका अर्थ हिन्दुस्तानके आम लोगोंकी आजादी होना चाहिये, अुन पर आज हुकूमत करनेवालोंकी आजादी नहीं। हाकिम आज जिन्हें अपने पांव-तले रौंद रहे हैं, आजाद हिंदुस्तानमें अुन्हीं लोगोंकी मेहरबानी पर हाकिमोंको रहना होगा। अुन्हें लोगोंके सेवक बनना होगा और अुनकी मरजीके मुताबिक काम करना होगा।

आजादी नीचेसे शुरू होनी चाहिये। हरअेक गांवमें जमहूरी सल्तनत या पंचायत राज होगा। अुसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी। अिसका मतलब यह है कि हरअेक गांवको अपने पांव पर खड़ा होना होगा — अपनी जरूरतें खुद पूरी कर लेनी होंगी, ताकि वह अपना सारा कारोबार खुद चला सके। यहां तक कि वह सारी दुनियाके खिलाफ अपनी हिफाजत खुद कर सके। अुसे तालीम देकर अिस हद तक तैयार करना होगा कि वह

बाहरी हमलेके मकाबलेमें अपनी रक्षा करते हुअे मर मिटनेके लायक बन जाय। अिस तरह आखिर हमारी बुनियाद व्यक्ति पर होगी। अिसका यह मतलब नहीं कि पड़ोसियों पर या दुनिया पर भरोसा न रखा जाय या उनकी राजी-खुशीसे दी हुअी मदद न ली जाय। खयाल यह है कि सब आजाद होंगे और सब अेक-दूसरे पर अपना असर डाल सकेंगे। जिस समाजका हरअेक आदमी यह जानता है कि उसे क्या चाहिये और अिससे भी बढ़कर जिसमें यह माना जाता है कि बराबरीकी मेहनत करके भी दूसरोंको जो चीज नहीं मिलती है वह खुद भी किसीको नहीं लेनी चाहिये, वह समाज जरूर ही बहुत ऊंचे दरजेकी सभ्यतावाला होना चाहिये।

अैसे समाजकी रचना स्वभावतः सत्य और अहिंसा पर ही हो सकती है। मेरी राय है कि जब तक ओीश्वर पर जीता जागता विश्वास न हो सत्य और अहिंसा पर चलना नामुमकिन है। ओीश्वर या खुदा वह जिन्दा ताकत है जिसमें दुनियाकी तमाम ताकतें समा जाती हैं। वह किसीका सहारा नहीं लेती और दुनियाकी दूसरी सब ताकतोंके खतम हो जाने पर भी कायम रहती है। अिस जीती-जागती रोशनी पर जिसने अपने दामनमें सब कुछ लपेट रखा है मैं विश्वास न रखूं तो मैं समझ न सकूंगा कि मैं आज किस तरह जिन्दा हूं।

अैसा समाज अनगिनत गांवोंका बना होगा। उसका फैलाव अेकके ऊपर अेकके ढंग पर नहीं, बल्कि लहरोंकी तरह अेकके बाद अेककी शकलमें होगा। जिन्दगी मीनारकी शकलमें नहीं होगी, जहां ऊपरकी तंग चोटीको नीचेके चौड़े पाये पर खड़ा होना पड़ता है। वहां तो समुन्दरकी लहरोंकी तरह जिन्दगी अेकके बाद अेक घेरेकी शकलमें होगी और व्यक्ति उसका मध्यबिन्दु होगा। यह व्यक्ति हमेशा अपने गांवके खातिर मिटनेको तैयार रहेगा। गांव अपने अिर्दगिर्दके गांवोंके लिअे मिटनेको तैयार होगा। अिस तरह आखिर सारा समाज अैसे लोगोंका बन जायगा, जो अुद्धत बनकर कभी किसी पर हमला नहीं करते, बल्कि हमेशा नम्र रहते हैं और अपनेमें समुन्दरकी उस शानको महसूस करते हैं, जिसके वे अेक जरूरी अंग हैं।

अिसलिअे सबसे बाहरका घेरा या दायरा अपनी ताकतको अिस्तेमाल भीतरवालोंको कुचलनेमें नहीं करेगा, बल्कि अुन सबको ताकत देगा और उनसे ताकत पायेगा। मुझे ताना दिया जा सकता है कि यह सब तो खयाली तसवीर है, अिसके बारेमें सोचकर वक्त क्यों बिगाड़ा जाय? युक्लिडकी परिभाषावाला बिन्दु कोअी अिन्सान खींच नहीं सकता, फिर भी उसकी कीमत हमेशा रही है और रहेगी। अिसी तरह मेरी अिस तसवीरकी भी कीमत है। अिसके लिअे अिन्सान जिन्दा रह सकता है। अगरचे अिस तसवीरको पूरी

तरह बनाना या पाना मुमकिन नहीं है, तो भी अिस सही तसवीरको पाना या अिस तक पहुंचना हिन्दुस्तानकी जिन्दगीका मकसद होना चाहिये। जिस चीजको हम चाहते हैं असकी सही-सही तसवीर हमारे सामने होनी चाहिये। तभी हम असससे मिलती-जुलती कोअी चीज पानेकी अुम्मीद रख सकते हैं। अगर हिंदुस्तानके हरअेक गांवमें कभी पंचायती राज कायम हुआ, तो मैं अपनी अिस तसवीरकी सचाअी साबित कर सकूंगा, जिसमें सबसे पहला और सबसे आखिरी दोनों बराबर होंगे या यों कहिये कि न कोअी पहला होगा, न आखिरी।

अिस तसवीरमें हरअेक धर्मकी अपनी पूरी और बराबरीकी जगह होगी। हम सब अेक ही आलीशान पेड़के पत्ते हैं। अिस पेड़की जड़ हिलायी नहीं जा सकती, क्योंकि वह पाताल तक पहुंची हुअी है। जबरदस्तसे जबरदस्त आंधी भी असे हिला नहीं सकती।

अिस तसवीरमें अुन मशीनोंके लिअे कोअी जगह न होगी, जो किसानकी मेहनतकी जगह लेकर चन्द लोगोंके हाथोंमें सारी ताकत अिकट्ठा कर देती हैं। सुधरे हुअे लोगोंकी दुनियामें मेहनतकी अपनी अनोखी जगह है। अुसमें अैसी मशीनोंकी गुंजाअिश होगी, जो हर आदमीको अुसके काममें मदद पहुंचायें। लेकिन मुझे कबूल करना चाहिये कि मैंने कभी बैठकर यह सोचा नहीं कि अिस तरहकी मशीन कैसी हो सकती है। सिंगरकी सिलाअीकी मशीनका खयाल मुझे आया था। लेकिन अुसका जिक्र भी मैंने यों ही कर दिया था। अपनी अिस तसवीरको पूर्ण बनानेके लिअे मुझे अुसकी जरूरत नहीं।

हरिजनसेवक २८–७–४६ पृ० २०६

पचायत राज

अगर हम पचायत राज चाहते ह ता छोटसे छोटा हिंदुस्तानी बडसे बड हिंदुस्तानीके बराबर ही हिंदुस्तानका राजा है। जिसके लिअ असे शुद्ध होना चाहिये। न हो तो अुसे असा बनना चाहिय। जसा वह शुद्ध हो वसा ही समझदार भी हो। जिससे वह जातिभद वणभदको नही मानगा। सबको अपन समान समझगा। दूसराको अपन प्रमपाशमें बाधगा। अुसके लिअ कोअी अछूत नही होगा। अुसी तरह मजदूर और महाजन दोना अुसके लिअ बराबर होग। जिससे वह करोडा मजदूराकी तरह पसीनकी राटी कमायगा और कलम तथा कुदालीको अकसा समझगा। जिस शभ अवसरको नजदीक लानके लिअ वह खुद भगी बन जायगा। वह समझदार होगा जिसलिअ अफीम या शराबको छुअगा ही क्यो? स्वभावसे ही वह स्वदेशी व्रतका पालन करेगा। अपनी पत्नीको छोडकर वह सभी स्त्रियोको अुमरके मुताबिक अपनी मा बहन या लडकी मानगा। किसी पर बुरी नजर नही डालगा। मनमें भी दूसरी भावना नही रखगा। जो हक असका है वही अपनी स्त्रीका समझगा। समय आन पर खद मरेगा दूसरेको कभी नही मारेगा। और बहादुर असा होगा कि सिक्खाके गुरुआकी तरह अकेला सवा लाखके सामन अडा रहेगा और अक कदम भी पीछ नहा हटगा। असा हिंदुस्तानी यह नही पूछगा कि आजकी परिस्थितियामें अुसका क्या कतव्य है।

हरिजनसेवक १८–१–४८ प० ४५७

८

ग्राम-स्वराज्य

प्र० — हिन्दुस्तानमें किसी भी क्षण जो परिस्थिति पैदा हो सकती है अुसे ध्यानमें रखकर क्या आप ग्राम-स्वराज्य-समितिकी कोअी असी रूपरेखा पेश करेंगे जो देशके गांवोंमें किसी बाहरी सत्ता या संस्थाके अभावमें और अुस पर किसी तरहका कोअी आधार न रखते हुअ भी अपना काम कर सके? खास तौर पर आप असा क्या प्रबन्ध करेंगे कि जिससे समितिको गांवका पूरा-पूरा प्रतिनिधित्व प्राप्त रहे और वह निष्पक्ष भावसे क्षमता व कुशलतापूर्वक किसीकी राजी-नाराजीकी परवाह किये बिना अपना काम कर सके? अुसके अधिकार सत्ताकी क्या मर्यादा होगी और अुसके आदेशोंका पालन करानेके लिअ कौनसा तंत्र काम करेगा? और वह कौनसा तरीका होगा, जिससे समूची समिति या अुसके व्यक्तिगत सदस्य अपनी घूसखोरी, अक्षमता अथवा दूसरी अयोग्यताके कारण हटाये जा सकेंगे?

अु० — ग्राम-स्वराज्यकी मेरी कल्पना यह है कि वह अेक असा पूर्ण प्रजातन्त्र होगा जो अपनी अहम जरूरतोंके लिअ अपने पड़ोसियों पर भी निर्भर नहीं करेगा और फिर भी बहुतेरी दूसरी जरूरतोंके लिअे — जिनमें दूसरोंका सहयोग अनिवार्य होगा — वह परस्पर सहयोगसे काम लेगा। अिस तरह हरअेक गांवका पहला काम यह होगा कि वह अपनी जरूरतका तमाम अनाज और कपड़ेके लिअ पूरी कपास खुद पैदा कर ले। अुसके पास अितनी फाजिल जमीन होनी चाहिये, जिसमें ढोर चर सकें और गांवके बड़ों व बच्चोंके लिअ मन-बहलावके साधन और खेलकूदके मैदान वगैराका बन्दोबस्त हो सके। अिसके बाद भी जमीन बचे तो अुसमें वह असी अुपयोगी फसलें बोयेगा जिन्हें बेचकर वह आर्थिक लाभ अुठा सके; यों वह गांजा, तम्बाकू, अफीम वगैराकी खेतीसे बचेगा। हरअेक गांवमें गांवकी अपनी अेक नाटकशाला, पाठशाला और सभा-भवन रहेगा। पानीके लिअ अुसका अपना अिन्तजाम होगा — वाटरवर्क्स होंगे — जिससे गांवके सभी लोगोंको शुद्ध पानी मिला करेगा। कुओं और तालाबों पर गांवका पूरा नियन्त्रण रखकर यह काम किया जा सकता है। बुनियादी तालीमके आखिरी दरजे तक शिक्षा सबके लिअ लाजिमी होगी। जहां तक हो सकेगा गांवके सारे काम सहयोगके आधार पर किये जायेंगे। जात-पांत और क्रमागत अस्पृश्यताके जैसे भेद आज हमारे समाजमें पाये जाते हैं वैसे अिस ग्राम-समाजमें बिलकुल न रहेंगे। सत्याग्रह और असहयोगके

शस्त्रके साथ अहिंसाकी सत्ता ही ग्रामीण समाजका शासन-बल होगी। गांवकी रक्षाके लिअ ग्राम-सैनिकोंका अक असा दल रहेगा जिसे लाजिमी तौर पर बारी-बारीसे गांवके चौकी-पहरेका काम करना होगा। अिसके लिअ गांवमें असे लोगोंका रजिस्टर रखा जायगा। गांवका शासन चलानेके लिअ हर साल गांवके पांच आदमियोंकी अक पंचायत चुनी जायगी। अिसके लिअ नियमानुसार अक खास निर्धारित योग्यतावाले गांवके बालिग स्त्री-पुरुषोंको अधिकार होगा कि वे अपने पंच चुन लें। अिन पंचायतोंको सब प्रकारकी आवश्यक सत्ता और अधिकार रहेंगे। चूंकि अिस ग्राम-स्वराज्यमें आजके प्रचलित अर्थोंमें सजा या दंडका कोअी रिवाज नहीं रहेगा, अिसलिअ यह पंचायत अपने अेक सालके कार्यकालमें स्वयं ही धारासभा, न्यायसभा और कारोबारी सभाका सारा काम संयुक्त रूपसे करेगी। आज भी अगर कोअी गांव चाहे तो अपने यहां अिस तरहका प्रजातंत्र कायम कर सकता है। उसके अिस काममें मौजूदा सरकार भी ज्यादा दस्तंदाजी नहीं करेगी। क्योंकि उसका गांवसे जो भी कारगर संबंध है वह सिर्फ मालगुजारी वसूल करने तक ही सीमित है। यहां मैंने अिस बातका विचार नहीं किया है कि अिस तरहके गांवका अपने पास पड़ोसके गांवोंके साथ या केन्द्रीय सरकारके साथ अगर वैसी कोअी सरकार हुअी तो क्या सम्बन्ध रहेगा। मेरा हेतु तो ग्राम शासनकी अेक रूपरेखा पेश करनेका ही है। अिस ग्राम शासनमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधार रखनेवाला संपूर्ण प्रजातंत्र काम करेगा। व्यक्ति ही अपनी अिस सरकारका निर्माता भी होगा। उसकी सरकार और वह दोनों अहिंसाके नियमके वश होकर चलेंगे। अपने गांवके साथ वह सारी दुनियाकी शक्तिका मुकाबला कर सकेगा क्योंकि हरअेक देहातीके जीवनका सबसे बड़ा नियम यह होगा कि वह अपनी और अपने गांवकी अिज्जतकी रक्षाके लिअ मर मिटे।

अिन पंक्तियोंको लिखते हुअ मेरे मनमें जो सवाल अुठ रहा है वही सवाल संभव है कि पाठक भी मुझसे पूछें। सवाल यह है कि अपनी अिस तसवीरके अनुसार मैं सेवाग्रामको असा ही रूप क्यों नहीं दे पाया हूं? मेरा जवाब यह है कि मैं कोशिश कर रहा हूं। मैं सफलताके धुंधले-से चिह्न देख रहा हूं, लेकिन मैं प्रत्यक्षमें कुछ भी नहीं दिखा सकता। किन्तु जो चित्र यहां अुपस्थित किया गया है अपने-आपमें असंभव जैसी कोअी चीज असमें नहीं है। असे गांवको तैयार करनेमें अेक आदमीकी पूरी जिन्दगी भी खतम हो सकती है। सच्चे प्रजातंत्रका और ग्राम-जीवनका कोअी भी प्रेमी अेक गांवको लेकर बैठ सकता है और असीको अपनी सारी दुनिया मानकर अुसके काममें मशगूल रह सकता है। निश्चय ही असे अिसका अच्छा फल मिलेगा। वह गांवमें बैठते ही अेक साथ गांवके मेहतर, कतवैया, चौकीदार, वैद्य और

शिक्षाका काम शुरू कर देगा। अगर गांवका कोअी आदमी अुसके पास न फटके तो भी वह सन्तोषके साथ अपने सफाओ और कताओके काममें जुटा रहेगा।

हरिजनसेवक २-८-'४२ पृ० २४-६४

९

हिंद सचमुच कैसे आजाद होगा?

[नीचेके दोनों अुद्धरण 'हिन्द स्वराज्य' से लिये गये हैं। पाठकके अिस प्रश्न पर कि सम्पादक (गांधीजी) हिन्दुस्तानको आजाद करनेके लिअे क्या सुझाते हैं, यह निम्नलिखित वार्तालाप सम्पादक और पाठकके बीच हुआ था।]

१

पाठक : सुधारके बारेमें आपके विचार मैं समझ गया। आपने जो कहा अुस पर मुझे ध्यान देना होगा। तुरन्त सब मंजूर कर लिया जाय, असा तो आप नहीं मानते होंगे, असी आशा भी नहीं रखते होंगे। आपके अिन विचारोंके मुताबिक आप हिन्दके आजाद होनेका क्या अुपाय बतायेंगे?

सम्पादक : मेरे विचार सब लोग तुरन्त मान लें, असी मैं आशा नहीं रखता। मेरा फर्ज अितना ही है कि आपके जैसे जो लोग मेरे विचार जानना चाहते हैं, अुनके सामने मैं अपने विचार रख दूं। वे विचार अुन्हें पसन्द आयेंगे या नहीं आयेंगे, यह तो समय बीतने पर ही मालूम होगा।

हिन्दकी आजादीके अुपायोंका हम विचार कर चुके। फिर भी हमने दूसरे रूपमें अुन पर विचार किया। अब हम अुन पर अुनके स्व-रूपमें विचार करें।

जिस कारणसे रोगी बीमार हुआ हो, वह कारण अगर दूर कर दिया जाय तो रोगी अच्छा हो जायगा, यह जग-मशहूर बात है। असी तरह जिस कारणसे हिन्द गुलाम बना, वह कारण अगर दूर कर दिया जाय तो वह बंधनसे मुक्त हो जायगा।

पाठक : आपकी मान्यताके मुताबिक हिन्दका सुधार (सभ्यता) अगर सबसे अच्छा है तो फिर वह गुलाम क्यों बना?

सम्पादक : सुधार तो मैंने बताया वैसा ही है; लेकिन देखनेमें आया है कि सब सुधारों पर आफतें आया करती हैं। जो सुधार अचल है वह

आखिरकार आफतको दूर कर देता है। हिंदके वास्तेमें बाकी न बाकी कमी थी असलिअ वह सुधार आफनासे घिर गया। लेकिन अिस घेरेमें से छूटनेकी असमें ताकत है यह असका गौरव दिखाता है।

और फिर सारा हिंदुस्तान असमें (गुलामीमें) घिरा हुआ नहीं है। जिन्होंने पश्चिमकी शिक्षा पाओ है और जो असके पाशमें फंस गये हैं वे ही गुलामीमें घिरे हुअे हैं। हम जगतको अपनी दमडीके मापसे नापते हैं। अगर हम गुलाम हैं तो जगतको भी गुलाम मान लेते हैं। हम कंगाल दशामें हैं असलिअ मान लेते हैं कि सारा हिंदुस्तान असी दशामें है। दरअसल असा कुछ नहीं है। फिर भी हमारी गुलामी सारे देशकी गुलामी है असा मानना ठीक है। लेकिन अपरकी बात हम ध्यानमें रखें तो समझ सकेंगे कि हमारी अपनी गुलामी मिट जाय तो हिंदुस्तानकी गुलामी मिट गयी मान लेना चाहिये। असमें अब आपको स्वराज्यकी व्याख्या भी मिल जाती है। हम अपने अूपर राज करें वही स्वराज्य है और वह स्वराज्य हमारी हथेलीमें है।

अिस स्वराज्यको आप सपने जैसा न मानें। मनसे मानकर बैठ रहनेका यह स्वराज्य नहीं है। यह तो असा स्वराज्य है कि आपने अगर असका स्वाद चख लिया हो तो दूसरोंको अुसका स्वाद चखानेके लिअ आप जिन्दगी भर कोशिश करेंगे। लेकिन मुख्य बात तो हर शख्सके स्वराज्य भोगनेकी है। डूबता आदमी दूसरेको नहीं तारेगा लेकिन तैरता आदमी दूसरेको तारेगा। हम खुद गुलाम होंगे और दूसरोंको आजाद करनेकी बात करेंगे तो वह बननेवाली नहीं है।

लेकिन अितना काफी नहीं है। हमें और भी आगे सोचना होगा। अब आपकी समझमें अितना तो आया होगा कि अंग्रेजोंको देशसे निकालनेका मकसद सामने रखनेकी जरूरत नहीं है। अगर अंग्रेज हिन्दी होकर रहें तो हम अनका समावेश यहां कर सकते हैं। अंग्रेज अगर अपने सुधार (सभ्यता) के साथ रहना चाहें तो अनके लिअ हिंदुस्तानमें जगह नहीं है। असी हालत पैदा करना हमारे हाथमें है।

पाठक : अंग्रेज हिन्दी बनें यह आपकी बात नामुमकिन है।

संपादक : हमारा असा कहना यह कहनेके बराबर है कि अंग्रेज मनुष्य नहीं हैं। वे हमारे जैसे बनें या न बनें अिसकी हमें परवाह भी नहीं है। हम अपना घर साफ करें। फिर रहने लायक लोग ही असमें रहेंगे; दूसरे अपने आप चले जायेंगे। असा अनुभव तो हरअेक आदमीको हुआ होगा।

पाठक : असा होनेकी बात अितिहासमें तो नहीं देखी।

संपादक : जो चीज़ अितिहासमें नहीं देखी वह नहीं होगी अैसा माननेमें तो हमारी ही कमी (न्यूनता) है। जो बात हमारी अक्लमें आ सके अुसे आखिर हमें आजमाना तो चाहिये ही।

हर देशकी हालत अेकसी नहीं होती। हिंदुस्तानकी हालत विचित्र है। हिंदुस्तानका बल असाधारण है। अिसलिअे दूसरे अितिहासोंसे हमारा कम संबंध है। मैंने आपको बताया कि जब और सुधार (सभ्यतायें) मिट्टीमें मिल गये तब हिंदके सुधारको आंच नहीं आयी है।

पाठक : मुझे ये सब बातें ठीक नहीं लगतीं। हमें लड़कर अंग्रेजोंको निकालना ही होगा अिसमें कोअी शक नहीं। जब तक वे हमारे मुल्कमें हैं तब तक हमें चैन नहीं पड़ सकता। 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं' अैसा देखनेमें आता है। अंग्रेज यहां हैं अिसलिअे हम कमजोर होते जा रहे हैं। हमारा तेज चला गया है और हमारे लोग घबराये-से दीखते हैं। वे हमारे लिअे यम (काल) जैसे हैं। अुस यमको हमें किसी भी प्रयत्नसे भगाना ही होगा।

संपादक : आप अपने आवेशमें मेरा सारा कहना भूल गये हैं। अंग्रेजोंको यहां लानेवाले हम हैं और वे हमारी बदौलत यहां रहते हैं। आप यह कैसे भूल जाते हैं कि हमने अुनका सुधार अपनाया है अिसलिअे वे यहां रह सकते हैं? आप अुनसे जो नफरत करते हैं वह नफरत आपको अुनके सुधारसे करनी चाहिये। फिर भी यह मान लें कि हम लड़कर अुन्हें निकालना चाहते हैं। तो यह कैसे हो सकेगा?

पाठक : जैसे अिटलीने किया वैसे। मैजिनी और गैरीबाल्डीने जो किया वह तो हम भी कर सकते हैं। ये महावीर थे अिससे क्या आप अिनकार कर सकेंगे?

हिंद स्वराज्य प्रक० १४ पृ० ४८-५०

२

संपादक : आपने अिटलीका अुदाहरण ठीक दिया। मैजिनी महात्मा था। गैरीबाल्डी बड़ा योद्धा था। वे दोनों पूजनीय थे। अुनसे हम बहुत सीख सकते हैं। फिर भी अिटलीकी दशा और हिन्दुस्तानकी दशामें फरक है।

पहले तो मैजिनी और गैरीबाल्डीके बीचका भेद जानने लायक है। मैजिनीके अरमान अलग थे। मैजिनी जैसा सोचता था वैसा अिटलीमें नहीं हुआ। मैजिनीने मनुष्य-जातिके फर्जके बारेमें लिखते हुअे यह बताया है कि हरअेकको स्वराज्य भोगना चाहिये। यह बात तो अुसके लिअे सपने जैसी

रही। गरीबाल्डी और मजिनीके बीच मतभेद हो गया था यह हमें याद रखना चाहिये। असके सिवा गरीबाल्डीने हर अिटाल्यिनके हाथमें हथियार दिये और हर अिटाल्यिनने हथियार लिये।

अिटली और आस्ट्रियाके बीच सुधार (सभ्यता) का भेद नहीं था। वे तो चचेरे भाओी माने जायेंगे। असका तमाशा यानी बात अिटलीकी थी। अिटलीको परदेशी (आस्ट्रियाके) जुअेसे छुड़ानेका मोह गरीबाल्डीका था। असके लिये असने कावूरके मारफत जो साजिशें कीं वे असकी शूरताको बट्टा लगानेवाली हैं।

और अन्तमें नतीजा क्या निकला? अिटलीमें अिटाल्यिन राज करते हैं अिसलिये अिटलीकी प्रजा सुखी है असा अगर आप मानते हों तो मैं आपसे कहूँगा कि आप अँधेरेमें भटकते हैं। मजिनीने साफ साफ बताया है कि अिटली आजाद नहीं हुआ है। विक्टर अिमेन्युअलने अिटलीका अेक अर्थ किया, मजिनीने दूसरा। अिमेन्युअल, कावूर और गरीबाल्डीके विचारसे अिटलीका अर्थ था अिमेन्युअल या अिटलीका राजा और असके हुजरा। मजिनीके विचारसे अिटलीका अर्थ था अिटलीके लोग — अुसके किसान। अिमेन्युअल वगैरा तो अनके (प्रजाके) नौकर थे। मजिनीका अिटली अब भी गुलाम है। दो राजाओंके बीच शतरंजकी बाजी लगी थी, अिटलीकी प्रजा तो सिर्फ प्यादा थी और है। अिटलीके मजदूर अब भी दुःखी हैं। अिटलीके मजदूरोंकी दाद फरियाद नहीं सुनी जाती, अिसलिये वे लोग खून करते हैं, विरोध करते हैं, सिर फोड़ते हैं और वहाँ बलवा होनेका डर आज भी बना हुआ है। आस्ट्रियाके जानेसे अिटलीको क्या लाभ हुआ? जिन सुधारोंके लिये जंग मचा वे सुधार हुअे नहीं, प्रजाकी हालत सुधरी नहीं।

हिन्दुस्तानकी असी दशा करनेका तो आपका अिरादा नहीं ही होगा। मैं जानता हूँ कि आपका विचार हिन्दुस्तानके करोड़ों लोगोंको सुखी करनेका होगा; यह नहीं होगा कि आप या मैं राजसत्ता ले लें। अगर असा है तो हमें अेक ही विचार करना चाहिये। वह यह कि प्रजा स्वतन्त्र कैसे हो।

आप कबूल करेंगे कि कुछ देशी रियासतोंमें प्रजा कुचली जाती है। वहाँके शासक नीचतासे लोगोंको कुचलते हैं। अनका जुल्म अंग्रेजोंके जुल्मसे भी ज्यादा है। असा जुल्म अगर आप हिन्दुस्तानमें चाहते हों तो हमारी पटरी कभी नहीं बैठेगी।

मेरा स्वदेशाभिमान मुझे यह नहीं सिखाता कि देशी राजाओंके मातहत जिस तरह प्रजा कुचली जाती है असी तरह असे कुचलने दिया जाय। मुझमें बल होगा तो मैं देशी राजाओंके जुल्मके खिलाफ और अंग्रेजी जुल्मके खिलाफ जूझूँगा।

स्वदेशाभिमानका अर्थ मैं देशका हित समझता हूँ। अगर देशका हित अंग्रेजोंके हाथों होता हो तो मैं आज अंग्रेजोंको झुककर नमस्कार करूँगा। अगर कोअी अंग्रेज कहे कि देशको आजाद करना चाहिये, जुल्मके खिलाफ होना चाहिये और लोगोंकी सेवा करनी चाहिये, तो अुस अंग्रेजको मैं हिंदी मानकर अुसका स्वागत करूँगा।

फिर, अिटलीकी तरह हिंदको हथियार मिलें तब वह लड़ सकता है; पर अिस महाभारत (बहुत बड़े) कामका तो मालूम होता है आपने विचार ही नहीं किया है। अंग्रेज गोला-बारूदसे पूरी तरह लैस हैं; अिससे हमें कुछ डर नहीं लगता। लेकिन अैसा तो दीखता है कि अुनके हथियारोंसे अुन्हींके खिलाफ लड़ना हो तो हिंदको हथियारबंद करना ही होगा। अगर अैसा हो सकता हो तो अिसमें कितने साल लगेंगे? और तमाम हिंदियोंको हथियारबंद करना तो हिंदको यूरोप-सा बनाने जैसा होगा। अैसा अगर हुआ तो आज यूरोपके जो बेहाल हैं वैसे ही हिंदके भी होंगे। थोड़ेमें, हिंदको यूरोपका सुधार अपनाना होगा। अैसा ही होनेवाला हो तो अच्छी बात यह होगी कि जो अंग्रेज अुस सुधारमें कुशल हैं अुन्हींको हम यहाँ रहने दें। अुनसे थोड़ा-बहुत झगड़कर हम कुछ हक पायेंगे, कुछ नहीं पायेंगे और अपने दिन गुजारेंगे।

लेकिन बात तो यह है कि हिंदकी प्रजा कभी हथियार नहीं अुठायेगी। न अुठाये यह ठीक ही है।

पाठक : आप तो बहुत आगे बढ़ गये। सबके हथियारबंद होनेकी जरूरत नहीं। हम पहले तो कुछ खून करके आतंक फैलायेंगे। फिर जो थोड़े लोग हथियारबंद तैयार होंगे वे खुल्लमखुल्ला लड़ेंगे। अुसमें पहले तो बीस-पचीस लाख हिंदी मरेंगे सही। लेकिन आखिर हम देशको अंग्रेजोंसे जीत लेंगे। हम गुरीला (डाकुओं जैसी) लड़ाअी लड़कर अंग्रेजोंको हरा देंगे।

संपादक : आपका खयाल हिंदकी पवित्र भूमिको राक्षसी बनानेका लगता है। खून करके हिंदको छुड़ायेंगे, अैसा विचार करते हुअे आपको त्रास क्यों नहीं होता? खून तो हमें अपना करना चाहिये। क्योंकि हम नामर्द बन गये हैं, अिसलिअे हम खूनका विचार करते हैं। अैसा करके आप किसको आजाद करेंगे? हिंदकी प्रजा अैसा कभी नहीं चाहती। हम जैसे लोग ही, जिन्होंने अधम सुधाररूपी भांग पी है, नशेमें अैसा विचार करते हैं। खून करके जो लोग राज करेंगे वे प्रजाको सुखी नहीं बना सकेंगे। धींगराने[1] जो खून किया, जो खून हिंदुस्तानमें हुअे हैं, अुनसे देशको

---

१ पंजाबी युवक मदनलाल धींगराने जुलाअी १९०९ में लंदनमें कर्नल सर कर्जन वाअिलीको गोलीका निशाना बनाया था। अिसे फाँसीकी सजा मिली थी।

फायदा हुआ है असा अगर कोअी मानता हो तो वह बडी भूल करता है। धींगराको मै देशाभिमानी मानता हूं लेकिन अुसका देशप्रेम पागल था। अुसने अपने शरीरका बलिदान गलत तरीकेसे दिया। अुससे अंतमें तो नुकसान ही होनेवाला है।

पाठक : लेकिन आपको अितना तो कबूल करना ही होगा कि अंग्रेज अिस खूनसे डर गये हैं और लॉर्ड मॉर्लेने जो कुछ दिया है वह अैसे डरसे ही दिया है।

संपादक : अंग्रेज डरपोक प्रजा हैं और बहादुर भी हैं। गोला-बारूदका असर अुन पर तुरंत होता है यह मैं मानता हूं। संभव है लार्ड मॉर्लेने जो दिया वह डरसे दिया हो। लेकिन डरसे मिली हुअी चीज जब तक डर बना रहता है तभी तक टिक सकती है।

हिन्द स्वराज्य, प्रक० १५, पृ० ५१-५४

१०

हिंसा या अुद्योगीकरणसे स्वराज्य प्राप्त नहीं होगा

[गांधीजी द्वारा रस्किनके 'अन्टु दिस लास्ट' के आधार पर लिखित 'सर्वोदय'* के अंतिम प्रकरणका सारांश यह है।]

रस्किनने अपने बंधुओं — अंग्रेजों — के लिअे जो लिखा वह अगर अंग्रेजोंको अेक दरजा लागू होता हो तो हिन्दियोंको हजार दरजा लागू होता है। हिन्दुस्तानमें नये विचार फैल रहे हैं। आजकलके पश्चिमी शिक्षा पाये हुअे जवानोंमें जोश आया है वह तो ठीक है। लेकिन जोशका अगर अच्छा अुपयोग किया जाय तो अच्छा परिणाम आता है और गलत अुपयोग किया जाय तो बुरा परिणाम ही आनेवाला है। 'स्वराज्य पाना चाहिये' अैसी अेक ओरसे आवाज अुठती है। 'विलायतकी तरह कारखाने खोलकर झटपट पैसा जमा करना चाहिये' अैसी आवाज दूसरी ओरसे अुठती है।

स्वराज्यका अर्थ हम शायद ही समझते होंगे। नातालमें स्वराज्य है। फिर भी हम कहना चाहते हैं कि अगर नातालके जैसा हम करना चाहते हों तो वह स्वराज्य नरक-राज्यके बराबर होगा। वे (गोरे) काफिरों[1]को कुचलते हैं, हिन्दियोंको मिटाते हैं। स्वार्थमें अंधे होकर स्वार्थ-राज्य भोगते

* नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद-१४ द्वारा प्रकाशित।

१ अफ्रीकाके आदिवासी हब्शी।

है। अगर काफिर और हिन्दी नातालमें से चले जायें तो वे आपसमें लड़कर खतम हो जायेंगे।

तो क्या ट्रान्सवालके जैसा स्वराज्य हम लें? जनरल स्मट्स अुसके अगुआओंमें से अेक है। वे अपने लिखित या जबानी दिये हुअे वचन निभाते नहीं है। कहते हैं कुछ करते हैं कुछ। अंग्रेज अुनसे परेशान हो गये हैं। पैसा बचानेके बहाने अंग्रेज सिपाहियोंकी रोजी छीन ली जाती है और अुनकी जगह डचोंको रखते है। हम नहीं मानते कि अिसमें से अंतमें डच भी सुखी होंगे। जिनकी निगाह स्वार्थ पर ही है वे परायी प्रजाको लूटकर अपनी प्रजाको लूटनेके लिअे भी आसानीसे तैयार हो जायेंगे।

दुनियाके चारों ओर नजर डालनेसे हम देख सकेंगे कि स्वराज्यके नामसे पहचाना जानेवाला राज्य प्रजाकी खुशहाली या सुखके लिअे काफी नहीं है। अेक आसान मिसाल लेनेसे यह बात झट समझमें आ जायगी। लुटेरोंकी टोलीमें अगर स्वराज्य हो तो अुसका क्या परिणाम आयगा यह सब समझ सकते हैं। अुन पर तो जो लुटेरे न हों अुन्हींका अगर काबू हो तो वे अंतमें सुखी होंगे। अमरीका फ्रान्स अिंग्लैंड ये सब बड़े राज्य हैं। लेकिन वे सचमुच सुखी हैं असा माननेका कोअी कारण नहीं है।

स्वराज्य का सच्चा अर्थ है अपनेको काबूमें रखना जानना। असा तो वह आदमी कर सकता है जो खुद नीतिका पालन करता है किसीको ठगता नहीं है सत्यको छोड़ता नहीं है अपने मां-बाप अपनी पत्नी अपने बच्चे अपने नौकर अपने पड़ोसी सबके प्रति अपना फर्ज अदा करता है। असा आदमी किसी भी देशमें अपना स्वराज्य भोगता है। जिस प्रजामें असे बहुतसे लोग हों वहां सहज रूपमें ही स्वराज्य है।

अेक प्रजा दूसरी पर राज्य करे यह आम तौर पर गलत है। अंग्रेज हम पर राज्य करते हैं यह विपरीत बात है लेकिन अगर अंग्रेज हिंदुस्तान छोड़ जायें तो हिंदियोंने कुछ कमाया असा माननेका कारण नहीं है।

वे (अंग्रेज) राज्य करते हैं जिसका कारण हम ही हैं वह कारण है हमारा आपसी बेमेल—हमारी घरकी फूट हमारी अनीति और हमारा अज्ञान। ये तीन चीजें अगर दूर हो जायें तो अेक पत्ता भी हिलाये बिना अंग्रेज हिंदुस्तान छोड़कर चले जायेंगे, अितना ही नहीं हम सच्चा स्वराज्य भोगने लगेंगे।

'बमगोला' छोड़नेमें बहुतोंको मजा आता है। यह निरे अज्ञान और नासमझीकी निशानी है। अगर सब अंग्रेजोंको मार डालना मुमकिन हो तो जो मारनेवाले हैं वे ही हिंदुस्तानके मालिक बन जायेंगे। अिसलिअे हिंदुस्तान तो अनाथ विधवा ही रहेगा। अंग्रेजों पर चलाये जानेवाले बमगोले अंग्रेजोंके

चले जाने पर हिन्दियों पर गिरता। फ्रांसके प्रजातंत्रके प्रेसिडेंटको मारनेवाला फ्रेंच ही था। अमरीकाके प्रेसिडेंट कलीवलैन्डको मारनेवाला अमेरिकन था। अिसलिअ जल्दीमें बिना सोचे-समझे पश्चिमकी प्रजाकी अंधी नकल न करना ही हमारे लिअ ठीक है।

जैसे पापकर्मसे — अंग्रेजोंको मारकर — सच्चा स्वराज्य नहीं मिलेगा वैसे हिन्दुस्तानमें बड़े कारखाने खोलनेसे भी नहीं मिलेगा। सोना चांदी जमा होनेसे कुछ स्वराज्य नहीं मिल जायगा। यह बात रस्किनने अच्छी तरह साबित कर दी है। याद रखना चाहिये कि पश्चिमी सभ्यताको अभी सौ ही साल हुअे हैं। सचमुच तो पचास ही साल मानने चाहिये। अितने समयमें तो पश्चिमकी प्रजा बावली सी मालूम होती है। हमारी प्रार्थना है कि जैसी यूरोपकी दशा है वैसी हिन्दुस्तानकी कभी न हो। यूरोपकी प्रजायें अेक दूसरेकी ताकमें बैठी हैं। मात्र अपने गोला-बारूदकी तैयारीसे ही सब चुप बैठे हैं। जब किसी समय जबरदस्त आग भड़केगी तब यूरोप नरक नजर आयेगा। यूरोपका हरअेक राज्य काले आदमीको अपना भक्ष्य समझ लेता है। जहां सिर्फ पैसेका ही लाभ हो वहां दूसरा कुछ हो ही नहीं सकता। अुन्हें अेक भी मुल्क अगर नजर आये तो जैसे कौओ मांसके टुकड़े पर टूट पड़ते हैं वैसे अुस मुल्क पर वे टूट पड़ते हैं। यह अुनके कारखानोंके कारण होता है अैसा माननेके कुछ कारण हैं।

अन्तमें हिन्दुस्तानको स्वराज्य मिले अैसी सब हिन्दियोंकी पुकार है और वह सही है। लेकिन स्वराज्य नीतिके रास्ते पर पाना है। वह सच्चा स्वराज्य होना चाहिये। और वह नाश करनेवाले तरीकोंसे या बड़े कारखानोंसे नहीं मिलेगा। अुद्योग चाहिये लेकिन सही रास्तेसे चाहिये। हिन्दुस्तानकी भूमि अेक समय सुवर्ण भूमि मानी जाती थी क्योंकि हिन्दी लोग सुवर्ण-रूपसे थे। आज भूमि तो वही है लेकिन लोग बदल गये हैं। अिसलिअे वह भूमि वीरान-सी हो गयी है। अुसको फिरसे सुवर्ण भूमि बनानेके लिअे हम सद्गुणोंसे सुवर्ण बनना होगा। अुसका पारस (जिसे छूनेसे लोहा सोना बन जाता है वह) तो दो अक्षरोंमें रहा है और वह है 'सत्य'। अिसलिअे अगर हरअेक हिन्दी 'सत्य' का ही आग्रह रखेगा तो हिन्दुस्तानको घर बैठे स्वराज्य मिलेगा।

११

स्वराज्य पर कुछ विचार

[गांधीजीने आजादीकी लड़ाइयोंमें हिंसाके उपयोगका विरोध किया था। निम्नलिखित उद्धरण हमें बतलाते हैं कि लड़ाईके जरिये प्राप्त होनेवाले स्वराज्यका उन्होंने क्यों विरोध किया था।]

१. यदि समस्याका समाधान तलवारके बल होना है, तो वह सिक्खों या गुरखोंकी तलवारसे नहीं, वह तो अखिल भारतीय तलवारसे होना चाहिये। यदि पशुबलका शासन चलना हो तो भारतके लोगोंको युद्धकला सीखनी चाहिये। वर्ना उन्हें हमेशाके लिए उसकी शरणमें रहना होगा जो तलवारसे शासन करता है, चाहे वह परदेशी हो या स्वदेशी। लोगोंको लोग मूक पशुओंकी तरह रहनेवाले हैं। असहयोग आन्दोलन जनतामें आत्म-गौरव और शक्तिका भान जाग्रत करनेका प्रयत्न है। यह तभी हो सकता है जब उन्हें यह महसूस करा दिया जाय कि उन्हें पशुबलसे डरनेकी जरूरत नहीं है।

यंग इंडिया १-१२-२० पृ० ३

२. मैं कहता हूं कि शांतिकारी तरीका भारतमें सफल नहीं हो सकता। यदि सल्तनतसे लड़ाई सम्भव होती तो मैं शायद मान लेता कि हम हिंसाके उस पथ पर चलें जिस पर दूसरे देश चले हैं और कमसे कम उन गुणोंका हो विकास करें जिनका अन्य रणक्षेत्रमें दिखायी गयी वीरतामें होता है। पर युद्धकलाके द्वारा भारतके स्वराज्यकी प्राप्तिको तो मैं जहां तक नजर पहुंचती है वहां तक किसी भी समयमें असम्भव मानता हूं। युद्धके सहारा हमें चाहे अंग्रेजी शासनकी जगह दूसरा शासन मिल जाय पर जिस जनताकी दृष्टिसे स्वशासन कहा जा सके ऐसा स्वशासन नहीं मिल सकता। स्वराज्यकी साधनाका क्रम कठिन क्रम पवित्र चलाती है। अगर मानी है हैसियतवाला रावा करनेके ही अभ्यस्त स्थानोंमें प्रवेश करना। दूसरे शब्दोंमें इसका अर्थ है राष्ट्रीय शिक्षा—जनताकी शिक्षा। इसका अर्थ है जनताके अन्दर राष्ट्रीय चेतना और जागृति उत्पन्न करना। यह बाजी जादूगरके आमकी तरह अचानक नहीं ऊपर पड़ेगा। वह तो बरगदकी तरह प्राय बेमालूम बढ़ेगा। खूनी क्रांति कभी यह चमत्कार नहीं दिखा सकता।

हिन्दी नवजीवन २१-१-२१ पृ० १२७

चढ़ जाने पर हिन्दियों पर गिरेंगे। फ्रांसके प्रजातंत्रके प्रेसिडेंटको मारनेवाला फ्रेंच ही था। अमरीकाके प्रेसिडेंट मेकीनल्डको मारनेवाला अमेरिकन था। अिसलिअे जल्दीमें बिना सोचे समझे पश्चिमकी प्रजाकी अंधी नकल न करना ही हमारे लिअे ठीक है।

जैसे पापकर्मसे — अंग्रेजोंको मारकर — सच्चा स्वराज्य नहीं मिलेगा वैसे हिंदुस्तानमें बड़े कारखाने खोलनेसे भी नहीं मिलेगा। सोना चांदी जमा होनेसे कुछ स्वराज्य नहीं मिल जायगा। यह बात रस्किनने अच्छी तरह साबित कर दी है। याद रखना चाहिये कि पश्चिमी सभ्यताको अभी सौ ही साल हुअे हैं। सचमुच तो पचास ही साल मानने चाहिये। अितने समयमें तो पश्चिमकी प्रजा वर्णसंकर सी मालूम होती है। हमारी प्रार्थना है कि जो यूरोपकी दशा है वैसी हिंदुस्तानकी कभी न हो। यूरोपकी प्रजायें अेक दूसरेकी ताकमें बैठी हैं। मात्र अपने गोला-बारूदकी तैयारीसे ही सब चुप बैठे हैं। जब किसी समय जबर्दस्त आग भड़केगी तब यूरोप नरक नजर आयेगा। यूरोपका हरअेक राज्य काले आदमियोंको अपना भक्ष्य समझ लेता है। जहां सिर्फ पैसेका ही लोभ हो वहां दूसरा कुछ हो ही नहीं सकता। अुन्हें अेक भी मुल्क अगर नजर आये तो जैसे कौअे मांसके टुकड़े पर टूट पड़ते हैं वैसे अुस मुल्क पर वे टूट पड़ते हैं। यह अुनके कारखानोंके कारण होता है असा माननेके कुछ कारण हैं।

अंतमें हिंदुस्तानको स्वराज्य मिले असी सब हिंदियोंकी पुकार है और वह सही है। लेकिन स्वराज्य नीतिके रास्ते पर पाना है। वह सच्चा स्वराज्य होना चाहिये। और वह नाश करनेवाले तरीकोंसे या बड़े कारखानोंसे नहीं मिलेगा। अुद्योग चाहिये लेकिन सही रास्तेसे चाहिये। हिंदुस्तानकी भूमि अेक समय सुवर्णभूमि मानी जाती थी क्योंकि हिंदी लोग सुवर्णरूपसे थे। आज भूमि तो वही है लेकिन लोग बदल गये हैं। अिसलिअे वह भूमि वीरान-सी हो गयी है। असको फिरसे सुवर्णभूमि बनानेके लिअे हमें सद्गुणोंसे सुवर्ण बनना होगा। असका पारस (जिसे छूनेसे लोहा सोना बन जाता है वह) तो दो अक्षरोंमें रहा है और वह है 'सत्य'। अिसलिअे अगर हरअेक हिन्दी 'सत्य' का ही आग्रह रखेगा तो हिंदुस्तानको घर बैठे स्वराज्य मिलेगा।

११

स्वराज्य पर कुछ विचार

[गांधीजीने आजादीकी लड़ाईमें हिंसाके उपयोगका विरोध किया था। निम्नलिखित उद्धरण हमें बतलाते हैं कि लड़ाईके जरिये प्राप्त होनेवाले स्वराज्यका अुन्होंने क्यों विरोध किया था।]

१. यदि समस्याका समाधान तलवारके बल होना है तो वह सिक्खों या गुरखोंकी तलवारसे नहीं, वह तो अखिल भारतीय तलवारसे होना चाहिये। यदि पशुबलका शासन चलना हो तो भारतके लोगोंको युद्धकला सीखना चाहिये, वर्ना अुन्हें हमेशाके लिअे अुसकी शरणमें रहना होगा जो तलवारसे शासन करता है, चाहे वह परदेशी हो या स्वदेशी। लोग मूक पशुओंकी तरह रहनेवाले हैं। असहयोग आन्दोलन जनतामें आत्म-गौरव और शक्तिका भान जाग्रत करनेका प्रयत्न है। यह तभी हो सकता है जब अुन्हें यह महसूस करा दिया जाय कि अुन्हें पशुबलसे डरनेकी जरूरत नहीं है।

यंग अिंडिया १-१२-'२०, पृ० ३

२. मैं कहता हूँ कि क्रांतिकारी तरीका भारतमें सफल नहीं हो सकता। यदि खुल्लमखुल्ला लड़ाई संभव होती तो मैं शायद मान लेता कि हम हिंसाके अुस पथ पर चलें जिस पर दूसरे देश चले हैं और क्रमशः हम अुन गुणोंका ही विकास करें जिनका उदय रणक्षेत्रमें स्वाभाविक तौरसे होता है। पर गुप्त कार्योंके द्वारा भारतके स्वराज्यकी प्राप्तिको तो मैं जहाँ तक पहुँचना है वहाँ तक किसी भी समयमें असंभव मानता हूँ। युद्धके द्वारा हमें चाहे अंग्रेजी शासनकी जगह दूसरा शासन मिल जाय पर जिसे जनताकी दृष्टिसे स्वशासन कहा जा सके ऐसा स्वशासन नहीं मिल सकता। स्वराज्यकी तीर्थयात्रा बड़ी कठिन और दुष्कर चढ़ाई है। अुसके माने हैं ग्रामीणोंकी सेवा करनेके ही अर्थमें देहातोंमें प्रवेश करना। दूसरे शब्दोंमें अिसका अर्थ है राष्ट्रीय शिक्षा — जनताकी शिक्षा। अिसका अर्थ है जनताके अंदर राष्ट्रीय चेतना और जागृति अुत्पन्न करना। यह काम जादूगरके आमकी तरह अचानक नहीं उभर पड़ेगा। यह तो वटवृक्षकी तरह प्रायः बेमालूम बढ़ेगा। खूनी क्रान्ति कभी यह चमत्कार नहीं दिखा सकती।

हिंदी नवजीवन २१-५-२५, पृ० ३२०

[यद्यपि गांधीजी भारतके लिओ राजनीतिक सत्ताका हस्तांतरण अत्यन्त आवश्यक मानते थे, लेकिन वे असे निरे हस्तान्तरणसे ही सन्तुष्ट नहीं होने वाले थे। अपने स्वराज्यकी योजनामें वे जनताके सभी प्रकारके शोषणका अन्त चाहते थे।]

३ फिर भी मेरा मन कहता है कि असलमें देखा जाय तो क्या यूरोप — यद्यपि यूरोपको राजनीतिक स्वराज्य प्राप्त है — और क्या भारत दोनोंको अेक ही रोग है। केवल राजनीतिक सत्ताके अेक हाथसे निकलकर दूसरे हाथमें चले जानेसे मेरी महत्त्वाकांक्षाको सन्तोष न होगा, हालांकि मैं भारतके राष्ट्रीय जीवनके लिओ सत्ताका अिस प्रकार हस्तान्तरित होना परम आवश्यक मानता हूं। यूरोपके लोग निःसन्देह राजनीतिक सत्ता तो रखते हैं पर स्वराज्य नहीं। अेशिया और अफ्रीकाके लोगोंको वे अपने आर्थिक लाभके लिओ लूटते हैं और अुनका शासक वर्ग शुद्ध प्रजासत्ताके पवित्र नाम पर लूटता है। सो यदि जड़को देखें तो रोग वही दिखाओ देता है जो कि भारतवर्षको है। अिसलिओ अिलाज भी वही काम दे सकेगा।

हिन्दी नवजीवन ३-९-२५ पृ० २०

४ वह आम जनता है जिसे स्वराज्य प्राप्त करना है। यह न तो धनवानोंका अेकमात्र कार्य है और न शिक्षित वर्गोंका। दोनोंको अपने स्वार्थोंको स्वराज्यकी किसी भी योजनामें विलीन कर देना चाहिये।

यंग अिंडिया २०-४-२१ पृ० १२४

५ मैं आपसे कह सकता हूं कि कांग्रेस लोगोंके किसी खास दलकी नहीं है। वह तो सबकी है, लेकिन अुसका मुख्य रुख अुन गरीब किसानोंकी रक्षा करनेमें होना चाहिये जो हमारी जनसंख्याका बहुत बड़ा भाग हैं। अिसलिओ कांग्रेसको वास्तवमें गरीबोंका प्रतिनिधित्व करना चाहिये। लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि और सब वर्गों — मध्यम वर्गों, पूंजीपतियों या जमींदारोंके हितोंकी वह अुपेक्षा करेगी। कांग्रेसका अेकमात्र लक्ष्य यह है कि भारतके अन्य सब वर्ग गरीब जनताके हितोंकी रक्षा करें और अुन्हें बनायें।

यंग अिंडिया १६-४-३१, पृ० ७९

६ अिसलिओ मैं हमारा ध्येय आपके समक्ष रखूंगा। यह ध्येय है किन्हीं अुससे अगले संपूर्ण अर्थोंमें मुकम्मिल आजादी। और यह आजादी लाखों मूक लोगोंके लिओ होगी। अिसलिओ प्रत्येक अैसे स्वार्थ पर जो कि अुनके

स्वार्थके विपरीत है फिरसे विचार होना चाहिये और यदि वह संशोधनके योग्य न हो तो अुसे खतम हो जाना चाहिये।

यंग अिंडिया १७-९-३१ पृ० २६२

[जो स्वराज्य गांधीजी चाहते थे वह कुछ लोगोंका अेकाधिकार नहीं होगा। अिसके विपरीत वह श्रमिक जनताकी स्वेच्छापूर्ण अनुमतिके व्यापक आधार पर स्थापित होगा जो जनता सत्ताका नियमन और नियंत्रण करनेकी क्षमता प्राप्त करेगी।]

७ स्वराज्यसे मेरा मतलब है भारतके लोगोंकी स्वीकृतिसे होनेवाला शासन। यह स्वीकृति बालिग आबादीकी बड़ीसे बड़ी संख्या द्वारा निश्चित होनी चाहिये और अुसमें देशमें पैदा हुअे या बाहरसे आकर बसे हुअे वे सब स्त्री-पुरुष शामिल होने चाहियें जिन्होंने शरीर-श्रम द्वारा राज्यकी सेवामें भाग लिया हो और अपना नाम मतदाताओंकी सूचीमें लिखवानेका कष्ट अुठाया हो। मैं यह दिखा देनेकी आशा रखता हूं कि स्वराज्य कुछ आदमियोंके सत्ता प्राप्त करनेसे नहीं आयेगा परन्तु सत्ताका दुरुपयोग होने पर सबमें अुसका मुकाबला करनेकी क्षमता अुत्पन्न होनेसे आयेगा। दूसरे शब्दोंमें स्वराज्य जनसाधारणको सत्ताका नियमन और नियंत्रण करनेकी अुनकी शक्तिका भान करानेसे प्राप्त होगा।

यंग अिंडिया २९-१-२५ पृ० ४०-४१

[वास्तवमें गांधीजीका अंतिम राजनीतिक ध्येय अराजकतावाद था।]

८ स्वशासनका अर्थ है सरकारी नियंत्रणसे स्वतंत्र होनेका सतत प्रयत्न फिर सरकार विदेशी हो चाहे राष्ट्रीय। स्वराज्य सरकार अेक हास्यास्पद चीज बन जायगी अगर जीवनकी हर छोटी बातके नियमनके लिअे लोग अुसकी तरफ देखने लगें।

यंग अिंडिया ६-८-२५ पृ० २७६

९ मेरी दृष्टिमें राजनीतिक सत्ता कोअी साध्य नहीं है परन्तु जीवनके प्रत्येक विभागमें लोगोंके लिअे अपनी हालत सुधार सकनेका अेक साधन है। राजनीतिक सत्ताका अर्थ है राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय जीवनका नियमन करनेकी शक्ति। अगर राष्ट्रीय जीवन अितना पूर्ण हो जाता है कि वह स्वयं आत्म-नियमन कर ले तो किसी प्रतिनिधित्वकी आवश्यकता नहीं रह जाती। अुस समय ज्ञानपूर्ण अराजकताकी स्थिति हो जाती है। अैसी स्थितिमें हरअेक अपना राजा होता है। वह अिस ढंगसे अपने पर शासन करता है कि अपने पड़ोसियोंके लिअे कभी बाधा नहीं बनता। अिसलिअे आदर्श अवस्थामें

कोअी राजनीतिक सत्ता नही होगी क्योंकि कोअी राज्य नही होता। परन्तु जीवनमें आदर्शकी पूरी सिद्धि कभी नही होती। अिसलिअे थोरोने कहा है कि जो सबसे कम शासन करे वही अुत्तम सरकार है।

यंग अिंडिया २–७–३१ पृ० १६२

१२
मेरी कल्पनाके स्वराज्यमें राजा और रंकका स्थान

विलेपारलेमें (बम्बअी) कार्यकर्ताओंकी जो सभा हुअी थी असमें यह सवाल पूछा गया था

आप कहा करते है कि आपकी कल्पनाका स्वराज्य राजा और रंक दोनोंको न्याय देगा दोनोंकी रक्षा करेगा और दोनोंके हितोंका ध्यान रखेगा। क्या यह बात परस्पर विरोधी नही है? आज मजदूर और मालिक धनवान और असके नौकर ब्राह्मण और भंगी अमीर और गरीब — अिन लोगोंके बीच जहा देखिये वहा वर्गसंघर्ष चल रहा है। है और यहा का झगडा अनादि कालसे चला आता मालूम होता है। असा लगता है कि दूसरेको दुःखी बनाये बिना मनुष्य खुद सुखी हो ही नही सकता। यह कुदरतका ही नियम मालूम होता है। आप कुदरतके अिस नियमको अुलटने पर तुले हुअे है। यह हवामें तलवार चलाने जैसा नही लगता?

सवाल अच्छा है और बहुतसे लोगोंके मनमें अुठता होगा। अिस पर हम विचार करें।

अगर कभी अिस दुनियामें रामराज्य जैसी कोअी चीज थी तो असकी स्थापना आज भी संभव होनी चाहिये। मेरा विश्वास है कि रामराज्य था। राम यानी पंच पंच यानी परमेश्वर। पंच यानी लोकमत। जब लोकमत बनावटी नही होता तब वह शुद्ध होता है। लोकमत पर रचा हुआ राज्य किसी जगहका भी रामराज्य है। असा तत्र हम आज भी कहीं कहीं देखते है। कुछ जमीदार आज सादेपनमें अपनी रैयतसे भी आगे बढ़ गये है और असमें आत्मप्रीत हो जानेका वादा करते है। यह सच नही है कि सब राजा लोग अपनी प्रजाको लूटने और चूसनेवाले ही होते है। अपने दौरोंमें मैं अच्छे बुरे दोनों तरहके लोग देखे है। सारे मालिक निर्दय और कठोर नही होते। यह सच है कि गरीबोंके मित्र या रक्षक जैसा बरताव करनेवाले बहुतसे धनवान मैंने नही देखे। मैं यह भी

स्वीकार करता हू कि जिन्हें मने दवा है अुनमें सुधारकी गुंजाअिश है। म जिसे राजनीती तब कहता हू अुसमें मुझे यह अनुभव हुआ है। तब एकामें अगर विभीषण ही अक अपवाद हो तो जिसमें अचरज क्या? जहां अेक भला है वहा अनेकों आशा दूर रखी न जा सकती है। जब अपवाद बढ जाते हैं तब व नियमका रूप ले लेते है। यह तो मने जो समय है अुसकी बात कही। अितनेसे पूछनेवाले भाअीका सन्तोष नही हो सकता।

समयका अस्तित्वम शान्तिकी शान्ति सत्याग्रह है। सत्य यानी न्याय। न्यायी तत्वका महत्व ह सत्ययुग या स्वराज्य धर्मराज्य रामराज्य लोकराज्य। अिस तत्वमें राजा प्रजाका रक्षक होता है मित्र होता है। अुसके जीवन और प्रजाके गरीबसे गरीब आदमीके जीवनके बीच आजकी जमीन आसमानकी फर्क नहीं होगा। राजाके महल और प्रजाकी झोपडीके बीच अुचित साम्य होगा। दोनोंकी जरूरतोंके बीच अगर काफी फर्क होगा तो मामूली ही होगा। दोनोंको शुद्ध हवा और पानी मिलेगा। प्रजाको जरूरी खुराक मिलेगा। राजा अपने भोजनमें से छप्पन भोगको त्याग करके सिर्फ छह भोगसे ही संतोष मानेगा। गरीब लोग अगर लकडी या मिट्टीके बरतनोंसे अपना काम चलायें तो राजा अब तांबे-पीतलके बरतन अिस्तेमाल करे। मान चांदीके बरतन अिस्तेमाल करनेका शौक रखनेवाले राजा प्रजाको लूटनेवाले ही होने चाहिये। गरीबको पहनने-ओढनेके जरूरी कपडे मिलने चाहिये। राजा भले ज्यादा कपडे रखे लेकिन अुसके कपडों और गरीबोंके कपडोंके बीचका भेद औद्धत्य और द्वेष पैदा करानेवाला नहीं होना चाहिये। राजाके और रंकके बीच अेक ही प्रायमिक शालामें पढेंगे। राजा अपनेको प्रजाका आश्रयदाता नहीं मानेगा। अगर वह प्रजाकी सेवा करेगा तो अुसे प्रजा पर किया हुआ अुपकार नहीं मानेगा। कर्तव्य-पालनमें अुपकारको कोअी जगह नहीं है। प्रजाकी सेवा करना राजाका धर्म है।

जिस प्रकार राजाका धर्म प्रजाका रक्षक और मित्र बनकर रहनेका है, अुसी प्रकार रंकका धर्म राजाका द्वेष न करनेका है। गरीबको यह जानना चाहिये कि अुसकी गरीबी बहुत हद तक अुसके अपने दोषोंके कारण ही है। गरीब अपनी हालत सुधारनेकी कोशिश तो करे लेकिन राजासे द्वेष न कर अुसका नाश न चाहे। वह राजाका सुधार हो चाहे। गरीब राजा बननेकी अिच्छा न रखे अपनी जरूरतें पूरी करके संतुष्ट रहे। जिस तरह जिसमें दोनों अेक-दूसरेकी मदद करते रहें वही मेरी कल्पनाका स्वराज्य है।

मेरी रायमें अिस स्वराज्यको पानेके लिअ राजा और प्रजा दोनोंको दिशामें महत्वका परिवर्तन करना जरूरी है। आज लूटनेवाले और लुटनेवाले दोनों अंधेरेमें भटक रहे हैं। वे रास्ता भूल गये हैं। दोनोंमें से अेककी भी

हालत सहन करने लायक नहीं है। लेकिन राजाओं और धनिकोंके गले यह बात जल्दी अुतरेगी नहीं। लेकिन अकेले गले अुतर जाय तो दूसरेके गले अपने आप अुतर जायगी अिस नीतिके मुताबिक मन रख या गरीबकी सेवा पसन्द की है। हर कोओ राजा नहीं हो सकता लेकिन हर कोओ सबमें तो समा सकता है। अगर गरीब अपने हकको और फर्जोंको समझ लें तो आज हमें स्वराज्य मिल सकता है। यह भान सत्याग्रहके जरिये जितनी तेजीसे हो सकता है अुतनी तेजीसे दूसरे किसी तरीकेसे नहीं हो सकता। अिसका हमने पिछले १२ महीनोंमें प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया है। अिस सत्याग्रहमें जितनी गन्दगी घुस गयी थी अुस हद तक हमारी स्वराज्य प्राप्तिमें बाधा पड़ी।

सत्याग्रह लोकशिक्षा और लोक-जागृतिका सबसे बड़ा साधन है। सत्याग्रहका दूसरा अर्थ आत्मशुद्धि है। राजवर्गके सामने हम सिर्फ आत्मशुद्धिकी बात ही कर सकते हैं। अुस पर अिसका असर पड़नेमें थोड़ा समय लगेगा। गरीब वर्ग तो हमेशा रहनुमाओंकी खोजमें ही रहता है। अपने दुःखोंका भान है पर अुन्हें दूर करनेवाले अुपायका नहीं। अिसलिओ जो भी अुन्हें अुपाय बतानेवाला मिल जाता है अुसीका अुपाय वे आजमाते हैं। असी हालतमें अगर कोओ सच्चे सेवक अुन्हें मिल जाते हैं तो वे अुन्हें छोड़ते नहीं और अुनका अुपाय स्वीकार करते हैं। अिसलिओ अब दरिद्र गरीब वर्ग जिज्ञासु कहा जायगा। स्वराज्य भी असीके मारफत मिल सकता है। वह अपनी शक्तिको पहचान और पहचानते हुओ भी मर्यादामें रहकर ही अुसका अुपयोग करे अितना हो जाय तो मेरी कल्पनाका स्वराज्य आया समझिये। जब जनता असी शक्ति पा लेगी तब वह विदेशी या देशी सरकार दोनोंका सफलतासे मुकाबला कर सकेगी।

अिसलिओ कार्यकर्ताओंका धर्म सिर्फ लोकसेवा ही है। लोकसेवा सत्य और अहिंसाके रास्तेसे ही हो सकती है। अुसमें जितनी गन्दगी घुसगी अुतनी लोक प्रगति रुकेगी।

अिसी बीच अगर राजवर्ग और धनिक-वर्ग जमानेके तकाजेको पहचान तो वे अपने पास रहे धन और धनोपार्जनकी शक्तिका मालिकाना हक छोड़कर अुनके रक्षक या ट्रस्टी बन जायं और चूंकि रक्षकको भी अपनी जीविका कमानेका हक है अिसलिओ वे अुस धनका मर्यादित और जरूरी अुपयोग ही करें। अगर वे असा नहीं करेंगे तो राजा और प्रजा तथा अमीर और गरीबके बीचका जहरीला संघर्ष चलता ही रहेगा। सत्याग्रह अिस जहरको रोक सकेगा असी आशासे मेरे जैसे लोग अुस शस्त्रको अपना सब कुछ अर्पण कर चुके हैं।

हरिजनसेवक ३०-१-'४१ पृ ३८-९

१३

मजदूरोंका गणराज्य

[साप्ताहिक पत्रसे।]

लालकुर्तीवालोंके थोड़ेसे प्रतिनिधियोंका अेक शिष्ट-मंडल गांधीजीसे मिला और अुसने अुनसे दिल खोलकर लम्बी बातचीत की। अुन लोगोंने समझाया कि आपको कोअी शारीरिक हानि पहुंचानेका हमारा हरगिज अिरादा नहीं था। आपकी जान और तन्दुरुस्ती हमें अुतनी ही प्यारी है जितनी और किसीको। और व्यक्तिगत आतंकवाद हमारा धर्म नहीं है। हां, अस्थायी संधि* अपने विरोध पर वे अटल थे। अुनका विश्वास है कि अुससे भारतवर्षमें मजदूरों और किसानोंके स्वतंत्र गणराज्यका अन्तिम ध्येय प्राप्त करनेमें कोअी सहायता नहीं मिल सकती। गांधीजीने अुन्हें अुमड़ते हुअे प्रेमसे कहा, "लेकिन मेरे प्यारे नौजवानो! बिहारमें जाकर देखो तो तुम्हें पता चलेगा कि वहां मजदूरों और किसानोंका गणराज्य काम कर रहा है। जहां दस वर्ष पहले भय और गुलामी थी वहां आज साहस वीरता और अन्यायका विरोध नजर आ रहा है। यदि तुम पूंजीको नस्तनाबूद करना चाहते हो या धनवानों या पूंजीपतियोंको मिटा देना चाहते हो, तो अिसमें तुम्हें कभी सफलता नहीं मिलेगी। तुम्हें करना यह चाहिये कि पूंजीपतियोंको मजदूरोंकी ताकतका प्रत्यक्ष प्रमाण दिखा दो। फिर वे अुन लोगोंके लिअे जो अुनके खातिर घोर परिश्रम करते हैं, संरक्षक बनना मंजूर कर लेंगे। मैं मजदूरों और किसानोंके लिअे अिससे अधिक कुछ नहीं चाहता कि अुन्हें खाने, रहने और पहननेको काफी मिल जाय और वे स्वाभिमानी मनुष्योंकी तरह साधारण आरामसे रह सकें। यह स्थिति पैदा हो जानेके बाद अुनमें से अच्छे दिमागवाले जरूर औरोंकी अपेक्षा अधिक धन कमायेंगे। परन्तु मैं तुम्हें बता चुका हूं कि मैं क्या चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि धनवान अपने धनको गरीबोंकी धरोहर समझें या अुसको अुनकी सेवामें अर्पित कर दें। क्या तुम्हें मालूम है कि मैंने टॉल्स्टॉय फार्मकी स्थापना की तब अपनी तमाम जायदाद छोड़ दी थी? रस्किनकी 'अन्टु दिस लास्ट' पुस्तकने मुझे प्रेरणा दी थी और मैंने अुसीके ढंग पर अपने फार्मकी स्थापना की थी। अब तुम स्वीकार करोगे कि अेक तरहसे मैं तुम्हारे किसानों और मजदूरोंके गणराज्यका 'संस्थापक सदस्य' हूं। और तुम किस

* १९३१ में हुआ गांधी-अिर्विन समझौता।

चाजका अधिक मूल्यवान समझते हो — धनको या श्रमको ? मान लो कि तुम सहाराके रेगिस्तानमें फंस गये और तुम्हारे पास गाड़ियां रुपया-पैसा है। वह तुम्हारे क्या काम आयेगा ? परन्तु यदि तुम श्रम कर सकते हो ता तुम्हें भूखे रहनेकी जरूरत नहीं होगी। तो फिर धनको श्रमसे अधिक अच्छा कैसे समझा जाय ? अहमदाबाद जाकर वहांके मजदूर-संघका कामकाज देखो कि वह क्या काम कर रहा है तब तुम्हें पता चलेगा कि वे अपना सुन्दर गणराज्य स्थापित करनेकी कैसी कोशिश कर रहे हैं।

यंग अिंडिया २-४-३१ पृ० ५८-५९

१४
समाजवादी कौन ?

समाजवाद अेक सुन्दर शब्द है और जहां तक मैं जानता हूं समाजवादमें समाजके सब सदस्य बराबर होते हैं — न कोअी नीचा होता है न कोअी ऊंचा। किसी व्यक्तिके शरीरमें सिर सबसे ऊपर होनेके कारण ऊंचा नहीं होता और न पैरके तलुवे जमीनको छूनेके कारण नीचे होते हैं। जैसे व्यक्तिके शरीरके सब अंग बराबर होते हैं वैसे ही समाजरूपी शरीरके सारे अंग भी बराबर होते हैं। यही समाजवाद है।

अिसमें राजा और प्रजा अमीर और गरीब मालिक और मजदूर सब अेक स्तर पर होते हैं। धर्मकी भाषामें कहें तो समाजवादमें द्वैत या भेदभाव नहीं होता। सर्वत्र अेकता अद्वैतका प्रभुत्व होता है। संसार भरके समाजको देखें तो द्वैत या अनेकताके सिवा कुछ नहीं दिखाओी देता। अेकता या अद्वैतका नाम-निशान नहीं दिखाअी देता। यह आदमी ऊंचा है वह नीचा है यह हिन्दू है वह मुसलमान है तीसरा अीसाअी है चौथा पारसी है पांचवां सिक्ख है और छठा यहूदी है। अिनमें भी बहुतसी अुप जातियां हैं। मेरी कल्पनाकी अेकता या अद्वैतवादमें सब अेक हो जाते हैं अेकतामें समा जाते हैं।

अिस अवस्था तक पहुंचनेके लिअे हम अेक-दूसरेकी तरफ देखते नहीं रह सकते। जब तक सारे लोग समाजवादी न बन जायें तब तक हम कोअी हलचल न करें अपने जीवनमें कोअी फेरफार न करें भाषण देते रहें और बाज पक्षीकी तरह जहां शिकार मिल जाय वहां अुस पर झपट पड़ें — यह समाजवाद नहीं है। समाजवाद जैसी शानदार चीज झपट्टा मारनेसे हमसे दूर ही जानेवाली है।

समाजवाद पहले समाजवादीसे शुरू होता है। अगर असा अक भी समाजवादी हो तो आप अुस पर शून्य बढ़ा सकते हैं। पहले शून्यसे अुसकी ताकत दस गुनी हो जायगी। अनेक बाद हरअेक शून्यका अर्थ पिछली संख्यासे दस गुना होगा। परन्तु यदि आरंभ करनेवाला स्वयं ही शून्य हो, दूसरे शब्दोंमें कोअी भी आरंभ नहीं करे, तो कितने ही शून्याक बढ़ाने पर भी परिणाम शून्य ही होगा। शून्याक लिखनेमें जितना समय और कागज खर्च होगा वह भी व्यर्थ ही जायगा।

यह समाजवाद स्फटिककी तरह शुद्ध है। अिसलिअे अिसे सिद्ध करनेके साधन भी शुद्ध होने ही चाहिये। अशुद्ध साधनोंसे प्राप्त होनेवाला साध्य भी अशुद्ध ही होता है। अिसलिअे राजाका सिर काट डालनेसे राजा और प्रजा बराबर नहीं हो जायेंगे। और न मालिकका सिर काटनेसे मालिक और मजदूर बराबर हो जायेंगे। हम असत्यसे सत्यको प्राप्त नहीं कर सकते। सत्यमय आचरण द्वारा ही सत्यको प्राप्त किया जा सकता है। क्या अहिंसा और सत्य दो चीजें हैं? हरगिज नहीं। अहिंसा सत्यमें और सत्य अहिंसामें छिपा हुआ है। अिसीलिअे मैंने कहा है कि वे अेक ही सिक्केके दो पहलू हैं। वे अेक-दूसरेसे अभिन्न हैं। सिक्केको किसी भी तरफसे पढ़ लीजिये। केवल पढ़नेमें ही फर्क है — अेक तरफ अहिंसा है, दूसरी तरफ सत्य। दोनोंका मूल्य अेक ही है। सम्पूर्ण शुद्धताके बिना यह शुभ स्थिति अप्राप्य है। मन या शरीरकी अशुद्धि रखी और आपमें असत्य और हिंसा आअी।

अिसीलिअे सत्यपरायण, अहिंसक और शुद्ध हृदय समाजवादी ही भारत और संसारमें समाजवादी समाज स्थापित कर सकेंगे। जहां तक मैं जानता हूं, संसारमें कोअी भी देश असा नहीं है जो शुद्ध समाजवादी हो। अुपरोक्त साधनोंके बिना असे समाजका अस्तित्वमें आना असम्भव है।

हरिजन १३-७-४७ पृ० २३२

१५

सत्य और अहिंसा — समाजवादके मूल आधार

समाजवादीको सत्य और अहिंसाकी मूर्ति होना चाहिये। और अिसके लिये अीश्वरमें असकी जीती जागती श्रद्धा होनी चाहिये। सत्य और अहिंसाका यंत्रकी तरह पालन करना कसौटीके वक्त काम नहीं देता। अिसलिये मैंने कहा है कि सत्य ही परमेश्वर है।

यह परमेश्वर चेतनामय शक्ति है। जीव भी अिसी शक्तिसे बना हुआ है। यह जीव शरीरमें रहता है मगर वह खुद शरीर नहीं है। अिस महान शक्तिके अस्तित्वसे अिनकार करनेवाला व्यक्ति अपनेमें रहनेवाली अिस अखूट शक्तिसे वंचित रहकर अपंग बनता है। बेपतवारकी नावकी तरह वह अिधर-अधर टकराता है और आखिरमें कहीं भी पहुँचे बिना बरबाद हो जाता है। यह हालत हममें से बहुतोंकी होती है। अैसे लोगोंका समाजवाद कहीं भी नहीं पहुँचता। करोड़ों मनुष्यों तक असके पहुँचनेकी तो बात ही दूर है।

यह सारी बात अगर सच हो तो क्या अीश्वरमें श्रद्धा रखनेवाला कोअी समाजवादी नहीं होगा? अगर हो तो असने प्रगति क्यों नहीं की? अीश्वर भक्त तो बहुतेरे हो गये। अुन्होंने क्यों नहीं समाजवाद कायम किया?

अिन दो शंकाओंका सचोट जवाब देना मुश्किल है। फिर भी मैं मानता हूँ कि अीश्वरको माननेवाले समाजवादीको अैसा कभी नहीं लगा होगा कि समाजवादका आस्तिकतासे कोअी सीधा संबंध है। शायद अीश्वर भक्तोंको समाजवादकी जरूरत ही न रही हो। अीश्वरभक्तोंके मौजूद रहते हुअे भी दुनियामें वहम कहाँ नहीं देखनेमें आते? हिन्दू धर्ममें अीश्वर भक्तोंके होते हुअे भी छुआछूत जैसे महान कलंकने क्या समाज पर राज्य नहीं किया?

अीश्वर-तत्त्व क्या है, असमें कितनी शक्ति छिपी हुअी है, यह हमेशा खोजका विषय रहा है।

मेरा यह दावा रहा है कि अैसी खोजमें से सत्याग्रहकी खोज हुअी है। यह नहीं कहा जा सकता कि सत्याग्रहसे संबंध रखनेवाले सारे कायदे बन गये हैं। मैं यह भी नहीं कहता कि अिसके सारे कायदे मैं जानता हूँ। मगर मैं अितना दृढ़तासे कह सकता हूँ कि सत्याग्रहमें जो कुछ भी पाने जैसा है वह सब पाया जा सकता है। सत्याग्रह बड़ेसे बड़ा साधन

है हथियार है। मेरी रायमें समाजवाद तक पहुंचनेका जिसके सिवा दूसरा कोओी रास्ता नहीं है।

सत्याग्रहके जरिये समाजके सारे राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक रोगोंको मिटाया जा सकता है।

हरिजनसेवक २०-७-४७ पृ० २०४

१६

मेरा समाजवादी होनेका दावा तथाकथित समाजवादके बाद भी जिंदा रहेगा

[श्री प्यारेलालजी द्वारा लिखित 'चार साल बाद' के महत्वपूर्ण अंश।]

लुअी फिशर* ने विधान निर्मात्री सभा पर बातचीत शुरू की। मैं विधान निर्मात्री सभामें जाकर अब अलग हो मतलब हुए करूंगा — अुसे एकाअीका मन्शा बना दूंगा — और अुस सर्वोपरि सत्तावाली सभा जाहिर कर दूंगा। जिस बारेमें आपकी क्या राय है?

गांधीजीने कहा 'दूसरेकी खड़ी की हुअी चीजको सर्वोपरि सत्ता जाहिर कर देनेसे कोअी फायदा नहीं होगा आखिर तो वह अंग्रेजोंकी ही बनाअी हुअी है। सिर्फ अधिकार जता देनेसे कोअी सभा सर्वोपरि सत्तावाली नहीं बन जाती। सर्वसत्ताधारी बननेके लिअे आपको वैसा बरताव भी करना होगा। जहांगिरसेवकने दूर स्ट्रीटके तीन दर्जियोंने मिलकर अैलान किया था कि वे सर्वसत्ताधारी हैं। लेकिन अुसमें कोअी नतीजा नहीं निकला। वह सारा मजाक ही साबित हुआ।

'फिर भी मैं प्रस्तावित विधान निर्मात्री सभाको क्रांतिकारी ही मानता हूं। मैंने सारे कहा है और मैं सालोंसे आज जिस बातको मानता हूं कि प्रस्तावित विधान निर्मात्री सभा रचनात्मक ढंगसे सविनय आज्ञाभंगका अेक पूरा असर अवज है। हालांकि मैं हमारे समाजवादी मित्रोंकी कुरबानी और आत्म-संयमकी भावनाकी बड़ी कदर करता हूं फिर भी अुनके और मेरे तरीकोंमें जो स्पष्ट फर्क है अुसे मैंने कभी छिपाया नहीं। वे जाहिरा तौर पर हिंसा और अुससे सम्बन्ध रखनेवाली बातोंमें विश्वास रखते हैं जब कि मेरे लिअे अहिंसा ही सब कुछ है।

* लुअी फिशर सुप्रसिद्ध अमेरिकन पत्रकार।

जिसके बाद बातचीतका विषय समाजवादकी ओर मुड़ा। श्री फिशरने बीचमें ही कहा : जैसे आप समाजवादी हैं, वैसे ही वे भी हैं।

गांधीजी : सच्चा समाजवादी तो मैं हूँ, वे नहीं। उनमें से बहुतोंके पैदा होनेसे पहले भी मैं समाजवादी था। जोहानिसबर्गके एक अुग्र समाजवादीको मैंने अपने समाजवादी होनेका यकीन करा दिया था। लेकिन अिस बातके कहनेसे यहां कोअी मतलब हासिल नहीं होता। मेरा यह दावा तो तब भी कायम रहेगा जब अनका समाजवाद मिट जायगा।

फिशर : आपके समाजवादसे आपका क्या अर्थ है?

गांधीजी : मेरे समाजवादका अर्थ है सर्वोदय। मैं गूंगे, बहरे और अंधोंको मिटाकर अुठना नहीं चाहता। अुनके समाजवादमें अिन लोगोंके लिअे कोअी जगह नहीं है। भौतिक अुन्नति ही अुनका अेकमात्र मकसद है। मसलन अमेरिकाका मकसद है कि अुसके हर शहरीके पास अेक मोटर हो। मेरा यह मकसद नहीं। मैं अपने व्यक्तित्वके पूर्ण विकासके लिअे आजादी चाहता हूँ। अगर मैं चाहूं तो आसमानमें टिमटिमाते तारों तक पहुंचनेकी निसैनी बनानेकी आजादी मुझे मिलनी चाहिये। अिसका मतलब यह नहीं कि मैं अैसी कोअी बात करूंगा ही। दूसरी तरहके समाजवादमें व्यक्तिगत आजादी नहीं है। अुसमें आपका कुछ नहीं होता, आपका अपना शरीर भी आपका नहीं होता।

फिशर : हां, लेकिन समाजवादके भी कअी प्रकार हैं। सुधरे हुअे रूपमें मेरे समाजवादका अर्थ यह है कि हर चीज पर स्टेटका हक नहीं है। पर रूसमें अैसा ही है। वहां सचमुच आपके शरीर पर भी आपका हक नहीं होता। बिना किसी गुनाहके आप किसी भी वक्त गिरफ्तार किये जा सकते हैं। वे आपको जहां चाहें वहां भेज सकते हैं।

गांधीजी : क्या आपके समाजवादमें राज्यका आपके बच्चों पर अधिकार नहीं होता? और क्या वह अुन्हें मनचाहे तरीकेसे तालीम नहीं देता?

फिशर : सभी राज्य अैसा करते हैं। अमेरिका भी अैसा ही करता है।

गांधीजी : तब तो रूस और अमेरिकामें कोअी बड़ा फर्क नहीं है।

फिशर : आप असलमें तानाशाहीका विरोध करते हैं।

गांधीजी : लेकिन अगर समाजवाद तानाशाही नहीं है तो निकम्मे लोगोंका शास्त्रभर है। मैं अपने आपको साम्यवादी भी कहता हूँ।

फिशर : नहीं, नहीं, अैसा न कहिये। अपनेको साम्यवादी कहना आपके लिअे बड़ी खतरनाक बात है। मैं वही चाहता हूँ जो आप चाहते हैं, जो जयप्रकाश और दूसरे समाजवादी चाहते हैं — अेक आजाद दुनिया।

लेकिन साम्यवादी असा नहीं चाहते। वे असा कायदा चाहते हैं जो शरीर और मन दोनोंको गुलाम बना दे।

गांधीजी क्या मार्क्सके बारेमें भी आपके यही खयाल हैं?'

फिशर साम्यवादियोंने अपने मतलबके अनुसार मार्क्सवादको तोड़ मरोड़ लिया है।

गांधीजी लेनिनके बारेमें आपकी क्या राय है?

फिशर लेनिनने जिसकी शुरुआत की थी। स्टालिनने अुसे पूरा कर दिया। जब साम्यवादी आपके पास आते हैं तो वे कांग्रेसमें शामिल होना चाहते हैं और अुस पर कब्जा करके अुसे अपना स्वार्थसिद्धिका साधन बनाना चाहते हैं।

गांधीजी समाजवादी भी असा ही करते हैं। मेरा साम्यवाद समाजवादसे ज्यादा भिन्न नहीं है। वह दोनोंका मेल मात्र है। साम्यवाद जैसा कि मैंने अुसे समझा है, समाजवादका कुदरती परिणाम है।

फिशर हां आप ठीक कहते हैं। अेक समय था जब दोनोंमें फर्क करना कठिन था। लेकिन आज साम्यवादियों और समाजवादियोंमें बड़ा फर्क है।'

गांधीजी 'तो क्या आपका मतलब यह है कि आप स्टालिन-मार्का साम्यवाद नहीं चाहते?

फिशर लेकिन हिन्दुस्तानी साम्यवादी हिन्दुस्तानमें स्टालिन मार्का साम्यवाद ही कायम करना चाहते हैं। और अुसके लिअे आपके नामका नाजायज फायदा अुठाना चाहते हैं।

गांधीजी लेकिन जिसमें वे कामयाब नहीं होंगे।

हरिजनसेवक ४-८-'४६ पृ० २५०

१७

अहिंसक समाजवादी व्यवस्था

श्री जयप्रकाश नारायणने मेरे पास अेक प्रस्तावका नीचे लिखा मसविदा भेजा था और मुझे लिखा था कि अगर मैं अिस प्रस्तावमें दी गअी तसवीरसे सहमत होअूं तो अिसे रामगढ़में होनेवाली कांग्रेस कार्य-समितिके सामने पेश कर दूं। प्रस्ताव अिस प्रकार था :

कांग्रेस और देशके सामने आज अेक महान राष्ट्रीय अुथल पुथलका अवसर अुपस्थित है। आजादीकी आखिरी लड़ाअी जल्दी ही लड़ी जानेवाली है और यह सब अैसे समय हो रहा है जब महान शक्तिशाली परिवर्तनोंके द्वारा सारा संसार जड़से हिलाया जा रहा है। दुनिया भरके विचारक लोग आज अिस बातके लिअे चिंतित हैं कि अिस यूरोपीय युद्धके महानाशमें से अेक अैसी नयी दुनियाका जन्म हो जिसकी जड़ राष्ट्रों राष्ट्रों और मनुष्यों मनुष्योंके बीचके सद्भावपूर्ण सहयोग पर कायम की गअी हो। अैसे समय कांग्रेस स्वतंत्रताके अपने अुन आदर्शोंको निश्चित रूपसे व्यक्त कर देना आवश्यक समझती है जिन पर कि वह अड़ी हुअी है और जिनके लिअे वह जल्दी ही देशकी जनताको अधिकसे अधिक कष्ट सहनेका न्यौता देनेवाली है।

स्वतंत्र भारतीय राष्ट्रका काम होगा कि वह राष्ट्रोंके बीच शांतिकी स्थापना करे, सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरणके लिअे यत्नशील रहे और राष्ट्रीय झगड़ोंको किसी स्वतंत्रतापूर्वक स्थापित आन्तर राष्ट्रीय सत्ता द्वारा शांतिपूर्वक निबटानेकी कोशिश करे। वह खास तौर पर अपने पड़ोसी देशोंके साथ फिर वे महान शक्तिशाली साम्राज्य हों या छोटे छोटे राष्ट्र मित्र बनकर रहनेका यत्न करेगा और किसी भी विदेशी राज्य या प्रदेश पर अपना अधिकार जमानेकी अिच्छा न करेगा।

देशके सभी कायदे कानून सर्व-साधारण जनता द्वारा स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त की गअी अिच्छाके अनुसार बनाये जायेंगे और देशमें शांति और सुव्यवस्था कायम रखनेका अंतिम आधार जन-साधारणकी स्वीकृति और सम्मति पर ही रहेगा।

स्वतंत्र भारतीय राष्ट्रमें जनताको सम्पूर्ण व्यक्तिगत और नागरिक स्वतंत्रता होगी और सांस्कृतिक तथा धार्मिक मामलोंमें पूरी आजादी दी जायगी। पर अिसका यह मतलब नहीं होगा कि हिंदुस्तानकी जनता

अपना संविधान-सभा द्वारा अपने लिअे जो शासन विधान तैयार करेगी, अुसको हिंसा द्वारा अुलट देनेकी आजादी किसीको न रहेगी।

देशकी राष्ट्रीय सरकार राष्ट्रके नागरिकोंके बीच किसी प्रकारका भेदभाव न रखेगी। प्रत्येक नागरिकको समान अधिकार रहेंगे। जन्म और परम्पराके कारण मिलनेवाली सभी सुविधायें या अभाव मिटा दिये जायंगे। न तो सरकार द्वारा किसीको कोअी पद या अुपाधि दी जायगी और न परम्परागत सामाजिक दरजेके कारण ही कोअी किसी अुपाधिका हकदार माना जायगा।

राष्ट्रका राजनीतिक और आर्थिक संगठन सामाजिक न्याय और आर्थिक स्वतंत्रताके सिद्धान्तों पर किया जायगा। जिस संगठनके फलस्वरूप जहां समाजके प्रत्येक व्यक्तिकी राष्ट्रीय आवश्यकताओंकी पूर्ति होगी, वहां जिसका अुद्देश्य केवल भौतिक आवश्यकताओंकी तृप्ति ही न रहेगा, बल्कि अपना यह रखा जायगा कि जिसके कारण राष्ट्रका हरअेक व्यक्ति स्वास्थ्यपूर्ण जीवन बिता सके और अपना नैतिक तथा बौद्धिक विकास कर सके। जिसके लिअे और समाजमें समताकी भावना स्थापित करनेके लिअे राज्य द्वारा छोटे पैमाने पर चलनेवाले ग्राम अुद्योग धंधोंको प्रोत्साहित किया जायगा, जो व्यक्तियों द्वारा या सहकारी संस्थाओं द्वारा समाजके समान हितकी दृष्टिसे चलाये जायेंगे। बड़े पैमाने पर सामूहिक रूपसे चलनेवाले सभी अुद्योग धंधोंको अन्तमें जाकर जिस तरह चलाना होगा कि जिससे अुनका अधिकार और आधिपत्य व्यक्ति मात्रके हाथसे निकलकर समाजके हाथमें आ जाय। जिस लक्ष्यकी सिद्धिके लिअे राज्य यातायातके सारे साधनों, व्यापारी जहाजों, खानों और दूसरे बड़े-बड़े अुद्योग धंधोंका राष्ट्रीयकरण शुरू कर देगा। वस्त्र-व्यवसायका प्रबन्ध जिस तरह किया जायगा कि जिससे अुत्तरोत्तर अुसका केन्द्रीकरण दूर और विकेन्द्रीकरण बढ़े।

गांवोंके जीवनका पुनःसंगठन किया जायेगा, अुन्हें स्वतंत्र शासित जिकाअियां बनाया जायगा और जहां तक संभव होगा अधिकतम अधिक स्वावलम्बी बनानेका यत्न किया जायगा। देशके जमीन-सम्बन्धी कानूनोंमें जड़मूलसे सुधार किया जायगा और यह सुधार जिस सिद्धान्त पर होगा कि जमीनका मालिक अुसे जोतनेवाला ही हो सकता है। और हर काश्तकारके पास अुतनी ही जमीन होनी चाहिये जितनीसे वह अपने परिवारका अुचित रीतिसे भरण-पोषण कर सके। जिससे जहां अेक ओर जमींदारीकी अनेक प्रथायें बन्द हो जायंगी, वहां खेतोंमें गुलामीकी प्रथा भी नष्ट हो जायगी।

राज्य वर्गोंके हितों या स्वार्थोंकी रक्षा करेगा। लेकिन जब ये स्वार्थ गरीबों या पददलितोंके स्वार्थमें बाधक होंगे, तो राज्य गरीबों और पददलितोंके स्वार्थकी रक्षा करके सामाजिक न्यायकी तुलाको समतोल रखेगा।

राज्यकी मालिकीवाले और राज्यकी व्यवस्थामें चलनेवाले सभी अुद्योग-धंधोंके प्रबंधमें मजदूरोंका अपने चुने हुअे प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार रहेगा और अिस प्रबंधमें अुनका हिस्सा सरकारके प्रतिनिधियोंके बराबर होगा।

देशी राज्योंमें सम्पूर्ण प्रजातंत्रात्मक सरकारें स्थापित होंगी और नागरिकोंकी समानताके तथा सामाजिक भेदभावको मिटानेके सिद्धान्तके अनुसार राजाओं और नवाबोंके रूपमें देशी रियासतोंमें कोअी नामधारी शासक नहीं रहेंगे।

मुझे श्री जयप्रकाशका यह प्रस्ताव पसन्द आया और मैंने कार्य-समितिको अुनका पत्र और प्रस्तावका यह मसविदा पढ़कर सुनाया। लेकिन समितिने यह सोचा कि रामगढ़ कांग्रेसमें अेक ही प्रस्ताव पास करनेकी बात पर डटे रहना जरूरी है और पटनामें जो मूल प्रस्ताव पास हुआ था अुसमें किसी प्रकारका परिवर्तन करना अिष्ट नहीं है। समितिकी यह दलील निरुत्तर थी। अिसलिअे प्रस्तुत प्रस्तावके गुण-दोषोंकी चर्चा किये बिना ही अुसे छोड़ दिया गया। मैंने श्री जयप्रकाशको अपने प्रयत्नके परिणामसे सूचित कर दिया। अुन्होंने मुझे लिखा कि अिसके बाद अुनको संतोष देनेवाली सबसे अच्छी बात यह होगी कि मैं अुनके अिस प्रस्तावको अपनी पूरी सहमति या जितनी मैं दे सकूँ अुतनी सहमतिके साथ प्रकाशित कर दूँ।

श्री जयप्रकाशकी अिस अिच्छाको पूरा करनेमें मुझे कोअी कठिनाअी नहीं मालूम होती। अेक अैसे आदमीके नाते जिसे देशके स्वतंत्र होते ही हमें कार्यरूपमें परिणत करना है, मैं श्री जयप्रकाशकी अेक सूचनाको छोड़कर बाकी सभी सूचनाओंका आम तौर पर समर्थन करता हूँ।

मेरा दावा है कि आज हिन्दुस्तानमें जो लोग समाजवादको अपना ध्येय मानते हैं अुनसे बहुत पहले मैं समाजवादको स्वीकार कर चुका था। लेकिन मेरा समाजवाद मेरे लिअे सहज और स्वाभाविक था और पुस्तकोंसे ग्रहण नहीं किया गया था। वह अहिंसामें मेरे अटल विश्वासका ही परिणाम था। कोअी भी आदमी जो सक्रिय अहिंसामें विश्वास करता है सामाजिक अन्यायको, फिर वह कहीं भी क्यों न होता हो, बरदाश्त नहीं कर सकता — वह अुसका विरोध किये बिना रह नहीं सकता। जहां तक मैं जानता हूँ

दुर्भाग्यवश पश्चिमके समाजवादियोंने यह मान लिया है कि अपने समाजवादी सिद्धान्तोंको वे हिंसा द्वारा ही अमलमें ला सकते हैं।

मैं सदासे यह मानता आया हूं कि नीचसे नीच और कमजोरसे कमजोरके प्रति भी हम जोर-जबरदस्तीके जरिये सामाजिक न्यायका पालन नहीं कर सकते। मैं यह भी मानता आया हूं कि पतितसे पतित लोगोंको भी सही तालीम दी जाय, तो अहिंसक साधना द्वारा सब प्रकारके अत्याचारोंका प्रतिकार किया जा सकता है। अहिंसक असहयोग ही अुसका मुख्य साधन है। कभी कभी असहयोग भी अुतना ही कर्तव्य रूप हो जाता है जितना कि सहयोग। अपनी बरबादी या गुलामीमें खुद सहायक होनेके लिअे कोअी बंधा हुआ नहीं है। जो स्वतंत्रता दूसरोंके प्रयत्नों द्वारा — फिर वे कितने ही अुदार क्यों न हों — मिलती है वह अुन प्रयत्नोंके न रहने पर कायम नहीं रखी जा सकती। दूसरे शब्दोंमें, अैसी स्वतंत्रता सच्ची स्वतंत्रता नहीं है। लेकिन जब पतितसे पतित भी अहिंसक असहयोग द्वारा अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करनेकी कला सीख लेते हैं तो वे अुसके प्रकाशका अनुभव किये बिना नहीं रह सकते।

अिसलिअे जब मैंने श्री जयप्रकाशके अिस प्रस्तावको पढ़ा और देखा कि वे देशमें जिस प्रकारकी शासन-व्यवस्था कायम करना चाहते हैं अुसका आधार अुन्होंने अहिंसाको ही माना है तो मुझे खुशी हुअी। मेरा यह पक्का विश्वास है कि जिस चीजको हिंसा कभी नहीं कर सकती वही अहिंसात्मक असहयोग द्वारा सिद्ध की जा सकती है, और अुससे अन्तमें जाकर अत्याचारियोंका हृदय-परिवर्तन भी हो सकता है। हमने हिन्दुस्तानमें अहिंसाको अुसके अनुरूप अवसर अभी तक दिया ही नहीं है। फिर भी आश्चर्य है कि अपनी अिस मिलावटी अहिंसा द्वारा भी हमने अितनी शक्ति प्राप्त कर ली है।

जमीनके बारेमें श्री जयप्रकाशकी सूचनायें भड़कानेवाली हो सकती हैं, लेकिन वे दरअसल वैसी हैं नहीं। सम्मानित जीवनके लिअे जितनी जमीनकी आवश्यकता है अुससे अधिक किसी आदमीके पास नहीं होनी चाहिये। अैसा कौन है जो अिस हकीकतसे अिनकार कर सके कि आम जनताकी घोर गरीबीका मुख्य कारण आज यही है कि अुसके पास अुसकी अपनी कही जानेवाली कोअी जमीन नहीं है?

लेकिन यह याद रखना चाहिये कि अिस तरहके सुधार तावड़तोड़ नहीं किये जा सकते। अगर ये सुधार अहिंसात्मक तरीकेसे करने हैं तो धनिकों और निर्धनोंको सुशिक्षित बनाना लाजिमी हो जाता है। धनिकोंको यह विश्वास दिलाना होगा कि अुनके साथ कभी जोर-जबरदस्ती नहीं की जायगी, और निर्धनोंको यह सिखाना और समझाना होगा कि अुनकी मरजीके खिलाफ

अुनसे जबरन कोअी काम नहीं ले सकता और कष्ट-सहन या अहिंसाकी कलाको सीखकर वे अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। अगर अिस लक्ष्यको हमें प्राप्त करना है तो अूपर मन जिस नीतिका जिक्र किया है असका प्रारम्भ अभीसे हो जाना चाहिये। अिसके लिअ पहली जरूरत असा वातावरण तैयार करने की है जिसमें पारस्परिक आदर और सद्भावना सामान्य हो। अस अवस्थामें वर्गों और आम जनताके बीच किसी प्रकारका कोअी हिंसात्मक संघर्ष नहीं हो सकता।

जिसलिअ यद्यपि अहिंसाकी दृष्टिसे श्री जयप्रकाशकी सूचनाओंका सामान्य समर्थन करनेमें मुझे कोअी कठिनाअी नहीं मालूम होती तो भी मैं राजाओं सम्बन्धी अुनकी सूचनाका समर्थन नहीं कर सकता। कानूनकी दृष्टिसे वे स्वतंत्र हैं। यह सच है कि अनकी स्वतंत्रताका कोअी विशेष मूल्य नहीं है क्योंकि अेक प्रबल शक्ति अुनका संरक्षण करती है। लेकिन वे अपनी स्वतंत्रताका दावा कर सकते हैं जब कि हम नहीं कर सकते। श्री जयप्रकाशकी प्रस्तावित सूचनाओंमें जो बातें कही गअी हैं अुनके अनुसार अगर अहिंसात्मक साधना द्वारा हम स्वतंत्र हो जाय तो अस हालतमें मैं असे किसी समझौतेकी कल्पना नहीं कर सकता जिसमें राजा लोग अपनेको खुद ही मिटानेके लिअ तैयार होंगे। समझौता किसी भी तरहका क्यों न हो राष्ट्रको असका पूरा-पूरा पालन करना ही होगा। अिसलिअ मैं तो सिर्फ असे समझौतेकी ही कल्पना कर सकता हूँ जिसमें बड़ी-बड़ी रियासतें अपने दरजेको कायम रखेंगी। अेक तरहसे यह चीज आजकी स्थितिसे कहीं बढ़कर होगी लेकिन दूसरी दृष्टिसे राजाओंकी सत्ता अितनी सीमित रह जायगी कि जिससे देशी रियासतकी प्रजाको अपनी रियासतोंमें स्वायत्त शासनके वे ही अधिकार प्राप्त रहेंगे जो हिंदुस्तानके दूसरे हिस्सोंकी जनताको प्राप्त रहेंगे। अुनको भाषण लेखन तथा मुद्रणकी स्वतंत्रता और शुद्ध न्याय प्राप्त रहेगा। शायद श्री जयप्रकाशका यह विश्वास नहीं है कि राजा लोग स्वेच्छासे अपनी निरंकुशताका त्याग कर देंगे। मुझे यह विश्वास है। अेक तो जिसलिअ कि वे भी हमारी ही तरह भले आदमी हैं और दूसरे अिसलिअ कि मेरा शुद्ध अहिंसाकी अमोघ शक्तिमें सम्पूर्ण विश्वास है। अतः अन्तमें मैं यह कहना चाहता हूँ कि क्या राजा महाराजा और क्या दूसरे लोग सभी सच्चे और अनुकूल बन जायंगे जब हम खुद अपने प्रति अपनी श्रद्धाके प्रति — यदि हममें श्रद्धा है — और राष्ट्रके प्रति सच्चे बनेंगे। अिस समय तो हममें असा बननेकी पूरी श्रद्धा नहीं है। असी अधकचरा श्रद्धासे स्वतंत्रताका भाग कभी नहीं प्राप्त किया जा सकता। अहिंसाका प्रारंभ और अन्त आत्म निरीक्षणमें होता है — जिन खोजा तिन पाअिया गहरे पानी पैठ।

हरिजनसेवक २-४-४० पृ० ८०-८२

१८

अहिंसा और राज्य

लन्दनके अेक भाओीने अहिंसाके अमलके बारेमें सात सवाल पूछे हैं। हालांकि यंग अिंडिया या हरिजनमें अिस तरहके सवालोंके जवाब दिये जा चुके हैं, तो भी अगर अिन जवाबोंसे कुछ मदद मिल सकती है, तो अेक ही जगहमें सब सवालोंके जवाब दे देना फायदेमन्द होगा।

प्र०—१ क्या किसी मौजूदा हुकूमतके लिअे जो लाजिमी तौर पर हिंसाके बल चलती है, यह मुमकिन है कि वह अुपद्रव (बलवा) करनेवालोंको अन्दरूनी और बाहरी ताकतोंको रोकनेके लिअे अहिंसात्मक तरीकोंसे लड़ सके? या जो लोग अहिंसात्मक ढंगसे अुपद्रवोंको रोकना चाहते हैं, क्या अुनके लिअे यह जरूरी है कि वे राज्याधिकारको छोड़कर बिलकुल निजी तौर पर विरोधियोंके सामने खड़े हो जायँ?

अु०—हिंसाके बल पर चलनेवाली हुकूमतके लिअे अन्दरूनी या बाहरी किसी भी तरहके अुपद्रवोंको अहिंसात्मक ढंगसे शान्त करना मुमकिन नहीं है। आदमी ओीश्वर और धनकी पूजा अेकसाथ नहीं कर सकता और न वह अेकसाथ शान्त और क्रुद्ध रह सकता है। दावा यह है कि राज्य अहिंसाके बल पर चल सकता है, यानी वह दुनियाकी सारी हथियारबन्द ताकतोंके खिलाफ अहिंसात्मक लड़ाओी लड़ सकता है। असा राज्य अशोकका था। फिरसे वैसा राज्य कायम किया जा सकता है। लेकिन अगर यह साबित कर दिया जाय कि अशोकका राज्य अहिंसाके बल नहीं चलता था, तो भी अुससे यह दावा कमजोर नहीं पड़ता। अिसके गुण-दोष पर ही अिसकी जाँच होनी चाहिये।

प्र०—२ क्या आप समझते हैं कि कांग्रेसी सरकार बाहरी और अन्दरूनी अुपद्रवोंको बिलकुल अहिंसात्मक ढंगसे शान्त कर सकेगी?

अु०—यकीनन कांग्रेसी सरकारके लिअे यह मुमकिन है कि वह बाहरी हमलों और अन्दरूनी बलवोंको अहिंसात्मक ढंगसे शान्त कर सके। मुमकिन है कि कांग्रेसवालोंको अहिंसामें अितना विश्वास न हो जितना मुझे है। अगर कांग्रेस अपना रास्ता बदलती है, तो अिससे यही साबित होगा कि अब तककी हमारी अहिंसा कमजोरोंकी अहिंसा थी और यह कि कांग्रेसका अिस बातमें विश्वास या श्रद्धा नहीं है कि कोओी 'स्टेट' भी अहिंसक हो सकती है।

प्र० — ३ क्या यह जान लेनेसे कि विरोधी अहिंसावादी है झगडा करनेवालेकी हिम्मत बढ़ नहीं जाती?

अु० — झगडा करनेवालेका फायदा तभी होता है जब अुनका मुकाबला कमजोरकी अहिंसासे हो। बहादुरकी अहिंसा तो किसी भी हालतमें पूरी तरह हथियारोंसे लैस अेक बहादुर सिपाहीसे या समूची फौजसे भी मजबूत ही होती है।

प्र० — ४ अगर हिन्दुस्तानके लोगोंका अेक दल अपने स्वार्थके लिअे — जो न सिर्फ दूसरोंके खिलाफ है बल्कि बुनियादी तौर पर अन्यायपूर्ण भी है — तलवारसे काम ले तो आपकी क्या नीति होगी? गैर-सरकारी संस्थाओंके लिअे तो अैसे मौके पर सत्याग्रह करना मुमकिन है। मगर क्या अैसी हालतमें हुकूमत करनेवालोंके लिअे भी सत्याग्रह मुमकिन हो सकता है?

अु० — सवालमें अैसी मिसाल ली गअी है जो कभी पेश आ ही नहीं सकती। अहिंसात्मक राज्य ज्यादासे ज्यादा समझदार जनताकी मरजीके मुताबिक चलनेवाला और अुसके मनकी बात समझकर अुस तरह काम करनेवाला होना चाहिये। अैसे राज्यमें जिस दलकी कल्पना की गअी है वह नहींके बराबर ही होगा। वह अुस बड़े बहुमतकी निश्चित मरजीके खिलाफ जिसका कि राज्य प्रतिनिधित्व करता है खड़ा ही नहीं हो सकता। आजकी सरकार जनतासे बाहरकी चीज नहीं है। वह बहुत बड़े बहुमतकी अिच्छा ही है। अगर अैसे अहिंसात्मक ढंगसे जाहिर करे तो वह अेकका नहीं बल्कि अेकके खिलाफ निन्यानवेका बहुमत होगा।

प्र० — ५ क्या ज्यादा मजबूत फौजी ताकतवालेका सत्याग्रह कमजोर फौजी ताकतवालेसे ज्यादा कारगर नहीं है?

अु० — ये दोनों विरोधी बातें हैं। जिसके पास मजबूत फौजी ताकत है वह सत्याग्रह कर ही नहीं सकता। मसलन्, अगर रूस अहिंसासे काम लेना चाहे तो पहले अुसे अपनी सारी हिंसक ताकतको छोड़ देना होगा। अिसमें सचाअी यह है कि जो अेक बार फौजी ताकतमें बहुत बढ़े चढ़े थे वे अपने विचार बदल दें तो न सिर्फ दुनियाको बल्कि अपने विरोधियोंको भी वे अपनी अहिंसा दिखा सकते हैं। जो लोग पक्के अहिंसक हैं वे अिस बातकी परवाह नहीं करेंगे कि अुनके विरोधी मजबूत फौजी ताकतवाले हैं या कमजोर हैं।

प्र० — ६ अेक अहिंसक सेनाके लिअे किस तरहके अनुशासन और ट्रेनिंगकी जरूरत है? क्या कुछ बातोंमें अुसकी ट्रेनिंग मौजूदा फौजी ट्रेनिंगसे मिलती जुलती नहीं होगी?

अु० — मौजूदा फौजी ट्रेनिंगके शुरूका बहुत थोड़ा हिस्सा अहिंसक सेनाकी ट्रेनिंगमें शामिल हो सकता है। जैसे, अनुशासन, कवायद, कसरत, झंडा-वंदन, सिगनलिंग और अैसी तरहकी दूसरी चीजें। ये सब भी बिलकुल फौजी ढंगसे नहीं सिखाये जायेंगे क्योंकि अिनकी बुनियाद ही दूसरी है। अेक अहिंसक सेनाके लिअे जिस तालीमकी ठीक-ठीक जरूरत है वह है अीश्वरमें अटल श्रद्धा (विश्वास), अहिंसक सेनाके सेनापतिके हुक्मका अपनी मरजीसे पूरा पालन और सेनाके हिस्सोंमें बाहरी और अन्दरूनी दोनों तरहका पूरा-पूरा सहयोग।

प्र० — ७ क्या आजकी हालतमें यह ज्यादा अच्छा नहीं होगा कि हिन्दुस्तान और अिंग्लैण्ड जैसे मुल्क किसी भी फौजी कदमके उठानेसे पहले — सत्याग्रहको आजमाअिशका पूरा मौका देनेका अिरादा रखते हुअे भी — अपनी फौजी काबलीयतको पूरा बनाये रहें?

अु० — अूपर दिये गये जवाबसे यह साफ हो जाना चाहिये कि जब तक हिन्दुस्तान और अिंग्लैण्ड अपनी पूरी फौजी काबलीयतको कायम रखते हैं, वे किसी भी हालतमें सत्याग्रहके साथ न्याय नहीं कर सकते। साथ ही यह बिलकुल सही है कि फौजी ताकतें अपने आपस-आपसके झगड़ोंको शान्तिके साथ मिटानेके लिअे बराबर समझौतेकी बातचीत चलाती रहती हैं। लेकिन यहाँ हम लड़ाअीकी शरण लेनेसे पहले होनेवाली शान्तिकी प्रारंभिक बातचीतकी चर्चा नहीं कर रहे हैं। हम तो यह सोच रहे हैं कि लड़ाअीके नामसे पहचाने जानेवाले हथियारबन्द झगड़ेकी जगह जिसे खुले शब्दोंमें कत्लेआम कहा जा सकता है आखिर किस चीजको दी जाय।

हरिजनसेवक १२-५-४६ पृ० १२८

क्या अहिंसक राज्य कभी अस्तित्वमें आ सकेगा ?

अमरिकास आअी हुअी चिट्ठियोंमें स वनकोवर (केनडा) की अक नमूनदार चिट्ठी नीचे देता हूँ

म सच्चे दिलस अपन लिअ यह तो नहीं कह सकता कि म आपकी हिंदुस्तान हिंदुस्तानियोंक लिअ वाली नीतिका हिमायती हूँ लेकिन लिबर्टी मासिकम मन आपका लख पढा है और समाचार-पत्रोंमें छपे हुअ आपके सुप्रसिद्ध जीवनके वणन भी पढ ह। सुप्रसिद्ध शब्दका प्रयोग मन अुस अथमें नहीं किया है जिस अथमें यह यूरोपके महान नताओंके लिअ प्रयुक्त होता है बल्कि अुस पुरुषके अथमें किया है जो अपनी निजी कल्पना-तरंगोंको स्थायी रूप दनके बदल अपन दशवासियोंकी स्थितिको सुधारनका सच्चा प्रयत्न करता है। निस्सन्देह म यह तो जानता हूँ कि आपके सिद्धान्तोंम हिंदुस्तानको पुन ग्रामोद्योगोंकी ओर ल जान राष्ट्र राष्ट्रके बीच आपसी आर्थिक सहयोग स्थापित करन और मनुष्य मनुष्यके बीच सद्भाव पदा करनका ध्यय रहा है। लेकिन म यह जानना चाहता हूँ कि आपका नया प्रजातंत्र संसारकी राजनीतिम कौनसा स्थान ग्रहण करेगा ? यूरोपके छोटे छोटे देश मानते थ कि वे अलिप्त रह सकेंगे लेकिन आप देख लीजिये कि आज अुनकी हालत क्या है। स्वयं हिंदुस्तानके आध्यात्मिक नताकी कलमसे म यह जानना चाहता हूँ कि अुनकी सरकारका रुख अनक देशोंमें रहनवाल अग्रजोंके प्रति किस तरहका रहेगा और अंग्रेजों व दूसरे दशवालोंकी पेढियोंको वहाँ रहन दिया जायगा या नहीं ? सन् १८५३ म अमेरिकन बेडक और अडमिरल पेरीक योकोहामाके बन्दरगाहमें प्रवेश करन तक जो नीति जापानन अख्तियार कर रखी थी अुसीको हिंदुस्तानकी नअी सरकार भी अपनायगी क्या ? अर्थात् क्या दशमें विदेशियोंको आन और विदेशी व्यापारको जमनसे रोका जायगा ?

मुझ आशा है कि आप अक कैनेडियन नौजवानकी — जो आपके दशकी समस्याओंको भलीभाँति समझना चाहता है — अिस धृष्टताको क्षमा करेंगे।

अिस पत्रके शिष्टाचारवाले अंशको छोड दन पर लखकका सीधा सवाल यह रह जाता है क्या स्वतंत्र हिंदुस्तानमें अंग्रेजों और विदेशियोंके लिअ

स्थान रहेगा?' अिस सवालका मेरी कल्पित या सच्ची आध्यात्मिकताके साथ कोअी सम्बन्ध न होना चाहिये। स्वतंत्र अमेरिका और स्वतंत्र ब्रिटनके लिअे यह सवाल नहीं अुठता। और जब हिन्दुस्तान सचमुच स्वतंत्र हो जायगा, तो अुसके लिअे भी नहीं अुठेगा। क्योंकि अुस समय हिन्दुस्तानको बिना किसीकी रोक-टोकके अपनी मनचीती करनेकी स्वतंत्रता रहेगी। किन्तु हिन्दुस्तानके स्वतंत्र होने पर — और देरसे या जल्दी वह स्वतंत्र होगा ही — वह क्या करेगा यह कल्पना करनेमें आनन्दका अनुभव होता है। यदि अुसकी राजनीति पर मेरा कोअी प्रभाव रहा तो दुनियामें विदेशियोंका स्वागत किया जायगा बशर्ते कि अुनकी अुपस्थिति देशके लिअे खतरनाक न हो। जैसा कि आज तक अुन्होंने किया है अुसका शोषण करके अुसे कंगाल बनानेकी सहूलियत अुन्हें कभी न दी जायगी।

स्वतंत्र हिन्दुस्तान और बातोंमें कैसा होगा सो तो देखनेकी बात है। जिस अहिंसात्मक नीतिका अुसने कुछ-कुछ सम्पूर्णता और कुछ-कुछ सफलताके साथ अब तक व्यवहार किया है यदि आगे भी वह अुस पर दृढ़ रहा, तो यूरोपके छोटे-छोटे राष्ट्रोंकी बनिस्बत ख्यालसे असहाय महसूस होनेकी कोअी जरूरत न रहेगी। अहिंसक राज्यको बाहरी हमलोंसे अपनी रक्षा करनेके लिअे बड़े विस्तार या सेनाकी आवश्यकता नहीं रहती। बाहरी हमलोंसे बचनेके लिअे अुस राज्यको थोड़ा भी सोच करना जरूरी नहीं होता। हां, यह पूछना अुचित हो सकता है कि अिस तरहका राज्य कभी कायम हुआ भी या नहीं? तात्त्विक दृष्टिसे अुस राज्यकी कल्पनामें बुद्धि कोअी दोष नहीं पाती। दूसरा सवाल यह है कि जिस चीजको, जिसका व्यवहार कठिन बताया जाता है कार्यरूपमें परिणत करनेके लिअे मनुष्य-स्वभाव अुतनी अूंचे दर्जे तक कभी पहुंच सकेगा या नहीं? हम जानते हैं कि व्यक्तिगत रूपसे मनुष्योंने अपने स्वभावकी अवर्णित अूंचाअियोंका परिचय दिया है। प्रयत्न साथ यत्न करनेसे जिनकी सफलताका कहना असम्भव नहीं। सो कुछ भी हो। सिर्फ अितना कि मैं हिन्दुस्तानको आज अैसे प्रत्यक्ष लक्षण कोअी प्रकट चिह्न दिखा नहीं सकता, मैं अपनी श्रद्धा लेकर प्रयत्न करना न छोड़ूंगा। तब तो मुझे हिन्दुस्तानके लिअे शुद्ध स्वतंत्रताकी आशा भी हमेशाके लिअे छोड़ देनी पड़ेगी जैसी कि कुछ लोगोंने छोड़ दी है। अुनका कहना यह है कि हिन्दुस्तान अब बहुत बड़ा और बिलकुल निकम्मा देश है अुसे सैनिक राष्ट्र बननेमें सदियां लग जायेंगी। मैं अैसी निराशाका शिकार बननेसे अिनकार करता हूं। व्यावहारिक कल्पनाके जगतमें यह तो स्वतंत्र हिन्दुस्तानका जन्मसिद्ध अधिकार है और अुसे वह हर तरह स्वीकार हो रहेगा। मेरा ध्येयप्राप्तिके प्रयत्नमें है ध्येयको प्राप्त करनेमें नहीं। यह मेरा अहिंसात्मक प्रक्रियाओंकी सम्पूर्णता द्वारा प्राप्त हो सकेगा अिस विषयमें मेरी श्रद्धा और मेरा अुत्साह अटूट है। अहिंसाकी अिस शुद्ध शक्तिका पता दिन-दिन लोगोंको तक

लगाया नही है। हमें सिर्फ पर रखनेकी जगह भर मिली है। उसके साथ जुटे रहनेसे शाश्वत आनन्दके देनेवाले रत्न भंडार खुल सकते हैं। अगर मेहनत ज्यादा है तो फल भी उसका उतना ही बड़ा है।

हरिजनसेवक ५-४-४२ पृ १०

२०
अहिंसक राज्य-संचालन

[श्री महादेव देसाईजी द्वारा लिखित 'अहिंसाकी मर्यादा' से।]

अहिंसाके द्वारा राज्य-संचालन कैसे किया जाय?

गांधीजी — यह प्रश्न पूछते समय आप एक बात स्वीकार कर लेते हैं अर्थात् अहिंसक स्वराज्यकी प्राप्ति — यह समझमें आता है क्या? यदि हमने सचमुच अहिंसक मार्गसे स्वराज्य प्राप्त किया होगा तो हममें से अधिकतर लोग अहिंसक बन चुके होंगे और हमारे देशका संगठन अहिंसक तरीकेसे हुआ होगा। अगर हमने स्वराज्य प्राप्त करने जितना अहिंसक तैयारी की होगी तो अहिंसक तरीकोंसे उसे संभालनेमें हमें मुश्किल नहीं आनी चाहिये। क्योंकि अहिंसक स्वराज्य कुछ ऊपरसे तो उतरा नहीं होगा। उसे पानेके लिये हमें लोगोंका बहुमतसे साथ मिला होगा। ऐसे राज्यका तो यह अर्थ हुआ कि गुंडे भी हमारे अंकुशमें आये होंगे। मिसालके तौर पर सेवाग्रामका सात सौकी आबादीमें पांच-सात गुंडे हों और बाकी सब लोगोंको अहिंसक तालीम मिली हो तो या तो वे गुंडे बाकी लोगोंके अंकुशको स्वीकार करेंगे या गांव छोड़कर भाग जायेंगे।

मगर आप देखेंगे कि जिस सवालकी चर्चा मैं सावधानीसे कर रहा हूं। मेरी सत्यकी भावना मुझसे कहलाती है कि शायद हम पुलिसके बिना न चला सकें। और पुलिस भी जिस तरहकी ब्रिटिश सरकार रखती है वैसी नहीं मगर हमारे ही ढंगकी होगी। और फिर हमारी कल्पनाका बालिग मताधिकार होगा इसलिये २१ वर्षके युवकका भी राजकाजमें हिस्सा होगा। इसलिये मैंने कहा है कि पूर्ण अहिंसक राज्य बिना राजाके व्यवस्थित राज्य होगा। इसलिये वही राज्य उत्तम होगा जिसमें पुलिस इत्यादिका इंतजाम कमसे कम हो। मगर बात तो यह है कि राज्यकी लगाम मेरे हाथमें देता कौन है? दें तो मैं राज्य चलाकर बता दूं। अगर मैं पुलिस रखूंगा तो वह काम्रसमें से लिये हुए समाज-सुधारकोंकी पुलिस होगी।

'मगर, खेर साहब'[1] बोल अुठे, 'कांग्रेसके मंत्री अहिंसक सत्ता लेकर नहीं आये थे। ५०० गुंडे तूफान करने पर तुल जायें और अगर अुन्हें रोका न जाये तो वे चारों तरफ हाहाकार मचा सकते हैं। मुझे डर है कि अैसे लोगोंके साथ आप भी दूसरा बरताव न करते।'

गांधीजी हंस पड़े और बोले, 'मगर अैसी परिस्थितिकी कल्पना तो मैंने की थी और अैसी हालतमें आप लोगोंको क्या करना चाहिये यह मैं कहा ही करता था। मंत्री अिस प्रसंगमें घर या आफिससे निकलकर गुंडोंके सामने खड़े होकर अपने प्राण निछावर कर सकते थे। मगर सच्ची बात तो यह है कि हममें अैसी अहिंसा नहीं थी तो भी हमने मंत्रीपद लिया। लिया तो भले लिया। कारण कि जब हमें लगा कि सत्ता छोड़नी चाहिये तो अुसे छोड़नेमें अेक घड़ी भी नहीं लगी। हां, अितना कहूंगा कि अगर हमारे मंत्रीपदके दो या तीन सालोंमें हमने अखंड अहिंसाका पालन किया होता, तो कांग्रेस अहिंसा और स्वराज्यकी दिशामें बहुत आगे बढ़ गयी होती।'

बालासाहबने कहा, 'मगर चार या पांच साल पहले जब अैसा प्रसंग आया था तब मैंने कांग्रेसके नेताओंसे कहा था कि चलो निकलो और आगमें कूद पड़ो। मगर कोअी तैयार नहीं हुआ।'

गांधीजी: 'यह आप मेरी ही दलीलका समर्थन कर रहे हैं। मैं यही कह रहा हूं न कि हमारी अहिंसा हृदयगत नहीं हुअी थी, वह जिह्वा तक ही रही थी। मगर अिस परसे अनुमान तो यह निकलता है कि यदि कच्ची अहिंसासे भी हम अितने आगे बढ़ सके, तो हमारी अहिंसा सच्ची रहती तो हम कितने बढ़ जाते। संभव है शायद हम अपना ध्येय प्राप्त भी कर चुके होते।'

प्र० — बाहरी आक्रमणका अहिंसक रीतिसे आप कैसे सामना करेंगे, यह समझाअिये?

अु० — 'अिसका चित्र मैं पूरी तरह आपके सामने नहीं खींच सकूंगा। क्योंकि हमारे पास न तो अिस चीजका अनुभव है और न यह खतरा आज हमारे सामने आकर खड़ा हुआ है। और आज तो सिखों, पठानों और गुरखोंके सरकारी लश्कर खड़े हो रहे हैं। मेरी कल्पना तो यह है कि मैं अपनी हजार या दो हजारकी सेना दोनों लड़ती हुअी फौजोंके बीचमें रख दूंगा। अैसा करके मैं दूसरा कोअी परिणाम न भी ला सकूं, तो दुश्मनकी हिंसाको तो जरूर कम कर दूंगा। अहिंसक सेनाके सेनापतिको हिंसक सेनापतिसे ज्यादा तीव्र बुद्धि और ज्यादा समय-सूचकताकी आवश्यकता रहती है। मगर पहलेसे ही सब

१ बाला साहब खेर, बम्बअी राज्यके मुख्यमंत्री सन् १९३७–३९ और १९४६–५२ के वर्षोंमें।

चित्र खींच सकनेकी शक्ति अुसे अीश्वर दे दे तो वह अभिमानी बन जाय। और अीश्वर अैसा कंजूस है कि आवश्यकतासे ज्यादा शक्ति किसीको देता ही नहीं।

सर साहब विद्वान पुरुष हैं अिसलिअे अुन्होंने अेक गीताकी भाषामें अेक सवाल पूछा : संसार सब द्वन्द्वोंका ही बना हुआ है — रूप नाम, सुख दुःख भय-साहस। डर होगा तो हिम्मत भी आयगी। डर भी निकम्मी चीज नहीं है। पहाड़ पर डरकर न चलें तो कहीं न कहीं खाओमें जा पड़ेंगे। तो क्या आपकी अहिंसक सेना द्वन्द्वातीत होगी गुणातीत होगी?

तुरन्त ही गांधीजीने गीताकी ही भाषामें अुत्तर दिया : नहीं हरगिज नहीं क्योंकि मेरी सेनाने अहिंसा और हिंसाके द्वन्द्वमें से अहिंसाको अपनाया होगा। मैं या मेरी सेना द्वन्द्वोंसे परे नहीं है। त्रिगुणातीत नहीं है। गीताका त्रिगुणातीत तो हिंसा अहिंसासे परे है। डरका अपयोग है मगर डरपोक पनका अपयोग नहीं। डरके कारण मैं सांपके मुहमें अुंगली न रखूंगा, मगर डरपोकपनसे सांपको देखते ही भयभीत होकर कांपने न लगूंगा। बात यह है कि हम तो मृत्यु आनेसे पहले ही अनेक बार मर जाते हैं। डर तो केवल अीश्वरका ही हो सकता है।

मगर मेरी फौज किस किस्मकी होगी यह मैं समझाअूं। सब सैनिकोंके पास सेनापतिकी बुद्धि होगी अैसी कल्पना ही नहीं है। मगर अुनमें सेनापतिकी अेक-अेक आज्ञाका पालन करनेकी निष्ठा और अनुशासन होगा। सेनापतिमें अैसी चीज जरूर होनी चाहिये कि जिसके कारण सब अुसका हुक्म मानें। लाखोंके दलके पाससे तो वह केवल आज्ञा-पालन ही चाहेगा। दांडीकूच केवल मेरी कल्पना ही थी। पहले तो पंडित मोतीलालजीने असका मजाक अुड़ाया था और जमनालालजीने कहा था कि अिससे तो वाअिसरायके महल पर कूच करके धावा करना ज्यादा अच्छा है। मगर मुझे तो नमकके सिवा दूसरी चीज सूझ ही नहीं सकती थी। क्योंकि मुझे तो करोड़ोंका विचार करके निर्णय करना था। यह कल्पना अीश्वर-दत्त थी। पंडित मोतीलालजीने थोड़ी दलील की मगर अुसमें कहा : आखिर सेनापति तो आप हैं आप जो कल्पना करें वही सही है। अुसमें फेरफार करनेके लिअे मैं आपको कैसे कह सकता हूं? हमें तो आपमें विश्वास रखकर चलना है। अिसके बाद नव जवाहरमें वह सबसे भिन्न राय तब अुनकी आंखें खुल गअी थीं। जनताकी जागृतिको देखकर अुन्हें आश्चर्य हुआ था। और जागृति भी कैसी? हजारों स्त्रियोंने अुस वक्त जो शान्त हिम्मत बताअी थी अुसके जोड़की मिसाल अितिहासमें कहां मिलेगी?

और असे होते हुअे भी जिन हजारोंने सत्याग्रहमें हिस्सा लिया था, वे असाधारण स्त्री-पुरुष नहीं थे। अुनमें से कअी तो व्यसनी होंगे और भूल करनेवाले होंगे। मगर आीश्वर तो जो भी कच्चे-पक्के साधन मिलते हैं अुनका अुपयोग कर लेता है और स्वयं अलिप्त रहता है। कारण यह है कि वह गुणातीत है।'

आगे अुन्होंने कहा: 'और सच्ची सेना है कौनसी? तुलसीकृत रामायणमें वानर-सेना, भालू-सेनाका वर्णन तो दिया है, पर सच्ची सेनाका वर्णन तो रामचन्द्रजीके मुखसे कहलाया गया है।'

ये सब चौपाअियां गांधीजीने पूरी नहीं सुनाअी थीं, मगर पाठकोंकी खातिर मैं (महादेवभाअी) अिन्हें यहां दे रहा हूं। प्रसंग यह है कि लंकाकाण्डमें रावणके सामने जब रामचन्द्रजी रणक्षेत्रमें आते हैं, तब विभीषण रामचन्द्रजीको बिना रथके पैदल जाते देखकर भयभीत हो जाता है और पूछता है:

नाथ न रथ नहिं तन पदत्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना॥

जिसके अुत्तरमें रामचन्द्रजी कहते हैं:

सुनहु सखा कह कृपानिधाना।
जेहिं जय होअि सो स्यन्दन आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे।
छमा कृपा समता रजु जोरे॥
अीस भजन सारथी सुजाना।
बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा।
बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥
अमल अचल मन त्रोन समाना।
सम, जम, नियम, सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा।
अेहि सम बिजय-अुपाय न दूजा॥

महा अजय संसार रिपु जीति सकअि सो बीर।
जाके अस रथ होअि दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर॥

जिस तरह रामायणका अुल्लेख करके गांधीजी बोले, 'सो जीतनेवाली सेना तो यह है। मैं सम्पूर्ण विरक्त नहीं हुआ हूं। होना चाहता भी नहीं।

अैसे किसी विरलकी म जानता भी नही हू। म तो सेवाग्राममें बैठकर जो कुछ काम कर सकता हू अुतना करके और जो कोअी मेरी सलाह लेन आये असे सलाह देकर सतोष मानता हू। बात यह है कि हमें श्रद्धाकी जरूरत है। सत्यके माग पर चलकर हम खानेवाले क्या ह? बहुत होगा तो कुचले जायेंगे। मगर हारकर क्या कुचला जाना बहतर नही है?

'मगर हिंसक तयारी करनी हो तो मेरी बुद्धि काम नही करेगी। हवाअी जहाज और टक अित्यादिका विचार करते ही मेरा माथा चकरा जाता है। अुसके सामने मेरी अहिंसक तयारी तो अितनी आसान है कि कोअी बात हो नही। और फिर अुसमें अीश्वर-जसा सारथी मिला है जो कभी हमें अुलटे माग ले ही नही जा सकता। फिर डरनेका कारण ही क्या है?'

हरिजनसेवक ३१–८–४ पृ० २४३–४४

२१

अहिंसक प्रतिरक्षा

नीचे लिखा हुआ सवाल अक अग्रज मिलिटरी अफसरने भजा है। अुन्होने ७८ जलाअी १९४६ के हरिजन में आजादी पर मेरा लेख बडी दिलचस्पीसे पढ़ा है। म अफसर अक फौजी अिंजीनियर हू। अमेरिका और यूरोपमें खूब घूमे ह और अपनी आखासे जमनीमें लडाअीकी तबाही और बरबादी देख चुके ह।

प्र० — अिस आदश हुकूमतमें (और बेशक यह हुकूमत आदश होगी) आदमी बाहरके हमलोसे किस तरह बच सकता है? आजकल जब कि मशीनका दौर-दौरा है, अगर राज्यके पास नय नय हथियारोसे लस फौज न होगी तो असे हथियारोवाली फौज हमला करके देशको जीत सकती है और वहाके रहनवालोको गुलाम बना सकती है।

अु — सवाल पूछनेवाले भाअी कहते ह कि अुन्हाने मेरे लेखको बड ध्यानसे बार-बार पढा है और फौजी आदमी हानके बावजूद अुसे पसन्द भी किया है। मगर साफ पता चलता है कि मेरे लेखमें जो असल बात है अुसे वे चूक गय ह। वह यह है कि अेक व्यक्तिकी तरह अक राष्ट्र चाहे वह कितना ही छोटा क्या न हो और राष्ट्र तो क्या अक गाव भी हथियारोसे लस सारी दुनियाके खिलाफ अपनी अिज्जतकी रक्षा कर सकता है। लेकिन शत यह है कि अिसमें सब अहिंसक हो और अुनमें अिस रक्षाके लिअ

पक्का अिरादा हो। यही निहत्थे लोगोंकी शक्ति और खूबसूरती है जिसकी कोअी मिसाल नहीं मिल सकती। यही अहिंसक रक्षा है, जो किसी मंजिल पर न तो हार जानती है न हार मानती है। अिसलिअे जिस राष्ट्र या समूहने हमेशाके लिअे अहिंसाका रास्ता अपना लिया हो वह अणुगोलोंसे भी गुलाम नहीं बनाया जा सकता।

हरिजनसेवक, १८-८-४६, पृ० २६९

२२
पुलिस-दलकी मेरी कल्पना

अेक मित्र अिस प्रकार लिखते हैं :

"अेक अंग्रेज सज्जन, जिनका आपने हालमें ही अुल्लेख किया है, ठीक ही कहा है कि बाहरी आक्रमणके आगे अहिंसाका प्रयोग करना, यह हमेशाके लिअे और आजकी परिस्थितियोंमें खास जरूरी है और यह भी संभव है कि अिसका अधिक अच्छा परिणाम सिद्ध हो। मगर अंदरूनी हुल्लड़ोंके सामने अहिंसाका प्रयोग करना ज्यादा मुश्किल है। हमारे यहां मुख्य तीन प्रकारके हुल्लड़ोंकी कल्पना की जाती है : साम्प्रदायिक दंगे, जहां औद्योगिक केन्द्र हों वहां मजदूरोंके झगड़े और चोर डाकुओंकी लूटपाट या डाकेके अुपद्रव। अिस प्रकारके हुल्लड़ोंमें निहित मूल कारण, जैसे पारस्परिक अविश्वास, सामाजिक अन्याय तथा आर्थिक शोषणमें से पैदा हुअी गरीबी और बेकारी जब तक दूर नहीं हो जाते तब तक अिन हुल्लड़ोंको चाहे जितनी जोर-जबरदस्तीसे दबा दिया जाये तो भी वे बार-बार होते रहेंगे और चाहे जितना बंदोबस्त होते हुअे भी लोगोंको अिनके कारण कष्ट-सहन करना पड़ेगा। मूल कारण तो रचनात्मक प्रवृत्तिसे ही दूर किये जा सकेंगे। पर अैसा करनेमें वक्त लगेगा। अिस दरमियान अैसे हुल्लड़ोंके अवसर पर अधिकांश मनुष्य हिंसा-बलवालोंका रक्षण ढूंढ़नेके लिअे ही प्रेरित होंगे। अैसे समय पर भी अैसे मनुष्य जिन्हें अहिंसा पर श्रद्धा है अपनी अहिंसाको जितने दरजे तक अधिक सक्रिय रूप दे सकेंगे अुतने दरजे तक वे अिस किस्मके हुल्लड़ोंका निर्मूल करनेमें अधिक भाग देंगे। अिसलिअे हुल्लड़ोंके लिअे भी आखिरी अुपाय तो अहिंसा ही है।

२३

काग्रेसी मंत्री और अहिंसा

श्री शंकरराव देव लिखते है

लोगोंकी समझमें यह बात नही आ रही है कि जो लोग अपनको सत्याग्रही कहते थ वे मंत्री बनते ही फौज और पुलिसका अपयोग क्या करते ह। लोग मानते ह कि धम या व्यवहारके रूपमें मानी हुआी अहिंसाका यह भंग है और अूपरी खयालसे यह सच भी मालूम होता है। काग्रेसी मंत्रियोंके विचारोंमें और बरतावमें यह जो विरोध दिखाअी देता है अुसका समर्थन करना आसान न होनके कारण हमारे कायकर्ता अुलझनमें पड़ जाते ह और अिस विसंगतिसे लाभ अुठानवाले काग्रेसी और गैर-काग्रेसी प्रचारकोंका मुकाबला करना अुनके लिअ मुश्किल हो जाता है।

आम तौर पर काग्रेसियोंकी अहिंसा कमजोरोंकी अहिंसा ही रही है। हिंदुस्तानकी मौजूदा हालतमें यही हो सकता था अिसे तो आप भी जानते ह। आप कहते ह कि ताकतवरकी अहिंसामें तेज होता है फिर भी कमजोरको तगड़ा बनानके लिअ आपन अहिंसाका अुपयोग करना स्वीकार किया यही नही बल्कि आप अुनके नेता भी बन। अिस तरह दुबल या कमजोर होते हुअ भी आज अुनके हाथमें सत्ता आअी है। व अंग्रेजी हुकूमतके खिलाफ तो अहिंसासे लड़ लेकिन अब अपन हाथमें सत्ता लेकर देशमें दंगा फसादके समय भी अहिंसाका अुपयोग करके अुसे मिटानको वे तैयार नही ह। अगर वे असी कोशिश करे भी तो न वे असमें कामयाब होंग और न अिस काममें अुन्हें आम लोगोंका सहकार ही मिलेगा।

मैंन आपसे पूछा था कि क्या सत्याग्रही अपन हाथमें हुकूमतकी बागडोर ले सकता है? अगर ले सकता है तो अस हुकूमतके जरिये वह अहिंसाको कैसे आगे बढ़ा सकता है? कृपा करके आप अिस पर थोड़ी रोशनी डालिय। जिसन अहिंसाको धम माना है वह कभी हुकूमतमें शामिल होना पसंद नहीं करेगा। और मेरी राय है कि अुसे असा करना भी नही चाहिय। लेकिन म मानता हूँ कि जिन्होंन अहिंसाको सिफ नीति या व्यवहारकी दृष्टिसे अपनाया है अनके लिअ पद लेनमें कोअी दिक्कत न होनी चाहिय। बहुतेरे काग्रेसियोन पद

सम्हाले हैं और जिसके लिअ आपने मुन्हें अिजाजत दी है। अैसी हालतमें सवाल यह अुठता है कि अुन मंत्रियोंसे जो अहिंसामें मानते हैं आपका यह अुम्मीद रखना कहां तक मुनासिब है कि कमसे कम वे खुद तो दंगा-फसादके मौकों पर अहिंसाका अुपयोग करें? अहिंसाके जरिये सत्ता प्राप्त करनेके बाद अुसका अुपयोग किस तरह किया जाय, जिससे सत्ता ही गैर-जरूरी हो जाय? अगर अैसा कोअी रास्ता आप न सुझायेंगे, तो हमारे अपने मकसद तक पहुंचनेके लिअे सत्याग्रह अेक अधूरा साधन माना जायगा।"

मेरे विचारसे अिसका जवाब आसान है। कुछ समयसे मैंने यह कहना शुरू कर दिया है कि कांग्रेसके विधान या कानूनसे 'सत्य और अहिंसाको' हटा देना चाहिये। लेकिन कांग्रेसके विधानसे ये दोनों सचमुच हटाये जायं या न हटाये जायं, अगर हम यह मान लें कि वे हटा दिये गये हैं, तो स्वतंत्र रूपमें हम यह समझ सकेंगे कि कोअी काम सही है या नहीं। मैं मानता हूं कि जब तक हम देशमें भीतरी शान्तिकी रक्षाके लिअे फौज या पुलिसका अुपयोग करेंगे तब तक अंग्रेजी सल्तनतके या दूसरी किसी विदेशी सल्तनतके मातहत ही हम रहेंगे — फिर चाहे देशकी सरकार कांग्रेसवालोंके हाथमें हो या दूसरोंके हाथमें हो। फर्ज कीजिये कि कांग्रेसी मंत्रि-मंडलोंको अहिंसामें विश्वास नहीं है। यह भी मान लीजिये कि हिन्दू मुसलमान और दूसरे हिंदुस्तानी फौज और पुलिसका सहारा चाहते हैं। अगर अैसा है तो वह अुन्हें मिलता रहेगा। जो कांग्रेसी मंत्री अहिंसामें विश्वास रखते हैं, अुन्हें फौज या पुलिसकी मदद लेना अच्छा न लगेगा। अिसलिअे वे अिस्तीफा दे सकते हैं। अिसके मानी यह हुअे कि जब तक लोगोंमें आपसमें ही फैसला कर लेनेकी ताकत नहीं आती तब तक हुल्लड़बाजी होती रहेगी और हममें अहिंसाका सच्चा बल पैदा ही नहीं होगा।

अब सवाल यह रहा कि अैसा अहिंसक बल किस प्रकार पैदा हो सकता है? अिस सवालका जवाब अहमदाबादसे आये हुअे अेक पत्रके जवाबमें ४ अगस्तको मैं दे चुका हूं। जब तक हममें बहादुरी और प्रेमसे मरनेकी ताकत पैदा नहीं होगी, तब तक हममें वीरोंकी अहिंसाका बल नहीं आ सकता।

अब सवाल यह है कि आदर्श समाजमें कोअी राजसत्ता रहेगी या वह अेक बिलकुल अराजक समाज बनेगा? मेरे खयालमें अैसा सवाल पूछनेसे कोअी फायदा नहीं होगा। अगर हम अैसे समाजके लिअे मेहनत करते रहें तो वह धीरे धीरे किसी हद तक अस्तित्वमें आयेगा, और अुस हद तक लोगोंको अुससे फायदा पहुंचेगा। युक्लिडने कहा है कि लाअिन वही हो सकती है जिसमें चौड़ाअी न हो। लेकिन अैसी लाअिन न आज तक कोअी

बना पाया है न आगे भी कोअी बना पायगा। फिर भी असी लाअिनको खयालमें रखनेसे ही प्रगति हो सकती है। जो बात अिस मामलेमें सच है वह हरअेक आदर्शके बारेमें सच है।

हमें अितना याद रखना चाहिये कि आज दुनियामें कहीं भी अराजक समाज नहीं है। अगर कभी कहीं बन सकता है तो अुसका आरंभ हिंदुस्तानमें ही हो सकता है। क्योंकि हिंदुस्तानमें असा समाज बनानेकी कोशिश की गअी है। आज तक हम आखिरी दरजेकी बहादुरी नहीं दिखा सके। लेकिन असे दिखानेका अेक ही रास्ता है। और वह यह है कि जो लोग अुसमें विश्वास रखते हैं वे अुस पर चल कर दिखायें। असा करनेके लिअे जिस तरह हमने जेलोंका डर छोड दिया है असी तरह मृत्युका डर भी बिलकुल छोडना पडेगा।

हरिजनसेवक १५-९-४६ पृ० ३०९-१०

२४

सत्य और अहिंसाको न छोडें

अेक सेवाभावी भाअी अपना नाम देकर लिखते हैं:

आपका साप्ताहिक अखबार 'हरिजनबंधु' मैं नियमित पढता हूं। १५ सितम्बरके 'हरिजनबंधु' में श्री शंकरराव देवको दिये गये जवाबमें आपने लिखा है: "मैंने कुछ समयसे कहना शुरू किया है कि कांग्रेसके विधानमें से सत्य और अहिंसाको निकाल देना चाहिये।"

आजकी परिस्थितियोंमें असा होगा तो कांग्रेस परसे लोगोंका विश्वास अुठ जायगा। लोग असा समझेंगे कि जब तक कांग्रेसके हाथमें सत्ता नहीं थी वह लोगोंको सत्य और अहिंसा पर चलनेको समझाती थी। आज सत्ता हाथमें आते ही वह सत्य और अहिंसाको विधानमें से निकालनेका सोच रही है।

अगर कांग्रेसके विधानमें से ये दो शब्द जिनके जरिये कांग्रेस अितनी आगे बढी है और आज अूंची चोटी पर बैठी है निकल जायेंगे तो कांग्रेस फौरन ही नीचे गिर जायगी। अुसकी प्रतिष्ठा हलकी पड जायगी। आप ही कहते थे कि सत्य और अहिंसाके बिना आप अेक कदम भी आगे नहीं चल सकते।

किसलिअे लोग कांग्रेसवालोंको विश्वासके लायक, दयालु, सेवाभावी, हिम्मतवाले — वगैरा-वगैरा मानते आये हैं? सत्य और अहिंसाके ही कारण। सत्य और अहिंसा अुसकी जड है। जडके नाश

होनेसे सारा का सारा पड़ अपने-आप सूख जायेगा। आपको तो यह कोशिश करनी चाहिये कि यह जड़ ज्यादासे ज्यादा गहरी जाय।

अिसलिये मुझे लगता है कि आप हरअेक कांग्रेसजनको अिन सिद्धान्तोंका पालन करनेके लिअे बाध्य करें। यदि वह अिनका पालन करनेसे अिनकार करता है, तो अुसे कांग्रेस छोड़ देनी चाहिये।

अहिंसाका दावा करनेवाले से अच्छा काम करनेके लिअे भी किसीको मजबूर कैसे कर सकता हूं? अेक महान अंग्रेजने कहा है कि आज़ाद रहकर भूल करना अच्छा है, मगर मजबूर होकर अच्छा बनना बुरा है। मैं अिस सत्यको मानता हूं। कारण साफ है। जो दूसरोंके दबावसे अच्छा रहता है अुसका दिल अच्छा नहीं रहता, अुल्टा ज्यादा बिगड़ता है, और जब दबाव हट जाता है तो अन्दर छुपा बिगाड़ अूपर आ जाता है।

और किसी अेक व्यक्तिके पास तो किसी पर दबाव डालनेकी ताकत होनी ही नहीं चाहिये। कांग्रेस भी जबरन् किसीसे सत्य या अहिंसा पर अमल नहीं करवा सकती। असी चीजें खुशीसे मान्य ही होनी चाहियें।

सत्य और अहिंसाको कांग्रेसके विधानसे निकालनेकी बात पेश किये मुझे अेक सालसे ज्यादा अरसा हो गया है। मेरा अिस सलाहके पीछे जोरदार कारण है। सत्य और अहिंसाकी आड़में कांग्रेसका झूठ और हिंसाको छिपाना कोअी मामूली कारण नहीं है। अगर कांग्रेसी दिखावा न करें और सचमुच सत्य और अहिंसाके अिन दो खंभोंको पकड़ रहें, तो अिससे अच्छा और क्या हो सकता है?

मैं तो कभी यह चाह ही नहीं सकता कि सत्ता हाथमें आने पर कांग्रेस जन सत्य और अहिंसाकी अुस सीढ़ीको छोड़ दें जिसके सहारे वे अितने अूंचे चढ़ हैं। मैं मानता हूं कि अगर कांग्रेस सत्ता पाकर अिस सीढ़ीको छोड़ेगी, तो अुसका तेज बिल्कुल मन्द पड़ जायगा।

अेक और भूलसे सबको बचना चाहिये। जो विधानमें नहीं लिखा हो अुस पर किसीको अमल नहीं करना चाहिये असी बात तो है ही नहीं। मैंने तो आशा रखी ही है कि सत्य और अहिंसाके विधानमें से निकल जाने पर भी सब या ज्यादातर कांग्रेसी अपना अिच्छासे अुन पर अमल करेंगे और करते-करते मरेंगे भी।

अब भूल जिसकी जिक्र अिन सवालोंमें भाअीने नहीं किया है, सुधार दूं। कांग्रेसके विधानमें 'शांतिपूर्ण और न्यायसंगत' शब्द हैं। अुन्हें अहिंसक और सत्यपूर्ण माननेका मुझे हक नहीं। कांग्रेसके पास धर्म नहीं कर्म ही है। अंग्रेजीमें अुसे 'पॉलिसी' कहेंगे। मेरे हकका तो सवाल ही नहीं है। मगर जब तक कर्म चलता है तब तक वह धर्म हो जाता है। यानी अुस पर

अमल करनेका बंधन होता है। अगर शान्ति का मतलब अशान्ति भी हो सकता हो और न्यायसंगत का मतलब झूठ भी हो सकता हो तो मेरी सलाहके लिअ कोअी स्थान नहीं रह जाता।

हरिजनसेवक २९–९–४६ पृ० ३२९

२५
मैं अहिंसक साम्यवादमें विश्वास रखता हूं

[श्री महादेव देसाअीके 'साप्ताहिक पत्र' से।]

हम लोग बहुत थक गये थे। सोनेकी तैयारीमें ही थे क्योंकि दूसरे दिन सबेरे तीन बजे अुठना था। आंध्रके तूफान-पीड़ित प्रदेशमें घूमना था। गाड़ी चल पड़ी थी। अितनेमें ही अेक दोहरे बदनके सज्जन दौड़ते हुअे आये और अुन्होंने खिड़कीमें से झांका। पहनावा यूरोपियन था। कहने लगे, "जनाब, मैं ठठ मिलसे आ रहा हूं। हिंदुस्तानके सबसे बड़े महापुरुषसे हाथ मिलाने और अुनसे थोड़ी-सी बातचीत करनेका मौका तो मिलना ही चाहिये।" वे अंग्रेजीमें बोले, पर लहजा और अुच्चारण फ्रेंच था। अुन्हें हम क्या कहते? सिवा अंदर लेनेके चारा ही नहीं था। पर दरवाजेमें ताला लगा हुआ था। हमने कहा, "आप अगले स्टेशन पर आ जाअिये।" पर वे जरा भी समय खोना नहीं चाहते थे। खिड़कीमें से ही वे अंदर घुसे। हमने भी थोड़ी सहायता की और वे आ गये। अिस बातसे वे बड़े खुश थे कि मिसको कुछ तो आजादी मिली। हिंदुस्तानके प्रति भी अुन्होंने शुभाशा प्रगट की।

"पर मैं कुछ सवाल आपसे पूछूं। मैं देखता हूं कि आप काफी थक गये हैं, पर मुझे अपने जीवनमें फिर कभी असा मौका नहीं मिलेगा। अिसलिअे आशा करता हूं कि आप मुझे जरूर माफ करेंगे।" मारे नींदके गांधीजीकी आंखें मुंद रही थीं। पर अिस प्रेमी आगन्तुकको वे टाल नहीं सके। "अच्छा, कहिये," वे बोले।

"कम्युनिज्मके बारेमें आप क्या सोचते हैं? क्या आपके खयालमें अुससे हिन्दुस्तानका भला हो सकता है?" यह अुनका पहला सवाल था।

"रूसी ढंगका अर्थात् लोगों पर अूपरसे जबरदस्ती लादा हुआ कम्युनिज्म हिंदुस्तानके लिअे बिल्कुल नामुमकिन होगा। मैं तो अहिंसात्मक साम्यवादमें विश्वास करता हूं।" गांधीजीने कहा।

"पर रूसी कम्युनिज्म तो खानगी संपत्तिके खिलाफ है। क्या आप खानगी संपत्ति रहने देना चाहते हैं?"

अगर कम्युनिज्म बगैर किसी तरहकी जोर-जबरदस्तीके आ सकता हो, तब तो अुसका स्वागत होगा। क्योंकि अुस हालतमें संपत्ति पर किसीका भी अधिकार तब तक नहीं होगा जब तक कि वह जनताकी ओरसे और जनताके लिअ नहीं होगा। अेक लखपतिके पास लाखों होंगे। पर वह जनताकी ओरसे अुनका रक्षक मात्र होगा। और जब कभी सर्व-साधारणके हितके लिअे अुनकी जरूरत होगी तब राज्य सारी संपत्ति पर अधिकार कर सकेगा।

क्या समाजवादके बारेमें आप और जवाहरलालजीके बीच कोअी मतभेद है?

हां है तो। पर वह अितना ही कि वे अुसके अेक अंग पर जोर देते हैं तो मैं दूसरे पर। वे शायद परिणाम पर जोर देते हैं और मैं साधन पर देता हूं। मैं शायद अुनके खयालसे अहिंसा पर जरूरतसे ज्यादा जोर दे रहा हूं। वे भी अहिंसामें विश्वास तो करते हैं। पर अगर वे यह देखें कि अहिंसाके द्वारा समाजवाद नहीं लाया जा सकता तो वे अन्य साधनोंको भी काममें लेना बुरा न समझेंगे। असलमें मैं तो सैद्धान्तिक दृष्टिसे अहिंसाको अितना महत्त्व दे रहा हूं। मुझे अगर कोअी यह विश्वास दिला दे कि अन्य साधनोंसे आजादी लायी जा सकती है, तो भी मैं अुसे लेनेसे अिनकार कर दूंगा। वह सच्ची आजादी नहीं होगी।

पर क्या आपका यह खयाल है कि आपके अहिंसात्मक प्रचार (आन्दोलन) से अंग्रेज हिन्दुस्तानको आपके हाथोंमें सौंपकर यहांसे चुपचाप चले जायेंगे?

हां जरूर मेरा यही खयाल है।

पर आपके अिस खयालका आधार क्या है?

अीश्वर और अुसके न्याय पर मेरी श्रद्धा आधार रखती है।

अुन मित्र सज्जन पर गांधीजीके अिन शब्दोंका बड़ा असर पड़ा। अुन्होंने ये शब्द लिख लिये और कहने लगे — हम अीसाअी कहलानेवालोंकी अपेक्षा आपमें अीसाकी श्रद्धा अधिक है। मैं अिन शब्दोंको खूब मोटे मोटे अक्षरोंमें लिखकर लगा दूंगा।

हां जरूर लिख लीजिये क्योंकि अगर असा न हो तो अुस अीश्वरको दयामय कौन कहेगा? तब तो अुसे हिंसाका पोषक अीश्वर कहना पड़ेगा।

यहां पर वे मित्र हमें छोड़कर चले गये। और आरा स्टेशन आनेसे पहले तो गांधीजी गाढ़ी नींदमें निमग्न हो गये।

हरिजनसेवक १३-२-३७ पृ० ४१३

हृदय परिवतन बनाम वज्ञानिक समाजवाद

मुझ चिटठी-पत्री लिखनवाले कुछ स जन बड आग्रही ह। व मुझ निग्रह स्थानमें लाना चाहते ह। अनमें स अक नमूना यह है

जब कभी आर्थिक कठिनाअिया खडी होती ह और जब कभी पूजीपति और मजदूराके आर्थिक सम्बधोके विषयमें आपसे कोअी सवाल पूछा गया है आपन हमेशा अपना सरक्षकता का सिद्धात सामन रख दिया है जो मझ हमेशा हैरान किया करता है। आप चाहत ह कि धनवान लोग अपनी दौलत और माल मिल्कियत पर गरीबोकी ओरसे सरक्षक रह और अन्हीक फायदेके लिअ अुसे खच करे। अगर म आपसे पूछू कि भला यह सभव भी है तो आप कहेग कि म मनष्यको असल्म स्वभावत स्वार्थी मानता हू अिसलिअ असे सवाल पूछ रहा हू जब कि आपन अपना सिद्धात जिस आधार पर कायम किया है कि वह स्वभावत भला होता है। फिर भी राजनीतिक क्षत्रम तो आपके य विचार नही ह। नहा तो आपको अपना यह विश्वास छोडना पडगा कि मनुष्य असलमें स्वभावत भला होता है। अग्रज भी तो यहा अपनी हुकूमतके समयनमें अिसी प्रकार सरक्षक होनका दावा पेश करते ह।

पर ब्रिटिश साम्राज्य परसे तो आपका विश्वास कभीका अुठ गया है और आज अिस साम्राज्यका आपसे अधिक बडा कोअी दुश्मन नही है। राजनीतिक क्षत्रमें अक और आर्थिक क्षत्रमें दूसरे नियमका पालन करे तो यह मेल कसे बठगा ? अथवा आपका मतलब यह तो नहा कि ब्रिटिश जनता और ब्रिटिश साम्राज्यकी भाति अभी पजीवाद और पूजीपतियो परसे आपका विश्वास नही अठा है ? क्योकि आपका यह सरक्षकतावाला सिद्धान्त तो ठीक वसा ही दिखाअी देता है जसा राजाओका अीश्वरदत्त अधिकारवाला सिद्धात मालूम होता था। पर अब असे कोअी नही मानता। पहले अक आदमीको अपन अय भाअियोकी ओरसे अन्हीके द्वारा दी हुअी राजनीतिक सत्ताको धारण करन दिया जाता था। पर अमन अिसका दुरुपयोग किया और जनतान अुसके खिलाफ बगावत कर दी और अिस तरह लोकसत्ताका जम हुआ। अिसी प्रकार जब वे मुटठीभर लोग जिह जनतासे आर्थिक

सत्ता प्राप्त होती है और जिसे वे अिन लोगोंकी तरफसे धारण करते हैं अपनी अिस सत्ताका अुपयोग अपना ही स्वार्थ साधने तथा औरोंको नुकसान पहुंचानेके लिओ करने लगें तो अुसका अनिवार्य परिणाम यही होगा कि जनता अिन थोड़ेसे लोगोंके हाथोंमें से वह अर्थसत्ता छीन लेगी — अर्थात् समाजवादका जन्म होगा।

अब तक तो हर भली और बुरी चीजको हासिल करनेका सिर्फ अेक ही तरीका — हिंसा — माना गया था। पर जहां किसी भले कामके लिओ भी हम हिंसाका अुपयोग करने लगते हैं तो अुसके साथ अपने-आप कुछ बुराअियां भी आ ही जाती हैं और अुससे प्राप्त होनेवाले सुफल पर भी बुरा असर पड़ता है। पर अहिंसाका मार्ग हिंसाकी अपेक्षा अधिक अुच्च है और वह मनुष्योंके पारस्परिक सम्बन्धोंको विषाक्त नहीं कर देता। मैं यह भी मानता हूं कि आपने अिस अुपायकी कारगरताको बड़ी सफलताके साथ सिद्ध कर दिया है। अिसलिओ मेरी यह हार्दिक अभिलाषा है कि आप अिस वर्तमान अर्थ प्रणालीके साथ अपने अहिंसात्मक तरीकोंसे लड़कर अिसका अन्त कर दें और अेक नवीन अर्थ प्रणाली निर्माण करनेमें सहायता करें।'

पूंजीवाद और साम्राज्यवादके साथ मेरे व्यवहारमें मुझे कोअी असंगति नहीं दिखाअी देती। पत्र-लेखकका कुछ विचार-भ्रम हो रहा है। मैंने कभी यह नहीं कहा और न अिसका खयाल ही किया कि राजाओं, साम्राज्यवादियों और पूंजीपतियोंका क्या दावा है या अुन्होंने क्या दावा किया है। मैंने तो सिर्फ यही कहा और लिखा है कि पूंजीका विनियोग हमें किस तरह करना चाहिये। फिर दावा करना तो और बात है और अुस पर अमल करना जुदी बात है। अुदाहरणार्थ लोकसेवक होनेका दावा तो हर कोअी — जैसे मैं भी — कर सकता हूं। पर केवल दावा करनेसे ही कोअी सेवक थोड़े ही बन जाता है। लेकिन अगर मैं अपने दावेके अनुसार व्यवहार भी करने लगूं तो सभी मेरी कद्र करेंगे। अिसी तरह कोअी पूंजीपति सम्पत्ति परसे अपना अेकान्त प्रभुत्व हटाकर यह घोषणा कर दे कि यह सम्पत्ति तो जनताकी है और वह अुसका संरक्षक मात्र है तो सबका स्नेही होगा। बहुत सम्भव है कि मेरी सलाह कोअी नहीं मानेगा और मेरे सपने सच्चे न हो पायेंगे। पर यह भी तो कौन कह सकता है कि समाजवादियोंके सपने सच्चे होंगे? समाजवादका जन्म अिसलिओ नहीं हुआ कि पूंजीपति अपने धनका दुरुपयोग करते हैं। जैसा कि मैं कह चुका हूं, अीशोपनिषद्के पहले मन्त्रमें समाजवाद ही नहीं बल्कि साम्यवादके सिद्धान्तका भी स्पष्ट अुल्लेख है। बात असलमें यह है कि जिसे हम पाश्चात्य समाजवादकी विद्या कहते हैं अुसका जन्म

तो तब हुआ जब हृदय-परिवतनके तरीको परसे कुछ लोगाकी श्रद्धा अठ गअी। म भी अुसी समस्याका हल करनमें लगा हुआ हू जो शास्त्रशुद्ध समाजवादियोके सामन पेश है। हा यह सच है कि म तो हमेशा और सिफ शुद्ध अहिसाके रास्ते ही जानवाला हू। शायद वह असफल भी हो। पर अगर अैसा हुआ तो असका कारण अहिसाकी विद्यासे सम्बन्ध रखनवाला मेरा अज्ञान ही होगा। म असका चाहे प्रवीण प्रवतक न होअू पर असमें मेरी श्रद्धा जरूर दिन दिन बढ रही है। अखिल भारत चरखा-सघ और अ० भा० ग्रामोद्योग-सघ अैसी सस्थाअें ह जिनके जरिय अहिसाकी कलाकी अखिल भारतीय पमान पर जाच हो रही है। चूकि काग्रसका सचालन पूणतया लोकसत्तात्मक सिद्धान्तोके अनुसार होता है अत असकी सचालन-नीतिमें समय-समय पर परिवतन होना स्वाभाविक है। अैसे परिवतनाके कारण मेरे प्रयोगोमें रुकावट न आन पायें असलिअ काग्रेसन अिन दो सस्थाओको अत्पन्न किया है जिनके द्वारा म अपन प्रयोग ब रोकटोक जारी रख सकू। मेरी मनोगत सरदारताकी जाच तो अभी होनको है। सुयोग्य सचालको द्वारा सम्पत्तिका लोकहिताथ सबसे अच्छा अपयोग करनका यह अेक प्रयास है।

अब पत्रके दूसरे हिस्सेको ले। म जीवनको जड दीवारोसे विभक्त नही किया करता। अेक व्यक्तिकी भाति राष्ट्रका भी जीवन अविभक्त और पूण होता है। काग्रस अथवा तथोक्त राजनीतिक जीवनसे मेरे अलग हो जानके कारण मेरे हृदयसे हिदुस्तानकी आजादीके लिअ लगन लेशमात्र भी कम नही हुअी है। और न सविनय कानून भग अहिसाकी कोअी खास प्रक्रिया है। वह तो अुन अनक अहिसक प्रक्रियाओमें स अेक है जो किसी प्रकार भी अेक-दूसरेसे असगत नही हैं। मेरा ता यही काम है कि म जो कुछ भी करू असमें अहिसा ही हो। मेरा तो यह दावा है कि म अपना प्रयोग ठीक शास्त्रशुद्ध ढगसे किय जा रहा हू। अहिसाके बगीचेमें तो कअी पौध ह। पर अनका अद्गम-स्थान अेक ही है। यह कोअी जरूरी नही कि सबका प्रयोग अवसाय ही हो। अनमें से कुछ ज्यादा प्रबल ह कुछ अतन प्रबल नही ह। पर ह सब निरुपद्रवी। फिर भी अुनका अुपयोग करते समय कुशलतासे काम लेना पडता है। परमात्मान मुझ जो कुछ भी कौशल दिया है असस म काम ले रहा हू। पर चूकि म किसी खास पौधको छोडकर अेक अमुक पौधस काम ले रहा हू असके मानी यह नही कि मन युद्धको छोड दिया है। युद्ध तो लक्ष्यसिद्धिके पहले रुकनवाला नही है। अहिसाके कामें पराजय-जैसे शब्दके लिअ स्थान ही नही है।

हरिजनसेवक २०-२-३७ पृ ४-५

२७

क्या आप वर्गयुद्धको टाल सकते हैं?

प्र० — यदि आप मजदूरों, किसानों और कारखानेके श्रमिकोंको लाभ पहुँचाना चाहते हैं, तो क्या आप वर्गयुद्धको टाल सकते हैं?

अु० — बेशक मैं टाल सकता हूँ, बशर्ते कि लोग अहिंसक मार्गका अनुसरण करें। पिछले बारह मास यह अच्छी तरह दिखा चुके हैं कि अहिंसाको नीतिके रूपमें अपनाने पर भी वह क्या कर सकती है। जब लोग अुसे आचरणका सिद्धान्त मान लेते हैं, तब वर्गयुद्ध असम्भव बन जाता है। अिस दिशामें अहमदाबादमें प्रयोग किया जा रहा है। अुसके अत्यंत संतोषजनक परिणाम आये हैं। और अुस प्रयोगके निर्णायक सिद्ध होनेकी पूरी संभावना है। अहिंसक तरीकेमें हम पूँजीपतिका नहीं, बल्कि पूँजीवादका नाश करना चाहते हैं। हम पूँजीपतिसे कहते हैं कि वह अपनेको अन लोगोंका संरक्षक समझे जिन पर अुसकी पूँजी बनने, टिकने और बढ़नेका दारमदार है। श्रमिकको पूँजीपतिके हृदय-परिवर्तनकी प्रतीक्षा करनेकी भी जरूरत नहीं है। यदि पूँजीमें बल है तो श्रममें भी है। बल्कि अुपयोग विनाशक और रचनात्मक दोनों प्रकारसे किया जा सकता है। दोनों अेक-दूसरे पर निर्भर हैं। ज्यों ही मजदूर अपनी ताकतको पहचान लेता है, त्यों ही वह पूँजीपतिका गुलाम बना रहनेके बजाय अुसका बराबरीका हिस्सेदार बननेकी स्थितिमें आ जाता है। यदि वह अकेला ही मालिक बनना चाहेगा, तो वह संभवतः सोनेका अंडा देनेवाली मुर्गीको मार डालेगा। बुद्धि और अवसरकी असमानतायें अनन्त काल तक बनी रहेंगी। नदीके किनारे रहनेवाले आदमीके लिअे सूखी मरुभूमिमें रहनेवालेकी अपेक्षा फसल अुगानेका अवसर सदा ही अधिक रहेगा। परन्तु यदि असमानतायें हमारे सामने हैं, तो मूलभूत समानताओंको भी हमें अपनी पहुँचके बाहर नहीं समझना चाहिये। पशु-पक्षियोंकी तरह ही प्रत्येक मनुष्यको जीवनकी आवश्यकताओंके लिअे समान हक है। और चूँकि प्रत्येक अधिकारके साथ अनुरूप कर्तव्य और अुस पर होनेवाले हमलेको रोकनेका अनुरूप अिलाज लगा हुआ है, अिसलिअे मूल प्रारंभिक समानताकी प्राप्ति और रक्षा करनेके लिअे अुन कर्तव्यों और अुपायोंको खोज निकालनेकी ही बात रह जाती है। यह अनुरूप कर्तव्य है अपने हाथ-पैरोंसे परिश्रम करना और यह अनुरूप अुपाय है अुस आदमीसे असहयोग करना जो मुझसे मेरे परिश्रमका फल छीन लेता है। और यदि

मुझे पूंजीपति और मजदूरकी मूल समानता स्वीकार है जैसा कि होना ही चाहिये तो पूंजीपतिका विनाश मेरा लक्ष्य नहीं हो सकता। मुझे अुसके हृदय-परिवर्तनकी कोशिश करनी चाहिये। मेरा असहयोग वह जो अन्याय कर रहा होगा अुसके प्रति अुसकी आंखें खोल देगा। मुझे यह डर रखनेकी जरूरत नहीं कि मेरे असहयोग करने पर कोअी और मेरा स्थान ले लेगा। क्योंकि मुझे अपने साथियों पर अितना असर डाल सकनेकी आशा है कि वे मेरे मालिकके अन्यायमें सहायता न दें। निस्सन्देह सामूहिक रूपमें मजदूरोंकी असी शिक्षा अेक धीमी प्रक्रिया है परन्तु चूंकि अुसमें सफलता निश्चित है अिसलिअे वह सबसे तेज भी है। यह आसानीसे प्रत्यक्ष रूपमें दिखाया जा सकता है कि पूंजीपतिके विनाशका परिणाम अन्तमें मजदूरका भी विनाश है और जिस तरह कोअी मनुष्य अितना बुरा नहीं होता कि वह सुधारा ही नहीं जा सके वैसे ही कोअी मानव प्राणी अितना पूर्ण नहीं होता कि जिसे वह भूलसे सर्वथा बुरा समझ रहा है अुसके अपने हाथों किये नाशको अुचित ठहरा सके।

यंग अिंडिया २६–३–३१ पृ ४

२८

वर्ग विग्रह अनिवार्य नहीं है

[श्री महादेव देसाअीके साप्ताहिक पत्र से।]

रचनात्मक क्रांतिके विषयमें बातचीत करते समय श्री बासील मथ्यूजके दिमागमें कुछ और ही बातोंके बारेमें गांधीजीसे चर्चा करनेका विचार था। अिसीलिअे अुन्होंने यह विषय छेड़ा कि हमारे गांवोंकी नअी रचनामें जमींदार और साहूकारका क्या स्थान होगा? गांधीजीने कहा आज तो साहूकार अनिवार्य बन गया है। पर धीरे धीरे वह अपने-आप हट जायगा। और न सहकारी बैंकोंकी जरूरत रहेगी। क्योंकि जब मैं हरिजनोंको वह कला सिखा दूंगा जो मैं सिखाना चाहता हूं तब अुन्हें व्याज नगद धनकी जरूरत नहीं रहेगी। अिसके अलावा जो लोग आज भारी मुसीबतमें फंसे हुअे हैं वे सहकारी बैंकोंका अुपयोग नहीं कर सकते। मुझे अुन्हें धनका कर्ज या जमीनें दिलानेकी अुतनी चिंता नहीं है मुझे तो अुनके लिअे दाल रोटी और कुछ दूध जुटानेकी चिंता है। जब लोग आलस्यमें बीतनेवाले घंटोंको दौलतमें बदलनेकी कला सीख जाते हैं तब हमारी आवश्यकताके अनुसार सारी बातें ठीक हो जाती हैं।

पर जमींदारका क्या होगा? क्या अुसे भी आप हटा देना या नष्ट कर देना चाहते हैं?

मैं जमींदारको नष्ट तो नहीं करना चाहता, पर मैं यह भी नहीं मानता कि अुसका रहना अनिवार्य है। मैं आपको अुदाहरण देकर जरा समझा दूँ कि अपने संरक्षकताके सिद्धांत पर मैं यहाँ किस तरह अमल कर रहा हूँ। अिस गाँवमें जमनालालजीका तीन-चौथाअी हिस्सा है। दरअसल यहाँ मैं सोच-समझकर या योजना बनाकर नहीं, बल्कि यों ही अचानक आ गया हूँ। जब मैंने जमनालालजीसे सहायता माँगी, तो अुन्होंने मेरे लिअे अेक झोंपड़ा और दूसरे काम करनेवालोंके लिअे मकान बनवा दिये और कहा कि सेगाँवसे जो भी कुछ लाभ हो, अुसे आप गाँवके लाभके लिअे काममें लगा दें। अगर मैं अन्य जमींदारोंको भी अिसी तरह राजी कर सकूँ, तो ग्रामसुधार अेक आसान चीज हो जाय। मगर अिसके दूसरे नंबरमें जमींनका सवाल और सरकारकी लूटकी समस्या तो है ही। सवाल अुस पहलूसे संबंध रखनेवाली कठिनाअियोंका मैं अभी तो अुन्हीं बुराअियाँ मान लेता हूँ जो अनिवार्य हैं। अगर मौजूदा कार्यक्रम सफल हो गया, तो शायद मुझे सरकारी लूटका सामना करनेका रास्ता भी सूझ जाय।

तब तो आपकी वास्तविक अर्थनीति श्री नेहरूकी अर्थनीतिसे भिन्न है। क्योंकि जहाँ तक मैंने अुन्हें समझा है, वे तो जमींदारको बिलकुल हटा देना चाहते हैं।

जी हाँ, ग्रामोद्धार और पुनर्रचनाकी मेरी और अुनकी कल्पनाओंमें भेद जरूर दिखाअी देता है। और भेद यह है कि मैं अेक बात पर जोर देता हूँ तो वे दूसरी बात पर। ग्रामोद्धारकी हलचलकी तरफ वे ध्यान नहीं देते। वे बड़े-बड़े कारखानोंको बढ़ाना चाहते हैं। पर मुझे अिसमें शक है कि कल-कारखाने हिन्दुस्तानके लिअे कहाँ तक लाभदायक होंगे। दूसरे, वे मानते हैं कि वे कितना भी क्यों न टालना चाहें, अन्तमें जाकर वर्ग-विग्रह तो होकर रहेगा। मेरी नीति दूसरी है। मुझे अहिंसात्मक तरीकोंसे जमींदारों और पूँजीपतियोंके दिलका बदलनेकी प्रबल आशा और श्रद्धा है। अिसलिअे मेरे लिअे तो वर्ग-विग्रहके अनिवार्य होने जैसी कोअी बात ही नहीं है। क्योंकि अहिंसाका मार्ग तो अैसा है जिसमें कमसे कम विग्रहकी गुंजाअिश है। किसानोंमें अपनी शक्तिका भान पैदा होने दो, जमींदारी प्रथाकी बुराअी अपने-आप नष्ट हो जायगी। अगर किसान साफ-साफ कह दें कि जब तक हमें रोटी-कपड़ेके लिअे काफी नहीं मिलता, और अपने बच्चोंको तथा घरवालोंको अच्छी तरह शिक्षा देनेके लिअे साधन प्राप्त नहीं होते, तब तक हम आपकी जमीन पर काम नहीं करेंगे, तो बेचारा जमींदार करेगा ही

क्या ? असलमें पदा किय हुअ मालका मालिक तो वह है जो अुसके अुत्पादनके लिअ परिश्रम करता है। अगर तमाम श्रमजीवी अक्लमदीके साथ अपना सगठन कर ले तो अनकी शक्तिको कौन दवा सकता है ? अिसलिअ मुझ वग विग्रह अनिवाय नही दीखता। अगर मझ वह अनिवाय दिखाअी दे तो अुसका प्रचार करन और अुसके तरीके बतानमें मुझ कोअी हिचकिचाहट नही होगी।

हरिजनसेवक ५–१२–३६ पृ ३३४–३५

२९

क्या समाजवादी क्राति रामराज्यकी ओर ले जायेगी ?

प्र० — अधिकतर समाजवादियाका यह विश्वास है कि समाजवादी क्रान्ति होनसे हिंदू मुस्लिम झगडा पीछ पड जायगा और आर्थिक सवाल सामन आ जायेंग। क्या आपकी समझसे यह अच्छा होगा कि असी क्रान्ति हो ? क्या अिससे रामराज्य कायम होनमें मदद मिलेगी ?

अ० — समाजवादी क्रान्तिसे हिंदू मस्लिम झगडा कुछ हद तक तो शात पडगा। अितना तो हम सबका साफ होना चाहिय कि झगडोंके बहुतसे कारण होते ह। हिंदू मुस्लिम झगडा मिट जानसे सब झगड मिट जाते ह असा तो नही कह सकते। अितना ही कहा जा सकता है कि हिंदू-मुस्लिम झगडन अक भयकर रूप ले रखा है। छोट मोट दूसरे झगड मिट जानसे अिस भयकरताका रूप कम हो जायगा अिसमें शक नही है। जब गुलामी मिटकर आजादी आती है तब समाजकी सारी व्याधिया (बराअिया) अूपर आ जाती ह। अिससे भडकनका कोअी कारण म नही पाता। अगर असे मौक पर हमारा मन स्थिर रहे तो हरअक समस्या हल हो जाती है। हर हालतमें आर्थिक सवालको हल होना ही है। समाजवादकी जडमें आर्थिक समानता है। आज आर्थिक असमानता है। थाडाको करोड और बाकी लोगाको सूखी रोटी भी नहा मिलती असी भयानक असमानतामें राम राज्यका दशन करनकी आशा कभी न रखी जाय। अिसलिअ मन दक्षिण अफ्रीकामें ही समाजवादको स्वीकार किया था। मरा समाजवादिया और दूसरासे यही विराध रहा है कि सब सुधाराके लिअ सत्य और अहिसा ही सबसे अूचे साधन ह।

हरिजनसेवक १–६–४७ पृ १४८

३०

सेवा और स्वावलम्बनका सिद्धांत

प्र० — जब धनवान कठोर और स्वार्थी हो जाते हैं और बुराअी बराबर जारी रहती है, तो लाजिमी तौरसे अपनी तमाम भयंकरताके साथ जनताकी क्रान्ति पैदा होती है। जब जीवन जैसा कि आपने कहा है, अक्सर बुराअियोंके बीच चुनाव है तब क्रान्तियोंके अितिहासमें मिलनेवाली शिक्षाको मद्देनजर रखते हुअे क्या आप अैसी अुदार तानाशाहीका स्वागत करेंगे जो कमसे कम जबरदस्तीके साथ 'धनियोंका शोषण' करे, गरीबोंके साथ अिन्साफ करे और यों दोनोंकी सेवा करे?

अु० — मैं अुदार अथवा किसी और तरहकी डिक्टेटरशाहीको मंजूर नहीं कर सकता। अुसमें धनिकोंका लोप नहीं होगा और न गरीबोंकी हिफाजत होगी। निश्चय ही कुछ धनी मारे जायेंगे और गरीब मुहताज असहाय हो जायेंगे। अब नये रूपमें धनिक रह जायेंगे और अुदार विशेषणके बावजूद गरीबोंका वर्ग भी बना रहेगा। असली दवा है अहिंसात्मक असहयोग जिसे दूसरे रूपमें सबकी सच्ची शिक्षा कह सकते हैं। धनिकोंको गरीबोंकी सेवाकी और गरीबोंको स्वावलम्बनके सिद्धान्तकी शिक्षा दी जानी चाहिये।

हरिजनसेवक ८-६-४०, पृ० १३८

३१

बोलशेविज्म

प्र० — बोल्शेविज्मके सामाजिक अर्थशास्त्रके बारेमें आपकी क्या राय है और आपके विचारसे हमारे देशके लिअे अुसका अनुकरण करना कहाँ तक ठीक होगा?

अु० — मुझे स्वीकार करना चाहिये कि बोल्शेविज्म शब्दका अर्थ मैं पूरी तरह अभी तक नहीं समझ सका हूँ। मैं जितना ही जानता हूँ कि अुसका अुद्देश्य निजी सम्पत्तिकी संस्थाको खतम कर देना है। यह कोअी नयी बात नहीं है। यह तो अर्थ-व्यवस्थाके क्षेत्रमें अपरिग्रहके नैतिक आदर्शका प्रयोग हुआ। और यदि लोग अिस आदर्शको अपनी अिच्छासे या समझाने-बुझानेके फलस्वरूप स्वीकार कर लेते हैं तो बहुत अच्छी बात होगी। लेकिन बोल्शेविज्मके बारेमें मुझे जो कुछ जाननेको मिला है अुससे अैसा प्रतीत होता है कि यह न केवल हिंसाके प्रयोगका बहिष्कार नहीं करता बल्कि

निजी सम्पत्तिके अपहरणके लिअ और अुसे राज्यके सामूहिक स्वामित्वके अधीन बनाये रखनेके लिअ हिंसाके प्रयोगकी खुली छूट देता है। और यदि अैसा हो तो मुझे यह कहनेमें कोअी संकोच नहीं कि बोल्शेविक शासन अपने मौजूदा रूपमें ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकता। कारण, मेरा दृढ़ विश्वास है कि हिंसाकी नींव पर किसी भी स्थायी वस्तुका निर्माण नहीं हो सकता। लेकिन जो भी हो अिसमें कोअी सन्देह नहीं कि बोल्शेविक आदर्शके पीछे असंख्य पुरुषों और स्त्रियोंके — जिन्होंने अुसकी सिद्धिके लिअ अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया है — शुद्धतम त्यागका बल है और अैसा आदर्श जिसके पीछे लेनिन जैसे महापुरुषोंके त्यागका बल है कभी व्यर्थ नहीं जा सकता। अुनके त्यागका अुज्ज्वल अुदाहरण चिरकाल तक जीवित रहेगा और ज्यों-ज्यों समय बीतेगा त्यों-त्यों वह अिस आदर्शको अधिकाधिक शुद्धि और बल प्रदान करता रहेगा।

यंग अिंडिया १५-११-२८ पृ० ३८१

३२
बोल्शेविज्मका अर्थ

[नीचे दिया जा रहा लेख श्री अेम० अेन० रायने बोल्शेविज्म पर लिखे गये मेरे लेखके अुत्तरमें लिख भेजा है। मैं अुसे खुशीसे प्रकाशित करता हूं। लेकिन मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि अगर श्री रायके लेखमें बोल्शेविज्मका सही चित्रण हुआ है तो बोल्शेविज्म बहुत मामूली वस्तु है। जिस तरह मैं पूंजीवादका जुआ बरदाश्त नहीं कर सकता अुसी तरह बोल्शेविज्मका जुआ भी मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। मैं मनुष्य जातिके हृदय-परिवर्तन करनेमें विश्वास रखता हूं, अुसका नाश करनेमें नहीं। कारण बहुत स्पष्ट है। हम सब बहुत अपूर्ण और कमजोर हैं और यदि हम अुन सब लोगोंको मारना शुरू कर दें जिनकी रीति-नीति हमें पसन्द नहीं है तो अिस पृथ्वी पर अेक भी आदमी जीता न बचेगा। भीड़का शासन मूलमें व्यक्तिका निरंकुश शासन ही है, जबरदस्त अुससे लाखों-गुना ज्यादा भयंकर। लेकिन मैं आशा करता हूं बल्कि मुझे लगभग निश्चय है कि बोल्शेविज्मका सच्चा स्वरूप श्री अेम० अेन० राय द्वारा खींचे गये अुसके अिस चित्रसे कहीं ज्यादा अच्छा होगा। — मो० क० गांधी]

महात्मा गांधीने कुछ अमेरिकी मित्रोंने अुन्हें असा लिखा है कि धर्मके नाम पर व शायद अनजान ही भारतमें बोल्शेविज्मके प्रचारका प्रारंभ कर रहे हैं। ये बिन मांगी सलाह देनेवाले मित्र — जो जाहिर है कि अपने अिस कायके लिअे (शान्तिवादियोंके बानेमें छिपकर रहनेवाले) अेंग्लो-सेक्सन साम्राज्यवादियोंसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं — मुसलमान प्रजाओंके विद्रोहको दुनियाकी सुख शांतिके लिअे खतरा बतलाते हैं। अुनकी अिस मान्यताका कारण यह है कि बोल्शेविक रूस अिस विद्रोहका समर्थन कर रहा है। महात्माजी अिस अत्यंत अुद्धत पत्रका आसानीसे कड़ा जवाब दे सकते थे। वे अपने अुत्तरदायी (?) विदेशी मित्रोंको कह सकते थे कि मुस्लिम प्रजाओंके पास विरोध करनेका समुचित कारण है, और यह कि जो भी सरकार या राजनीतिक सिद्धान्त अिस विद्रोहका समर्थन करे आजादीके प्रचारकोंको अुसका आदर करना चाहिये। अिसके सिवा वे अिन अमेरिकी मित्रोंसे यह भी कह सकते थे कि अगर दुनियाके लिअे किसी खतरेकी अुन्हें समुचित चिंता है तो अुचित यह होगा कि वे अपने देशमें ही अुसके निवारणका प्रयत्न शुरू कर दें। क्या दुनियाकी सुख शांतिके लिअ आज अमेरिकी साम्राज्यवादसे बड़ा कोअी दूसरा खतरा है? क्या मुसलमान प्रजाका विद्रोह कू-क्लक्स-क्लान या 'अमेरिकन लीजन' से ज्यादा भयंकर है? क्या बोल्शेविक अनीश्वरवाद अमेरिकी जनतंत्रकी अधिकार-द्रोही भावनासे ज्यादा अधार्मिक है?

लेकिन महात्माजीने अैसा सीधा अुत्तर नहीं दिया। अुन्होंने अपने कायका औचित्य यह कहकर सिद्ध किया है कि वे बोल्शेविक प्रवृत्तिसे सर्वथा मुक्त हैं और अुनके विषयमें किसीको अैसी शंका नहीं करनी चाहिये। लेकिन आश्चर्य यह है कि यद्यपि जैसा वे खुद स्वीकार करते हैं वे बोल्शेविज्मके बारेमें कुछ भी जानते नहीं हैं, फिर भी अुसके खिलाफ अुनकी स्वाभाविक विरोध भावना अितनी अुग्र है कि वे बहुत चिंतापूर्वक यह स्पष्ट करते हैं कि बोल्शेविज्मके प्रति अुनके मनमें कहीं कोअी लगाव नहीं है। 'यंग अिंडिया' में अेक लेख लिखते हुअे वे कहते हैं : "पहले तो मुझे यह स्वीकार करना चाहिये कि मैं बोल्शेविज्मका अर्थ नहीं जानता।" कहना होगा कि यह अेक अैसी स्वीकारोक्ति है जिससे सबंधित व्यक्तिकी प्रतिष्ठाको बड़ा धक्का लगता है। असा मैं अिसलिअे कहता हूँ कि अुसका वक्ता अेक विराट जन-आन्दोलनका संचालक है। अिसी लेखमें महात्माजीने यह भी कहा है कि वे जानते हैं कि बोल्शेविज्मके बारेमें अेक-दूसरेसे बिलकुल विरुद्ध दो रायें प्रचलित हैं — 'अेक अुसका अत्यंत डरावना चित्रण करती है और अुसे कुरूप बनाती है और दूसरी अुसे दुनियाकी दलित जनताकी मुक्तिका निश्चित अुपाय मानकर अुसका स्वागत करती है।' लेकिन वे यह नहीं जानते कि

अिन दो विपरीत रायोंमें से किसका विश्वास करना चाहिये। यहां भी सही निर्णय पर पहुंचनेके लिअे वे अेक बहुत आसान अुपाय आजमा सकते थे। वे यह मालूम करते — और असा करना कठिन नहीं — कि बोल्शेविज्मकी वह पहली तसवीर कौन लोग खींचते हैं? यह तसवीर वे लोग खींचते हैं जो दुनिया पर हथियारों और रक्तपातकी नीतिका अमल करके राज्य कर रहे हैं। अपनी निष्पक्षताकी वृत्तिका आदर करनेके लिअे वे दूसरी तसवीर खींचनेवालोंकी राय न मानना चाहते तो न मानते। लेकिन महात्माजीको अिस बातका विश्वास दिलानेकी जरूरत तो नहीं होनी चाहिये कि पहला पक्ष मानव-जातिका मित्र या मुक्तिदाता तो नहीं है। अिसलिअे जब यह पक्ष किसी चीजको कुरूप बताता है तो मानव जातिका पीड़ित अंग आसानीसे समझ सकता है कि अुनके अिस कार्यके पीछे कोअी अनाम हेतु है। अुन्हें यह समझनेमें कोअी कठिनाअी नहीं होनी चाहिये कि तसवीरका डरावना चित्रण करनेमें अिस पक्षका अुद्देश्य अुन्हें ठगनेका है। युद्धकालमें भारतीय राष्ट्रवादी अैसी सहज बुद्धिके द्वारा जब रायटर मित्रराष्ट्रोंकी किसी विजयका तार भेजता था तब यह समझ लेते थे कि जर्मनीमें भी खुशियां मनाअी जाती होंगी और अैसी सहज बुद्धिका मानकर मेक्सिकोका मजदूर अपनेको गर्वपूर्वक बोल्शेविक कहता है क्योंकि वह देखता है कि अमेरिकी पूंजीपति बोल्शेविज्मके बहुत खिलाफ हैं। लेकिन महात्माजीके असा न कर सकनेका कारण शायद यह है कि महात्माकी मनोरचना बहुत जटिल होती है और सहज बुद्धिको सूझनेवाली बात अुन्हें नहीं सूझती।

चूंकि बोल्शेविज्मके बारेमें यह शोचनीय अज्ञान केवल महात्माजीमें ही नहीं भारतके दूसरे कअी लोगोंमें भी पाया जाता है और चूंकि अिस अज्ञानके बावजूद भी वे बोल्शेविज्मके बारेमें अपनी राय तो बनाते ही हैं अिसलिअे अिस क्रान्तिकारक सिद्धान्तके बारेमें कुछ शब्द कहना अनुचित न होगा — खासकर अिसलिअे कि बोल्शेविज्म आजकी दुनियाका सबसे ज्यादा प्रभावशाली राजनीतिक बल है। (यहां यह याद रहे कि यह १९१७ की रूसी क्रान्तिका बुनियादी सिद्धान्त है परिणाम नहीं, जैसा कि अक्सर लोगोंका खयाल है।) जिस तरह सन १७८९ की महान फ्रेंच क्रान्तिने अुस कालमें यूरोपके राजनीतिक विचार-प्रवाह और जीवनको प्रभावित किया था अुसी तरह यह रूसी क्रान्ति भी हमारे कालमें वही काम करनेवाली है। फर्क अितना ही है कि रूसकी भौगोलिक स्थिति और अुसके क्रान्तिप्रेरक सिद्धान्तोंके कारण अिस क्रान्तिका प्रभाव ज्यादा बड़े क्षेत्र तक पहुंचेगा और अेशिया तथा अफ्रीका भी अुससे अछूते नहीं रहेंगे। यह वस्तुस्थिति है बावजूद क्रान्तिका ध्वजा अुड़ानेवाले अुन सज्जनोंके भय और प्रकोपके (अुनकी अिस प्रतिक्रियाका

आसानीसे समझा जा सकता है) जिनकी सद्भावना पर महात्माजी सहज ही विश्वास कर लेते हैं किन्तु जिसे दुनियाके अधिक व्यावहारिक लोग सन्देहकी दृष्टिसे देखते हैं।

अब जहां तक महात्माजीका सवाल है बोल्शेविज्मके मुख्य सिद्धान्त कुछ नये नहीं हैं। वे खुद भी अैसा ही मानेंगे। लेकिन यदि सिद्धान्तोंको कार्यमें न अुतारा जाय तो सिद्धान्तोंका बेजान शब्दोंसे ज्यादा कोअी मूल्य नहीं होता। अपने घोषित लक्ष्यके अनुसार महात्माजी यह तो चाहते ही हैं कि जनता पूंजीवादके शोषक चंगुलसे मुक्त हो जाय। बोल्शेविज्म भी यही चाहता है। बोल्शेविज्मके पुरस्कर्ता सामान्यतः महात्माजीके अिस कथनसे सहमत हैं कि दुनियाके लिअे अिस समय सबसे बड़ा खतरा अन्तर्राष्ट्रीयताका साथ नग्न रूप शोषण करनेवाला और लगातार बढ़ रहा वह साम्राज्यवाद है जो कमजोर राष्ट्रोंके स्वतन्त्र अस्तित्व और विस्तारका नाश करनेके लिअे अुद्यत है। लेकिन महात्माजी और बोल्शेविज्ममें फर्क यह है कि महात्माजीके हाथोंमें स्वतन्त्रताके अिस सन्देशका कोअी व्यावहारिक मूल्य नहीं रहता, क्योंकि वे अुसे नीति धर्म और अीश्वरकी अपनी रहस्यमय कल्पनाके नियन्त्रणमें बांधकर रखते हैं जब कि बोल्शेविक लोग अपने ध्येय और अपनी दृष्टिको अैसे भ्रमोंसे धुंधला नहीं होने देते हैं और दुनिया जैसी है वैसा ही अुससे व्यवहार करते हैं। फर्क यह है कि जहां साम्राज्यवादी सत्ताओंके सम्मिलित और प्रबल विरोधके होते हुअे भी दीर्घकालीन गुलामीकी सुदृढ़ शृंखलाकी कड़ियोंको लगातार तोड़ते हुअे बोल्शेविज्म आगे बढ़ता जा रहा है वहां गांधीवाद अभी अधरमें अपना रास्ता ही टटोल रहा है और अेक नैतिक तथा धार्मिक विधि-निषेधोंकी सृष्टि करता रहता है जो जनताको स्वतन्त्रताके लिअे लड़नेकी सशस्त्र शक्तिका निर्माण करनेसे रोकते हैं।

मैं यह मान लेता हूं कि महात्माजी समाजवादसे — सेंट साअिमन टामस मूर, टॉल्स्टाय आदिकी कल्पना पर आधारित समाजवादसे नहीं, बल्कि कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक अेंगल्स द्वारा आर्थिक तथ्यों और वैज्ञानिक जानकारीकी भित्ति पर निर्मित वैज्ञानिक समाजवादके — सामान्य सिद्धान्तोंसे परिचित होंगे। ये सिद्धान्त अिस प्रकार हैं (१) अुत्पादनकी पूंजीवादी प्रणालीका अुच्छेद (२) वैयक्तिक सम्पत्तिकी समाप्ति (३) सामाजिक स्वामित्वके आधार पर अुत्पादन और वितरणके साधनोंका पुनर्गठन और (४) वर्गोंकी बुराअियोंसे दूषित समाजका भाअीचारेकी भावनासे युक्त मानव-परिवारमें रूपान्तर। यही सब सिद्धान्त बोल्शेविज्मके भी हैं क्योंकि बोल्शेविज्म समाजवादकी ही वह प्रारंभिक अवस्था है जब वह अपने विरोधियोंको परास्त कर रहा होता है और अिसलिअे कुछ अुग्र होता है।

बोल्शेविज्म शब्दको रक्तपात विनाश आतंक आदिके साथ जोड़ दिया गया है लेकिन वास्तवमें अुसके मूल अर्थमें असी कोअी बुराअी नहीं है। बोल्शेविज्म रूसी शब्द बोल्शेविकीसे बना है और बोल्शेविकीका अर्थ है बहुसंख्यक पक्षके अनुयायी। अिस शब्दका प्रयोग पहले-पहल तब हुआ था जब सन् १९०३ में कार्यक्रम और कार्य प्रणालीके सवाल पर रूसकी सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी दो टुकड़ोंमें बंट गयी थी। बहुसंख्यक दलके—जिसके नेता लेनिन और कुछ दूसरे लोग थे—कार्यक्रम और कार्य प्रणालीका नाम बोल्शेविज्म पड़ गया। और चूंकि रूसके मजदूर वर्गने अिसी बहुसंख्यक दलके कार्यक्रम और कार्य प्रणालीके अनुसार लड़कर अक्तूबर १९१७ में अपनी विजय प्राप्त की थी अिसीलिअे अक्तूबर क्रांतिको बोलशेविस्ट विजय कहा जाता है। यह बोलशेविस्ट विजय समाजवादकी पहली विजय है। अब हम रूसी क्रांतिके ठोस परिणाम देखें (१) अेक भ्रष्ट अनुत्तरदायी और निरंकुश शासनका अंत हो गया। (२) अुन मध्यम वर्गोंका भी सफाया हो गया जो जनतंत्रकी आड़में विदेशी सरकारोंकी मददसे रूसी जनताको क्रांतिके लाभोंसे वंचित करना चाहते थे। (३) जारकी निरंकुश सत्ताका मूलाधार जमींदार वर्ग नष्ट कर दिया गया जमीन पूरे राष्ट्रकी संपत्ति घोषित कर दी गयी और किसानोंमें बांट दी गयी। (४) बड़े-बड़े अुद्योग राष्ट्रकी सम्पत्ति घोषित कर दिये गये। (५) वैदेशिक व्यापार पर राज्यका अेकाधिकार हो गया। (६) विधान और शासनकी सारी सत्ता लोक-समुदायकी प्रचंड बहुसंख्याको यानी मजदूरों किसानों और सैनिकोंको सौंप दी गयी। वे अिस सत्ताका प्रयोग अपनी कौंसिलों या समितियों द्वारा करते हैं जिन्हें रूसी भाषामें सोवियत कहा जाता है। (७) वैयक्तिक संपत्तिका सारा अधिकार और अुसके कारण मिलनेवाले सब विशेषाधिकार खतम कर दिये गये। ये हैं बोल्शेविज्मके सिद्धान्त जिन्हें रूसमें क्रांतिके फलस्वरूप व्यवहारमें अुतारा गया है। हमने बोलशेविज्मकी सामान्य जानकारी दे दी। अब हम यह जानना चाहेंगे कि महात्माजी अुसके बारेमें क्या सोचते हैं? अिस प्रश्नके अुत्तरमें न सिर्फ भारतको बल्कि सारी दुनियाको दिलचस्पी होगी।

अिसके बाद हम ज्यादा मुश्किल सवाल पर पहुंचते हैं। महात्माजीको शायद अिन सिद्धान्तोंके खिलाफ कोअी आपत्ति न हो लेकिन अुन्हें कार्यान्वित करनेकी रीतिके बारेमें जरूर ही वे अपनी शर्तें मनवाना चाहेंगे। अुनके लिअे तो हर चीजकी अेक ही कसौटी है। अगर बोल्शेविज्म अनीश्वरवादी है तो वे असके खिलाफ हैं। अपने निर्णयके लिअे अुन्हें अितना ही काफी हो जाता है। हमने अुन्हें संक्षेपमें बोल्शेविज्मकी परिभाषा दे दी है। अब

वे विचार करें और कहें कि वह अीश्वरकी अस्वीकृतिका सूचक है या नहीं है। वे अुसे अीश्वरकी अस्वीकृतिका सूचक तब तक नहीं कह सकते जब तक कि वे वैयक्तिक सम्पत्ति और स्थापित स्वार्थोंको अीश्वरीय विधान न मानते हों। अिसमें शक नहीं कि बोल्शेविज्म वैयक्तिक संपत्ति और स्थापित स्वार्थोंको — जो कि अितिहासके आदिकालसे ही मनुष्य-समाजके लिअे अभिशाप रूप सिद्ध हुअे हैं — अमान्य करता है। बोल्शेविज्मके व्यावहारिक कार्यक्रममें अीश्वर या धर्मका कोअी सवाल नहीं है। वह न अीश्वरवादी है और न अनीश्वरवादी है। अुसका संबंध मनुष्यके दुनियवी जीवनसे है। अीश्वर या धर्मके साथ अुसका झगड़ा यदि होता है तो तब होता है जब अीश्वर और धर्म अुसके रास्तेमें आते हैं, यानी अुसके व्यावहारिक कार्यक्रममें बाधा अुपस्थित करते हैं। वैसी हालतमें बोल्शेविज्म अुस सर्वशक्तिमान माने जानेवाले अीश्वरकी चुनौती स्वीकार करनेमें संकोच नहीं करता। तब वह अनीश्वरवादी बन जाता है और महात्माजीकी अनुकूलताको खोनेका खतरा अुठा लेता है। लेकिन असा करके वह न केवल जनताके भौतिक अधिकारोंके लिअे लड़ता है बल्कि अपने हाथमें लाखोंका बौद्धिक और मानसिक अुद्धार करनेवाली ज्ञानकी मशाल भी अुठाता है, ताकि अज्ञान और अंधविश्वासका वह अंधेरा दूर हो जाय जिसमें प्रभुता भोगी वर्गने जनताको युगों-युगों तक रखा है।

लेकिन बोल्शेविज्मका यह कार्यक्रम जिसे महात्माजीको भी मानवता सम्मत मानना पड़ेगा — वे जाहिरा तौर पर अूपरी वर्गके हितोंकी हिमायत शुरू कर दें तो दूसरी बात — व्यवहारमें अुतारना आसान नहीं है। अिसमें शक नहीं कि क्रांतिके बाद रूसमें अत्यन्त विनाशकारी गृहयुद्ध चला और आतंकका राज्य रहा। लेकिन अुसका कारण यह था कि अिस कार्यक्रमका कार्यान्वित होना रोकनेके लिअे विरोधियोंने बड़ा प्रबल प्रतिरोध चलाया। यह प्रतिरोध न सिर्फ रूसके अभिजात और मध्यम वर्गके लोगोंने जो अपनी खोयी बाजी फिरसे जीत लेना चाहते थे चलाया बल्कि अुन्हें सारी दुनियाके अुन वर्गोंकी प्रकट मदद भी मिली। क्योंकि अुन्होंने देख लिया कि रूसी क्रांति अुनके किलेकी प्राचीरमें गोया पहली दरार है। अुनके प्रतिरोधकी अिस सतत चलायी गयी मुहिमका अेक अंग यह था कि वे बोल्शेविज्मका चित्रण अत्यन्त डरावने रंगोंमें करते थे। सच्ची बात है कि महात्माजी भी अेक हद तक अुनके अिस झूठे चित्रणसे प्रभावित हो गये हैं। प्रश्न यह है कि अुपस्थित परिस्थितिमें बोल्शेविक क्या कर सकते थे? अुनके सामने दो ही विकल्प थे। अेक तो यह कि वे रूसी मजदूरों और किसानोंसे कह देते कि वे अीश्वरकी और धर्मकी बात मानकर गुलामीकी अुन जंजीरोंको पुनः स्वीकार

कर लें जिन्हें अुन्होंने अितनी बहादुरीसे तोड़ा था। और दूसरा यह कि अगर औीश्वर और धर्म अनके रास्तेमें आते हैं तो अपनी जीती हुअी आजादीकी रक्षा और मजबूतीके लिअ औीश्वर और धर्मके खिलाफ भी लड़ लें। परिस्थितियोंने बोल्शेविज्मको दूसरा विकल्प चुननेके लिअ बाध्य किया। कारण रूसी मजदूरों और किसानोंको पुनः जार बादशाहों और पूंजीपतियोंके अत्याचारी शासनके पाशमें फांसनेके लिअ न सिर्फ सारे भौतिक साधनोंको अिकट्ठा किया गया था और काममें लाया जा रहा था बल्कि औीश्वर और धर्म आदिके हथियारोंको भी अनके खिलाफ असी अुद्देश्यसे अिकट्ठा किया गया था। बोल्शेविज्म औीश्वरकी भक्तिका अुपदेश नहीं करता और बोल्शेविज्मके अनुयायी या प्रचारक औीश्वरके दूत नहीं हैं। लेकिन बोल्शेविज्म असुरत्वका हामी भी नहीं है। महात्माजी जनताका हृदयके रास्तेसे अनकी सत् प्रकृतिके द्वारा छूना चाहते हैं। अनकी यह अिच्छा और कोशिश भली मालूम होती है और यदि अूपरी वर्गोंकी प्रभुता और साम्राज्यवादके अत्याचारसे जनताका अुद्धार करनेमें वह अुपयोगी साबित हुअी होती तो बोल्शेविज्मको असका विरोध करनेके लिअ कोअी कारण न रहता। असी तरह महात्माजीकी अनुशासन की बात भी संशयास्पद है। वह लोगोंके आध्यात्मिक कल्याणके लिअ अच्छी हो सकती है लेकिन वह आजादीके लिअ लड़नेकी अनकी संकल्प शक्तिको जरूर कमजोर करता है। हृदय, मत, प्रकृति, अनुशासन आदिकी ये बातें स्मरणातीत कालसे कही जाती रही हैं और जो अिन्हें कहते रहे हैं वे जानते रहे हों या नहीं अनसे निचले वर्गों पर अूपरी वर्गके सत्ताके बंधन अधिक मजबूत ही हुअे हैं। बोल्शेविज्म किसी भी कर्तव्यका, वह कितना ही अरुचिकर या कठिन क्या न हो, टालता नहीं है। वह औीश्वरके अस्तित्वको चुनौती देता है और अिस मान्यतासे अुद्भूत धर्म और नीतिकी व्यवस्थाओंका खंडन करता है क्योंकि आजादीकी लड़ाअीके दरमियान ये सब शासकोंकी निरंकुश सत्ता और अत्याचार और दमनके पक्षमें खड़े दिखाअी देते हैं।

यदि औीश्वर और पृथ्वी पर असके प्रतिनिधि अैहिक सवालोंमें दखल देना छोड़ दें तो बोल्शेविज्म औीश्वरको असकी जगह रहने देनेके लिअ तैयार है। लेकिन यदि वे अपनी अति भौतिक (Supermaterial) स्थितिमें संतुष्ट रहनेके लिअ तैयार नहीं हैं और पृथ्वी पर गड़बड़ फैलाते हैं तो बोल्शेविज्म धर्मने जनताको अज्ञानके जिस जालमें जकड़ रखा है अुससे असका अुद्धार करनेके लिअ अनीश्वरवादका प्रचार करनेमें भी नहीं चूकेगा।

यंग अिंडिया १-१-२५ पृ० ५-६

अेम० अेन० राय

३३

युवा साम्यवादियोंके साथ प्रश्नोत्तर

[श्री महादेव देसाअीकी 'लंदनकी चिट्ठी' से।]

श्रीमती नायडूमें कुछ हद तक प्राचीन रोमकी महिलाओं जैसा वात्सल्यका प्रेम है, साथ ही अपने नौजवान बच्चोंके लिअे अुतना ही गर्व भी है। अुस दिन अुन्होंने गांधीजीसे युवा भारतीय साम्यवादियोंके अेक दलका परिचय कराया, जिसका नेता अुनका सबसे छोटा पुत्र बाबा था। जैसा स्वाभाविक था, साथियोंने अिस रंगहीन प्रतिस्पर्धाका अध्यक्ष श्रीमती नायडूको ही बनाया, क्योंकि अुन्होंने ही अिसकी व्यवस्था की थी।

ये सभी नौजवान अपनी मातृभूमिसे लगभग निर्वासित-से थे और अुसकी सेवाकी सच्ची लगन रखते थे। मेरा खयाल है कि अुन सबको गांधीजीसे बड़ा प्रेम था और यह अुनकी समझमें नहीं आता था कि जब गांधीजीको सामाजिक न्यायके लिअे अितनी आतुरता और गरीबोंकी अितनी चिन्ता है, तब अुनके सिद्धान्तोंसे सहमत हुअे बिना वे कैसे रह सकते हैं। व्याख्यान श्रीगणेश करते हुअे कहा, 'हमें आपकी भाषा समझनेमें अक्सर कठिनाअी अनुभव होती है, क्योंकि आप न केवल अेक राष्ट्रको बल्कि अंग्रेजी भाषाको भी नये सांचेमें ढाल रहे हैं और हमें कअी बार असा लगता है कि जब आपके कथनका अेक अर्थ होता है, तब लोग अुसका बिलकुल दूसरा ही अर्थ लगाते हैं। अिसलिअे हम यह देखने आये हैं कि हमारे प्रकट मतभेदोंके पीछे कोअी समान पृष्ठभूमि खोजी जा सकती है या नहीं।' यह कहकर अुन्होंने अपनी काफी बड़ी प्रश्नमाला, जिसे वे पांच दिन पहले गांधीजीके पास छोड़ गये थे, पढ़ दी। अुनमें से कुछ प्रश्न और गांधीजीके अुत्तर नीचे दिये जाते हैं।

विशेषाधिकार-प्राप्त वर्गोंकी स्थिति

पहला प्रश्न यह था:

आपके खयालसे भारतीय राजा-महाराजा, जमींदार, मिल-मालिक, साहूकार और दूसरे मुनाफाखोर लोग धनवान कैसे बनते हैं?

गांधीजीने अुत्तर दिया: अभी तो आम जनताका शोषण करके ही बनते हैं।

फिर अुन्होंने पूछा: क्या ये लोग भारतके मजदूरों और किसानोंके शोषणके बिना धनवान बन सकते हैं?

गांधीजीने जवाब दिया हां अमुक हद तक।

क्या अिन वर्गोंके मामूली किसान और मजदूरसे जो धन जुटानेका काम करता है अधिक आरामसे रहनेमें कोअी सामाजिक न्याय है?

गांधीजीने स्पष्ट रूपमें अुत्तर दिया 'बिलकुल नहीं।' फिर वे समझाने लगे समाजकी मेरी कल्पना यह है कि हम सब जन्मसे तो समान दरजे पर होते हैं अर्थात् हम सबको समान अवसर पानेका हक है परन्तु हम सबकी क्षमता अेकसी नहीं है। प्रकृतिकी रचना ही अैसी है कि सबकी क्षमता अेकसी हो ही नहीं सकती। अुदाहरणके लिअे सबकी अेकसी लम्बाअी अेकसा रंग या बुद्धि आदिकी अेकसी मात्रा नहीं हो सकती। अिसलिअे कुदरतन् ही कुछ लोगोंकी कमानेकी योग्यता अधिक होगी और दूसरोंकी कम। बुद्धिशाली लोगोंकी योग्यता अधिक होगी और वे अपनी बुद्धिका अिस काममें लिअे अुपयोग करेंगे। यदि वे अुपकारकी भावना रखकर अपनी बुद्धिका अुपयोग करें तो राज्यका ही काम करेंगे। अैसे लोग तो ट्रस्टी या संरक्षक बनकर रहते हैं और किसी तरह नहीं। मैं बुद्धिशाली आदमीको अधिक कमाने दूंगा अुसकी बुद्धिको कुंठित नहीं करूंगा। परन्तु अुसकी अधिकांश कमाअी राज्यकी भलाअीके लिअे वैसे ही काम आनी चाहिये जैसे कि बापके तमाम कमाअू बेटोंकी आमदनी परिवारके कोषमें जमा होती है। वे अपनी कमाअीके संरक्षक बनकर ही रहेंगे। संभव है कि अिसमें मुझे बुरी तरह असफलता मिले परन्तु मैं अिसी दिशामें चल रहा हूं। और बुनियादी अधिकारोंकी घोषणा में भी यही अर्थ निहित है।

वर्गयुद्ध

अिसमें वर्गयुद्धकी चर्चा छिड़ गअी। प्रश्न यह था कि अुमसे विशेष अधिकार भोगनेवाले वर्गोंका वांछित कायापलट किया जा सकता है या नहीं?

प्र० — क्या आपका यह खयाल नहीं है कि किसान और मजदूर आर्थिक और सामाजिक मुक्तिके लिअे वर्गयुद्ध चलाकर ठीक कर रहे हैं ताकि वे समाजके मुफ्तखोर वर्गोंका भरण-पोषण करनेके भारसे सदाके लिअे मुक्त हो जायें?

अु० — नहीं। मैं स्वयं अुनके पक्षमें क्रान्ति कर रहा हूं परन्तु वह अहिंसक क्रान्ति है।

प्र० — युक्तप्रांतमें लगान कम करानेके आन्दोलनसे आप किसानोंकी स्थितिमें सुधार कर सकते हैं परन्तु अिस प्रणालीकी जड़ नहीं काटते।

अु० — हां। परन्तु अेक ही साथ सब कुछ नहीं किया जा सकता।

प्र० — तो फिर आप संरक्षकता (ट्रस्टीशिप) कैसे लायेंगे? समझा-बुझाकर ही न?

अु० — केवल जबानसे समझा-बुझाकर नहीं। मैं अपने अुपायों पर सारी शक्ति लगाअूंगा। कुछ लोगोंने मुझे अपने समयका सबसे बड़ा क्रांतिकारी बताया है। यह गलत हो सकता है, परंतु मैं अपने-आपको अेक क्रांतिकारी — अहिंसक क्रांतिकारी मानता हूं। मेरा अुपाय असहयोग होगा। कोअी व्यक्ति संबंधित लोगोंके अिच्छा या अनिच्छासे किये गये सहयोगके बिना धन अिकट्ठा नहीं कर सकता।

विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग संरक्षकोंके रूपमें

परंतु अिससे प्रश्न पूछनेवालोंको पूरा संतोष नहीं हुआ। वे तो कुछ वर्गोंको प्राप्त आजके विशेष अधिकारोंके आधारको ही चुनौती दे रहे थे। अुन्होंने पूछा: पूंजीपतियोंको संरक्षक (ट्रस्टी) किसने बनाया? अुन्हें कमीशन लेनेका हक क्यों है और वह आप कैसे तय करेंगे? गांधीजीने समझाया, 'अुन्हें कमीशन लेनेका हक अिसलिअे है कि रुपया अुनके कब्जेमें है। किसीने अुन्हें संरक्षक नहीं बनाया है। मैं अुनसे संरक्षक बन जानेका अनुरोध कर रहा हूं। जो लोग आज मालिक बने हुअे हैं अुनसे मैं कहता हूं कि वे संरक्षक बनकर काम करें अर्थात् अैसे संरक्षक बन जायं जो अपने अधिकारसे नहीं परंतु जिनका अुन्होंने शोषण किया है अुनके दिये हुअे अधिकारसे मालिक रहें। मैं मनमाने तौर पर यह तय नहीं करूंगा कि वे क्या कमीशन लें, परंतु अुनसे कहूंगा कि जितना अुचित हो अुतना ही लें। अुदाहरणार्थ, जिस आदमीके पास १०० रुपये हैं अुससे मैं कहूंगा कि ५० रुपये तुम ले लो और बाकी ५० रुपये मजदूरोंको दे दो। परंतु जिसके पास अेक करोड़ रुपये हैं अुसे शायद अपने लिअे अेक प्रतिशत ही रखनेको कहूंगा। अिस प्रकार आप देखते हैं कि मैं कमीशनकी कोअी निश्चित रकम मुकर्रर नहीं करूंगा, क्योंकि अुसका परिणाम भयंकर अन्याय होगा।

व्यक्ति बनाम प्रणाली

अिसके बादकी प्रश्नमालाका संबंध भारतीय पूंजीपतियों और जमींदारोंके विरुद्ध छेड़े जानेवाले युद्धके प्रति गांधीजीके रुखसे था। अिससे गांधीजीको प्रणाली और मनुष्यके बीच भेद करनेकी आवश्यकता समझानेका अवसर मिला। अिससे वे अपना भूमि-संबंधी और आर्थिक कार्यक्रम भी ठोस रूपमें अुपस्थित कर सके। साम्यवादी सवालकने कहा: 'राजा-महाराजाओं और जमींदारोंने अंग्रेजोंका साथ दिया। परंतु आपको तो आम जनताका समर्थन प्राप्त होता है। अुधर आम जनता अिन वर्गोंको अपना शत्रु समझती है। जब आम जनताके

हाथमें सत्ता आ जायगी अुस समय यदि असन अिन वर्गोंने भाग्यका निर्णय कर दिया तो आपका क्या रुख होगा ?

गांधीजीने अुत्तर दिया आज तो आम जनता जमींदारों और दूसरे मुनाफाखोरोंको अपना शत्रु नहीं समझती। परंतु अिन वर्गोंकी तरफसे किये जानेवाले अन्यायका भान आम जनताको कराना होगा। मैं आम लोगोंको पूंजीपतियोंको अपना दुश्मन समझना नहीं सिखाता परंतु मैं अन्हें यह सिखाता हूं कि वे स्वयं ही अपने दुश्मन हैं। असहयोगियोंने लोगोंसे यह कभी नहीं कहा कि अंग्रेज या जनरल डायर बुरे हैं। अुन्होंने लोगोंको यही समझाया कि वे अेक प्रणालीके शिकार हैं। अिसलिअे वह प्रणाली नष्ट की जानी चाहिये न कि अुसके शिकार बने हुअे व्यक्ति। यही कारण है कि आजादीकी चाहसे जितनी प्रज्वलित भारतीय जनताके बीच भी ब्रिटिश कर्मचारी निर्भय होकर रह सकते हैं।

अपना सामूहिक हमला जारी रखते हुअे अन्होंने फिर पूछा यदि आप किसी प्रणाली पर आक्रमण करना चाहते हैं तो अेक भारतीय पूंजीपति और अेक अंग्रेज पूंजीपतिमें कोअी फर्क नहीं हो सकता। आप करबन्दीको जमींदारोंके प्रति क्यों नहीं लागू करते ?

गांधीजीने अुत्तर दिया जमींदार अेक प्रणालीका अस्त्रमात्र है। ब्रिटिश प्रणालीके साथ ही साथ जमींदारके खिलाफ भी आन्दोलन करना जरूरी नहीं है। दोनोंमें भेद करना संभव है। परंतु हमें लोगोंको जमींदारोंका लगान चुकानेसे रोकना पड़ा क्योंकि अिन्हीं रुपयोंमें से जमींदार सरकारको देते हैं। हमारा तद जमींदारोंके साथ अिस वक्त तक कोअी झगड़ा नहीं है जब तक वे काश्तकारोंके साथ अच्छा बरताव करते हैं।

ठोस कार्यक्रम

प्र०—किसान और मजदूरोंको अपने भाग्यका निर्णय करनेका पूर्ण अधिकार दिलानेके लिअे आपका ठोस कार्यक्रम क्या है ?

अ०—मेरा कार्यक्रम वही है जिस पर मैं कांग्रेसके मारफत अमल कर रहा हूं। मुझे दृढ़ विश्वास है कि अिसके परिणामस्वरूप आज अुनकी स्थिति अुस स्थितिसे कहीं श्रेष्ठ है जो लोगोंकी याददमें पहले किसी भी समय रही हो। मैं अिस वक्त अुनकी आर्थिक स्थितिकी बात नहीं कर रहा हूं। मैं अुस जबरदस्त जागृतिका जिक्र कर रहा हूं जो अुनमें आ गयी है और जिसके कारण अुनमें अन्याय और शोषणका विरोध करनेकी योग्यता पैदा हो गअी है।

प्र० — किसानोंका अनके ५०० करोड़ रुपयेके कर्जसे मुक्त करनेके लिअे आप क्या अपाय करना चाहते हैं?

अु० — कर्जकी ठीक रकम तो किसीको भी मालूम नहीं है। मगर जो भी हो, यदि कांग्रेसको सत्ता मिली तो जब वह जानेवाली विदेशी सरकारके लेन-देनकी जिम्मेदारी अुसका स्थान लेनेवाली भारतीय सरकार द्वारा स्वीकार किये जानेकी जांच करायेगी तब ही वह किसानोंके कथित कर्जकी भी जांच करानेका आग्रह रखेगी।

यंग अिंडिया २६-११-३१, पृ० ३६७-६८

३४

अपनी बुद्धि पर ताला न लगाअिये

[बम्बअीके मजदूरोंकी अेक सभामें बोलते हुअे गांधीजीने हिन्दीमें जो भाषण दिया था अुसका सार नीचे दिया जाता है। अिस सभामें कुछ नौजवान साम्यवादियोंने गड़बड़ मचाअी थी। — म० दे०]

मैं जानता था कि भारतमें साम्यवादी हैं। परन्तु मेरठ जलके सिवा बाहर अुनसे मिलनेका मौका नहीं आया था और न अुनके भाषण मैंने सुने थे। दो वर्ष पूर्व अपने युक्तप्रान्त (अु० प्र०) के दौरेमें मैंने मेरठके बन्दियोंसे मिलनेका खास ध्यान रखा था और अिस तरह अुनका कुछ परिचय प्राप्त किया था। आज मैंने अुनमें से अेकका भाषण सुना। मैं अुनसे कह सकता हूं कि वे मजदूरोंके लिअे स्वराज्य प्राप्त करनेका दावा भले ही बहुत करते हों, परन्तु मुझ अुनकी शक्तिमें शंका है। जब कि अिन नौजवान साम्यवादियोंमें से किसीका जन्म भी नहीं हुआ था, अुससे बहुत पहले ही मैंने मजदूरोंके कामको अपना बना लिया था। मैंने दक्षिण अफ्रीकामें अपने समयका सर्वोत्तम भाग अुनके लिअे काम करनेमें लगाया था। मैं अुनके साथ अुनके सुख-दुःखमें अेक साथीकी तरह भाग लेते हुअे रहता था। अिसलिअे आपको समझ लेना चाहिये कि मैं श्रमिकोंका आरम्भ वास्तविक दावा क्या करता हूं। मैं आपको निमंत्रण देता हूं कि आप मेरे पास आअिये और समस्त जितने साफ दिलसे बना कर सके कीजिये।

आप साम्यवादी होनेका दावा करते हैं, परन्तु साम्यवादी जीवन व्यतीत करते दिखाअी नहीं देते। मैं आपको बता दूं कि मैं साम्यवाद शब्दके अुत्तम

अथमें अुसके आदर्शके अनुसार जीनेका भरसक प्रयत्न कर रहा हूं। यदि आप देशको अपने साथ ले चलना चाहते हों तो आपमें देशको समझाकर अुस पर असर डालनेकी योग्यता होनी चाहिये। आप दबावसे असा नहीं कर सकते। आप देशको अपने विचारोंका बनानेके लिअ विनाशका पथ ग्रहण कर सकते हैं। परन्तु आप कितने लोगोंका विनाश करेंगे? करोड़ोंका तो कर नहीं सकते। अगर आपके साथ लाखों लोग हों तो आप कुछ हजारको मार सकते हैं। परन्तु आज तो आप मुट्ठीभरसे अधिक नहीं हैं। मैं आपसे कहता हूं कि आप कांग्रेसको मत बदल सकते हों तो बदलकर अुसे अपने हाथमें ले लीजिये। लेकिन शिष्टताके प्रारम्भिक नियमोंको तोड़नेसे क्या लाभ? और शिष्टताके जिन नियमोंको तोड़नेका कोअी कारण भी तो नहीं है। अपने विचारोंको पूरी तरह प्रगट करनेका आपको अधिकार है। भारतवर्षमें अितनी सहिष्णुता है कि कोअी भी अपनी बात लायक ढंगसे कह सके तो वह धीरजसे सुन लेगा।

अहमदाबाद संघसे मजदूरोंका कोअी नुकसान नहीं हुआ है। मेरा दावा है कि मेरी किसी भी प्रवृत्तिसे मजदूरोंको कभी हानि नहीं हुअी, कभी हो ही नहीं सकती। यदि कांग्रेस परिषदमें अपने प्रतिनिधि भेजेगी तो वे किसानों और मजदूरोंके स्वराज्यके सिवा और किसी स्वराज्यके लिअे अपना जोर नहीं लगायेंगे। साम्यवादी दलके अस्तित्वमें आनेसे बहुत पहले ही कांग्रेस निश्चय कर चुकी थी कि जो स्वराज्य श्रमिकों और कृषकोंके लिअे न हो अुसका कोअी अर्थ नहीं होगा। शायद यहांके मजदूरोंसे किसीको भी २ रुपये मासिकसे कम मजदूरी नहीं मिलती। परन्तु मैं न सिर्फ आपके लिअे बल्कि अुन घोर परिश्रम करनेवाले और बेकार लाखों लोगोंके लिअे भी स्वराज्य प्राप्तिकी कोशिश कर रहा हूं, जिनको अेक जून भी पूरा खानेको नहीं मिलता और जिन्हें बासी रोटीके टुकड़े और चुटकी भर नमकसे काम चला लेना पड़ता है। परन्तु मैं आपको धोखा नहीं देना चाहता। मुझे आपको अवश्य यह चेतावनी दे देनी चाहिये कि मैं पूंजीपतियोंका बुरा नहीं चाहता। मैं अुन्हें हानि पहुंचानेका विचार नहीं कर सकता। परन्तु मैं कष्ट-सहन करके अुनकी मनुष्य भावनाको जगाना चाहता हूं। मैं अुनके दिल पिघलाकर अपने कम भाग्यशाली भाअियोंके प्रति अुनसे न्याय कराना चाहता हूं। वे मनुष्य हैं और अुनसे की गअी मेरी अपील व्यर्थ नहीं जायगी। जापानके अितिहासमें त्यागी पूंजीपतियोंके बहुतसे अुदाहरण मिलते हैं। पिछले सत्याग्रहके दिनोंमें पूंजीपतियोंने काफी संख्यामें बड़ा त्याग किया। वे जेलोंमें गये और अुन्होंने बड़े बड़े कष्ट अुठाये। क्या आप अुन्हें अपनेसे अलग करना चाहते हैं? क्या आप नहीं चाहते कि समान अुद्देश्यके लिअे वे आपके साथ काम करें?

आपने मुझसे यह जानना चाहा है कि मेरठके बन्दियोंकी मुक्तिके लिओ मैं क्या कर रहा हूं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि यदि मेरे पास सत्ता होती तो मैं हमारे जेलोंमें जितने भी बन्दी हैं अुन सबको मुक्त कर देता। लेकिन अुनकी मुक्तिको मैं समझौतेकी पूर्व शर्त नहीं बना सकता था। वैसा करना न्यायोचित न होता। मैं आपको बताना चाहता हूं कि अुन्हें छुड़वानेके लिओ मैं अपनी पूरी कोशिश कर रहा हूं। यदि शान्त वातावरण पैदा करके आप लोग मेरे साथ सहयोग करनेका निर्णय करें तो संभव है कि हम अुन सबको — यहां तक कि गढ़वाली बन्दियोंको भी — छुड़ा सकेंगे। आप लोग आजादीकी बात करते हैं। क्या मैं भी अुसे अुतना ही नहीं चाहता जितना आप? ('आजादीका सार' की आवाजें।) हां ठीक है, मैं आजादीका सार चाहता हूं, अुसकी छाया नहीं। मैं कहना चाहता हूं कि आप थोड़ा धीरज रखें और देखें कि अुचित समय आने पर अपनी अल्पतम मांगके रूपमें कांग्रेस क्या मांगती है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि कराचीमें हम अपना लाहौरवाला प्रस्ताव फिर दुहरायेंगे और यदि हम लोग गोलमेज परिषदमें गये तो या तो हम जो चाहते हैं वही लेकर लौटेंगे या कुछ भी नहीं लेंगे।

आपने 'ग्यारह मुद्दों' के बारेमें भी पूछा है। मेरे खयालसे अिन ग्यारह मुद्दोंमें आजादीका सार आ जाता है। अुनमें किसानों और मजदूरोंकी पूरी सुरक्षा प्राप्त हो गयी है। लेकिन समझौतेकी चर्चामें मैं अिन मुद्दोंको शामिल नहीं कर सकता था, क्योंकि ये मुद्दे सविनय आज्ञाभंगके विकल्पके रूपमें पेश किये गये थे। अब स्थिति यह है कि सविनय आज्ञाभंगका आन्दोलन हम चला चुके हैं और यदि हमें निमंत्रण मिलता है तो हमें गोलमेज परिषदमें अपनी राष्ट्रीय मांग रखनेके लिओ जाना है। यदि हम वहां सफलता प्राप्त करते हैं तो ग्यारह मुद्दोंकी पूर्ति हो ही जाती है। आप विश्वास रखिये कि जो स्वराज्य अिन ग्यारह मुद्दोंकी पूर्ति नहीं करेगा वह मुझे मान्य नहीं होगा।

ओश्वरने आपको बुद्धि और योग्यता प्रदान की है, अुसका सदुपयोग कीजिये। मेरी आपसे विनती है कि अपनी बुद्धि पर ताला न लगाअिये। भगवान आपकी सहायता करे।

यंग अिंडिया २६-३-३१ पृ० ५३

३५

साम्यवादियोंका मुकाबला कैसे करें?

प्र० — साम्यवादी कांग्रेसका खुला विरोध कर रहे हैं। हम उनकी प्रवृत्तियोंका प्रतिकार कैसे कर सकते हैं?

उ० — मालूम होता है कि साम्यवादियोंने ढांड खड़ा करना अपना पेशा बना लिया है। उनमें मेरे मित्र भी हैं। कुछ तो मेरे लिये पुत्र जैसे हैं। परन्तु ऐसा दिखाई देता है कि वे न्याय-अन्याय और सच-झूठमें कोई फर्क नहीं करते। वे इस इल्जामको स्वीकार नहीं करते, परन्तु उनके कार्योंके समाचारोंसे इसकी पुष्टि होती मालूम होती है। इसके अलावा मालूम होता है कि वे रूसके आदेशों पर काम करते हैं, क्योंकि वे भारतके बजाय रूसको अपना आध्यात्मिक घर मानते हैं। मैं किसी बाहरी शक्ति पर इस तरह निर्भर रहना बरदाश्त नहीं कर सकता। मैंने तो यहां तक कह दिया है कि अपने मौजूदा खाद्य-संकटमें हमें रूसी गेहूं पर भी दारमदार नहीं रखना चाहिये। हममें इतना सामर्थ्य और साहस होना चाहिये कि विदेशी दानके बजाय अपनी भूमिसे जो कुछ मिल जाय उसी पर हम गुजर कर सकें। नहीं तो हमें एक स्वतंत्र देशके रूपमें जिंदा रहनेका हक नहीं होगा। यही बात विदेशी विचारधाराओं पर लागू होती है। मैं उन्हें उसी हद तक स्वीकार करूंगा कि जिस हद तक मैं उन्हें पचा सकूंगा और भारतीय परिस्थितिके अनुकूल बना सकूंगा। मैं नये विचारोंको रोकना नहीं चाहता, पर मैं उनका गुलाम भी नहीं बनना चाहता।

इसलिए साम्यवादियोंका मुकाबला करनेके लिये मेरा नुसखा यह है कि मैं उनके हाथसे मर जाऊंगा, मगर उन पर हाथ नहीं उठाऊंगा।

हरिजन ६–१०–४६ पृ० ३३८–३९

३६

शरीर-श्रम क्या है?

प्र० — जिसे टॉल्स्टॉय रोटीके लिअे श्रम करना कहते हैं, अुसके बारेमें आपका क्या अभिप्राय है? क्या आप शरीर-श्रम करके अपनी आजीविका प्राप्त करते हैं?

अु० — सच पूछा जाय तो 'रोटीके लिअे श्रम करना' ये शब्द टॉल्स्टॉयके हैं ही नहीं। अुन्होंने दूसरे अेक रूसी लेखक बोन्दरेव्हसे अुन्हें ग्रहण किया था और अुनका अर्थ यह है कि हरअेकको रोटी पानेके लिअे काफी शारीरिक मेहनत करनी चाहिये। अिसलिअे आजीविकाका विचार अलग करने पर यह आवश्यक नहीं है कि शारीरिक मेहनत करके ही आजीविका प्राप्त की जाय। लेकिन हर आदमीको कुछ न कुछ अुपयोगी शरीर-श्रम अवश्य करना चाहिये। अभी तो मैं शरीर-श्रम सिर्फ कातनेमें ही करता हूँ। यह तो शरीर-श्रमका अेक प्रतीक मात्र है। मैं काफी शरीर-श्रम नहीं कर रहा हूँ। और यह भी अेक कारण है कि मैं अपनेको मित्रोंके दान पर जीनेवाला कहता हूँ। लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि हरअेक राष्ट्रमें अैसे मनुष्योंकी आवश्यकता है जो अपना शरीर, मन और आत्मा सब कुछ राष्ट्रको अर्पण कर देते हैं और जिन्हें अपनी आजीविकाके लिअे दूसरे मनुष्यों पर अथवा अीश्वर पर आधार रखना पड़ता है।

हिन्दी नवजीवन ५-११-२१ पृ० ९५

'शरीर-श्रम' के कानूनकी खोज

शरीर-श्रम तमाम मनुष्योंके लिअ लाजिमी है यह बात पहले-पहल टॉल्स्टायका अक निबंध पढ़कर मेरे मनमें बैठ गयी। यह बात अितनी साफ जाननेके पहले अुस पर अमल तो मैं रस्किनका अंटु दिस लास्ट (सर्वोदय) पढ़कर तुरत ही करने लग गया था। शरीर-श्रम अंग्रेजी शब्द ब्रेड लेबर का तरजुमा है। ब्रेड-लेबर का शब्दके मुताबिक अनुवाद है रोटी (के लिअ) मजदूरी। रोटीके लिअ हरअक मनुष्यको मजदूरी करनी चाहिये शरीरको झुकाना चाहिये यह अीश्वरका कानून है। यह मूल खोज टॉल्स्टायकी नहीं है लेकिन अुससे बहुत कम मशहूर रशियन लेखक बोंदरेव्ह (T M Bondarev) की है। टॉल्स्टॉयने अुसे रोशन किया और अपनाया। अिसकी झांकी मेरी आंखें भगवद्गीताके तीसरे अध्यायमें करती हैं। यज्ञ किये बिना जो खाता है वह चोरीका अन्न खाता है असा कठिन शाप यज्ञ नहीं करनेवालेको दिया गया है। यहां यज्ञका अर्थ शरीर-श्रम या रोटी मजदूरी ही शोभता है और मेरी रायमें यही मुमकिन है। जो भी हो हमारे अिस व्रतका जन्म अिस तरह हुआ है।

बुद्धि भी अुस चीजकी ओर हमें ले जाती है। जो मजदूरी नहीं करता असे खानेका क्या हक है? बाअिबल कहती है अपनी रोटी तू अपना पसीना बहाकर कमा और खा। करोड़पति भी अगर अपने पलंग पर लोटता रहे और अुसके मुंहमें कोअी खाना डाले तब खाय तो वह ज्यादा देर तक खा नहीं सकेगा। अिसमें अुसको मजा भी नहीं आयगा। अिसलिअ वह कसरत वगैरा करके भूख पैदा करता है और खाता तो है अपने ही हाथ-मुंह हिलाकर। अगर यों किसी न किसी रूपमें अमीरोंको कसरत करनी ही पड़ती है तो रोटी पैदा करनेकी कसरत ही सब क्यों न करें? यह सवाल कुदरती तौर पर अुठता है। किसानको हवाखोरी या कसरत करनेके लिअ कोअी कहता नहीं है और दुनियाके ९० फीसदीसे भी ज्यादा लोगोंका निबाह खेती पर होता है। बाकीके दस फीसदी लोग अगर अिनकी नकल करें तो जगतमें कितना सुख कितनी शांति और कितनी तंदुरुस्ती फैल जाय? और अगर खेतीके साथ बुद्धि भी मिल जाय तो खेतीसे संबंध रखनेवाली बहुतसी मुसीबतें आसानीसे दूर हो जायेंगी। फिर अगर अिस शरीर-श्रमके निरपवाद कानूनको सब मानें तो अूंच-नीचका भेद मिट जाय। आज तो

जहां अूंच-नीचकी बू भी नहीं थी वहां यानी वर्ण-व्यवस्थामें भी वह घुस गअी है। मालिक-मजदूरका भेद आम और कायम हो गया है और गरीब धनवानसे जलता है। अगर सब रोटीके लिअे मजदूरी करें तो अूंच-नीचका भेद न रहे, और फिर भी धनिक वर्ग रहेगा तो वह खुदको मालिक नहीं बल्कि अुस धनका रखवाला या ट्रस्टी मानेगा और अुसका ज्यादातर अुपयोग सिर्फ लोगोंकी सेवाके लिअे करेगा। जिसे अहिंसाका पालन करना है, सत्यकी भक्ति करनी है, ब्रह्मचर्यको कुदरती बनाना है अुसके लिअे तो शरीर-श्रम रामबाण-सा हो जाता है। यह श्रम सचमुच तो खेतीमें ही है। लेकिन सब खेती नहीं कर सकते ऐसी आज तो हालत है ही। अिसलिअे खेतीके आदर्शको खयालमें रखकर खेतीके अवजमें आदमी भले दूसरी मजदूरी करे — जैसे कताअी, बुनाअी, बढ़अीगिरी, लुहारी वगैरा वगैरा।

सबको खुदका भंगी तो बनना ही चाहिये। जो खाता है वह टट्टी तो फिरेगा ही। जो टट्टी फिरता है वही अपनी टट्टीको जमीनमें गाड़ दे यह अुत्तम रिवाज है। अगर यह नहीं हो सके तो प्रत्येक कुटुंब अपना यह फर्ज अदा करे। जिस समाजमें भंगीका अलग पेशा माना गया है वहां कोअी बड़ा दोष पैठ गया है, ऐसा मुझे तो बरसोंसे लगता रहा है। अिस जरूरी और तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाले कामको सबसे नीचा काम पहले-पहल किसने माना, अिसका अितिहास हमारे पास नहीं है। पर जिसने ऐसा माना अुसने हम पर अुपकार तो नहीं ही किया। हम सब भंगी हैं यह भावना हमारे मनमें बचपनसे जम जानी चाहिये, और अुसका सबसे आसान तरीका यह है कि जो समझ गये हैं वे शरीर-श्रमका आरंभ पाखाना-सफाअीसे करें। जो समझ-बूझकर ज्ञानपूर्वक यह करेगा वह अुसी क्षणसे धर्मको निराले ढंगसे और सही तरीकेसे समझने लगेगा।

मंगल प्रभात अ० ९ पृ० ४१-४४

३८

'सर्वोदय' की शिक्षायें

मैं नेटालके लिअे रवाना हुआ। पोलाक[1] तो मेरी सब बातें जानते ही थे। वे मुझे छोड़ने स्टेशन तक आये और यह कहकर कि यह पुस्तक रास्तेमें पढ़ने योग्य है, अिसे पढ़ जािअये, आपको पसन्द आयेगी, अुन्होंने रस्किनकी 'अन्टु दिस लास्ट' पुस्तक मेरे हाथमें रख दी।

अिस पुस्तकको हाथमें लेनेके बाद मैं अिसे छोड़ ही न सका। अिसने मुझे पकड़ लिया। जोहानिसबर्गसे डरबनका रास्ता लगभग चौबीस घंटोंका था। मुझे सारी रात नींद नहीं आअी। मैंने पुस्तकमें सूचित विचारोंको अमलमें लानेका अिरादा किया।

अिससे पहले मैंने रस्किनकी अेक भी पुस्तक नहीं पढ़ी थी। विद्याध्ययनके समयमें पाठ्य-पुस्तकोंके बाहरकी मेरी पढ़ाअी लगभग नहींके बराबर मानी जायगी। कर्मभूमिमें प्रवेश करनेके बाद तो समय बहुत कम बचता था। आज तक भी यही कहा जा सकता है। मेरा पुस्तकीय ज्ञान बहुत ही कम है। मैं मानता हूं कि अिस अनायास अथवा बरबस पाले गये संयमसे मुझे कोअी हानि नहीं हुअी है। बल्कि जो थोड़ी पुस्तकें मैं पढ़ पाया हूं, कहा जा सकता है कि अुन्हें मैं ठीकसे हजम कर सका हूं। अिन पुस्तकोंमें से जिसने मेरे जीवनमें तत्काल महत्त्वके रचनात्मक परिवर्तन कराये, वह 'अन्टु दिस लास्ट' ही कही जा सकती है। बादमें मैंने अुसका गुजराती अनुवाद किया और वह 'सर्वोदय' के नामसे छपा।

मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मेरे अन्दर गहराअीमें छिपी पड़ी थी, रस्किनके ग्रंथरत्नमें मैंने अुसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखा। और अिस कारण अुसने मुझ पर अपना साम्राज्य जमाया और मुझसे अुसमें दिये गये विचारों पर अमल कराया। जो मनुष्य हममें सोअी हुअी अुत्तम भावनाओंको जाग्रत करनेकी शक्ति रखता है, वह कवि है। सब कवियोंका सब लोगों पर समान प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि सबके अन्दर सारी सम्भावनायें समान मात्रामें नहीं होतीं।

मैं 'सर्वोदय' के सिद्धान्तोंको अिस प्रकार समझा हूं :

१. सबकी भलाअीमें हमारी भलाअी निहित है।

---

[1] श्री अेच० अेस० अेल० पोलाक दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहमें गांधीजीके सहयोगी थे।

२. वकील और नाअी दोनोंके कामकी कीमत अेकसी होनी चाहिये क्योंकि आजीविकाका अधिकार सबको अेक समान है।

३. सादा मेहनत-मजदूरीका यानी किसानका जीवन ही सच्चा जीवन है।

पहली चीजको मैं जानता था। दूसरीको मैं धुंधले रूपमें देखता था। तीसरीका मैंने कभी विचार ही नहीं किया था। 'सर्वोदय' ने मुझे दीयेकी तरह स्पष्ट दिखा दिया कि पहली चीजमें दूसरी दोनों चीजें समाअी हुअी हैं। सवेरा हुआ और मैं अिन सिद्धान्तोंपर अमल करनेके प्रयत्नमें लगा।

आत्मकथा प० २९ –६० १९५७

३९

शरीर-श्रमका सुनहला नियम

[श्री महादेव देसाअीके 'साप्ताहिक पत्र'से।]

गांधीजी जो कितनी ही मामूली सादी बातें कहते और लिखते हैं वे भी कुछ लोगोंको पहेली-सी मालूम होती हैं और अुन्हें समझनेमें अुलझनमें डाल देती हैं। साधारण सादी बातको भी कुछ लोग तरह तरहके अर्थ लगाते हैं और अनेक पहेलियां खड़ी करते हैं। गांधीजीने शरीर-श्रम पर जो लेख लिखा था अुसका सीधा-सादा भावार्थ तो अितना ही है कि हरअेक आदमी अगर अपने पसीनेकी कमाअी खाने लगे तो परावलम्बन और गरीबोंका शोषण बन्द हो जाय और किसीको किसी मनुष्यसे अुसकी शक्तिसे अधिक काम न लेना पड़े। पर कुछ लोग अिससे घबराहटमें पड़ गये हैं कि अधिकांश मनुष्य तो यह शरीर-श्रम करते ही नहीं तब अुन्हें रोटी पानेका क्या हक है? बतलाना ही चाहिये। ये लोग हमारे रूपमें समान हैं। अिनका अेक अेक पलका कीमत रुपयोंकी नहीं, अशर्फियोंकी होती है। अिसी तरह डॉक्टर भी खासा पैसा कमाते हैं। पर ये लोग कुछ भी शरीर-श्रम नहीं करते। गांधीजीने अिस प्रश्नका जवाब दिया — "जो लोग शरीर-श्रम नहीं करते अुनका तुम आखिर क्या करते हो? दुनियामें हरअेक आदमी अपने पसीनेकी ही कमाअी खायेगा अैसी कल्पना तो मैंने कभी नहीं की थी। मैंने [illegible] स्वर्ण नियम भर बतला दिया है। अिस पर चलनेके लिअे तुम खुद तैयार हो या नहीं? यदि हो तो जिस मनुष्यमें अिस नियम पर चलनेकी अुतनी भी शक्ति नहीं है अुसके प्रति तुम्हें रोष नहीं करना चाहिये। मैं जो दूध और फल खाता हूं वह अगर शरीर-श्रम करके प्राप्त नहीं करता, तो अिसका अर्थ यह हुआ कि मैं दूसरोंका खाता हूं, अिससे शरीर-श्रमके अुस नियममें कोअी न्यूनता नहीं आती। ब्रह्मचर्य-धर्मका पालन थोड़ेसे गिने गिने

लोग ही करते होंगे, पर अिससे क्या अुन्हें ब्रह्मचर्यका पालन न कर सकने वाले करोड़ों मनुष्योंके प्रति द्वेष करना चाहिये? वे तो द्वेषके नहीं दयाके पात्र हैं।

असी ही अुलझनका अेक दूसरा अुदाहरण है पर अुसका कारण अिससे अुल्टा है। अेक सज्जन पूछते हैं — मुझे अिस नियमका पालन तो करना है, पर मेरा शरीर अितना कमजोर है कि अुसका पालन हो नहीं सकता। मुझे अिस बातका दुःख तो बहुत होता है, पर अब करूं क्या? गांधीजीने अुत्तर दिया — मैंने तो जिस आदर्श तक हमें पहुंचना है, वह आदर्श बतलाया है। हरअेक मनुष्य अुसका यथाशक्ति पालन करे। अगर आपसे किसी भी तरहका शारीरिक श्रम नहीं हो सकता तो अुसके लिअे आप दुःख न करें। आप दूसरा जो शुद्ध धंधा कर सकते हों वह करें और अितना ध्यान रखें कि आपके लिअे जो लोग तन गलाते हैं अुनको आप चूसें नहीं। आप यह मानते हैं कि डाक्टरों वगैराको शारीरिक श्रम करनेके लिअे फुरसत नहीं मिलती, तो अुसके लिअे आप चिंता न करें। वे लोग यदि शुद्ध सेवाभावसे समाजकी सेवा करेंगे तो समाज अितना ध्यान तो रखेगा ही कि अुन्हें भूखा न मरना पड़े।

हरिजनसेवक ९-८-३५ पृ० २०२

४०

श्रमयज्ञ

गीतामें कहा गया है कि आरम्भमें यज्ञके साथ-साथ प्रजाको अुत्पन्न करके ब्रह्मानें असा कहा — अिस यज्ञके द्वारा तुम्हारी समृद्धि हो। यह यज्ञ तुम्हारी कामधेनु हो, अर्थात् यह तुम्हारे अिच्छित फलोंका देनेवाला हो। जो यह यज्ञ किये बिना खाता है वह चोरीका अन्न खाता है। तू अपने पसीनेकी कमाअी खा, यह बाअिबलका वचन है। यज्ञ अनेक प्रकारके हो सकते हैं। अुनमें से अेक श्रमयज्ञ भी हो सकता है। यदि सब लोग अपने ही परिश्रमकी कमाअी खावें तो दुनियामें अन्नकी कमी न रहे और सबको अवकाशका काफी समय भी मिले। तब न तो किसीको जनसंख्याकी वृद्धिकी शिकायत रहे, न कोअी बीमारी आवे और न मनुष्यको कोअी कष्ट या क्लेश ही सतावे। यह श्रमयज्ञ अुच्चसे अुच्च प्रकारका यज्ञ होगा। अिसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य अपने शरीर या बुद्धिके द्वारा और भी अनेक काम करेंगे, पर अुनका वह सारा श्रम लोक-कल्याणके लिअे प्रेममूलक श्रम होगा।

उस अवस्थामें न कोई राव होगा न कोई रंक, न कोई ऊँचा होगा न कोई नीचा, न कोई स्पृश्य होगा न कोई अस्पृश्य।

भले ही यह एक अलभ्य आदर्श हो, पर इस कारणसे हमें अपना प्रयत्न बन्द कर देनेकी जरूरत नहीं है। यज्ञके संपूर्ण नियमको अर्थात् अपने 'जीवनके नियम' को पूरा किये बिना भी अगर हम अपने नित्यके निर्वाहके लिये पर्याप्त शारीरिक श्रम करें, तो भी उस आदर्शके बहुत कुछ निकट पहुँच ही जायँगे।

यदि हम ऐसा करेंगे तो हमारी आवश्यकतायें बहुत कम हो जायँगी और हमारा भोजन भी सादा बन जायगा। तब हम जीनेके लिये खायेंगे, न कि खानेके लिये जियेंगे। इस बातकी यथार्थतामें जिसे शंका हो वह अपने परिश्रमकी कमाई खानेका प्रयत्न करे। अपने पसीनेकी कमाई खानेमें उसे कुछ और ही स्वाद मिलेगा, उसका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा और उसे यह मालूम हो जायेगा कि जो बहुतसी विलासकी चीजें उसने अपने ऊपर लाद रखी थीं वे सब बिलकुल फिजूल थीं।

क्या मनुष्य अपने बौद्धिक श्रमकी कमाई न खाये? नहीं, यह ठीक नहीं है। शरीरकी आवश्यकताओंकी पूर्ति शारीरिक श्रमसे ही होनी चाहिये।

केवल मस्तिष्कका अर्थात् बौद्धिक श्रम तो आत्माके प्रीत्यर्थ है और वह स्वतः मनोपन्न है। उसमें पारिश्रमिक मिलनेकी इच्छा नहीं करनी चाहिये। उस आदर्श अवस्थामें डॉक्टर, वकील आदि पूर्णतः समाजके हितके लिये काम करेंगे, अपने लिये नहीं। शारीरिक श्रमके नियम पर चलनेसे समाजमें एक शांतिमय क्रांति पैदा होगी। जीवन-संग्रामके स्थान पर पारस्परिक सेवाकी प्रतिस्पर्धा स्थापित करनेमें मनुष्यकी विजय होगी। पाशविक नियमका स्थान मानवीय नियम ले लेगा।

ग्रामोंकी ओर लौटनेका अर्थ यह है कि निश्चित रीतिसे शरीर-श्रमके धर्मको उसके सारे अर्थोंके साथ स्वेच्छापूर्वक स्वीकार कर लिया जाय। किन्तु आलोचक इस पर यह कहते हैं कि "करोड़ों भारतवासी आज गाँवोंमें ही तो रहते हैं, तो भी उन बेचारोंको वहाँ पेटभर भोजन नसीब नहीं होता और वे भूखों मर रहे हैं।" यह बात तो बिलकुल सत्य है। सद्भाग्यसे हम यह जानते हैं कि वे स्वेच्छासे नियमका पालन नहीं कर रहे हैं। अगर उनको चलता तो ऐसा शारीरिक श्रम वे कभी न करते, बल्कि वे किसी बिलकुल पासके शहरकी ओर चलनेके लिये दौड़ते, अगर वहाँ उनके लिये जगह होती। मालिकका हुक्म जब जबरदस्ती बजाया जाता है तब उसे परवशता या दासताकी स्थिति कहते हैं। पिताकी आज्ञाका जब स्वेच्छासे पालन किया जाता

है तब वह आत्म-पालन पुरुषत्वका गौरव बन जाता है। अिसी तरह शरीर श्रमके नियमका बलात्कार-पूर्वक पालन किया जायगा तो अुससे दरिद्रता, रोग और असन्तोषकी सृष्टि होगी। जब स्वेच्छासे अस नियमका पालन किया जायगा तब अुससे अवश्य ही संतोष और आरोग्यका लाभ होगा। और आरोग्य ही तो सच्चा धन है। चान्दी सोनेके टुकडे सच्ची संपत्ति नहीं है। ग्रामोद्योग संघ स्वेच्छापूर्ण शरीर-श्रमका अेक प्रमाण है।

हरिजनसेवक ५-७-३५ पृ १६०

४१

शरीर-श्रमकी आवश्यकता

अेक जागरूक मित्र लिखते है

जमशेदपुरकी सभाके आपके भाषणमें जो २० अगस्तके 'यंग अिंडिया' में प्रकाशित हुआ है, पहले पराग्राफमें बौद्धिक श्रमकी तुलनामें शारीरिक श्रमके महत्त्वका प्रतिपादन करनेके बाद प्रकाशित रिपोर्टके अनुसार आपने कहा है यही विचार हिंदू धर्ममें सर्वत्र पाया जाता है। जो मनुष्य शारीरिक श्रम किये बिना खाता है, वह पापको खाता है वह निश्चित रूपसे चोर है। 'यह भगवद्गीताके अेक श्लोकका शाब्दिक अनुवाद है। (तथाकथित) शारीरिक और (तथाकथित) बौद्धिक श्रमके बीच गीता असा कोअी फर्क करती है या नहीं अिस सवालको मै छोड देता हू। पर यह मै कह सकता हू कि गीताके जिन शब्दोंका वह अर्थ किया जा सकता है जिस (रिपोर्टके अनुसार) आप गीताके किसी अेक श्लोकका शाब्दिक अनुवाद कहते है वे तीसरे अध्यायके १२ वे और १३ वे श्लोकोंमें मिलते है। मतलब यह कि अेक तो श्रमके समर्थनमें आप गीताके जिस अद्धरणका अुपयोग करते है वह अेक श्लोकसे नहीं बल्कि अुसके दो श्लोकोंसे लिया गया है। दूसरे अिन श्लोकोंमें श्रमकी — शारीरिक या किसी भी अन्य प्रकारके श्रमकी — कोअी चर्चा नहीं है। बल्कि पहले श्लोकमें यज्ञके मनुष्यको समझाते हुअे यह अवश्य कहा गया है कि मनुष्यको चाहिये कि देवोंने अुसे जो कुछ दिया है अुसका अुपभोग वह देवोंके साथ या अुन्हें अर्पण करके करे। यदि वह असा नहीं करता है तो वह चोर है। और दूसरे श्लोकमें यह कहा गया है कि जो लोग केवल अपने ही लिअे भोजन पकाते है

वे पापका ही खाते हैं। जाहिर है कि यह बात गीताके अेक श्लोकके अेस शाब्दिक अनुवादसे बहुत दूर है, जो आपके पत्रमें अेम० डी० (श्री महादेव देसाअी) के द्वारा दिया गया है। मैं आशा करता हूँ कि आप अपनी सुविधाके अनुसार अिस भूलको स्वीकार करेंगे।

शाब्दिक दृष्टिसे पत्रलेखकका यह कहना ठीक है कि अेम० डी० ने जो अनुवाद दिया है वह अेक श्लोकका नहीं बल्कि दो श्लोकोंके अंशोंके योगका है। और अिस भूल-सुधारके लिअे मैं लेखकको धन्यवाद देता हूँ। लेकिन अुनकी दलीलका मुख्य आशय मुझे यह मालूम होता है कि मेरे भाषणकी रिपोर्टमें गीताके प्रसिद्ध शब्द — यज्ञका जो अर्थ दिया गया है अुसका कोअी अुचित आधार नहीं है। लेकिन मैं अुस अनुवादको गलत माननेसे अिनकार करता हूँ और यह सुझानेका साहस करता हूँ कि गीताके तीसरे अध्यायके १२वें और १३वें श्लोकोंमें यज्ञ शब्दका अर्थ यही अर्थ हो सकता है। १४वाँ श्लोक अुसे बिल्कुल स्पष्ट कर देता है :

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न-सम्भवः ।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म-समुद्भवः ॥
गीता अ० ३ श्लो० १४

अन्नसे सब प्राणी अुत्पन्न होते हैं। वर्षासे अन्न अुत्पन्न होता है। यज्ञसे वर्षा होती है। और यज्ञकी अुत्पत्ति कर्मसे होती है।

अतअेव मेरी रायमें यहाँ न केवल शरीर-श्रमके सिद्धान्तका प्रतिपादन किया गया है बल्कि अिस बातकी स्थापना भी की गयी है कि जब श्रम केवल अपने लिअे न होकर सबके लिअे होता है तब वह यज्ञका रूप लेता है। वर्षा बड़े बड़े बौद्धिक कार्योंसे नहीं होती है परन्तु केवल श्रमके जरिये ही होती है। यह सर्व-सम्मत वैज्ञानिक तथ्य है कि जहाँ जंगलोंके पेड़ काट दिये जाते हैं वहाँ वर्षा बन्द हो जाती है और जहाँ पेड़ लगाये जाते हैं वहाँ वर्षा मिल जाती है और वनस्पतिकी वृद्धिके साथ ही वर्षाके पानीकी मात्रा भी बढ़ जाती है। कुदरतके कानूनोंकी खोज होना अभी बाकी है। हमने केवल अूपरी सतहको ही छुआ है। शरीर-श्रमके बन्द होनेसे जो नैतिक और शारीरिक बुरे परिणाम होते हैं अुन सबको भला कौन जानता है? मुझे गलत न समझा जाय। मैं बौद्धिक श्रमकी कीमत कम नहीं करता किन्तु बौद्धिक श्रम कितना भी किया जाय अुससे शारीरिक श्रमकी पूर्ति नहीं हो सकती। सबके कल्याणके लिअे शारीरिक श्रम तो हमें करना ही चाहिये। वह हमारा अनिवार्य कर्तव्य है। बौद्धिक श्रम गुणवत्तामें शारीरिक श्रमसे अनेक गुना बढ़ाचढ़ा हो सकता है और अक्सर होता है

लेकिन वह अुसकी जगह कभी नहीं ले सकता जैसे कि बौद्धिक आहार अन्नाहारकी जगह नहीं ले सकता यद्यपि अन्नाहारकी तुलनामें अुसका स्थान कहीं अूँचा है। सच तो यह है कि धरतीकी अुपजके अभावमें बुद्धिकी अुपज ही असंभव है।

यंग अिंडिया १५-१०-२५ पृ ३५५

४२

शरीर-श्रमका कर्तव्य

[गांधीजीकी पदल यात्राकी डायरी से।]

गांधीजीने प्रार्थनाके बादके भाषणमें अनसे पूछे गये प्रश्नोंके अुत्तर देना शुरू किया।

प्र०—आप हमेशा खैरातके खिलाफ रहे हैं और अिस अुसूलको समझाते रहे हैं कि कोअी भी अिन्सान मेहनत करनेके फर्जसे बरी नहीं है। आपकी अुन लोगोंके लिअे क्या सलाह है जो बैठे-बैठे धंधा करते हैं और पिछले दंगोंमें अपना सब कुछ खो बैठे हैं? क्या अुन्हें अपना वतन छोड़कर असी जगह चला जाना चाहिये जहाँ वे अपनी पुरानी आदतके मुताबिक जीवन बिता सकें? या अुन्हें आपके अुक्त अुसूलके अनुसार रोटी कमानेके लिअे शरीर-श्रम करना चाहिये? अुस हालतमें अुनकी खास खूबियाँ किस काम आयेंगी?

अ०—जैसा कि समझा जाता है यह सच है कि मैं बरसोंसे खैरातके खिलाफ रहा हूँ और रोटीके लिअे शरीर-श्रम करनेकी सीख देता हूँ। जिला मजिस्ट्रेट खमान साहब और अेक पुलिस अफसर मुझसे मिलने आये थे। वे बेआसरा लोगोंको खैरात देनेके बारेमें मेरी राय जानना चाहते थे। अुन्होंने पहलेसे यह तय कर लिया था कि वे लोगोंके सामने पानीमें से हैयासिन्थ निकालने, सड़कोंकी मरम्मत करने, गाँवोंको सुधारने और खदके खनोंकी हदें सुधारकर सीधमें लाने और अपनी जमीन पर मकान बनानेका काम रखेंगे। जो लोग अिनमें से कोअी भी काम करेंगे अुन्हें राशन पानेका पूरा हक होगा। मैं अिस खयालको पसन्द करता हूँ लेकिन अपने अुसूलों पर अमल करनेवालेके नाते मैं बेआसरा लोगोंको अेकदम कोअी काम करनेके लिअे मजबूर नहीं करूँगा। कअी तरहके काम लोगोंके सामने रख देने चाहियें और अेक महीनेका नोटिस देकर हाकिमोंको अुन्हें यह

कह देना चाहिये कि अगर आप सुझाये गये कामोंमें से कोओ काम नहीं चुनते और न कोओ मजूर करने लायक दूसरा धंधा ही सुझाते, बल्कि हट्टे-कट्टे होने पर भी काम करनेसे अिनकार करते हैं तो म्युनिसिपैलिटीके खतम होने पर हमें न चाहने पर भी आप लोगोंको खैरात देना बन्द करना पड़ेगा। बम्बओके लोगों और अुनके दोस्तोंको मेरी यह सलाह है कि सरकारकी अिस स्कीममें वे पूरी मदद करें। किसी भी शहरीके लिअे बगैर शरीर-श्रमके राशन पानेकी आशा रखना गलत होगा।

मैं लोगोंको वतन छोड़नेकी सलाह कभी नहीं दे सकता। मैं चाहूँगा कि अेक अकेला हिन्दू भी हर हालतमें अपनेको सही सलामत समझे और मुसलमानोंसे अुम्मीद रखूँगा कि वे अपने बीच अुसे पूरी तरह सलामत रखें। मैं अिस बातका स्वागत करूँगा कि लोग अपने-अपने ढंगसे अीश्वरकी पूजा करें।

सट्टेसे कमाया हुआ रुपया मेरे खयालमें यकीनन जायज रुपया नहीं है। और न मैं यह मानता हूँ कि किसी आदमीके लिअे अपनी बुरी आदतोंको छोड़ना कभी नामुमकिन है। अगर हरअेक आदमी अपने पसीनेकी कमाअी पर रहे तो यह दुनिया स्वर्ग बन जाय। मनुष्यकी खास खूबियोंके अुपयोगके प्रश्न पर अलगसे विचार करनेकी बिलकुल जरूरत नहीं। अगर सब लोग रोटीके लिअे शरीर-श्रम करें तो अुसका यह नतीजा होगा कि कवि, शायर, डॉक्टर, वकील वगैरा मनुष्यकी सेवाके लिअे अपनी अुन खूबियोंका मुफ्त अुपयोग करना अपना फर्ज समझेंगे। बिना किसी स्वार्थके अपना फर्ज अदा करनेके कारण अुनके कामका नतीजा और भी अच्छा होगा।

हरिजनसेवक २-३-४७ पृ० ४९

४३

अमली शरीर श्रम

अहिंसाके प्रयोगोंसे मैं यह सीखा हूं कि अमली अहिंसाका अर्थ सब लोगोंका शरीर-श्रम है। अेक रूसी दार्शनिक बान्दरेव्हने अिसे रोटीके लिअे श्रम कहा है। अिसका परिणाम लोगोंमें आपसमें गहरेसे गहरा सहयोग होगा। दक्षिण अफ्रीकामें पहले सत्याग्रही सबकी भलाअी और सम्मिलित कोषके लिअे मेहनत करते थे और अिससे अुन्हें पंछियोंकी-सी बेफिक्री रहती थी। अुनमें हिन्दू मुसलमान (शिया और सुन्नी) अीसाअी (प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथलिक) पारसी और यहूदी सभी थे। अंग्रेज और जर्मन भी थे। धंधेके लिहाजसे अुनमें वकील, अिमारत और बिजलीकी विद्या जाननेवाले अिंजीनियर, छापनेवाले और व्यापारी थे। सत्य और अहिंसाके व्यवहारसे धार्मिक झगड़े मिट गये थे और हमने सब धर्मोंमें सत्यके दर्शन करना सीख लिया था। दक्षिण अफ्रीकामें मैंने जो आश्रम कायम किये अुनमें अेक भी मजहबी झगड़ा हुआ हो अैसा मुझे याद नहीं आता। सब लोग छपाअी, बढ़अीगिरी, जूते बनाना, बागवानी, अिमारत बनाना हाथके काम करते थे। यह मेहनत किसीको भाररूप नहीं लगती थी। अुसमें सबको आनन्द आता था। सत्याग्रही सेनाका अग्रणी दल अिन्हीं स्त्री-पुरुषों और लड़कोंका बना था। अिनसे ज्यादा वीर और सच्चे साथी मुझे नहीं मिल सकते थे। हिंदुस्तानमें दक्षिण अफ्रीकाका-सा ही अनुभव रहा और मुझे भरोसा है कि अुसमें कुछ सुधार ही हुआ। सभी लोग मानते हैं कि अहमदाबादका मजदूर संगठन भारतमें सबसे बढ़िया है। अुसका काम जिस ढंगसे शुरू हुआ था अुसी तरह चलता रहा तो अन्तमें वहांकी मिलोंमें मौजूदा मालिकों और मजदूरोंकी संयुक्त मालिकी होकर रहेगी। यह स्वाभाविक परिणाम न निकला तो पता चल जायगा कि संगठनकी अहिंसामें खामियां थीं। बारडोलीके किसानोंने वल्लभभाअीको सरदारकी पदवी दी और अपनी लड़ाअी फतह की। बोरसद और खेडाके किसानोंने भी वैसा ही किया। वे सब वर्षोंसे रचनात्मक कार्यक्रम पर अमल कर रहे हैं। मगर अिस अमलसे अुनके सत्याग्रही गुणोंका ह्रास नहीं हुआ है। मुझे पूरा यकीन है कि सविनय आज्ञाभंग हुआ तो अहमदाबादके मजदूर और बारडोली तथा खेडाके किसान भारतके और किसी भी हिस्सेके किसानों और मजदूरोंसे जौहर दिखानेमें पीछे नहीं रहेंगे।

चौंतीस सालके सत्य और अहिंसाके लगातार प्रयोग और अनुभवसे मुझे दृढ़ विश्वास हो गया है कि यदि अहिंसाका ज्ञानपूर्ण शरीर-श्रमके साथ सम्बन्ध न होगा और हमारे पड़ोसियोंके साथ रोजमर्राके व्यवहारमें अुसका परिचय न मिलेगा तो अहिंसा टिक नहीं सकेगी। यह है रचनात्मक कार्यक्रमका रहस्य। यह साध्य नहीं है साधन है मगर है अितना अनिवार्य कि अुसे साध्य भी समझें तो बेजा नहीं होगा। अहिंसक विरोधकी शक्ति रचनात्मक कार्यक्रम पर अीमानदारीके साथ अमल करनेसे ही पैदा हो सकती है।

हरिजनसेवक, २७-१-४० पृ० ४०३

४४

मेरा शरीर-श्रम

'यंग अिंडिया' के कुछ पाठक अैसे हैं, जो अक्सर बेढब प्रश्न पूछा करते हैं। लेकिन क्योंकि अुससे कुछ आनन्द होता है मुझे अितनी असुविधाको भी सहन कर लेना चाहिये और अुनके प्रश्नोंका अुत्तर देना चाहिये।

प्र० — आप कहते हैं कि आप और आपके साथ काम करनेवाले दूसरे लोग अन मित्रोंकी अुदारता पर अपनी आजीविकाका आधार रखते हैं जो सत्याग्रह आश्रमका खर्च पूरा करते हैं। क्या अुस संस्थाको जिसमें मजबूत शरीरके लोग हों अपनी आजीविकाके लिअे मित्रोंकी अुदारता पर आधार रखना अुचित है?

अु० — प्रश्नकर्ता महाशय अुदारता-दानको केवल नाममात्र ही समझ रहे हैं। अिस संस्थामें हरअेक शख्स स्त्री हो या पुरुष अपने कार्यमें शरीर और बुद्धि दोनोंका पूरा अुपयोग करता है। लेकिन फिर भी यह तो कहा ही जायगा कि अिस संस्थाका आधार मित्रोंकी अुदारता पर ही है। क्योंकि वे जो कुछ भी हमें दानमें देते हैं अुसके बदलेमें अुन्हें तो कुछ भी नहीं मिलता है। अुनके त्यागकी महत्ताका फल तो राष्ट्रको मिलता है।

प्र० — जिन दो-तीन घंटोंके लिअे श्रम करते हैं अुनके बारेमें आपका क्या अभिप्राय है? क्या आप शारीरिक श्रम करके अपनी आजीविका प्राप्त करते हैं?

पर यह आवश्यक नहीं है कि शरीर-श्रम करके ही आजीविका प्राप्त की जाय। लेकिन हर शख्सको कुछ न कुछ उपयोगी शरीर-श्रम अवश्य करना चाहिये। अभी तो मैं सिर्फ कताईका ही शरीर-श्रम करता हूं। यह तो सिर्फ प्रतीकमात्र है। मैं काफी शरीर-श्रम नहीं कर रहा हूं। और यह भी अेक कारण है कि मैं अपनेको मित्रोंके दान पर जीनेवाला कहता हूं। लेकिन मैं यह भी मानता हूं कि हरअेक राष्ट्रमें असे मनुष्योंकी आवश्यकता रहेगी, जो अपना शरीर, मन और आत्मा सब कुछ राष्ट्रको अर्पण कर देते हैं और जिन्हें अपनी आजीविकाके लिअे दूसरे मनुष्यों पर अर्थात् ओश्वर पर आधार रखना पड़ता है।

हिंदी नवजीवन ५-११-२५ पृ० ९५

४५
आश्रम जीवनमें शरीर श्रमका स्थान

हर स्त्री-पुरुष शरीरसे मेहनत करे, अिसे आश्रम अपना धर्म मानता है। अिस असूलकी जानकारी या सूझ मुझे टॉल्स्टॉयके अेक लेखसे हुअी। अुन्होंने रूसके अेक लेखक बोन्दरेव्के बारेमें लिखते हुअे बताया कि रोटी श्रमकी जरूरत अिस लेखककी अिस युगकी बहुत बड़ी खोजोंमें से अेक थी। अुसका मतलब यह है कि हर तन्दुरुस्त आदमीको अपने गुजारेके लायक शरीर श्रम करना ही चाहिये। मनुष्यको अपनी बुद्धिकी शक्तिका अुपयोग आजीविका प्राप्त करने या अुससे भी ज्यादा प्राप्त करनेके लिअे नहीं, बल्कि सेवाके लिअे, परोपकारके लिअे करना चाहिये। अिस नियमका पालन सारी दुनिया करने लगे, तो सहज ही सब मनुष्य बराबर हो जायं, कोअी भूखा न मरे और जगत बहुतसे पापोंसे बच जाय।

यह संभव है कि अिस स्वर्ण नियमका अमल सारी दुनिया कभी न कर सके। नियमको बिना जाने-बूझे तो करोड़ों लोग अुसका पालन जबरदस्तीसे करते हैं। अुनके मन अुनके विरुद्ध चलते हैं, अिसलिअे वे दुःख पाते हैं और अुनकी मेहनतसे जितना लाभ दुनियाको होना चाहिये अुतना नहीं होता। जो लोग अिस नियमको समझते हैं, अुन्हें अिस ज्ञानसे अिस नियमका पालन करनेका प्रोत्साहन मिलता है। नियमका पालन करनेवाले पर अुसका चमत्कारी असर होता है, क्योंकि अुसे परम शांति मिलती है, अुसकी सेवा करनेकी शक्ति बढ़ती है और अुसकी तंदुरुस्ती भी बढ़ती है।

मुझ पर टॉलस्टायका बहुत असर हुआ था और अनुकी बातों पर यथासंभव अमल करना तो मैंने दक्षिण अफ्रीकामें ही शुरू कर दिया था। आश्रम कायम हुआ तभीसे रोटी-श्रमको अुसमें मुख्य स्थान मिला।

गीताका अध्ययन करने पर मैं अिसी नियमको गीताके तीसरे अध्यायमें यज्ञके रूपमें देखता हूं। मैं यह नहीं कहना चाहता कि यज्ञका अर्थ वहां शरीर-श्रम ही है। परन्तु यज्ञसे पर्जन्य होता है, अिस भावमें मुझे शरीर श्रमका धर्म भासता है। यज्ञसे बचा हुआ अन्न वही है जो मेहनत करनेके बाद मिलता है। आजीविकाके लिअे पर्याप्त श्रमको गीताने यज्ञ कहा है। पोषणके लिअे जितना चाहिये अुससे ज्यादा जो खाता है वह चोरी करता है, क्योंकि मनुष्य आजीविकाके लिअे आवश्यक श्रम भी मुश्किलसे ही करता है। मैं मानता हूं कि मनुष्यको आजीविकासे ज्यादा लेनेका अधिकार ही नहीं है। और जो मेहनत करते हैं अुन सबको अुतना लेनेका अधिकार है जितनेसे अुनका शरीर कायम रहे।

अिससे कोअी यह न कहे कि अिसमें श्रमके बंटवारेकी गुंजाअिश ही नहीं है। मनुष्यकी आवश्यकताओंके लिअे जो भी चीज तैयार होती है, अुसमें शरीर-श्रम तो लगता ही है। अिसलिअे श्रम चाहे जिस जरूरी क्षेत्रमें किया जाय वह रोटी-श्रम ही है। जितना श्रम भी सब नहीं करते अिसलिअे तन्दुरुस्ती बनाये रखनेके लिअे व्यायामके नाम पर खास तौर पर शरीर श्रम करना पड़ता है। जो प्रतिदिन खेतीमें श्रम करता है अुसे लगभग व्यायामकी जरूरत नहीं रहती। किसान तन्दुरुस्तीके दूसरे नियम पाले तो वह बीमार ही न पड़े।

यह देखा जाता है कि अिस दुनियामें मनुष्यका राज जितना चाहिये अुतना आखिर राज पड़ा करता है। अिसमें से अगर कोअी अपनी आवश्यकतासे अधिक काममें लेता है तो अुसके पड़ोसीको भूखा रहना ही पड़ेगा।

बहुतसे लोग अपनी आवश्यकतासे अधिक लेते हैं अिसीलिअे दुनियामें भूखों मरनेकी नौबत आती है। हम कुदरतकी दवाको किसी भी तरह काममें लें, फिर भी कुदरत तो राज खाना पसन्द बराबर ही रखती है। कुदरतके बहीखातेमें न तो जमामें कुछ बाकी रखना है न नामेमें। वहां तो रोज आमद-खर्चका हिसाब बराबर होकर शून्य ही बाकी रहता है। अिस शून्यमें हमें शून्यके समान बनकर समा जाना चाहिये।

अूपरके नियममें यह बात बाधक नहीं है कि कभी रसायनों और यंत्रोंके जरिये मनुष्य जमानेसे ज्यादा पसन्द पैदा करता है अपनी मेहनतसे दूसरी तरह भी अनेक वस्तुअें अुत्पन्न करता है। यह कुदरतकी शक्तियोंका रूपान्तर है। सबका आखिरी परिणाम तो शून्य ही होनेवाला है। मगर हमें रोज

जो कुछ अनुभव होता है असका पृथक्करण किया जाय तो अुससे यही अनुमान होता है कि दोनों पलड़े बराबर रहते हैं।

कुदरत असा करती हो या नहीं करती हो मेरी दूसरी दलीलोंमें सार हो या न हो आश्रममें रोटी-श्रमके नियमका अधिकसे अधिक अच्छे ढंगसे पालन किया गया है। असमें आश्चर्यकी कोओ बात नहीं है। पालन करनेका साधारण आग्रह हो तो पालन आसान है। अगर अमुक दिनके अमुक घंटोंमें मेहनतके सिवा दूसरा काम न हो तो मेहनत जरूर होगी। भले ही असमें आलस्य हो काम-दक्षता न हो मन न हो मगर कुछ घंटे पूरे तो होंगे ही। फिर, कुछ मेहनत तुरन्त फल देनेवाली होती है जिससे अुसमें बहुत आलस्यकी गुंजाअिश भी नहीं रहती। श्रम प्रधान संस्थाओंमें नौकर नहीं होते या थोड़े ही होते हैं। पानी भरना लकड़ी फाड़ना दियाबत्ती तैयार करना पाखाने और रास्ते साफ करना मकानोंकी सफाओ रखना अपने अपने कपड़े धोना रसोओ करना वगैरा अनेक काम असे हैं जो किये ही जाने चाहिये।

अिनके सिवा खेती बुनाओ-काम अुनसे संबंधित और दूसरी तरहके जरूरी बढ़ओ-काम चमड़े-काम लुहार-काम वगैरा काम आश्रमके साथ जुड़े हुअे हैं। अुनमें थोड़े बहुत आश्रमवासियोंके लगे बिना काम नहीं चल सकता।

ये सब काम रोटी-श्रमके नियम-पालनके लिअे काफी माने जायंगे। मगर यज्ञका दूसरा अंग परमार्थ या सेवाकी वृत्ति है। अुस दृष्टिसे अिन कामोंमें शामिल करने वक्त आश्रमकी कमजोरी जरूर मालूम होगी। आश्रमका आदर्श सेवाके लिअे ही जीना है। अिस ढंगसे चलनेवाली संस्थामें आलस्यका कामचोरीका स्थान नहीं है। वहां सब काम तन मनसे होने चाहियें। सभी लोग असा करने तो आश्रमकी सेवाकी योग्यता बहुत बढ़ गओ होती। लेकिन असी सुन्दर स्थितिसे आश्रम अब भी दूर है। अिसलिअे यद्यपि आश्रमका हर काम यज्ञरूप है फिर भी बापूने विचार करके दरिद्र नारायणके लिअे कमसे कम अेक घंटेकी कताओका आवश्यक स्थान दिया गया है।

यह आरोप समय समय पर सुना गया है और आज भी मैं सुना करता हूं कि श्रम प्रधान संस्थामें बुद्धिके विकासकी गुंजाअिश नहीं रहती अिसलिअे वह जड़ बन जाती है। मेरा अनुभव अिससे अुलटा है। आश्रममें जितने भी लोग आये हैं सभीकी बुद्धि कुछ तेज हुओ है किसीकी मन्द हुओ हो असा जाननेमें नहीं आया।

बहुत बार असा मान लिया जाता है कि जगतकी अनेक घटनाओंका बाहरी ज्ञान ही बुद्धि है। मुझे यह कबूल करना पड़ेगा कि असी बुद्धि आश्रममें कम विकसित होती है। लेकिन अगर बुद्धिका अर्थ समझ विवेक वगैरा हो तो वह आश्रममें काफी विकसित होती है। जहां मजदूरके रूपमें

मेहनत सिर्फ गुजारेके लिअे होती है, वहाँ मनुष्यका जड बन जाना संभव है। अमुक चीज किसलिअे या किस तरह होती है, अिसका ज्ञान अुसे कोअी नहीं देता है। अुसे खुद अिस विषयमें जिज्ञासा नहीं होती, न अपने काममें दिलचस्पी होती। आश्रममें अिससे अुलटा होता है। हर काम — पाखाना सफाअी तक — समझ कर करना पड़ता है। अुसमें दिलचस्पी ली जाती है। वह परमेश्वरको प्रसन्न करनेके लिअे होता है। अिसलिअे अुसे करते हुअे भी बुद्धिके विकासकी गुंजाअिश रहती है। सबको अपने अपने विषयका पूरा ज्ञान प्राप्त करनेका प्रोत्साहन दिया जाता है। जो यह ज्ञान लेनेकी कोशिश नहीं करते, अुनके लिअे यह दोष माना जाता है। आश्रममें या तो सभी मजदूर हैं या कोअी भी मजदूर नहीं है।

यह मानना कि किताबोंसे ही या मेज-कुर्सी पर बैठनेसे ही ज्ञान मिलता है, बुद्धिका विकास होता है, हमारा घोर अज्ञान है, भारी वहम है। हमें तो अिसमेंसे निकल जाना चाहिये। जीवनमें वाचनके लिअे स्थान जरूर है, मगर वह अपनी जगह पर ही शोभा देता है। शरीर-श्रमको हानि पहुँचाकर अुसे बढ़ाया जाय, तो अुसके खिलाफ विद्रोह करना फर्ज हो जाता है। शरीर-श्रमके लिअे दिनका ज्यादा समय देना चाहिये और वाचन वगैराके लिअे थोड़ा। आजकल अिस देशमें जहाँ अमीर लोग या अूँचे वर्गके माने जानेवाले लोग शरीर-श्रमका अनादर करते हैं, शरीर-श्रमको अूँचा दरजा देनेकी बड़ी जरूरत है। और बुद्धिविकासको सच्चा वेग देनेके लिअे भी शरीर-श्रमकी यानी किसी भी अुपयोगी शारीरिक धंधेमें शरीरको लगानेकी जरूरत है।

अगर बालकोंको आश्रम कुछ ज्यादा समय दे सके तो ठीक जरूर है। निरक्षर आश्रमवासियोंको शिक्षाकी मदद मिल सके तो वह भी दी जानी चाहिये। फिर भी असा लगता रहा है कि जो जो काम आश्रममें हो रहे हैं अुनको नुकसान पहुँचाकर वाचन वगैरामें समय न लगाया जाय। शिक्षक वैतनिक तो रखे नहीं जाते। और जब तक वर्तमान शिक्षा देनेवाले ज्यादा शिक्षकोंको आश्रम अपनी तरफ खींच न सके, तब तक जितने हैं अुन्हींसे काम चलाया जाता है। स्कूलों और कॉलेजोंमें पढ़े हुअे जो लोग आश्रममें हैं, वे दूसरे साथियोंको शिक्षा देनेकी कलामें पूरी तरह दक्ष नहीं हैं। हम सबके लिअे यह नया प्रयोग है। मगर अनुभवके साथ यह समझ बढ़ती जा रही है। और जैसे जैसे व्यवस्थाशक्ति बढ़ती जायगी, वैसे वैसे जो साधारण शिक्षा पाये हुअे लोग यहाँ हैं, अुन्हें प्राप्त किया हुआ ज्ञान दूसरोंको देनेका अुपाय सूझता जायगा।

सत्याग्रह आश्रमका अितिहास पृ० ६०, ४२–४४ १९५९

४६

श्रम और बुद्धिके बीच अलगाव

श्रम और बुद्धिके बीच जो अलगाव हो गया है अुसके कारण हम अपने गांवोंके प्रति जितने लापरवाह हो गये हैं कि यह अेक गुनाह ही माना जा सकता है। नतीजा यह हुआ है कि देशमें जगह-जगह सुहावने छोटे-छोटे गांवोंके बजाय हमें घूरे जैसे गांव देखनेको मिलते हैं। बहुतसे या यों कहिये कि करीब-करीब सभी गांवोंमें घूमते समय जो अनुभव होता है असले दिलको खुशी नहीं होती। गांवके बाहर और आसपास जितनी गन्दगी होती है और वहां जितनी बदबू आती है कि अक्सर गांवमें जानेवालोंको आंख मूंदकर और नाक दबाकर ही जाना पड़ता है। ज्यादातर कांग्रेसी गांवके बाशिंदे होने चाहिये अगर अैसा हो तो अुनका फर्ज हो जाता है कि वे अपने गांवोंको सब तरहसे सफाईके नमूने बनायें। लेकिन गांववालोंके हमेशाके यानी रोज रोजके जीवनमें शरीक होने या अुनके साथ घुलने मिलनेको अुन्होंने कभी अपना फर्ज माना ही नहीं। हमने राष्ट्रीय या सामाजिक सफाईको न तो जरूरी गुण माना और न असका विकास ही किया। यों रिवाजके कारण हम अपने ढंगसे नहा भर लेते हैं, मगर जिस नदी तालाब या कुअेंके किनारे हम श्राद्ध या वैसी ही कोअी दूसरी धार्मिक क्रिया करते हैं और जिन जलाशयोंमें पवित्र होनेके विचारसे हम नहाते हैं अुनके पानीको बिगाड़ने या गन्दा करनेमें हमें कोअी हिचक नहीं होती। हमारी अिस कमजोरीको मैं अेक बड़ा दुर्गुण मानता हूं। अिस दुर्गुणका ही यह नतीजा है कि हमारे गांवोंकी और हमारी पवित्र नदियोंके पवित्र तटोंकी लज्जाजनक दुर्दशा और गन्दगीसे पैदा होनेवाली बीमारियां हमें भोगनी पड़ती हैं।

रचनात्मक कार्यक्रम पृ० २७-२८, १९५९

प्रमाण मिलते ही रहते हैं कि स्कूल-कॉलेजोंसे पास होकर जो विद्यार्थी निकलते हैं, वे मेहनत-मशक्कतके काममें मजदूरोंकी बराबरी नहीं कर सकते। जरासी मेहनत की तो माथा दुखने लगता है और धूपमें घूमना पड़े तो चक्कर आने लगते हैं। यह स्थिति स्वाभाविक मानी जाती है। बिना जुते खेतमें जैसे घास अुग आता है, वैसी तरह हृदयकी वृत्तियां आप ही अुगती और कुम्हलाती रहती हैं और यह स्थिति दयनीय माने जानेके बदले प्रशंसनीय मानी जाती है!

अिसके विपरीत अगर बचपनसे बालकोंके हृदयकी वृत्तियोंको ठीक तरहसे मोड़ा जाय, अुन्हें खेती, चरखा आदि अुपयोगी कामोंमें लगाया जाय और जिस अुद्योग द्वारा अुनका शरीर खूब कसा जा सके अुस अुद्योगकी अुपयोगिता और अुसमें काम आनेवाले औजारों वगैराकी बनावट आदिका ज्ञान अुन्हें दिया जाय, तो अुनकी बुद्धिका विकास सहज ही हो जाय और नित्य अुसकी परीक्षा भी होती जाय। ऐसा करते हुअे जिस गणित आदिके ज्ञानकी आवश्यकता हो, वह अुन्हें दिया जाय और विनोदके लिअे साहित्यादिका ज्ञान भी देते जायं, तो तीनों वस्तुअें समतोल हो जायं और कोअी अंग अुनका अविकसित न रहे। मनुष्य न केवल बुद्धि है, न केवल शरीर, न केवल हृदय या आत्मा। तीनोंके अेक समान विकासमें ही मनुष्यका मनुष्यत्व सिद्ध होगा। अिसमें शिक्षाका सच्चा अर्थशास्त्र है। अिसके अनुसार यदि तीनों विकास अेकसाथ हों, तो हमारी अुलझी हुअी समस्याअें अनायास सुलझ जायें। यह विचार या अिस पर अमल तो देशको स्वतंत्रता मिलनेके बाद होगा, ऐसी मान्यता भ्रमपूर्ण हो सकती है। करोड़ों मनुष्योंको ऐसे-ऐसे कामोंमें लगानेसे ही स्वतंत्रताका दिन हम नजदीक ला सकते हैं।

हरिजनसेवक १७-४-३७, पृ० ७०-७१

बुद्धिपूर्वक किया हुआ शरीर-श्रम — समाज-सेवाका अुच्चतम प्रकार

' कुछ साथियोंकी सहायतासे मैं अेक आश्रम चला रहा हूं। अुसका अुद्देश्य हमें अपनेको आदर्श किसान बनानेकी शिक्षा देना है, जिससे कि हम गांवके लोगों और गांवके समाजके साथ अेकरूप हो जायं और अिस प्रकार अुनकी थोड़ी-बहुत सेवा कर सकें। अिस अुद्देश्यको सामने रखकर खेतीको यहां आजीविकाका मुख्य साधन बनाया गया है और कताअी तथा बुनाअी असमें पूरक अुद्योगका काम देती हैं।

गत जनवरी मासमें धानकी मुख्य फसल काट लेनेके बाद आश्रमने अिधर थोड़ा गुड़ और साग-भाजी जैसी गौण फसलोंकी खेती शुरू की है। गये सालके जूनसे यानी आश्रमके आरम्भ-कालसे आज तक आश्रमवासियोंने औसतन् १० नम्बरका करीब २ लाख ६० हजार गज सूत काता है, और मार्चके महीनेसे अेक करघे पर बुनाअीका काम भी शुरू कर दिया गया है। बुनाअीका काम भी आश्रममें होता है। अिस तरह आश्रमने अपनी मर्यादित आवश्यकताओंके लिअे काफी सूत कात लिया है और आशा है कि अब यह सारा सूत हमारे आश्रममें ही बुन जायगा।

अिस तरह हमारे आश्रमको अपने अिस प्रथम वर्षमें अेक अैसे स्वावलम्बी कृषक-परिवारके आदर्श तक पहुंचनेके प्रयत्नमें सफलता प्राप्त हुअी है, जो अपनी प्रायः सभी आवश्यकताओंकी पूर्ति अपने ही परिश्रमसे कर लेता है और शहरकी तमाम लूट-खसोटसे बच जाता है।

आश्रमने आज तक कभी अपना आटा दूसरी जगह नहीं पिसवाया और न शक्करका ही कभी असने अुपयोग किया है। पिछले तीन महीनोंसे हम आश्रमवासी अपने आश्रमके धानका ही बिना पालिशका चावल काममें ले रहे हैं।

आश्रमका आरम्भ करते समय अैसा सोचा गया था कि स्वावलम्बी किसानकी जिन्दगी बसर करनेके आदर्श साधनके साथ-साथ हम लोग हरिजन-सेवा और चरखा वगैराके द्वारा गांवकी भी कुछ सेवा कर सकेंगे। मगर हमें अिस अुद्देश्यमें पूरी निराशा ही हुआ है, क्योंकि हमें अभी तक आश्रमके लिअे कोअी अनुकूल स्थान नहीं मिल सका है। आजकल जिस जगह आश्रम है वहां अेक अेक लोग धरका ही

वस्ती है और ये छोटे-छोटे झोपडे अेक-दूसरेसे आध आध मील या अेक मीलके फासले पर है।

फिर अेक चीजमें आश्रमको काफी भारी धक्का पहुंचा है। आहारके विषयमें मने कभी भारी भूलें कीं और अुनका पता मुझे अब चला है। मुझे अब असा मालूम होता है कि गरीबोंके आदर्शको जरूरतसे ज्यादा अुत्साहके कारण हमने अपने आहारका मान बहुत नीचा रखा था। अुदाहरणके लिअे साग भाजीको ले लीजिये। सब्जी आश्रममें तो पैदा होती नहीं थी अिसलिअे नियमित रूपसे नहीं किन्तु कभी कभी हम साग-तरकारी खाते थे। अब दो महीनेके बाद हमने अिस भूलका तो सुधार किया मगर घी-दूध न लेनेकी भूल तो रही ही। घी-दूधको हम भोग विलासकी चीज समझते थे और यह मान बैठे थे कि गरीबोंके भोजनमें तो घी दूध आ ही नहीं सकता। अिसलिये घी-दूधका हमने बिल्कुल परित्याग कर दिया था। लेकिन अब हमने अेक गाय खरीद ली है और दूध वगैरा अब लेने लगे हैं। गाय खरीदे हमें आठेक दिन हुअे हैं। तब तक तो हम घीकी जगह नारियलका तेल खाकर ही सन्तोष मान रहे थे। फिर अिस प्रदेशमें मुख्य आहार चावलका है। अिन सब कारणोंसे आश्रमवासियोंके स्वास्थ्यको बहुत क्षति पहुंची है। आश्रममें हम बारह आश्रमवासी थे पर आजकल हम केवल पांच ही आदमी रहते हैं। मलेरियासे भी आश्रमवासियोंकी तबीयत कमजोर रहती है। यह जंगली तालुका है अिसलिअे मलेरिया तो यहां बारहों माह डेरा डाले रहता है।

आश्रम अब तक शारीरिक श्रमसे ही आजीविका प्राप्त करनेके आदर्शको पकडे हुअे है। यह सही है कि अिस आदर्श पर अगर बुद्धिपूर्वक अमल किया जाय तो हमारा नीतिबल बढ़े और सिद्धान्तोंके अनुसार जीवन बितानेमें हम दृढ भी बनें। पर अिसके कारण हमारे कुछ साथी हमसे अलग भी रहते हैं। प्रश्न यह है कि ब्रेड लेबर (शरीर-श्रमके द्वारा आजीविका प्राप्त करना) का आदर्श अनुपम रखते हुअे भी असे कार्यकर्ता किस तरह आश्रमकी ओर आकर्षित हो सकते हैं।

मित्र तथा सहानुभूति दिखलानेवाले सज्जन और आलोचक टॉल्स्टॉयके अिस ब्रेड लेबर'के सिद्धान्तके विरुद्ध समाज-सेवाका आदर्श रखते हैं, और कहते हैं कि तुम्हारा आश्रम समाजकी जो सेवा कर सकता है वह अिस सिद्धान्तके कारण रुक गयी है। समाज-सेवा करनेके लिअे मनुष्य यदि ब्रेड लेबर के सिद्धान्तके साथ कुछ समझौता कर ले तो

यह कहां तक ठीक समझा जा सकता है? 'होना' और 'करना' अिन दोनोंके बीच यह जो भेद दिखाओी देता है वह अक्सर क्या आभासमात्र नहीं होता? और असलमें तो 'होना' ही क्या 'करना' नहीं होता? ब्रेड लेबर का सिद्धान्त अतिशयताको पहुंचा हुआ कब कहा जा सकता है? या यह कब समझा जायगा कि अुसके अक्षरा का पालन करके अुसके अर्थका घात कर दिया गया है?

औसतन् हम सात आदमियों पर आठ महीनेमें नीचे लिखे अनुसार खर्च हुआ है

भोजन	१७१॥)॥।
कपड़े	१६॥-)॥।
रोशनी	८॥=)
डाकखर्च	३।=)॥।
फुटकर	६≡)५
बरतन	३॥)॥।
दवाअियां	७॥)।
अखबार ('हरिजन')	३॥।=)
सफर-खर्च	१०=)।
कुल	२५१॥≡)११

अिससे यह प्रगट होता है कि प्रति मास प्रति व्यक्ति भोजन खर्च ३) और वस्त्रादिका खर्च १) आया है।"

श्री किशोरलाल मशरूवालाके नाम अेक सुशिक्षित निस्स्वार्थ कार्यकर्ताने जो पत्र लिखा है, अुसीमें से यह अुद्धरण लिया गया है। अेक विशुद्ध-हृदय लेखकके प्रयत्नोंका यह हूबहू चित्र है, और जो व्यक्ति सेवामय जीवन बितानेका प्रयत्न कर रहे हों अुन सबको संभव है जिससे कुछ सहायता मिल सके।

प्रयत्न सराहनीय है। यह अच्छा है कि लेखक तथा अुनके साथियोंको जब कभी भूल दिखाओी देती है तब वे अुसे स्वीकारने और सुधारनेमें हिचकिचाते नहीं।

यह मैं नहीं जानता कि लेखकने अिस पत्रमें जो प्रश्न पूछे हैं अुनका श्री किशोरलालने क्या जवाब दिया है। पर अिस पत्रलेखकको जिस प्रकारके प्रश्नोंने परेशान कर रखा है अुनमें दिलचस्पी रखनेवाले साधारण पाठकोंके सहायतार्थ अुनके अुत्तर देनेका प्रयत्न मैं अवश्य करूंगा।

अैसा मालूम होता है कि 'ब्रेड लेबर' (रोटीके लिअे परिश्रम शरीर श्रम) के सिद्धान्तके विषयमें कुछ गलतफहमी हो गअी है। यह सिद्धान्त

समाज-सेवाका विरोधी तो है ही नहीं। बुद्धिपूर्वक किया हुआ श्रम अुच्चसे अुच्च प्रकारकी समाज-सेवा है। कारण यह है कि यदि कोओ मनुष्य अपने शारीरिक श्रमसे देशकी अुपयोगी सम्पत्तिमें वृद्धि करता है तो अिससे अुत्तम और हो ही क्या सकता है? होना निश्चय ही करना है।

श्रमके साथ जो बुद्धिपूर्वक किया हुआ विशेषण लगाया गया है वह यह बतलानेके लिअ लगाया गया है कि समाज-सेवामें श्रम तभी खप सकता है जब अुसके पीछे सेवाका कोओ निश्चित हेतु हो। नहीं तो यह कहा जा सकता है कि हरअेक मजदूर समाजकी सेवा करता है। अेक प्रकारसे तो वह समाजकी सेवा करता ही है पर जिस सेवाकी यहां बात हो रही है वह बहुत अूंचे प्रकारकी सेवा है। जो मनुष्य सबके हितके लिअ सेवा करता है वह समाजकी सेवा करता है और जितनेसे अुसका पेट भर जाय अुतना मजदूरी पानेका असे हक है। अिसलिअ जिस प्रकारका ब्रेड लेबर (शरीर-श्रम) समाज-सेवासे भिन्न नहीं है। अधिकांश मनुष्य जो काम अपने शरीरके पोषणके लिअ या बहुत हुआ तो अपने कुटुम्बके लिअ करते हैं असे समाज-सेवक सबके हितके लिअ करता है।

अिन सात आश्रमवासियोंको आज यह मालूम हो रहा है कि अुन्हें अपने अन्न वस्त्रके लिअ मेहनत करनेके पश्चात दूसरी सेवा करनेका समय शायद ही रहता है। ये सेवक अगर अपने काममें कुशल होते तो असी बात कभी न होती। असलमें वे कार्यकुशल नहीं हैं। खेती-बाड़ीके मजदूरोंके रूपमें अुन्हें हम देखते हैं तो वे साधारण मजदूरोंकी बराबरी कर ही नहीं सकते। कारीगरोंकी कोटिमें भी वे नौसिखिये ही गिने जा सकते हैं। अीश्वरकी कृपासे प्रत्येक कार्यकर्ता अब यह जानता है कि सूत कातनेवाला अपने औजारोंको अगर बुद्धिके साथ काममें लावे तो अमुक समयमें वह सूतकी मात्रा सहजमें दूनी कर सकता है अर्थात् अुसकी चरखेकी आमदनी दूनी हो सकती है। यह बात अधिकांश वस्तुओंके सम्बन्धमें सत्य है। खेतीमें अुनके अिन्हीं औजारोंमें तरक्की करनेका क्षेत्र अितना विशाल है कि यदि प्रकृति बीचमें न पड़े तो किसान अपनी बुद्धिका अपयोग करके नित्य अुतने ही घंटे काम करते हुअ अपनी आमदनी सहज ही चौगुनी कर सकते हैं। अिसका मतलब यह हुआ कि आज जितनी आमदनीके लिअ वह जितनी मेहनत करता है अुतनी करनेकी अुसे जरूरत न रहेगी। अिसलिअ ये सेवक जब कुशलता प्राप्त कर लेंगे तब आजकी अपेक्षा बहुत कम समयमें वे अपने अन्न-वस्त्रके लायक कमा लेंगे और हरिजन-सेवा अथवा दूसरे किसी काममें वे अपनी शक्तिका बिना किसी बाधाके लगा सकेंगे। अनेक प्रकारके खर्चोंमें फंसे हुअ साधारण गृहस्थोंके लिअ यह समस्या जटिल हो सकती है, पर जिस त्यागी सेवकको महीनेमें

केवल चार ही रुपयेकी जरूरत है अुनको तो चार रुपये कमानेकी मेहनत मजदूरी कर लेनेके बाद बहुतसा समय बच सकता है।

लेकिन प्रति मनुष्य यह तीन रुपयेका मासिक खर्च देखते हुअे मनुष्यका पेट क्या सचमुच भर सकता है? डॉ० तिलकने बम्बअीके लिअे जो ५ रु० का हिसाब बांधा है वह अगर सही है, तो गांवके रहन-सहनके लिअे यह तीन रुपया ठीक ही है। और डॉ० तिलकने भोजनकी जो सूची दी है अुसमें मैं अपना निजी अनुभव जोड़ दूं तब तो कोअी कठिनाअी रहती ही नहीं। डॉ० तिलकने गायको खुराकमें से दूधके चूर्णको अलग कर दिया है। पर जैसा कि वे स्वीकार करते हैं बिना दूधके काम चल ही नहीं सकता। जिन आश्रमवासियोंने दूधका जो त्याग कर दिया था वह अुनकी भूल थी। यह सही है कि करोड़ों मनुष्योंको दूधकी अेक बूंद भी नसीब नहीं होती। पर अैसी तो अनेक चीजें हैं जो अुन्हें नहीं मिलतीं। अगर हमें सेवा करनेके लिअे जीवित रहना है तो अुन्हें छोड़नेका हमें साहस नहीं करना चाहिये। अिसलिअे जिनके बिना हमारा काम चल ही नहीं सकता अैसी चीजें हम न छोड़ें और गांववालोंको अिसमें मदद दें कि वे अपने लिअे भी अुन चीजोंको पैदा कर लें। गेहूं चावल बाजरा जुआर जैसे पूर्ण अनाज और हरी भाजियां जो कच्ची ही खाओ जा सकती हैं और दूध तथा गांवोंमें पैदा होनेवाले आम अमरूद जामुन बेर आदि मौसमी फल निरोगी जीवनके लिअे जरूरी हैं। नीमकी पत्तीको तो शायद हरी भाजियोंकी श्रेणीमें रखा जा सकता है। नीमकी पत्तियां भारतमें सर्वत्र मिल सकती हैं। और मनुष्यके खाने लायक अनेक प्रकारकी अैसी घास भी है जिसका हमें पता नहीं। अिमली सब जगह मिलती है। यह भी फेंक देनेकी चीज नहीं है। पर अिमलीके विरुद्ध अेक तरहका जो पूर्वग्रह है अुसे समझना कठिन है। कागजी नीबुओंकी जगह मैं अब अिमली खानेमें लेने लगा हूं। और अिससे मुझे बहुत ही लाभ हुआ है। आहारमें क्या क्या सुधार हो सकते हैं अिस सबकी खोजके लिअे हमारे सामने असीम क्षेत्र पड़ा हुआ है। अिस खोजके अन्तमें बड़े-बड़े परिणाम निकल सकते हैं जो समाजके लिअे और खासकर भारतके भूखों मरनेवाले करोड़ों मनुष्योंके लिअे काफी महत्त्वका स्थान रखते हैं। अिसका यह अर्थ हुआ कि स्वास्थ्य और सम्पत्ति दोनोंकी ही अुससे प्राप्ति हो सकती है। रस्किनके कथनानुसार तो ये दोनों चीजें अेक ही हैं। अिस छोटेसे आश्रमके संन्यासीकी यह धारणा बिलकुल सही है कि ये छोटे पैमाने पर चलकर बड़ीसे बड़ी समाज-सेवा करते हैं। अुनकी सेवाकी सुगन्ध वहां आसपास फैलेगी और वह संक्रामक सिद्ध होगी। कालान्तरमें यह सेवा भावना समस्त भारतमें और फिर अखिल विश्वमें व्याप्त हो जायगी। अिस सेवामें अेकका कल्याण सबका कल्याण है।

हरिजनसेवक, १४-६-३५, पृ० १३६-३८

बौद्धिक और शारीरिक काम

प्र० — हम किसी रवीन्द्रनाथ या रमणके लिये शरीर-श्रम करके ही रोटी कमाने पर जोर क्यों दें? क्या यह अनकी दिमागी ताकतका निरी बरबादी न होगी? दिमागी काम करनेवालोंको अंग-मेहनत करनेवालोंके बराबर ही क्यों न समझा जाय, क्योंकि दोनों ही समाजको फायदा पहुंचानेवाला काम करते हैं?

अु० — दिमागी काम भी अपना महत्त्व रखता है और जीवनमें अुसका निश्चित स्थान है। लेकिन मैं तो शरीर-श्रमकी जरूरत पर जोर देता हूं। मेरा यह दावा है कि अुस फर्जसे किसी भी मनुष्यको छुटकारा नहीं मिलना चाहिये। अिससे मनुष्यके दिमागी कामकी अुन्नति ही होगी। मैं तो यहां तक कहनेकी हिम्मत करता हूं कि पुराने जमानेमें हिन्दुस्तानके ब्राह्मण बौद्धिक और शारीरिक दोनों काम करते थे। वे चाहे न भी करते हों, लेकिन आज तो शारीरिक कामकी जरूरत सिद्ध हो चुकी है। अिस सिलसिलेमें मैं आपको टॉल्स्टॉयके जीवनका हवाला देते हुअे यह बताना चाहूंगा कि अुन्होंने रूसी किसान बॉन्दरेव्हके शारीरिक श्रमके सिद्धान्तको किस प्रकार मशहूर किया।

हरिजनसेवक २५-२-'४७ पृ० २८

बौद्धिक विषय बनाम अुद्योग

श्री मगहरि मगील लिखते हैं :

नयी और नअी तालीमके विद्यालयोंमें बौद्धिक विषय शब्दका प्रयोग बहुत ही गलत तरीकेसे किया जाता है। अक्षरज्ञान अथवा पुस्तकोंका अध्ययन बौद्धिक विषय कहा जाता है। अमुक समय अुद्योगके लिअे है और अमुक समय बौद्धिक विषयके लिअे — असा भी कहा जाता है। कुछ विद्यालयोंमें तो यह भी कहते हैं कि अुन्हें दो घंटे अुद्योगमें लगाने होते हैं और तीन पढ़नेमें। किताबोंके शुरू होनेसे ही यह माना जाता है कि पढ़ाअी आरम्भ हुअी। अिस विषय पर आप लिख तो चुके हैं, लेकिन फिर भी लिखनेकी जरूरत है। अुद्योगमें बुद्धिका विकास तो होता ही है। अिसलिअे यह कहा

कहा जा सकता कि उद्योग बुद्धिका विषय नहीं है। यह आवश्यक है कि आप भिसके सम्बन्धमें भी स्पष्ट रूपसे लिखें।

लेखककी शिकायत बिलकुल सच है। अक्षरज्ञान बुद्धिका विषय नहीं, वह तो स्मरणशक्तिका विषय है। जिस तरह किसी पदार्थका चित्र देखकर सीखना बुद्धिका विषय नहीं, अुसी तरह अक्षरके चित्रके बारेमें है। लेकिन अक्षरज्ञानमें अुसके अर्थका भी समावेश तो है ही। अनेक विषयोंकी किताबें पढ़ना और समझना भी अक्षरज्ञानमें शामिल है। यही बात अुद्योगको भी लागू होती है। औद्योगिक ज्ञानका मतलब केवल कोअी धंधा सीखना ही नहीं, बल्कि अुससे सम्बन्धित शास्त्रको भी जानना है। अिस तरहके औद्योगिक ज्ञानसे बुद्धिका सिर्फ विकास ही नहीं होता, बल्कि अक्षरज्ञानके मुकाबले बहुत अधिक विकास होता है। अक्षरज्ञानमें तो बुद्धिके विकासके बजाय स्मरणशक्तिका ही विकास होता है। यह बात हम हाओीस्कूल और कालेजोंसे निकले हुअे सकड़ों विद्यार्थियोंके बारेमें कह सकते हैं। अुद्योगके शास्त्रज्ञानके विषयमें असा दुष्परिणाम होनेकी संभावना नहीं दीखती। अिसी सूत्रमें अमुक समय अुद्योगके लिअे और अमुक समय अक्षरज्ञानके लिअे यह भेद अुद्योगके दर्जेको कम करनेकी यह प्रथा दूर हो जानी चाहिये। क्योंकि यह भेद निकम्मा है और प्रायः अिससे नुकसान भी होता है। विद्यार्थियोंके मनमें यह भेद समा जाता है और अिससे अुद्योगके प्रति अुदासीनता और पढ़नेके लिअे मोह पैदा होता है। अिस तरह दोनों चीजें बिगड़ जाती हैं। किताबोंका कीड़ा बननेसे ही बुद्धिका विकास नहीं हो जाता। अुससे तो आंख और विचारशक्ति दोनों ही खराब होती हैं। अुद्योगके प्रति अुदासीनता होनेसे अुसका ज्ञान अूपरी रहता है। प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर ही शोभा देती है। अुद्योगके पूर्ण ज्ञानके लिअे पुस्तकोंके अध्ययनकी आवश्यकता रहती ही है। और अुसके सिलसिलेमें जो कुछ पढ़ना पड़ता है, सो तो समझकर ही पढ़ा जा सकता है। अिस तरह अुसमें हानिके लिअे अवकाश ही नहीं रहता। जितना मैं समझा सकूंगा अुतना पूर्ण विकास तो अुद्योगके द्वारा ही होगा। अिसका नाम नअी तालीम या सच्ची तालीम है। यह तो अपने समयानुसार आयेगा ही। फिर भी अुस समय तक अुद्योग और अक्षरज्ञानका भेद तो मिट ही जाना चाहिये। जिस तरह गणित, साहित्य अित्यादिका वर्ग होता है, अुसी तरह अुद्योगका भी होना चाहिये। सबको शिक्षाका अंग ही समझना चाहिये। यह भ्रम तो निकल ही जाना चाहिये कि अुद्योग शिक्षा-क्रमका मामूली विषय है। जब तक यह भ्रम न टूटेगा, विद्यार्थियोंके विकासमें रुकावट होती रहेगी।

हरिजनसेवक, १८-४-४२, पृ० ११२

५१

अहिंसक अुद्योग

[लेखक : महादेव देसाअी]

अखिल भारत चरखा संघ और गांधी सेवा संघकी मिलीजुली बैठकमें जो पिछले जूनमें हुआी थी, खादीके अर्थशास्त्रकी व्यापक समझसे सम्बन्धित कअी प्रश्नों पर चर्चा हुआी। अुस बैठकमें गांधीजी हाथ-अुद्योगके अहिंसक पहलू पर लम्बे समय तक बोले। अुन्होंने कहा :

अहिंसा-परायण मनुष्यके सारे कामकाज और सारी प्रवृत्तियां अहिंसासे रंगी हुआी होंगी। अिसलिअ अुसका धंधा, अुसका व्यवसाय निश्चित रूपसे अहिंसक होगा। वैसे तो सूक्ष्म दृष्टिसे देखा जाय तो बिना हिंसाके कोअी भी काम या अुद्योग-धंधा संभव नहीं है। कुछ न कुछ हिंसा किये बिना जीना भी शक्य नहीं है। हमारा काम तो यही सोचना है कि अैसी हिंसाकी मात्रा घटाकर कमसे कम कैसे की जाय। अहिंसा शब्द भी नकारात्मक है, यानी वह जीवनमें अनिवार्य हिंसा छोड़नेके प्रयत्नका सूचक है। अिसलिअ जिसकी अहिंसामें श्रद्धा है वह अैसे ही अुद्योग-धंधेमें लगेगा जिसमें कमसे कम हिंसा होगी। अुदाहरणके लिअ हम यह कल्पना नहीं कर सकते कि अहिंसामें विश्वास रखनेवाला मनुष्य कसाअीका धंधा पसन्द करेगा। अिसका यह अर्थ नहीं कि मांस खानेवाला अहिंसक नहीं हो सकता। मांस खानेवालोंमें अैसे बहुतसे लोग मिलेंगे जो मांस न खानेवालोंसे ज्यादा अहिंसक होंगे। जैसे कि दीनबन्धु अेण्ड्रूज। लेकिन मांस खानेवालोंमें भी जो अहिंसामें श्रद्धा रखते हैं वे शिकारीका धंधा नहीं करेंगे और लड़ाअियोंमें या लड़ाअीकी तैयारीमें शामिल नहीं होंगे।

अिस तरह कितने ही काम और धंधे अैसे हैं जिनमें निश्चित रूपसे हिंसा रहती है। अुन्हें अहिंसक मनुष्यको छोड़ना होगा। लेकिन खेतीका धंधा नहीं छोड़ा जा सकता, यद्यपि अमुक मात्रामें अुसमें हिंसा अनिवार्य है। अिसलिअ अैसे मामलोंमें कसौटी यह है कि जो धंधा हम स्वीकार करना चाहते हैं अुसका आधार क्या अहिंसा पर है? वैसे तो हर काममें, हर क्रियामें थोड़ी बहुत हिंसा रहती ही है। हमारा काम अितना ही है कि अुसे यथासंभव कम करनेका प्रयत्न करें। यह काम अहिंसा पर हार्दिक श्रद्धाके बिना नहीं हो सकता। मान लीजिये कि कोअी आदमी प्रत्यक्ष हिंसा बिलकुल नहीं करता, मेहनत करके खाता है, लेकिन पराया धन या खुशहाली देखकर

हमेशा आपत्तियाँ जल अुठती है। अैसा आदमी अहिंसक हरगिज नहीं माना जा सकता। अर्थात् अहिंसक धंधा वही है जो जड़से हिंसा रहित है और जिसमें दूसरेकी अीर्ष्या या शोषण नहीं है।

'मेरे पास अिस बातका अैतिहासिक प्रमाण तो नहीं है, परन्तु मैंने हमेशा यह माना है कि भारतवर्षमें अेक समय गाँवोंका अर्थतंत्र अैसे निर्दोष अहिंसक अुद्योग धंधों पर रचा गया था। वह मनुष्यके अधिकारों पर नहीं बल्कि मनुष्यके धर्मों और फर्जों पर खड़ा था। अिन धंधोंमें लगे हुअे लोग अपनी आजीविका तो कमाते ही थे, लेकिन अुनके परिश्रमसे सारे समाजका हित और कल्याण होता था। अुदाहरणके लिअे गाँवका सुतार गाँवके किसानोंकी जरूरतें पूरी करता था। अुसे नकद पैसा नहीं मिलता था, लेकिन गाँवके लोग अुसे अपनी मेहनतसे पैदा की हुअी अनाज वगैरा चीजें मेहनतानेके रूपमें देते थे। मेरे कहनेका यह मतलब नहीं कि अिस प्रथामें भी अन्याय नहीं हो सकता था, लेकिन अुस अन्यायकी संभावना अिसमें कमसे कम रहती थी। मैं साठ बरससे पहलेके काठियावाड़के लोक जीवनकी बात आपको बता रहा हूँ, जिसका मुझे निजी अनुभव है। आज हम लोगोंकी आँखोंमें जितना तेज और अुनके हाथ-पाँवोंमें जितनी शक्ति देखते हैं अुससे अुस जमानेके लोगोंकी आँखोंमें ज्यादा तेज और अुनके हाथ-पाँवोंमें ज्यादा शक्ति और स्फूर्ति दिखाअी देती थी।

'अिन अुद्योग धंधोंमें शरीर-श्रम मुख्य चीज थी। विशाल यंत्रोद्योग अुस समय नहीं थे। क्योंकि जब मनुष्य हाथसे जोत सके अुतनी ही जमीनसे संतोष मानता हो तब वह दूसरेका शोषण नहीं कर सकता। हाथ-अुद्योगोंमें गुलामी और शोषणकी गुंजाअिश ही नहीं है। विशाल यंत्रोद्योग अेक मनुष्यके हाथमें धनके ढेर अिकट्ठे करते हैं, जिसके बल पर वह अनेक लोगोंसे अपने लिअे कड़ी मेहनत कराता है। अपने मजदूरोंके लिअे आदर्श स्थिति पैदा करनेकी भी शायद वह कोशिश करता होगा, फिर भी अुसमें अन्याय और शोषण तो रहता ही है और अुसका भय अमुक रूपमें छिपा ही है।

'जब मैं यह बात कहता हूँ कि अुस जमानेमें समाज दूसरोंके शोषण पर नहीं किन्तु त्याग पर रचा गया था, तब मैं अितना ही बताना चाहता हूँ कि सत्य और अहिंसा अैसे गुण नहीं हैं जिन्हें केवल व्यक्ति ही सिद्ध कर सकता है, बल्कि सारी जातियाँ और मानव-समाज भी अुन पर अमल कर सकते हैं। जो गुण केवल मठ या कुटियामें ही खिल सकता है या व्यक्ति ही जिसका विकास कर सकते हैं, अुसे मैं गुण ही नहीं मानता। मेरी नजरमें अैसे गुणकी कोअी कीमत नहीं है।'

हरिजन १-९-४०, पृ० २७१

यज्ञ

१

हम बहुधा यज्ञ शब्दको काममें लाते हैं। हमने कताईको दैनिक महायज्ञकी श्रेणी तक चढ़ाया है। अिसलिअ यज्ञ शब्दके विभिन्न फलितार्थों पर विचार करना जरूरी है।

यज्ञका अर्थ है लौकिक अथवा पारलौकिक किसी भी प्रकारके फलकी आकांक्षा रखे बिना दूसरोंके हितके लिअ किया गया कर्म। कर्म शब्दका यहां व्यापकसे व्यापक अर्थ करना चाहिये। अुसमें कायिक, मानसिक और वाचिक — प्रत्येक प्रकारके कर्मका समावेश माना जाना चाहिये। 'दूसरों' से केवल मनुष्य-वर्गका नहीं बल्कि जीवमात्रका आशय है। अिसलिअ और अहिंसाकी दृष्टिसे भी मनुष्य-जातिकी सेवाके लिअ ही क्यों न हो दूसरे जीवोंकी बलि देना या अुनका नाश करना यज्ञ नहीं कहा जा सकता। वेदादिमें पशु बलिका जो विधान किया गया बताया जाता है वह हमारे अपरोक्त अर्थकी दृष्टिसे अनुचित है। कारण, पशुबलि सत्य और अहिंसाकी बुनियादी कसौटी पर खरी नहीं अुतरती। मैं वेदका अर्थ करनेकी अपनी अयोग्यता निःसंकोच स्वीकार करता हूं। लेकिन जहां तक अिस विषयका सम्बन्ध है, अपनी अिस अयोग्यता पर मुझे कोअी खेद नहीं होता। क्योंकि वैदिक समाजमें पशुबलिके रिवाजका प्रचलित होना सिद्ध कर दिया जाय, तो भी अहिंसाका अुपासक अुसे अनुकरणीय नहीं मान सकता।

यज्ञकी अपरोक्त व्याख्याके अनुसार जिस कर्मसे ज्यादासे ज्यादा जीवोंका अधिकसे अधिक विशाल क्षेत्रमें कल्याण हो और जिसे ज्यादासे ज्यादा स्त्री पुरुष बहुत आसानीसे कर सकें, अुस कर्मको अुत्तम यज्ञ कहा जायगा। अिसलिअ तथाकथित अुच्चतर ध्येयके लिअ भी किसी दूसरेका अकल्याण सोचना या करना महायज्ञ होना तो दूर, यज्ञ भी नहीं है। और गीता सिखाती है तथा हमारा अनुभव बतलाता है कि यज्ञरूप कर्मके सिवा दूसरे कर्म मनुष्यको बंधनमें बांधते हैं।

अैसे यज्ञके अभावमें जगत अेक क्षणके लिअ भी टिक नहीं सकता और अिसीलिअ गीता दूसरे अध्यायमें ज्ञानका विवेचन करनेके बाद तीसरे अध्यायमें अुसकी प्राप्तिके अुपायोंका वर्णन करती है और स्पष्ट शब्दोंमें कहती है कि यज्ञके साथ ही प्रजाकी सृष्टि हुअी है। अिसलिअ यह शरीर हमें सारी

सृष्टिकी सवाके लिये ही दिया गया है। और यही कारण है कि गीता कहती है कि जो यज्ञ किये बिना खाता है वह चोरीका अन्न खाता है। शुद्ध जीवन जीनेकी अिच्छा रखनेवाले व्यक्तिका हरअेक कर्म यज्ञरूप होना चाहिये।

हमारा जन्म यज्ञके साथ हुआ है, अिसलिअे हमारी स्थिति जीवन भर ऋणीकी रहती है और अिसलिअे हम हमेशा जगतकी सेवा करनेके लिअे बंधे हुअे हैं। और जिस तरह कोअी गुलाम अपने स्वामीसे — जिसकी वह सेवा करता है — अन्न-वस्त्रादि पाता है असी तरह हमें भी जगतके स्वामी जो कुछ दे असे आभारपूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिये। असे हमें जो कुछ मिले वह असका हमें दिया हुआ दान है क्योंकि ऋणीकी तरह अपने कर्तव्यका पालन करनेके लिअे हम असके अेवजमें कुछ भी पानेके अधिकारी नहीं हैं। अिसलिअे यदि हमें वह न मिले तो हम अपने स्वामीको दोष नहीं दे सकते। हमारा शरीर असका है अब वह अपनी अिच्छाके अनुसार चाहे रखे चाहे न रखे।

यह स्थिति असी नहीं है कि असकी शिकायत की जाय या असे पर खेद किया जाय। अुल्टे, यदि विधाताके विधानमें हमारा अपना स्थान हम समझ लें, तो हमें यह स्थिति स्वाभाविक सुन्दर और अिष्ट मालूम होगी। अिस परम सुखका अनुभव करनेके लिअे अविचल श्रद्धाकी आवश्यकता है। अपने विषयमें कोअी चिंता मत करो सब चिंतायें परमेश्वरको सौंप दो — यह आदेश सब धर्मोंमें दिया गया दीखता है।

अिससे किसीको डरनेका कोअी कारण नहीं है। जो स्वच्छ मनसे सेवाकार्यमें लग जाता है अुसे अुसकी आवश्यकता दिन प्रतिदिन स्पष्ट होती जाती है और अुसकी श्रद्धा भी अुसी प्रमाणमें बढ़ती जाती है। जो स्वार्थ छोड़नेके लिअे और मनुष्य जन्मके साथ मिले हुअे अिस कर्तव्यका पालन करनेके लिअे तैयार नहीं है वह सेवामार्ग पर नहीं चल सकता। जान-अनजान हम सब कुछ-न-कुछ निःस्वार्थ सेवा करते ही हैं। यही सेवा हम विचारपूर्वक करने लगें, तो हमारी पारमार्थिक सेवाकी वृत्ति अुत्तरोत्तर बढ़ती जाय और न केवल हमें सच्चे सुखकी प्राप्ति हो परन्तु जगतका भी कल्याण हो।

२

यज्ञके बारेमें मैं पिछले सप्ताह लिखा था लेकिन अिसके विषयमें और ज्यादा लिखना चाहता हूं। अिस सिद्धांत पर जो मानव जातिके साथ

चला आ रहा है, और विचार करना मैं मानता हूँ लाभप्रद ही होगा। दिनके चौबीसों घंटे कर्तव्य-पालन करना या सेवा करना यज्ञ है। अिसलिअ 'परोपकाराय सतां विभूतयः' — जैसी सूक्ति यदि अपकार शब्दमें दूसरा पर कृपा करनेका भाव हो तो सदोष नहीं जायगी।

निष्काम सेवा करना दूसरों पर नहीं बल्कि स्वयं अपने पर कृपा करना है ठीक जैसे कि हम ऋणका भुगतान करते हैं तो हम अपनी ही सेवा करते हैं, अपने बोझको हल्का करते हैं और अपने कर्तव्यको पूरा करते हैं। अिसके सिवा न केवल भले लोग बल्कि हम सब अपनी साधन सामग्रीको मानव-जातिकी सेवामें लगानेके कर्तव्यसे बंधे हुअे हैं। और यदि असा कानून है — जैसा कि वह स्पष्ट रूपमें है ही — तो जीवनमें फिर भोगको कोअी स्थान नहीं रहता और अुसका स्थान त्याग ले लेता है। त्यागका कर्तव्य ही मानव जातिकी विशेषता है जिससे अुसे पशुसे भिन्न पहचाना जाता है।

लेकिन त्यागका अर्थ यहां संसारको छोड़कर अरण्यमें वास करना नहीं है। असका अर्थ यह है कि जीवनकी तमाम प्रवृत्तियोंमें त्यागकी भावना होनी चाहिये। कोअी गृहस्थ जीवनको भोगरूप न मानकर कर्तव्य रूप माने तो अिससे असका गृहस्थपन मिट नहीं जाता। यज्ञार्थ व्यापार करनेवाला व्यापारी करोड़ोंका व्यापार करते हुअे भी लोकसेवाका ही विचार करेगा। वह किसीको धोखा नहीं देगा, सट्टा नहीं करेगा, सादगीसे रहेगा, किसी जीवको कष्ट नहीं देगा और किसीका नुकसान करनेके बजाय खुद करोड़ोंका नुकसान सह लेगा। कोअी यह कहकर अिस बातकी हंसी न अुड़ाये कि असा व्यापारी केवल मेरी कल्पनामें ही है। दुनियाका सौभाग्य है कि असे व्यापारी पूर्वमें भी हैं और पश्चिममें भी हैं। यह सच है कि असे व्यापारी अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं, लेकिन यदि अुक्त आदर्शको प्रगट करनेवाला अेक भी जीवित नमूना हो तो फिर अुसे काल्पनिक नहीं कह सकते। और यदि हम अिस प्रश्नकी गहराअीमें जायं तो जीवनके हर क्षेत्रमें हमें असे मनुष्य मिलेंगे जो समर्पणका जीवन बिताते हैं। अिसमें सन्देह नहीं कि असे यान्त्रिक अपना धंधा करते हुअे अपनी आजीविका भी कमाते हैं। लेकिन वे धंधा आजीविकाके लिअे नहीं करते, आजीविका अनके धंधेका गौण फल है।

यज्ञमय जीवन कलाकी पराकाष्ठा है, असीमें सच्चा रस और सच्चा आनन्द है। जो यज्ञ बोझरूप मालूम हो वह यज्ञ नहीं है। जिस त्यागसे कष्ट मालूम हो वह त्याग नहीं है। भोग नाशकी ओर ले जाता है और त्याग अमरताकी ओर। रस कोअी स्वतंत्र वस्तु नहीं है। वह तो जीवनके प्रति हमारे रुख पर निर्भर करता है। किसीको नाटकके परदा पर चित्रित दृश्योंमें रस मिलता है तो दूसरेको आकाशमें प्रगट होनेवाले नित्य-नये दृश्योंमें।

अिसलिअे यह व्यक्तिगत और राष्ट्रीय तालीमका विषय है। हमें बचपनमें जिन बातोंमें रस लेना सिखाया गया हो अुनमें ही हमें रस मिलता है। और किसी अेक राष्ट्रकी प्रजाको जो वस्तु रसमय मालूम होती है वह किसी दूसरे राष्ट्रकी प्रजाको रसहीन मालूम होती है। अिस बातके अुदाहरण तो आसानीसे दिये जा सकते हैं।

फिर यज्ञ करनेवाले कभी सेवक असा मानते हैं कि हम निष्काम भावसे सेवा करते हैं, अिसलिअे हमें लोगोंसे जरूरी और बहुतसी गैर-जरूरी चीजें भी लेनेकी छूट है। यह विचार सेवकके मनमें ज्यों ही आता है त्यों ही वह सेवक नहीं रह जाता, तब वह अत्याचारी शासक बन जाता है।

जो सेवा करना चाहता हो अुसे अपनी सुविधाओंका विचार नहीं करना चाहिये। अपनी सुविधाओंका विचार तो वह अपने स्वामीको — आीश्वरको — सौंप देता है। आीश्वरकी अिच्छा होगी तो वह देगा, न होगी तो नहीं देगा। अिसलिअे सेवक जो कुछ अुसे मिले सो सब अपने अुपयोगके लिअे नहीं रख लेगा, अपने लिअे वह अुसमें से अुतना ही लेगा जितनेकी अुसे सचमुच जरूरत है। बाकीका वह त्याग करेगा। अुसे असुविधामें अुतरना पड़े तो भी वह शांत रहेगा, क्रोध नहीं करेगा और अपना चित्त स्वस्थ रखेगा। सद्गुणोंकी तरह अुसकी सेवाका पुरस्कार सेवा करनेका सुख ही है और अुसीमें वह संतोष मानेगा।

अिसके सिवा सेवाकाममें किसी तरहकी लापरवाही या देर नहीं चल सकती। जो आदमी यह समझता है कि सावधानी और परिश्रमकी आवश्यकता तो सिर्फ अपना व्यक्तिगत काम करनेमें है, निःशुल्क किया जानेवाला सार्वजनिक काम अपनी सुविधाके अनुसार जब करना हो तब और जिस तरह करना हो अुस तरह किया जा सकता है, कहना चाहिये कि वह यज्ञका कखग भी नहीं जानता। दूसरोंकी स्वेच्छापूर्वक की जानेवाली सेवा अपनी पूरी शक्ति लगाकर की जानी चाहिये, यह सेवा पहले और अपना निजी काम बादमें — यही सेवकका सूत्र होना चाहिये। सारांश यह कि शुद्ध यज्ञ करनेवालेका अपना कुछ बाकी नहीं रहता, वह सब कृष्णार्पण कर देता है।

फ्रॉम यरवडा मन्दिर पृ० ५३–६०, १९५७

श्रमका गौरव

विश्वविद्यालयके नवयुवक स्नातकोंको अपनी पदवियोंकी फेरी करते हुअे हम रोज ही देखते हैं। वे अुन आदमियोंसे अपनी सिफारिश कराते रहते हैं जिन्हें शिक्षा तो कुछ नहीं मिली है किन्तु जो धनी बहुत हैं और १०० में से ९० मामलोंमें तो विश्वविद्यालयोंकी पदवियोंसे कहीं अधिक अिज्जत अफसरोंकी निगाहमें धनीकी सिफारिशकी ही ठहरती है। अिससे आखिर क्या साबित होता है? यही न कि दिमागी तालीमसे कहीं अधिक कीमत धनकी लगाअी जाती है। दिमागकी पूछ आजकल बहुत कम है। यह क्यों? क्योंकि दिमागको धन पैदा करनेमें सफलता नहीं मिल सकी है। अिस असफलताका कारण है अैसे कामोंकी कमी जिनमें बुद्धिकी जरूरत पड़े। मनुष्य समाजमें सबसे अधिक कीमती और ताकतवर चीज दिमाग ही है। आज अुसकी मांग न होनेके कारण वह बेकार वस्तु बन गया है।

किसानका धन अुसके हाथ हैं। जमींदारकी ताकत अुसकी जमीनमें है। जमीनका काम खेती है। हाथकी तालीमका नाम अुद्योग है। मैं जानता हूँ कि खेतीको भी कुछ लोग अुद्योगमें ही गिनते हैं परन्तु यदि हम अिनके विशिष्ट तत्त्वको देखें तो समझमें आयेगा कि कृषि और अुद्योग अलग अलग वस्तुअें हैं।

शारीरिक श्रमके अुस विभागको अुद्योग कहना मुनासिब होगा जिसमें हाथकी तालीमके लिअे बराबर मौका मिलता जाय और जिसमें हमारी आमदनीमें क्रमशः बढ़ते जानेकी संभावना हो। खेतीमें काम करनेवालोंके बारेमें यह नहीं कहा जा सकता। हल चलानेवाले बीज बोनेवाले या खेत निरानेवालेको अपने हाथकी शिक्षाके कारण कुछ अधिक मजदूरी नहीं मिल सकेगी। खेतीके काममें अधिक आमदनी करनेकी निपुणता सीखनेकी गुंजाअिश नहीं है। अब किसी बढ़अीको ले लीजिये। वह छोटे छोटे मामूली बक्स बनानेसे शुरू करता है। अभ्यासके जरिये वही आदमी शराबकी बोतलें रखनेका बक्स भी बनाना सीख सकता है। अब यह देखिये कि हाथसे काम करनेकी निपुणतामें अुन्नति होनेके साथ ही साथ अुसकी मजदूरी कितनी बढ़ गअी। आप विश्वास करें कि जिस आदमीने दो खानेवाला बक्स

बनाया है जिनके पैदा हुए फलोंकी बोतलकी रखा होता है, अुस समय मामूली थैला बनानेके लिअे दो नौकर रखा था। जिसमें अुनको मजदूरी छह आने रोज था और दो वर्षोंमें वही बढ़कर रुपया रोज हो गया और अुसके बनाये हुअे सामानको बाजारमें कीमतसे अधिक मालिकको चार आने रोजका नफा भी हो जाता है। जिससे शाहदरा भानर १३५) से ३६७) की वृद्धि देखनेमें आती है।

लेकिन हमारी जनसंख्याके ९८ फीसदी लोग खेतीका काम करते हैं। जमीनकी खेतकी बढ़ती होती नहीं। जनसंख्याकी वृद्धिके साथ साथ मजदूरोंकी बढ़ती होती जाती है। जिस जमीनसे २० साल पहले ५ आदमियोंका परवरिश होता था अभी पर अब १२ से १५ आदमियोंका बसर होता है। कुछ हालतोंमें जिस अुपरी बोझको दस्तकार जाकर कम किया जा सकता है किन्तु अधिकतर मामलोंमें लाचार होकर प्राणरक्षाके कम प्रमाणसे ही काम चला लेना पड़ता है।

उपरोक्त लेख श्रीयुत मधुसूदन दासके बिहार या मंत्र अिन्स्टिट्यूटके सामने १९२४ में दिये गये भाषणका अंश है। अिस भाषणको मैं अपने पास अितने दिनोंसे अिसलिअे रख रहा कि जब समुचित अवसर मिलेगा तब अिसके आवश्यक अंगोंका मैं अुपयोग करूँगा। व्याख्यानदाताने जो कुछ कहा है अुसमें कोअी नयी बात नहीं है। परन्तु अिन बातोंकी असल कीमत अिसमें है कि मधुसूदन वकील होते हुअे भी अपने हाथोंसे काम करनेको केवल नफरतकी निगाहसे नहीं देखते हैं बल्कि स्वयं वे अपने अुत्कलमें हाथकी कारीगरीका अुत्थान चाहते हैं और वह भी केवल गौरवके लिये नहीं बल्कि नौजवानोंको मेहनत मशक्कतकी कीमत समझाने और यह बतलानेके लिअे कि अगर वे दोनों अवसरोंकी ओर नजर नहीं करेंगे तो अिन दोनोंका भविष्य कुछ बहुत अच्छा नहीं होगा। श्रीयुत दासने कटकमें अेक चमड़ेका कारखाना खोला है। यह कारखाना कितने ही सवालोंके लिअे जो अुसके पहले महज अनजान मजदूर थे शिक्षालय बना हुआ है। मगर सबसे बड़ा सुधार, जिसमें पराकाष्ठाकी मेहनतकी जरूरत है मूल-शिक्षा ही है। जरूरत अिस बातकी है कि अिस देशकी शिक्षाको अत्यन्त बड़ा सच्चाओंसे बुद्धिसे किया जानवाला जर और काम लिया जाय जिससे अनके हाथ और दिमाग दोनोंको तालीम मिले। अुसके लिअे जो सबसे अच्छा और सस्ता शिक्षा दिया जा सकता है वह यही है। सबसे सस्ती अिसलिअे कि शिक्षा तुरन्त ही आमदनी भी होने लगती है। और यदि हमें भारतवर्षमें सार्वजनिक शिक्षाका प्रचार करना है तो प्राथमिक शिक्षा लिखाअी पढ़ाअी और हिसाबकी न होकर सूत कातने और अुससे सम्बन्धित अन्य धन्धोंकी होगी। और जब अिसके जरिये

हाथों और आंखोंको पूरी तालीम मिल जाती है तब वही बालक अिन तीनोंको सीखनेके लिअे तैयार होता है। मैं जानता हूं कि यह कुछ लोगोंको तो असंभव और कुछको बिलकुल अव्यावहारिक मालूम होगा। मगर जो असा सोचते हैं वे हमारे करोड़ों भाअी-बहनोंकी हालत नहीं जानते। वे यह भी नहीं जानते कि हिन्दुस्तानके किसानोंके करोड़ों बच्चोंको शिक्षा देनेका क्या अर्थ है। और यह शिक्षा तब तक नहीं दी जा सकती जब तक शिक्षित भारतवासी जिन्होंने अिस देशमें राजनीतिक जागृति पैदा की है परिश्रमके गौरवको समझ नहीं लेंगे और जब तक हरअेक नौजवान चरखा चलानेकी कलाको सीखना और गांवोंमें फिरसे असे दाखिल करना अपना परम कर्तव्य नहीं मानता।

हिन्दी नवजीवन ९-९-२६ पृ० २९

५४

श्रमकी प्रतिष्ठाको पहचानें

[१६ फरवरी १९१६ को मद्रासमें वाअी अेम० सी० अे० के सभागृहमें दिये गये अेक भाषणसे।]

आप पूछ सकते हैं: हमें अपने हाथोंका अुपयोग क्या करना चाहिये? और कह सकते हैं: शारीरिक काम तो जो अपढ़ हैं अुनसे करवाया जाना चाहिये। मैं तो अपने समयका अुपयोग केवल साहित्य और राजनीतिक लेखोंके पढ़नेमें ही कर सकता हूं। मेरा खयाल है कि हमें श्रमकी प्रतिष्ठाको पहचानना है। अगर अेक नाअी या चमार कॉलेजमें जाता है, तो अुसे नाअी या चमारका धंधा छोड़ नहीं देना चाहिये। मैं मानता हूं कि नाअीका धंधा अुतना ही अच्छा और अुपयोगी है जितना कि डॉक्टरका धंधा है।

स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गांधी पृ० ३८९ १९३३

कर्मयोगका सिद्धान्त

[श्री महादेव देसाईके साप्ताहिक पत्रसे।]

एक मुलाकातीने गांधीजीसे पूछा कि कर्मयोग पर आपका अनुचित आग्रह भले न हो, पर क्या आप उस पर जरूरतसे ज्यादा जोर नहीं दे रहे हैं? गांधीजीने उसको यह जवाब दिया:

नहीं, यह बात बिलकुल नहीं है। मैंने जो भी कहा है उसका हमेशा बहुत अर्थ लिया है। उसमें कोई अत्युक्ति नहीं है। कर्मयोग पर जरूरतसे ज्यादा जोर देनेकी बात तो कभी हो ही नहीं सकती। मैं तो गीताके सिखाये हुओ सन्देशको ही दोहरा रहा हूं जिसमें भगवान कृष्णने कहा है:

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥

अर्थात् मैं सतत जाग्रत रहकर कर्म न करूं तो सारे मनुष्य मेरा अनुकरण करने लग जायंगे। क्या मैंने व्यवसायी लोगोंसे यह प्रार्थना नहीं की कि वे खुद चरखा चलाकर हमारे तमाम देशवासियोंके सामने एक सुन्दर उदाहरण रखें?

भगवान बुद्ध जैसे आपको कोओ मनुष्य मिले, तो क्या उनसे भी आप यही बात कहेंगे?

अवश्य, उसमें मुझे जरा भी हिचकिचाहट नहीं होगी।'

"तो फिर तुकाराम और ज्ञानदेव जैसे महान संतोंके विषयमें आप क्या कहेंगे?

'उनके संबंधमें निर्णय करनेवाला मैं होता कौन हूं?'

'पर बुद्धके संबंधमें आप क्या कहेंगे?

'ऐसा मैंने कभी नहीं कहा। मैंने तो सिर्फ यह कहा है कि अगर बुद्ध जैसे किसी मनुष्यसे प्रत्यक्ष मिलनेका मुझे सद्भाग्य प्राप्त हो तो मैं उससे यह कहनेमें जरा भी संकोच न करूंगा कि वह ध्यानयोगके स्थान पर कर्मयोगकी पुष्टि करे। उन महान संतोंसे यदि मेरा मिलना हो तो उनसे भी मैं यही बात कहूंगा।

हरिजनसेवक २-११-'३५ पृ० २९८-९९

मेहनत नहीं तो खाना भी नहीं

कुछ दिन पहले मुझे कलकत्तेके अेक शानदार महलमें ले जाया गया था। अुसे मारबल पेलेस कहते हैं। अुसमें बहुत कीमती और बहुत सुन्दर चित्रोंसे बढ़िया सजावट की गयी है। मालिक महलके सामने आंगनमें जो भी भिक्षुक वहां आयें अुन सबको खाना खिलाते हैं। मुझे कहा गया कि अनकी संख्या कभी हजार होती है। बेशक यह राजाओं-सा दान है। अिससे दाताओंकी परोपकारकी वृत्ति प्रगट होती है जो प्रशंसनीय है। परन्तु दाताओंको जरा भी खयाल नहीं होता कि अेक तरफ अिस बेहाल मानवताको खिलाना और दूसरी तरफ अेस शानदार महलका माना अुसको दुर्दशाको हंसी अुड़ाना कितना बेमेल है। अैसा ही अेक और दुःखद दृश्य मैंने जब मसूरी गया था तब मैंने देखा था। वहां स्वागत-समितिने जिलेके भिखारियोंको भोजन करानेकी व्यवस्था की थी। मारबल पेलेसमें जिस भीड़ने मुझे घेर लिया था वह जमीन पर बिछाओ हुअी मैली पत्तलों पर खा रहे भिखारियोंकी पंक्तिको पार करके आओ थी। कुछ लोगोंने अुन पत्तलोंको लगभग कुचल दिया था। मसूरीमें जरा अधिक सभ्य व्यवस्था थी क्योंकि भीड़को भिखारियोंकी पंक्ति पार करके नहीं आना था। परन्तु जो मोटर गाड़ी मुझे वहां ले गअी थी अुसे खाना खाते हुअे भिखारियोंकी पंक्तिके बीचमें धीरे धीरे ले जाया गया था। मुझे अिस विचारसे अधिक अपमान महसूस हुआ कि यह सब मेरे सम्मानमें किया गया था क्योंकि जैसा वहांके अेक मित्रने कहा मैं गरीबोंका हितैषी हूं। अवश्य ही मेरी यह मित्रता या हितैषिता कमी भद्दी चीज है यदि मैं मानव-समाजके बड़े भागके भिखारी बन रहनेमें सन्तोष मानूं। मेरे मित्रोंको यह पता नहीं है कि भारतके कंगालोंको दिनदिन देखकर मुझे अितना कठोर हृदय बना दिया है कि अुनके बिलकुल भिखमंगे बन जानेकी अपेक्षा मैं अुनका सबका भूखा मर जाना खुशीसे पसंद करूंगा। मेरी अहिंसा किसी अैसे तन्दुरुस्त आदमीको मुफ्त खाना देनेका विचार बरदाश्त नहीं करेगी जिसने अुसके लिअे अीमानदारीसे कुछ न कुछ काम न किया हो और मेरा बस चले तो जिन सदावर्तोंमें मुफ्त भोजन मिलता है वे सब सदाव्रत मैं बन्द कर दूं। अिससे राष्ट्रका पतन हुआ है और सुस्ती बेकारी दंभ और अपराधोंको भी प्रोत्साहन मिला है। अिस प्रकारका अनुचित दान देशकी भौतिक या आध्यात्मिक सम्पत्तिकी कुछ भी वृद्धि नहीं करता और दाताके मनमें पुण्यात्मा होनेका झूठा भाव पैदा करता है। क्या ही

अच्छा और बुद्धिमानीकी बात हो यदि दानी लोग अभी संस्थायें खोलें जहां अनुके लिअे काम करनेवाले स्त्री-पुरुषोंको स्वास्थ्यप्रद और स्वच्छ हालतमें भोजन दिया जाय। मेरा सुझाव तो यह विचार है कि चरखा या कपाससे सम्बन्धित क्रियाओंमें से कोओ भी क्रिया आदर्श धंधा होगा। परन्तु अगर वे स्वीकार न हों तो वे कोओ भी दूसरा काम चुन सकते हैं। जो भी हो नियम यह होना चाहिये कि मेहनत नहीं तो खाना भी नहीं। प्रत्येक शहरके लिअे भिखमंगोंकी अपनी अपनी अलग कठिन समस्या है जिसके लिअे धनवान जिम्मेदार हैं। मैं जानता हूं कि आलसियोंको मुफ्त भोजन करा देना बहुत आसान है परन्तु अभी किसी संस्थाको संगठित करना बहुत कठिन है जहां किसीको खाना देनेस पहले अससे श्रीमानदारीसे काम कराना जरूरी हो। आर्थिक दृष्टिसे कमसे कम शुरूमें लोगोंसे काम लेनेके बाद अुन्हें खाना खिलानेका खर्च मौजूदा मुफ्तके भोजनालयोंके खर्चसे ज्यादा होगा। लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि यदि हम तेजीसे देशमें बढ़नेवाले आवारा गर्द लोगोंकी संख्यामें वृद्धि नहीं करना चाहते तो अन्तमें यह व्यवस्था अधिक सस्ती पड़ेगी।

यंग अिंडिया १३-८-२५ पृ० २८२

५७

शर्मनाक

अभी कलकी ही बात है, लगभग पचास बरसका अेक हट्टा-कट्टा नौजवान मेरे पास आया। अुसने मुझसे पूछा क्या दो-चार दिन मैं आपके पास ठहर सकता हूं? वह बहरामपुरका रहनेवाला था। घर पर अुसके यहां कुछ अेकड़ जमीन भी है। बम्बओ प्रान्तमें गया था तभीसे बराबर भ्रमण कर रहा है और अपरिचित लोगोंके सहारे अुसका निर्वाह होता है। रामानुजियोंमें वह दिखता-दिखता है। जैसा अुसने मुझे बताया वे अुसे खाना और थोड़ा बहुत पैसा भी देते हैं। जब मैंने अुससे कहा कि अिस तरह दूसरोंके दान पर पलना ठीक नहीं है तो अुसने जवाब दिया — मुझे तो अपने गांव लौटनेके लिअे भाड़ा मांगनेमें कोओ बुराओ नहीं मालूम पड़ती क्योंकि मैं गोसाओंकी सेवा करनेका आशा रखता हूं। मतलब यह कि गुजारा तो यहां ही मांगकर दिन बिताने समय अुसके बदलेमें ब्याज-सहित सेवा कर दें। जिसमें अुसे अनौचित्य कुछ भी नहीं मालूम पड़ा। चूंकि वह खानेके वक्त आया था अितिथि समझ साथ अुसे भी खाना दिया गया। लेकिन अुसके बाद मैंने अुससे कह दिया कि वह हमारे साथ तभी रह सकता है जब कि हमारे

साथ सारे दिन जो काम अुसे दिया जाय असे करनेको वह तैयार हो। तबसे अभी तक हममें से किसीको भी वह शिकायत नहीं दिया है।
मैं चाहता हूं कि असा मामला फिरसे मेरे सामने न आये तो अच्छा। नौजवान स्त्री-पुरुषोंको अपने लिअे भी न मालूम काम थानी चाहिये। शारीरिक श्रमके लिअे शर्मका जो झूठा भाव हममें आ गया है अगर असस हम मुक्त हो जाय तो जिनमें थोड़ी-बहुत भी बुद्धि है असे नौजवान स्त्री-पुरुषोंके लिअे कामकी कोओ कमी नहीं है। काफी काम अुनके लिअे पड़ा हुआ है।

हरिजनसेवक ८-३-३५ पृ० २१-२२

५८

पूर्ण प्रायश्चित्त

कुछ समय हुआ मैंने अिस पत्रमें सार्वजनिक दान पर निर्वाह करनेवाले बहराअिचके अेक नवयुवकके विषयमें लिखा था। बादको वह युवक पूरा पछतावा साथ करके मेरे पास लौट आया यह बात भी अिस पत्रमें लिखी जा चुकी है। अब भी वह मगनवाड़ीमें रहता है और हमारे साथ काम करता है। शारीरिक श्रममें वह अपना पूरा हिस्सा देता है। कुछ ही दिनोंमें वह बहराअिच जाने लायक किरायेका पैसा कमा लेगा। पर किरायेका पैसा कमाकर मगनवाड़ीसे तुरन्त ही चले जानेकी असकी अिच्छा नहीं है। असका विचार यहां रहकर कुछ सीखनेका और कुछ अधिक लाभ अुठानेका है। असके सम्बन्धमें जो आलोचना हुआी अुसमें अुसने बहराअिचके मित्रोंका दिल दुखा है। अिस युवकका नाम अवधेश है। अवधेश मेरी की हुआी आलोचनाका औचित्य तो स्वीकार करता है पर अपने बचावमें यह कहता है कि वह दान लेकर यात्रा करने या खान-पीनेमें कोओ पाप जैसी चीज नहीं मानता था क्योंकि असके कथनानुसार रामानुज सम्प्रदायमें असी प्रथा है। किन्तु अब चूंकि अुसने अपनी गलती मान ली है अिसलिअे फिरसे अुस भूलको न करनेका असने मुझे वचन दिया है। अिस प्रकार अुसने अपनी भूलसे लाभ अुठाया है और जो कुछ भी कलंक अुसे लगा हुआ था अुसे असने मेरी आलोचनासे धो डाला है। हम चाहते हैं कि दूसरे बहुतसे लोग जो अवधेशकी तरह दान पर गुजर करते हैं अिस दृष्टान्तसे लाभ अुठायें और अिसी तरह अपने जीवनमें नया अध्याय आरम्भ करें। मनुष्यसे भूल होना स्वाभाविक है। पर गौरव मनुष्यका अिसीमें है कि जब असे अपनी भूलका पता चल जाय तो वह असे सुधारे और अुसे फिरसे न करनेका दृढ़ संकल्प कर ले।

हरिजनसेवक १०-४-३५ पृ ७४-७५

रोटीकी समस्या

अेक सज्जन लिखते हैं कि बहुतसे बंगाली अिसलिअे राष्ट्रीय काममें नहीं लग सकते और अपनी गुलामीकी बेड़ियाँ नहीं तोड़ सकते कि अुनके सामने रोटीका सवाल है। हम पर जिन्होंने लगान पटकके लिअे अत्याचार करनेका बलात् हाथ धो लिया है। जुलाहे, धुनिये और सूतकारोंकी मजदूरीके बदले हम सचमुच रोटीका सवाल बाकी रहा नहीं जाता। आठ घंटे बुनाअी करनेवाला गुजरातमें ही, कमसे कम १) रोज पैदा कर सकता है। होशियार जुलाहे आज २) रोज पैदा करते हैं। हमें केवल 'करघे' के बल पर ही रोजी कमानेका ध्यान नहीं करते रहना चाहिये।

हिन्दी नवजीवन २-९-'२१ पृ० १८

शरीर-श्रम ही अेकमात्र हल

मुझसे मिलनेके लिअे आये हुअे कअी साथियोंके साथ चर्चा करके निर्मल बाबूने जो सवाल तैयार किया है, अुसका जवाब मैं अब देता हूँ। सवाल अिस तरह है: रोटीके लिअे मजदूरी करनेके सिद्धान्तसे आपका क्या मतलब है और मौजूदा परिस्थितिमें अिस सिद्धान्तको किस तरह लागू किया जा सकता है? रोटीके लिअे मजदूरी करनेका सिद्धान्त अर्थशास्त्र निसर्गका बतलाया रास्ता है। अिसका मतलब यह है कि प्रत्येक अिन्सानको अपने खाने और कपड़ेके लिअे खुद शरीर-श्रम करना चाहिये। अिस रोटीके लिअे मजदूरीके सिद्धान्तकी कीमत और अुसकी जरूरतको मैं अगर लोगोंके गले अुतार सकूँ तो कहीं भी खाने या कपड़ेकी तंगी न रहे। चरखेके साथ अितना कहनेमें मुझे जरा भी हिचकिचाहट नहीं होती कि अगर लोग खेतोंमें जाकर मजदूरी न करें और खुद न कातें या न बुनें तो अुनके भूखों मरने या नंगे घूमनेमें जरा भी बुराअी नहीं है। हम अखबारोंमें पढ़ते हैं कि आज सारा हिन्दुस्तान कपड़ेके बिना नंगे रहने और खुराकके बिना भूखों मरनेके किनारे खड़ा है। अगर लोग मेरी योजनाको मंजूर कर लें तो वे जल्दी ही देखेंगे कि हिन्दुस्तानमें काफी खुराक और आम जनताकी खुद तैयार की हुअी काफी खादी आसानीसे मिल सकती है। बेशक अिस काममें आम जनताको यह सीखनेमें मदद देनेकी जरूरत है कि वे किस तरह अुत्तम अन्न तरीकेसे होशियारीके साथ जमीनका अुपयोग करें। साथ ही अुन्हें कातना और बुनना सिखानेवाले शिक्षक

और ये दोनों काम करनेके साधन मिलने चाहिये। बंगालमें पानी पुरानेके काममें गहरा रस लेनेवाले यहाँके भूतपूर्व गवर्नर मि० केसीसे अपने अिस तरीकेके बारेमें चर्चा करते हुअे मुझे संकोच नहीं हुआ था। मि० केसीकी योजना बहुत बड़ी है और अुस पर अमल करनेमें बरसों और लाखों रुपयेकी जरूरत है। जिसमें अुलटे मेरा कार्यक्रम पूरी तरह कामका होते हुअे भी लम्बा-चौड़ा या खर्चीला नहीं है।

हरिजनसेवक २१-९-४७ पृ० २७५

६१
काम ही गरीबीका अेकमात्र अिलाज है

[श्री महादेव देसाअीके साप्ताहिक पत्रसे।]

ग्रामसेवक विद्यालयके विद्यार्थियोंसे बातचीत करते हुअे अेक दिन गांधीजीने बताया कि हिन्दुस्तानकी बेकारीमें तथा पश्चिमके देशोंमें फैली हुअी बेकारीमें क्या भेद है। अुन्होंने कहा: "अेक तरहसे हमारा बेकारीका सवाल अुतना नाजुक नहीं है जितना कि पश्चिमी देशोंमें है। क्योंकि रहन-सहन भी तो अेक महत्त्वपूर्ण बात है। पश्चिममें बेकार होने पर भी आदमीको और लोगोंकी भाँति गरम कपड़े, बूट, मोजे वगैरा तो जरूरी होते ही हैं। फिर सर्द आबोहवावाले मुल्कोंमें गरम मकान वगैरा बहुतसी चीजें होना चाहिये। तो अुनकी भी असे जरूरत रहती ही है। हमें अिन सबकी जरूरत नहीं होती।

हमारे देशकी भयंकर गरीबी और बेकारी देखकर सचमुच कअी बार मेरी रुलाअी तक आ गअी है। मगर साथ ही मुझे यह भी स्वीकार करना पड़ता है कि हमारा अज्ञान और लापरवाही जिसके लिअे बहुत हद तक जिम्मेवार है। हम असलमें यह जानते ही नहीं कि मेहनत करना कितने गौरवकी चीज है। मिसालके तौर पर अेक चमार सिवा जूते बनानेके और कोअी काम करना पसन्द नहीं करेगा; वह समझता है कि और सब काम नीचे हैं। यह गलत खयाल दूर हो जाना चाहिये। जो अीमानदारीके साथ अपने हाथ-पैरोंसे काम लेना चाहते हैं, अुनके लिअे हिन्दुस्तानमें काफी काम पड़ा हुआ है। परमात्माने हरअेक आदमीको असी शक्ति और बुद्धि दे रखी है जिसकी मददसे वह अितना पैदा कर सकता है कि अुसके खाते-भाते भी बच जाय। और जो भी अपने अिन गुणोंसे काम लेना चाहेगा अुसे काम तो मिल ही जायगा। अीमानदारीके साथ अपनी रोजी कमानेकी अिच्छा रखनेवालेके लिअे कोअी भी काम नीच नहीं है। सवाल यह है कि हम सब अीश्वरके दिये हुअे हाथ-पैर हिलानेको तैयार हैं या नहीं?"

हरिजनसेवक १९-१२-३६ पृ० ३४५-४६

६२

'अेक महान समता-स्थापक'

[श्री चन्द्रशंकर शुक्लके 'साप्ताहिक पत्र' से।]

मजदूर अपने ध्येयके प्रति सक्रिय सहानुभूति दिखानेमें पीछे नहीं है। बिलासपुरमें बी० अेन० रेल्वे मजदूर-संघने गांधीजीको भाषण देनेके लिअे निमंत्रित किया और हरिजन-सेवाके लिअे पाँच सौ रुपयोंकी थैली भेंट की। गांधीजी यह देखकर बहुत खुश हुअे कि मजदूरोंने ध्येयके प्रति अपनी सहानुभूतिके चिह्नस्वरूप अपनी गाढ़ी कमाओके अेक हिस्सेका त्याग किया। अिस अवसर पर दिये अुनके पूरे भाषणको मैं नीचे देता हूँ :

अगर आप जानते न हों तो अब जान लें कि जबसे मैं दक्षिण अफ्रीका गया तभीसे मेरा मजदूरोंसे गहरा संबंध रहा है। भारतमें या संसारके किसी भी भागमें अुन्होंने मुझे अपना अेक मजदूर भाअी मान लिया है और अपना ही समझकर मेरा स्वागत किया है। आपको शायद यह जानकर अचंभा होगा कि नागपुरमें भी मजदूरोंने स्वयंप्रेरणासे मुझे अपनेमें से अेक मान लिया और सैकड़ों-हजारोंकी संख्यामें मुझे घेर लिया था। हमारे बीच अेकमात्र अन्तर यह है कि मैं अपनी पसन्दसे मजदूर बना हूँ जब कि आप परिस्थितिवश मजदूर बने

मैं मजदूर-मण्डलसे कहता हूँ कि वह हरिजनों और आपके बीचके तमाम भेदभाव मिटा दे। मैं यह अपार विचारपूर्वक कर रहा हूँ क्योंकि अहमदाबादके मिल-मजदूरोंके साथ संपर्कमें आनेके कारण मैं जानता हूँ कि मजदूर हरिजनों और गैर-हरिजनोंके बीच भेदभाव जरूर रखते हैं। मैं और सबकी अपेक्षा मजदूरोंसे ये भेदभाव मिटा देनेकी अधिक आशा रखता हूँ। मेरी यह गहरी श्रद्धा रही है कि हम किसी दिन मजदूरोंके द्वारा साम्प्रदायिक अेकता जरूर प्राप्त करेंगे। मैं मजदूरोंको अेकता पैदा करनेका जबरदस्त साधन मानता हूँ। वह महान समता स्थापक है। मजदूरोंमें साम्प्रदायिक फूट होना शर्मकी बात है क्योंकि वे सब अपने पसीनेकी कमाई खाते हैं और अिसलिओ वे सब अेक विशाल भ्रातृ-समाजके अंग हैं। अिसलिओ वे अस्पृश्यताको संपूर्णतः मिटाकर अिसका आरंभ करें। यह साम्प्रदायिक अेकताकी दिशामें अेक बड़ा कदम होगा। अेक बार हरिजनोंके सिरसे अस्पृश्यताका कलंक मिट जायगा तो हिन्दुओं मुसलमानों और दूसरी अन्य जातियोंके बीच व्यापक अेकताका रास्ता खुल जायगा।

हरिजन ८-१२-३३ पृ० ५-६

६३

स्वावलम्बन और परावलम्बन

स्वाश्रयके माने हैं किसीकी भी मददके बिना अपने पाँवों पर खड़े रहनेकी शक्ति। अिसका मतलब यह नहीं कि दूसरोंकी सहायताके संबंधमें मनुष्य लापरवाह हो जाय अथवा अुसका त्याग करे अथवा दूसरोंकी मदद न चाहे या न माँगे। परन्तु दूसरोंकी मदद चाहने पर भी माँगने पर भी यदि वह न मिल सके तो भी जो मनुष्य स्वस्थ रह सकता है, स्वमानकी रक्षा कर सकता है वह स्वाश्रयी है। जो किसान दूसरोंकी मदद मिल सकती हो तो भी स्वयं ही हल जोते, अनाज बोये, फसल काटे, जुताओके औजार तैयार करे, अपने कपड़े आप ही काते, बुने या सीये, अपने लिओ अनाज भी स्वयं तैयार करे और घर भी स्वयं तैयार करे, वह या तो बेवकूफ होगा, अभिमानी होगा अथवा जंगली होगा। स्वाश्रयमें शरीर-श्रम तो आ ही जाता है। अर्थात् प्रत्येक मनुष्यको अपनी आजीविकाके लिओ आवश्यक शरीर-श्रम करना ही चाहिये। अिसलिओ जो मनुष्य आठ घंटे खेतीका काम करता है अुसे जुलाहे, बढ़ई, लुहार आदि कारीगरोंकी मदद लेनेका अधिकार है, अुनसे मदद लेनेका अुसका धर्म है और अुसे वह मदद सहज ही में मिल सकती है। और बढ़ई, लुहार आदि कारीगर वर्ग किसानकी मेहनत लेकर अुससे अनाज प्राप्त कर सकते हैं। जो आज

हाथकी सहायताके बिना ही काम चला लेनेका निराला रखती है वह स्वाश्रयी नहीं है बल्कि अभिमानी है। और जिस प्रकार हमारे शरीरमें हमारे अवयव अपने अपने कार्यमें स्वाश्रयी हैं फिर भी एक-दूसरेकी मदद लेनेके कारण परावलम्बी हैं, वैसे ही हिन्दुस्तान रूपी शरीरके हम लोग तीस कोटि अवयव हैं। सबको अपने अपने क्षेत्रमें स्वाश्रयी बननेका धर्म पालन करना चाहिये और अपनेको राष्ट्रका अंग सिद्ध करनेके लिए एक-दूसरेके साथ मददका विनिमय भी करना चाहिये। यह होगा तभी तो राष्ट्रका विकास हुआ गिना जा सकेगा और तभी हम राष्ट्रवाले गिने जा सकेंगे।

हिन्दी नवजीवन ८-६-'२६ पृ० २६९

६४

नौकरों पर अवलम्बन

घरेलू नौकरोंकी संस्था पुरानी है। परन्तु मालिकका नौकरोंके प्रति रवैया समय-समय पर बदलता रहा है। कुछ लोग नौकरोंको परिवारके आदमी समझते हैं और कुछ उन्हें गुलाम या जंगम संपत्ति मानते हैं। समाजमें सामान्यतः नौकरोंके प्रति समाजका जो रवैया होता है वह इन दो आत्यंतिक विचारोंके बीचमें आ जाता है। आजकल सब जगह नौकरोंकी बड़ी मांग है। उन्हें अपने महत्त्वका पता लग गया है और इसलिए कुदरती तौर पर वे वेतन और नौकरीके बारेमें अपना ही मत रखते हैं। यदि इसके साथ ही उन्हें अपने कर्तव्यका भान हो और वे उसका पालन भी करें तो ठीक हो। उस हालतमें वे नौकर नहीं रहेंगे और अपने लिए परिवारके सदस्योंका दरजा प्राप्त कर लेंगे। परन्तु आजकल तो सबके दिमागोंमें बिगाड़ हो गया है। तब फिर नौकर उचित ढंगसे अपने मालिकके परिवारके सदस्योंका दरजा कैसे प्राप्त कर सकते हैं? यह प्रश्न ऐसा है जो पूछा जा सकता है।

मेरी रायमें जो आदमी दूसरोंका सहयोग चाहता है और उन्हें सहयोग देना चाहता है उसे नौकरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिये। यदि नौकरोंकी तंगीके वक्त किसीको नौकर रखना पड़ता है तो उसे मनमाना वेतन देना पड़ता है और दूसरी सब शर्तें मानना पड़ता है। नतीजा यह होता है कि वह मालिक होनेके बजाय अपने नौकरका नौकर हो जाता है। यह न मालिकके लिये अच्छा है न नौकरके लिए। परन्तु अगर किसी व्यक्तिको दूसरे मानव-बन्धुकी गुलामी नहीं बल्कि सहयोग चाहिये तो वह न केवल अपनी ही सेवा करेगा बल्कि उनकी भी करेगा जिनके सहयोगकी उसे

जरूरत है। अिस सिद्धान्तका विस्तार करनेसे मनुष्यका परिवार अुतना ही विशाल हो जायगा जितना यह संसार है और अपने मानव-बन्धुओंके प्रति अुसके रवयेमें वैसा ही परिवर्तन हो जायगा। वांछित अुद्देश्यकी प्राप्तिका दूसरा कोअी मार्ग नहीं है।

जो अिस सिद्धान्त पर अमल करना चाहता है वह छोटे-छोटे प्रारम्भ करके सन्तोष मान लेगा। मनुष्यमें हजारोंका सहयोग न सकनेकी योग्यता होते हुअे भी अुसमें अितना संयम और स्वाभिमान होना ही चाहिये कि वह अकेला खड़ा रह सके। अैसा व्यक्ति कभी सपनेमें भी किसी आदमीको अपना दास नहीं समझेगा और न अुसे अपने नीचे दबा कर रखनेकी कोशिश करेगा। सच तो यह है कि वह बिल्कुल भूल जायगा कि वह अपने नौकरोंका मालिक है और अुन्हें अपने स्तर पर लानेकी पूरी कोशिश करेगा। दूसरे शब्दोंमें जो चीज दूसरोंको नहीं मिल सके अुसके बिना काम चलाकर अुसे सन्तोष कर लेना चाहिये।

हरिजन १-३-४६ पृ० ४

६५

काम और फुरसतका दर्शन

[श्री महादेव देसाअीके साप्ताहिक पत्र से।]

आजकल गांधीजीसे मिलनेके लिअे जो लोग आते हैं वे ज्यादातर शारीरिक श्रमकी नीरसता अथवा शारीरिक श्रमके गौरव आदिकी ही बातें करते हैं। सादीसे सादी चीजें भी गांधीजीके हाथमें ले लेनेके कारण अब लोगोंको रहस्यमय मालूम पड़ने लगी हैं। वे सोचमें पड़ जाते हैं और पूछते हैं अिसका मतलब क्या होगा? लेकिन सच बात तो यह है कि ग्रामोद्योग संघके अुद्देश्य और कार्यको हरअेक व्यक्ति अपनी निजी संकुचित दृष्टिसे ही देखता है और गांधीजीके अिस नये कार्यक्रमके कारण मुझे अपने जीवनमें क्या क्या फरफार करने पड़ेंगे, हरअेक अिसी बातका विचार करता है।

अेक मित्रने गांधीजीसे पूछा: लोगोंको फुरसतका समय मिलना चाहिये या नहीं अिसका तो आप खयाल ही नहीं करते। गरीब लोग बहुत ज्यादा मेहनत मशक्कत करते रहेंगे तो अुन्हें मानसिक विचार द्वारा बुद्धिको विकास और मनोरंजन द्वारा आनन्द प्राप्त करनेके लिअे समय ही नहीं मिलेगा। पर आप तो अुन्हें और ज्यादा काम करनेकी ही शिक्षा दे रहे हैं।

सचमुच? मैं जिन लोगोंके बारेमें सोच रहा हूं अुनके पास तो अितनी फुरसत है कि अिन बेचारोंकी समझमें ही नहीं आता कि अुसका

क्या अुपयोग करें। अिस फुरसतके ही कारण अुनमें अैसी सुस्ती आ गयी है जिसने अुन्हें निर्जीव पत्थरके समान जड़ बना दिया है। अुनमें अितनी जड़ता आ गयी है कि कितने ही लोग तो जरा-सा हिलना-डुलना भी नहीं चाहते।

जहां जरूरत हो वहां आप लोगोंको जरूर काम पर लगाअिये। पर आप तो अुनसे अपने हाथों अपने चावल और अनाजकी कुटाअी पिसाअी करनेके लिअे भी कहते हैं। क्या यह अुनसे सूखा नीरस काम करानेकी बात नहीं है?

अुन्हें आलस्यमें अपना समय बिताना जितना नीरस मालूम होता है अुससे ज्यादा नीरस यह काम नहीं है। और जब वे यह समझ जायेंगे कि अिससे हमें न सिर्फ कुछ पैसोंकी कमाअी ही हो जाती है बल्कि अिससे हमारी और हमारे देशवासियोंकी तन्दुरुस्ती भी ठीक रहती है तो अुन्हें यह काम नीरस नहीं लगेगा। आधुनिक कल-कारखानोंमें काम करनेसे ज्यादा नीरस तो निश्चय ही यह काम नहीं है। कोअी काम कितना ही नीरस क्यों न हो अगर मनुष्यको अुसमें यह समझनेका आनन्द मिल सकता हो कि मैंने कुछ निर्माण किया है तो अुसे वह नीरस नहीं लगेगा। आप किसी जूतेके कारखानेमें जाअिये। वहां कुछ आदमी जूतेके तले बना रहे होंगे कुछ अूपरी हिस्से और कुछ अन्य काम कर रहे होंगे। वह काम नीरस मालूम देगा क्योंकि वे लोग बुद्धि लगाकर काम नहीं करते। लेकिन जो मोची या चमार स्वयं पूरा जूता बनाता है अुसे अपना काम जरा भी नीरस नहीं मालूम पड़ेगा। क्योंकि अुसके काम पर अुसकी कुशलताकी छाप होगी और अुसे अिस बातका आनन्द होगा कि अपने हाथों मैंने कोअी चीज बनाअी है। कौन काम किस भावनासे किया जाता है अिसका बहुत असर पड़ता है। अपने व्यवहारके लिअे पानी भरने और लकड़ी फाड़नेमें मुझे कोअी आपत्ति न होगी, बशर्ते कि किसीकी जोर-जबरदस्तीसे नहीं बल्कि अपनी बुद्धिसे सोच-समझकर मैं अैसा करूं। कोअी भी श्रम क्यों न हो अगर वह बुद्धिपूर्वक और किसी अूंचे अुद्देश्यको सामने रखकर किया जाय तो वह अुल्लासप्रद बन जाता है और अुससे आनन्द भी प्राप्त होता है।

लेकिन जब आप सारे दिन मनुष्यसे शारीरिक श्रम करते रहने पर ही जोर देते हैं तब क्या अुसकी बुद्धिको जड़ बनानेका जोखिम आप अपने अूपर नहीं ले रहे हैं? आप दिनभरमें कितने घण्टोंका शारीरिक श्रम आवश्यक समझते हैं?

मुझे पूछो तो आठ घण्टे काम करनेमें कोअी आपत्ति नहीं होगी।

म आपकी बात नहीं करता। आप तो आठ घंटे करगा कातकर भी आनन्द प्राप्त कर सकते हैं यह म जानता हू। पर आपकी बात तो अपवादरूप है। क्योंकि आपमें तो जितनी बुद्धि और अुत्साह शक्ति है कि कातनेके समयमें भी आप अुसका बहुत कुछ अुपयोग कर सकते हैं।

नहीं म तो चाहता हू कि प्रत्येक व्यक्ति आठ घंटे मेहनत करके आनन्द प्राप्त करे। सब कुछ काम करनेकी भावना पर निर्भर है। आठ घंटे लगनेके साथ नहीं शारीरिक श्रम करनेके बाद भी बौद्धिक कामोंके लिअ काफी समय बच रहता है। मेरा अुद्देश्य तो जडता और आलस्यको दूर करना है। जब म ससारको यह कह सकूगा कि भारतका हरअेक ग्राम वासी अपने पसीनेसे २० रुपया महीना कमा रहा है तब मुझे परम सतोष प्राप्त होगा।

हरिजनसेवक २२-३-३५ पृ० ३३-३४

६६

फुरसतका मोह

[श्री महादेव देसाओके साप्ताहिक पत्र से।]

कुछ समय पहले मन श्री अल० पी० जैक्सकी फुरसतके समय की यह परिभाषा अद्धृत की थी मनुष्यके जीवनका वह भाग जिसमें अुसकी आत्मा पर अधिकार जमानेके लिअ घोर देवासुर-सग्राम होता है और अनके दिये हुअे आकडो परसे यह दिखानेका प्रयत्न किया था कि फुरसतके समयकी विज्ञान और कला कितनी कठिन है। श्री बरटण्ड रसेल जो प्रत्येक नागरिकके लिअ काफी फुरसतका समय निश्चित करा देनेके लिअ बहुत चिंतित है सिर्फ चार घंटेका शरीर-श्रम रखना चाहते हैं। लेकिन अुस दिन गाधीजीसे बात करते हुअ अेक आदरणीय मित्रने आश्चर्यचकित होकर कहा क्या फुरसतके समयका प्रश्न सचमुच अितना मुश्किल है? आठ घंटे रोजके शारीरिक श्रम पर आप क्या जोर देते हैं? लेकिन सुव्यवस्थित समाजमें क्या यह सभव नहीं कि केवल दो घंटे रोज शरीर-श्रम कराया जाय और बौद्धिक तथा कलात्मक प्रवृत्तियोंके लिअ काफी फुरसतका समय छोड दिया जाय?

हम यह जानते हैं कि श्रमजीवी और मानसिक श्रम करनेवाले दोनो ही वर्गोंके लोग जिन्हें यह सब फुरसतका समय मिलता है अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयोग नहीं करते। सच पूछो तो हमने भी अक्सर खाली दिमाग शैतानका घर का कहावत ही चरितार्थ होते देखी है।

'नहीं, फुरसतका समय हम बेकार नहीं जाने देंगे। मान लीजिये हम दिनमें दो घंटे तो शारीरिक श्रम करें और छह घंटे मानसिक श्रम तो क्या यह राष्ट्रके लिअे हितकर न होगा?'

'मैं नहीं जानता कि आपकी अिस योजना पर कहां तक अमल हो सकेगा। मैंने अिसका हिसाब लगाकर तो नहीं देखा पर अगर कोअी मनुष्य मानसिक श्रम राष्ट्रके लिअे नहीं बल्कि केवल अपने लाभके लिअे करेगा तो मुझे अिसमें संदेह नहीं कि यह योजना विफल ही होगी। हां सरकार अुनसे दो घंटेके शरीर-श्रमके लिअे अेक काफी मजदूरी दे दे और फिर अुन्हें अगर कुछ लिये दूसरा काम करनेके लिअे मजबूर करे तो अलबत्ता वह अेक अच्छी चीज हो सकती है। पर वह तो सरकारकी असी जोर-जबरदस्तीसे आपाम ही हो सकता है जो सब पर अेकसी लागू हो।'

'अुदाहरणके लिअे आप अपनेको ही ले लीजिये। आप आठ घंटेका शारीरिक श्रम तो रोज कर नहीं सकते। आठ घंटे या अिससे भी ज्यादा आपको मानसिक श्रम करना पड़ता है। आप अपने फुरसतके समयका दुरुपयोग तो नहीं करते?'

'यह तो अनिवार्य रूपसे करना पड़ता है। फुरसत अिसमें कहां है? अिस फुरसतमें मैं टेनिस वगैरा खेलने तो नहीं जाता। लेकिन अपने अुदाहरणको लेकर मैं आपसे यह कहूंगा कि अगर हम अपने हाथसे आठ घंटे रोज मेहनत करते होते तो हमारी मानसिक शक्तियोंका अितना अच्छा विकास होता कि जिसका कोअी ठीक नहीं। हमारे मनमें अेक भी निरर्थक विचार न अुठता। यह बात नहीं कि मेरा मन निरर्थक विचारोंसे बेकाम मुक्त हो गया है। आज भी मेरी जो कुछ प्रगति है वह अिस कारण है कि अपने जीवनमें बहुत पहले मैंने श्रमका महत्त्व जान लिया था।'

पर अगर शरीर-श्रमकी स्वभावतः असी महिमा है, तो हमारे यहांके लोग तो आठ घंटेसे भी ज्यादा मेहनत करते हैं। पर अिससे अुनकी मानसिक पवित्रता या दृढ़ता पर असा कोअी अुल्लेखनीय असर तो पड़ा नहीं है?

'केवल शारीरिक या मानसिक श्रम अपने आपमें कोअी चीज नहीं है। हमारे गांवके लोग बिना समझ-बूझ जड़ मशीनकी तरह कुम्हारसे मग्न मेहनत किये जाते हैं और अिससे अुनकी सूक्ष्म सहज बुद्धि निष्प्राण हो जाती है। यही मेरी सबसे हिन्दुस्तानी [illegible] शिकायत है। श्रमजीवी दलके लोगोंका अुद्योग जो काम लिया है वह सबसे और ज्यादा मेहनतका है जिसमें न तो अुन्हें कोअी आनन्द मिलता है और न कोअी दिलचस्पी ही होती है। अगर समाजमें वे सच्चे हिन्दुस्तानी बराबरीके स्थान जाते तो जीवनमें अुनका स्थान आज कहीं अधिक गौरवका होता। यह युग तो

जिसस अगर हमारे आदमियाको रोज अक ही घटा काम करना हो तो आप सतुष्ट हो जायेंग?

यह करके देखना चाहिये। लेकिन मुझ तो अवश्य सतुष्ट हो जाना चाहिये।

यह मुश्किल है। म तो जब तक तमाम आदमियोंके पास काफी अुत्पादक काम यानी रोज आठ घटेका काम न हो तब तक सतुष्ट होनेका नहीं।

लेकिन मुझ आश्चर्य होता है कि आप अिस कमस कम आठ घटेके काम पर क्यो अितना आग्रह कर रहे है?

क्याकि म यह जानता हू कि करोडो आदमी कामके खातिर ही काममें नही लगग। अगर अुन्हें अपन पेटके लिअ काम करनेकी जरूरत न हो तो अुन्हे प्रेरणा ही न मिले। मान लीजिये कि चद करोडपति अेसे निकल आवे और हमारे पास तमाम खान-पीनेकी चीजें भेज देनेके लिअ कहे और हमसे प्रार्थना करे कि आप लोग कोअी काम न करे किन्तु हमें परोपकार वृत्तिसे अपने यहा सदाव्रत खोल लेने दें तो म अुनकी यह बात स्वीकार करनसे साफ अिनकार कर दू।

क्या अिसलिअ कि अुसस आपके आत्म सम्मानको चोट पहुचेगी?

नही सिर्फ अिसी कारणसे नही बल्कि खासकर अिसलिअ कि अुसस हमारे जीवनके अिस मौलिक नियमका मूलोच्छेद होता है कि हमें अपने पेटके लिअ श्रम करना ही चाहिये हमें अपने पसीनकी कमाअीकी ही रोटी खानी चाहिये।

पर यह तो आपका व्यक्तिगत विचार है। क्या आप समाजकी व्यवस्थाको खुद समाज पर ही छोड देंगे या चद अच्छे मार्गदर्शकोके अूपर?

थोडसे अच्छे मार्गदर्शकोके अूपर मुझे समाजकी व्यवस्था छोड देनी चाहिये।

अिसका अर्थ यह हुआ कि आप डिक्टेटरशिप के पक्षमें है?

नही महज अिस कारण कि मेरा मौलिक सिद्धान्त अहिंसा है और मुझे किसी व्यक्ति या समाज पर बलात्कार नही करना चाहिये। मार्गदर्शनका अर्थ डिक्टेटरशिप नही है।

यह बहस न जाने कब तक होती रहती पर गांधीजीके पास और अधिक समय नही था अिसलिअ अुन सज्जनको अुस दिन अितनसे ही सतोष करना पडा।

हरिजनसेवक ७-१२-३५ पृ० ३४१

६८

आर्थिक समानताका अर्थ

गांधीजी मद्रासका दौरा कर रहे थे। अुन दिनों रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलनमें अुनसे पूछा गया: आर्थिक समानतासे आपका ठीक-ठीक अर्थ क्या है?

अुनका जवाब यह था: मेरी कल्पनाकी आर्थिक समानताका अर्थ यह नहीं है कि हरअेकको अक्षरशः अुतनी ही मात्रामें कोअी चीज मिले। अिसका मतलब अितना ही है कि हरअेकको अपनी आवश्यकताके लिअे काफी मिल जाना चाहिये। मिसालके लिअे ठंडके मौसममें ठंडसे बचनेके लिअे मुझे दो शाल लगते हैं, लेकिन मेरे साथ रहनेवाले मेरे पौत्र कनुको गरम कपड़ोंकी कोअी जरूरत नहीं होती। मुझे बकरीका दूध संतरे और दूसरे फल लगते हैं। लेकिन कनुका काम मामूली आहारसे चल जाता है। मुझे कनुसे अीर्षा होती है, लेकिन अुसका कुछ मतलब नहीं। कनु नौजवान है और मैं तो ७६ सालका बूढ़ा हूं। भोजनका मेरा मासिक खर्च कनुसे बहुत ज्यादा है, लेकिन अिसका यह अर्थ नहीं कि हममें कोअी आर्थिक असमानता है। चींटीसे हाथीको हजार गुनी ज्यादा खुराक चाहिये, परन्तु यह असमानताका चिह्न नहीं है। अिस प्रकार आर्थिक समानताका सच्चा अर्थ यह है 'सबको अपनी अपनी जरूरतके अनुसार मिले'। मार्क्सकी व्याख्या भी यही है। यदि अकेला आदमी भी अुतना ही मांगे जितना स्त्री और चार बच्चोंवाला व्यक्ति मांगे, तो यह आर्थिक समानताके सिद्धान्तका भंग होगा।

किसीको यह कहकर अूंचे वर्गों और जन-साधारणके, राजा और रंकके बीचके बड़े भारी अंतरको अुचित बतानेकी कोशिश नहीं करनी चाहिये कि पहलेकी आवश्यकतायें दूसरेसे अधिक हैं। यह व्यर्थकी दलील होगी और मेरे तर्कका मजाक अुड़ाना होगा। अमीर-गरीबके मौजूदा फर्कसे दिलको बड़ा धक्का पहुंचता है। हिन्दुस्तान और संसारके अन्य स्थानोंमें — नगर-निवासी — खासकर ही गरीब ग्रामवासियोंका शोषण करते हैं। वे अन्न पैदा करते हैं और भूखे रहते हैं। वे दूध अुत्पन्न करते हैं और अुनके बच्चे दूधके बिना

रहते है। यह लज्जाजनक बात है। प्रत्येकको संतुलित भोजन, रहनेको अच्छा मकान, बच्चोंकी शिक्षाकी सुविधायें और दवा-दारूकी काफी मदद मिलनी चाहिये। यह है मेरा आर्थिक समानताका चित्र। मैं प्रारम्भिक आवश्यकताओंसे अधिक हर चीजका निषेध नहीं करता, मगर अुसका नम्बर तभी आता है जब पहले गरीबोंकी मुख्य आवश्यकतायें पूरी हो जायें। पहले करने लायक काम पहले ही होने चाहिये।

हरिजन ३१-३-४६ पृ० ६३

६९
आर्थिक समानताके लिअे प्रयत्न

रचनात्मक कामका यह अंग अहिंसापूर्ण स्वराज्यकी मुख्य चाबी है। आर्थिक समानताके लिअे काम करनेका मतलब है पूंजी और मजदूरीके बीचके झगड़ोंको हमेशाके लिअे मिटा देना। अिसका अर्थ यह होता है कि अेक ओरसे जिन मुट्ठीभर पैसेवाले लोगोंके हाथमें राष्ट्रकी संपत्तिका बड़ा भाग अिकट्ठा हो गया है अुनकी संपत्तिको कम करना और दूसरी ओरसे जो करोड़ों लोग अधपेट खाते हैं और नंगे रहते हैं अुनकी संपत्तिमें वृद्धि करना। जब तक मुट्ठीभर धनवानों और करोड़ों भूखे रहनेवालोंके बीच बेअिन्तहा अन्तर बना रहेगा, तब तक अहिंसाकी बुनियाद पर चलनेवाला राज-व्यवस्था कायम नहीं हो सकती। आजाद हिन्दुस्तानमें देशके बड़ेसे बड़े धनिकोंके हाथमें हुकूमतका जितना हिस्सा रहेगा अुतना ही गरीबोंके हाथमें भी होगा, और तब नअी दिल्लीके महलों और अुनकी बगलमें बसी हुअी गरीब मजदूर बस्तियोंके टूटे-फूटे झोपड़ोंके बीच जो दर्दनाक फर्क आज नजर आता है वह अेक दिनको भी नहीं टिकेगा। अगर धनवान लोग अपने धनको और अुसके कारण मिलनेवाली सत्ताको खुद राजी-खुशीसे छोड़कर और सबके कल्याणके लिअे सबके साथ मिलकर बरतनेको तैयार न होंगे, तो यह तय समझिये कि हमारे देशमें हिंसक और खूंखार क्रांति हुअे बिना न रहेगी।

ट्रस्टीशिप या सरपरस्तीके मेरे सिद्धान्तका बहुत मजाक अुड़ाया गया है, फिर भी मैं अुस पर कायम हूं। यह सच है कि अुस तक पहुंचने यानी अुसका पूरा-पूरा अमल करनेका काम कठिन है। क्या अहिंसाकी भी यही हालत नहीं? फिर भी १९२० में हमने यह सीधी चढ़ाअी चढ़नेका निश्चय किया था। अब तक हमने अुसके लिअे जो पुरुषार्थ किया है वह करने जैसा था, अिसे अब हम समझ चुके हैं। अिस पुरुषार्थकी खास बात यह

है कि राजकोटकी लाज और कौन्सिल हमें अधिकाधिक यह जान लेना है कि अहिंसाका तत्त्व किस तरह काम करता है। कांग्रेसवालोंसे यह अुम्मीद की जाती है कि वे सब सजगी और लगनके साथ सचेत रहकर अिस बातका पता लगायें कि अहिंसा क्या चीज है, क्या अुसका व्यवहार करना है और वह किस तरह अपना काम करती है। सबको अिस सवाल पर सोचना है कि आजकी सामाजिक व्यवस्थामें मनुष्य मनुष्यके बीच जो तरह तरहकी असमानतायें मौजूद हैं वे हिंसासे दूर होंगी या अहिंसासे। मेरे खयालमें हिंसाका रास्ता कैसा है, यह हम जानते हैं। अुस रास्ते समानताके मामलेमें कहीं सफलता मिली हमने जानी नहीं।

अहिंसाके जरिये समाजमें हेरफेर करनेके प्रयोग अभी चल रहे हैं और अुनकी तफसील तैयार हो रही है। जिन प्रयोगोंमें प्रत्यक्ष दिखाने जैसा तो कोई खास या बड़ा काम हमने नहीं किया है। मगर यह तय है कि चाल चाहे कितनी ही धीमी क्यों न हो, फिर भी अिस तरीके पर समानताकी दिशामें काम तो शुरू हो चुका है। और चूंकि अहिंसाका रास्ता हृदय-परिवर्तनका रास्ता है, अिसलिअे अुसमें जो भी हेरफेर होते हैं वे कायमी होते हैं। जिस समाज या राष्ट्रकी रचना अहिंसाकी नींव पर हुअी है, वह अपनी अिमारत पर होनेवाले तमाम बाहरी या अन्दरूनी हमलोंका सामना करनेकी ताकत रखता है। राष्ट्रीय कांग्रेसमें धनवान कांग्रेसी भी हैं। अिस मामलेमें पहल करके अुन्होंने औरोंको रास्ता दिखाना है। स्वराज्यकी हमारी यह लड़ाअी हरअेक कांग्रेसीको अिस बातका मौका देती है कि वह अपने दिलकी पूरी गहराअीमें अुतरकर अपने आपको जांचे-परखे। अपनी लड़ाअीके अन्तमें हमें जिस हिन्दुस्तानकी रचना करनी है अुसमें यदि समानताको सिद्ध करना हो, तो अुसकी बुनियादें अभीसे पड़नी चाहियें। जो लोग यह समझ कर चलते हैं कि बड़े-बड़े सुधार तो स्वराज्य कायम होने पर ही होंगे या किये जायेंगे, वे सब जड़से ही अिस बातको समझनेमें गलती करते हैं कि अहिंसक स्वराज्यका काम किस तरह होता है। यह अहिंसक स्वराज्य किसी अच्छे मुहूर्तमें अचानक आसमानसे नहीं टपक पड़ेगा। बल्कि जब हम सब मिलकर अेकसाथ अपनी मेहनतसे अेक-अेक अींट चुनते चलेंगे तभी स्वराज्यकी अिमारत खड़ी हो सकेगी। अिस दिशामें हमने काफी लम्बी और अच्छी मंजिल तय की है। लेकिन स्वराज्यकी संपूर्ण शोभा और सम्पन्नताके दर्शन करनेसे पहले हमको अभी अिससे भी ज्यादा लम्बा और थकानेवाला रास्ता तय करना है। अिसलिअे हरअेक कांग्रेसीको अपने-आपसे यह सवाल पूछना है कि अिस आर्थिक समानताकी स्थापनाके लिअे अुसने क्या किया है?

रचनात्मक कार्यक्रम पृ० ४०–४२ १०५०

आर्थिक समानता प्राप्त करनेकी पद्धतिया — गाधीजीकी और साम्यवादियोकी

[श्री प्यारेलालके 'गाधीजीका साम्यवाद' नामक लेखसे।]

प्र० — आर्थिक समानताके ध्येयको हासिल करनेके लिये आपके तरीके और साम्यवादी या समाजवादी तरीकेमें क्या फर्क है?

अ० — साम्यवादियो और समाजवादियोका कहना है कि आज वे आर्थिक समानताको जन्म देनेके लिअ कुछ नही कर सकते। वे अुसके लिअ प्रचार भर कर सकते ह। अिसके लिअ लोगोमें द्वेष या वैर पैदा करने और अुसे बढानेमें अनका विश्वास है। अुनका कहना है कि राजसत्ता पाने पर वे लोगोसे समानताके सिद्धान्त पर अमल करवायेंगे। मेरी योजनाके अनुसार राज्य प्रजाकी अिच्छाको पूरी करेगा न कि लोगोको आज्ञा देगा या अपनी आज्ञा जबरन् अुन पर लादेगा। म घृणासे नही प्रेमकी शक्तिसे लोगोको अपनी बात समझाअूगा और अहिंसाके द्वारा आर्थिक समानता पैदा करूगा। म सारे समाजको अपने मतका बनाने तक रुकूगा नही — बल्कि अपने घर ही यह प्रयोग शुरू कर दूगा। अिसमें जरा भी शक नही कि अगर म ५० मोटरोका तो क्या १० बीघा जमीनका भी मालिक होअू तो म अपनी कल्पनाकी आर्थिक समानताको जन्म नही दे सकता। असके लिअ मुझे गरीब बन जाना होगा। यही म पिछले ५० सालोसे या असस भी ज्यादा समयसे करता आया हू। अिसीलिअ म पक्का कम्युनिस्ट होनेका दावा करता हू। अगरचे म धनवानो द्वारा दी गयी मोटरो या दूसरे सुभीतासे फायदा अुठाता हू मगर म अुनके वशमें नही हू। अगर आम जनताके हितोका वैसा तकाजा हुआ तो बातकी बातमें म अनको अपनसे दूर हटा सकता हू।

हरिजनसेवक २१-३-४६ पृ ६३-६४

७१

आर्थिक समानताकी प्राप्ति

प्र० — रचनात्मक काम करते हुअे कोअी कैसे आर्थिक समानताका प्रचार कर सकता है? सविनय आज्ञाभंगके कार्यक्रम पर अमल करके आर्थिक समानताकी स्थापना कैसे की जा सकती है?

अु० — आप अिसका प्रचार अवश्य कर सकते हैं, यदि आपकी भाषा सर्वथा अहिंसक हो और आपका तरीका असा न हो जैसा मुझे मालूम है कि कुछ लोगोंने जमींदारों और पूंजीपतियोंकी संपत्ति जबरन् छीन लेनेका प्रचार करके अख्तियार किया है। परन्तु मैंने प्रचार करनेका ज्यादा अच्छा ढंग बता दिया है। रचनात्मक कार्यक्रम देशको अिस ध्येयकी ओर काफी दूर तक ले जाता है। अुसके लिअे यह सबसे अनुकूल समय है। चरखा और अुसके साथके अुद्योग पूरे सफल हो जायं तो अुनसे सामाजिक और आर्थिक नाना तरहकी तमाम असमानताअें लगभग नष्ट हो जायंगी। अहिंसासे लोगोंको जो बल मिलता है अुसके निश्चित बढ़ते हुअे परिणामोंमें और बुद्धिपूर्वक अपनी दासतामें सहयोग देनेसे अिनकार करनेसे आर्थिक समानता अवश्य स्थापित हो जायगी।

हरिजन २५-१-४२ पृ० १६

७२

समान वितरण

रचनात्मक कार्यक्रम* पर अपने पिछले सप्ताहके लेखमें मैंने तेरह अंगोंमें से अेक अंग धनका समान वितरण बताया था।

* हरिजनसेवक १७-८-४० पृ० २२४-२५ रचनात्मक कार्यक्रम किसलिअे ।

रचनात्मक कार्यक्रमके १३ अंगोंके महत्त्वका वर्णन करनेके बाद गांधीजीने स्पष्ट अुपसंहारात्मक परिच्छेदमें कहा :

अगर अिन सबके साथ-साथ आर्थिक समानताका प्रचार न किया गया तो यह सब निकम्मा समझना चाहिये। आर्थिक समानताका यह अर्थ हरगिज नहीं कि हरअेकके पास अेक समान धन होगा। मगर यह अर्थ जरूर है कि हरअेकके पास असा घरबार, वस्त्र और खाने-पीनेका सामान होगा कि जिससे वह सुखसे रह सके। और जो घातक असमानता आज मौजूद है वह केवल अहिंसक अुपायोंसे ही नष्ट होगी। मगर अिस विषयके लिअे अलग लेखकी आवश्यकता है।

समान वितरणका सच्चा अर्थ यह है कि प्रत्येक मनुष्यको अपनी सारी कुदरती जरूरतें पूरी करनेके साधन मिल जायं, अुससे ज्यादा नहीं। अुदाहरणार्थ यदि किसी आदमीका हाजमा कमजोर है और अुसे रोटीके लिअे पावभर आटेकी ही जरूरत है और दूसरेको आधा सेरकी जरूरत है तो दोनोंको अपनी-अपनी आवश्यकताअें पूरी करनेका मौका मिलना चाहिये। अिस आदर्शकी स्थापनाके लिअे सारी समाज-व्यवस्थाकी फिरसे रचना करनी पड़ेगी। अहिंसाके आधार पर बने हुअे समाजका और कोअी आदर्श नहीं हो सकता। शायद हम अिस ध्येयको प्राप्त न भी कर सकें परन्तु हमें अुसे ध्यानमें रखना चाहिये और अुसके निकट पहुंचनेके लिअे सतत काम करते रहना चाहिये। जिस हद तक हम अपने ध्येयकी दिशामें प्रगति करेंगे अुसी हद तक हमें सुख और संतोष प्राप्त होगा और अुतनी ही हद तक हम अहिंसक समाजकी स्थापना करनेमें मदद पहुंचायेंगे।

व्यक्तिके लिअे दूसरोंके असा करनेकी प्रतीक्षा किये बिना अिस प्रकारका जीवन अपनाना पूरी तरह संभव है। और यदि आचरणके किसी खास नियमका पालन अेक व्यक्ति कर सकता है तो अिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्तियोंका समूह भी असा कर सकता है। मेरे लिअे अिस हकीकत पर जोर देना जरूरी है कि कोअी सही रास्ता अख्तियार करनेके लिअे किसीको दूसरोंकी प्रतीक्षा करनेकी आवश्यकता नहीं है। लोगोंको जब असा लगता है कि अुद्देश्यकी सम्पूर्णतः पूर्ति नहीं हो सकती तो वे आम तौर पर अुस दिशामें प्रारंभ करनेमें संकोच करते हैं। अिस प्रकारकी मनोवृत्ति सचमुच प्रगतिमें बाधा पहुंचाती है।

अब हम यह विचार करें कि अहिंसाके जरिये समान वितरण कैसे किया जा सकता है। अिसके लिअे पहली सीढ़ी यह है कि जिसने अिस आदर्शको अपने जीवनका अंग बना लिया है वह अपने निजी जीवनमें आवश्यक परिवर्तन करे। भारतकी दरिद्रताको ध्यानमें रखते हुअे वह अपनी जरूरतें कमसे कम कर लेगा। अुसकी कमाअी बेअीमानीसे मुक्त होगी। वह सट्टेकी अिच्छा छोड़ देगा। अुसका निवासस्थान नअी जीवन-पद्धतिके अनुरूप होगा। जीवनके हर क्षेत्रमें वह संयमसे काम लेगा। जब वह स्वयं अपने जीवनमें यथासंभव सब कुछ कर लेगा तभी अुसकी असी स्थिति होगी कि वह अपने साथियों और पड़ोसियोंमें अिस आदर्शका प्रचार कर सके।

वास्तवमें समान वितरणके अिस सिद्धान्तकी जड़में धनवानोंके अनावश्यक धनकी संरक्षकता या ट्रस्टीशिपका सिद्धान्त होना चाहिये क्योंकि अिस सिद्धान्तके अनुसार वे अपने पड़ोसियोंसे अेक रुपया भी अधिक नहीं रख सकते। यह कैसे किया जाय? अहिंसाके द्वारा? या धनवानोंसे अुनकी संपत्ति छीन कर? असा

करनेके लिअे हमें स्वभावतः हिंसाका आसरा लेना पड़ेगा। अिस हिंसक कारवाअीसे समाजका लाभ नहीं हो सकता। समाज अुलटा घाटेमें रहेगा, क्योंकि अिससे समाज अेक अैसे आदमीके गुणोंसे वंचित रहेगा जो दौलत जमा करना जानता है। अिसलिअे अहिंसक मार्ग प्रत्यक्ष रूपमें श्रेष्ठ है। धनवानके पास अपना धन रहेगा, परन्तु अुसका अुतना ही भाग वह अपने काममें लेगा जितना वह अपनी निजी आवश्यकताओंके लिअे अुचित रूपमें जरूरी समझता है और बाकीको समाजके अुपयोगके लिअे धरोहर समझेगा। अिस तर्कमें यह मान लिया गया है कि संरक्षक प्रामाणिक होगा।

ज्यों ही मनुष्य अपनेको समाजका सेवक समझने लगता है, अुसके खातिर कमाने लगता है और अुसके फायदेके लिअे खर्च करने लगता है, त्यों ही अुसकी कमाअीमें शुद्धता आ जाती है और अुसके साहसमें अहिंसाका प्रवेश हो जाता है। अिसके अतिरिक्त यदि मनुष्योंके मन जीवनकी अिस प्रणालीकी ओर मुड़ जायँ, तो समाजमें अेक शान्तिपूर्ण क्रान्ति हो जायगी और वह भी बिना किसी कटुताके।

यह पूछा जा सकता है कि क्या अितिहासमें किसी भी समय मानव स्वभावमें अैसा परिवर्तन हुआ पाया जाता है। निस्सन्देह अैसे परिवर्तन व्यक्तियोंमें तो हुअे ही हैं। शायद सारे समाजमें अैसे परिवर्तन होनेका अुदाहरण न दिया जा सके। परन्तु अिसका अर्थ अितना ही है कि अब तक बड़े पैमाने पर अहिंसाका कभी प्रयोग नहीं हुआ है। किसी न किसी प्रकार हम लोग अिस गलत विश्वासमें फँस गये हैं कि अहिंसा मुख्यतः व्यक्तियोंका हथियार है और अिसलिअे अुसका प्रयोग व्यक्ति तक ही सीमित रहना चाहिये। असलमें यह बात नहीं है। अहिंसा निश्चित रूपमें समाजका गुण है। अिस सचाअीका लोगोंको पक्का विश्वास करानेके लिअे मेरा प्रयत्न और प्रयोग दोनों चल रहे हैं। आश्चर्योंके अिस युगमें कोअी यह नहीं कहेगा कि नअी होनेके कारण ही कोअी वस्तु या कल्पना निकम्मी है। यह कहना भी कि कठिन होनेके कारण यह असंभव है अिस युगकी भावनाके अनुसार नहीं है। जिन बातोंका सपनेमें भी खयाल नहीं था वे रोज देखी जा रही हैं, असंभव सदा संभव बनता आ रहा है। हिंसाके क्षेत्रमें अिन दिनों होनेवाले दिलचस्प आविष्कार हमें सतत आश्चर्यचकित कर रहे हैं। परन्तु मैं मानता हूँ कि अहिंसाके क्षेत्रमें अिनसे कहीं ज्यादा अकल्पित और असंभव दिखाअी देनेवाले आविष्कार होंगे। धर्मका अितिहास अैसे अुदाहरणोंसे भरा पड़ा है। समाजसे धर्मको जड़से अुखाड़नेका प्रयत्न सर्वथा असंभव है। और यदि अैसा प्रयत्न सफल भी हो जाय तो अिसका अर्थ समाजका विनाश होगा। युग-युगमें अंधविश्वास, कुरीतियाँ और दूसरी त्रुटियाँ धर्ममें घुसकर

कुछ समयके लिअ असे बिगाड देती है। वे आता है और चली जाती है। परतु धम स्थिर बना रहता है क्योंकि विस्तृत अर्थमें संसारका अस्तित्व धम पर ही कायम है। धमकी अतिम व्याख्या औश्वरी कानूनका पालन कहा जा सकती है। औश्वर और असका कानून पर्यायवाची शब्द है। औश्वर अर्थात् अपरिवर्तनशील जीता-जागता कानून। वास्तवमें आज तक किसीने असे नहीं पाया है। परतु अवतारो और पगम्बरोने अपनी तपस्याके बलसे मनुष्य जातिको असु शाश्वत धमकी हलकी-सी झांकी दिखाओी है।

परन्तु यदि अत्यत प्रयत्न करने पर भी धनवान लोग सच्चे अर्थमें गरीबोंके संरक्षक न बनें और गरीब दिन दिन अधिक कुचले जाय और भूखसे मर तब क्या किया जाय?

अिस पहेलीका हल ढूढनेके प्रयत्नमें मुझे अहिंसक असहयोग और सविनय अवज्ञाका सही और अचूक साधन सूझा है। अमीर लोग समाजके गरीबोंके सहयोगके बिना धन सग्रह नहीं कर सकते। मनुष्यको प्रारम्भ ही हिंसासे परिचय रहा है क्योंकि असे यह बल अपने पशु-स्वभावसे उत्तराधिकारमें मिला है। अहिंसाकी शक्तिका भान तो असकी आत्माको तभी हुआ जब वह चौपायकी स्थितिसे अूचा अठकर दोपाय (मनुष्य) की हालतमें पहुचा। अिस भानका विकास असके भीतर धीरे धीरे किन्तु निश्चित रूपमें हुआ है। यदि यह भान गरीबोंके भीतर प्रवेश करके फैल जाय तो वे बलवान हो जायेंगे और अहिंसाके द्वारा अपनको कुचल डालनेवाली अुन असमानताओंसे मुक्त करना सीख लेंगे जिनके कारण वे भुखमरीके किनारे पहुच गये है।

हरिजन २५-८-’४ पृ० २६

७३
मजदूरीकी समानता
[गांधीजीकी पदल यात्राकी डायरी से।]

प्र —जिन लोगोंका सारा व्यापार चौपट हो गया है अुनके लिअ आपकी यह सलाह है कि अुन्हें सद होकर मजदूर बन जाना चाहिये। तब शिक्षा व्यापार और अिसी तरहकी दूसरी बातों पर कौन ध्यान देगा? अगर आप अिस तरह मेहनतके बटवारेको खतम कर दें तो जिससे तहजीब और सभ्यताको नुकसान नहीं पहुचेगा?

अु —सवाल पूछनेवालेने मेरे मतलबको नहीं समझा है। अगर कोओी आदमी अपना पहला व्यापार धधा नहीं चला सकता तो अुसे लाजिमी तौर

पर पाखाना साफ करने या पत्थर फोड़ने जैसा कोअी न कोअी शारीरिक काम करना ही चाहिये। अिसमें अुसकी पसन्द या नापसन्दका कोअी सवाल नहीं। मेहनत या कामके बटवारेमें मेरा विश्वास है। लेकिन मैं अिस बात पर जोर देता हूँ कि सबकी मजदूरी बराबर हो। अेक वकील डॉक्टर या मास्टरको भंगीसे ज्यादा मजदूरी पानेका कोअी हक नहीं। असा होगा तभी कामका बटवारा राष्ट्र या दुनियाको अूपर अुठायेगा। सच्ची तहजीब या सच्चे सुधारका अिससे बहतरीन कोअी रास्ता नहीं। अमूलकी स्पिरिट अिन्सानको जीवन देती है। लेकिन अुसके शब्द अुसे खतम कर देते हैं। हाथीका सिर लगा हुआ गणपति राक्षसकी तरह है लेकिन अेक प्रतिनिधिके नाते वह अूंचा अुठानेवाला प्रतीक है। दस सिरवाला रावण कहानी किस्सका बेवकूफ था लेकिन अगर अुसका मतलब असे आदमीसे हो जो बलबल और जोशमें आकर कुछ भी कर बैठता था, तो वह सचमुच कअी सिरवाला राक्षस था।

हरिजनसेवक २३-३-४७ पृ० ६९

७४
समान वेतन

[गांधीजीकी पैदल यात्राकी डायरी से।]

प्र०—आपने १९४१ में मजदूरी बराबरीके बारेमें लिखा था। क्या आपका यह खयाल है कि सब लोगोंको जो समाजमें अुपयोगी और जरूरी काम करते हैं—चाहे वे किसान हों या भंगी अिंजीनियर हों या हिसाबनवीस डॉक्टर हों या शिक्षक—समान वेतन पानेका नैतिक अधिकार है? बेशक प्रश्नकी तहमें यह बात मान ली गअी है कि शिक्षा या दूसरे खर्च सरकार बरदाश्त करेगी। हमारा सवाल यह है कि क्या सब लोगोंको अपनी निजी आवश्यकताओंके लिअ समान वेतन नहीं मिलना चाहिये? क्या आप नहीं मानते कि अगर हम अिस बराबरीकी कोशिश करें तो वह छुआछूतको दूसरे सब तरीकोंसे जल्दी अुखाड़ फेंकेगी?

अु०—मुझे कोअी शक नहीं कि अगर हिन्दुस्तानको आजादीकी असली जिन्दगी बितानी है जो दुनियाके लिअ अीर्ष्याकी चीज हो तो सब भंगियों डॉक्टरों वकीलों मुदर्रिसों व्यापारियों और दूसरोंको अीमानदारीसे दिनभर काम करनेके बदलेमें बराबर मेहनताना मिलना चाहिये। भले ही हिन्दुस्तानी समाज अुस मंजिल तक कभी न पहुँचे। अगर हिन्दुस्तानको अेक

सुखी देश बनना है तो हर हिन्दुस्तानीका फर्ज है कि वह किसी दूसरकी ओर नहीं बल्कि अुसी मंजिलकी ओर अपने कदम बढ़ाये।

हरिजनसेवक १६-३-४७ पृ० ५६

७५
मन्त्रियोंके वेतन

१

प्र० — अिस बार कांग्रेसी बहुमतवाले प्रान्तोंमें मन्त्रियोंकी वेतन-वृद्धि किन सिद्धान्तों पर की जा रही है? क्या कराचीवाला कांग्रेस प्रस्ताव आजकी परिस्थितिमें लागू नहीं होता? यदि महंगाओके कारण अैसा किया है तो क्या प्रान्तोंके बजटमें अैसी गुंजाअिश सम्भव है कि प्रत्येक सरकारी नौकरका वेतन तिगना किया जा सके? यदि नहीं तो यह क्या अुचित है कि मन्त्री अपने वेतन ५) से १५) कर ले और अेक अध्यापक और चपरासीको यह अुपदेश दिया जाये कि वह अपनी गुजर १२) और १५) माहवारमें करे और शासन प्रबन्धमें कोआी अस्थिरता अुत्पन्न न करे, क्योंकि कांग्रेस शासन चला रही है?

अु० — बात बिलकुल ठीक है कि मन्त्रियोंको १५) क्यों और चपरासी या शिक्षकको १५) क्यों? लेकिन सवाल अुठानेसे ही वह हल नहीं हो जाता। अैसे अन्तरका सिलसिला सनातन-सा है। हाथीको मन क्या और चींटीको कण क्या? अिस सवालमें ही जवाब भरा है। जितनी जिसकी जरूरत है अीश्वर अुसे अुतना दे देता है। मनुष्यकी जरूरत हाथी और चींटीकी-सी स्पष्ट हो सके तो कोअी शंका ही न अुठे। अनुभव तो हमें यही बताता है कि सब मनुष्योंकी जरूरत अेकसी नहीं हो सकती। न सब चींटियोंकी या सब हाथियोंकी होती है। भिन्न भिन्न लोगों और भिन्न भिन्न कौमोंकी जरूरतें अलग-अलग रहती हैं। अिसलिअे आज जो अन्तर है अुसे कमसे कम करनेका शान्तिमय आन्दोलन करें लोकमत बनायें और अब आदर्श सामने रखकर अुसकी ओर कूच करें। जबरदस्तीसे या सत्याग्रहके नामसे दुराग्रह करके परिवर्तन नहीं कर सकेंगे। मन्त्रिगण लोगोंमें से हैं। मन्त्री बननेसे पहले भी अुनकी जरूरतें चपरासियों जैसी नहीं थीं। मैं चाहूंगा कि चपरासी मन्त्रीपदके लायक बनें और तब भी अपनी जरूरतें चपरासी जितनी रखें। अितना समझ लें कि कोअी मन्त्री बंधी हुअी मर्यादा तक तनख्वाह लेनेके लिअे बंधा नहीं है।

प्रश्नकारकी अेक बात सोचने लायक अवश्य है। क्या चपरासी १५) में बिना रिश्वत लिये अपना और कुटुम्बका गुजारा कर सकता है? यदि नहीं तो अुसको काफी मिलना ही चाहिये। अिलाज यह है कि यथासंभव हम अपने अपने चपरासी बनें और अितने पर भी जो आवश्यक हो अुनको अुनकी जरूरतके मुताबिक तनख्वाह दें और अिस तरह मंत्री और चपरासीके जीवनमें जो बड़ा अंतर है अुसे मिटावें।

मंत्रियोंकी तनख्वाह ५००) से १५००) क्या हुआ यह भिन्न प्रश्न है लेकिन मूल प्रश्नके मुकाबलेमें छोटा है। मूल प्रश्न हल हो सके तो छोटा अपने आप हल होता है।

हरिजनसेवक २१-४-४६ पृ० ९६

२

थोड़े दिन हुअे मैंने 'हरिजन' में दूसरी कलमसे अेक पेरा मंत्रियोंकी तनख्वाह बढ़ानेके बारेमें लिखा था। अुसकी मुझे काफी कीमत अदा करनी पड़ी है। बहुत लम्बे-लम्बे खत मेरे पास पहुंचते हैं जिनमें मेरी नासमझी पर दुःख प्रगट किया जाता है और मुझे समझाया जाता है कि मैं अपनी राय बदल दूं। मंत्रियोंकी तनख्वाह पहले ही बहुत ज्यादा है। अुनको और भी बढ़ा देना कहां तक ठीक है, जब कि गरीब चपरासियों और क्लर्कोंको जो सरकारसे मिलता है अुसमें अुनका गुजारा भी नहीं हो पाता। मैंने अपने नोटको फिरसे पढ़ा है और मेरा दावा है कि जो कुछ लेखक चाहते हैं वह सब अुस छोटेसे नोटमें है। पर काफी गलतफहमी न हो अिसलिअे मैं अपना अर्थ स्पष्ट करता हूं।

मुझे ताना मिला है कि मैंने कराचीवाले प्रस्तावको सोचा ही नहीं। मंत्रियोंको जो थोड़ी तनख्वाह लेनी चाहिये सो सिर्फ अिसलिअे नहीं कि कांग्रेसने अेक प्रस्ताव करके हुक्म दिया है बल्कि अुसके लिअे अिससे बहुत अूंचे दरजेके कारण हैं। खैर कुछ भी हो जहां तक मैं जानता हूं कांग्रेसने अुस प्रस्तावको कभी बदला नहीं और वह आज भी अुतना ही लागू होता है जितना कि पास होनेके वक्त होता था।

मैं यह नहीं कहता कि जो तनख्वाह बढ़ाअी गअी है वह ठीक हुआ है। लेकिन मैं मंत्रियोंकी बात सुने बगैर अिसको बुरा भला नहीं कह सकता। टीका करनेवालोंको यह समझ लेना चाहिये कि मेरा अुन पर या अपने सिवा किसी और पर भी काबू नहीं है। न मैं कार्यकारिणी-समितिके साथ जलसोंमें होता हूं। जब सभापति चाहते हैं तभी जाता हूं। मैं तो सिर्फ अपनी राय दे सकता हूं अगर अुसकी कुछ भी कीमत हो। और अुसका

कायम तभी हो सकती है जब वह सोच विचार कर हकीकतके आधार पर दी जाये।

अमीर और गरीबमें अूंची नौकरियों और छोटी नौकरियोंमें भयानक फरकका सवाल अेक अलग विषय है। अिसमें बहुत सोच विचारकी जरूरत है और सम्हालकर अुसमें करना पड़ेगी। थोड़े मंत्रियों और अनेक अफसरियोंकी तनख्वाहोंके सिलसिलेमें लग जाय अिससे निपटारा नहीं हो सकता। सबको अपने अपने महत्त्वके अनुसार निर्णय होना चाहिये। मंत्रियोंकी तनख्वाहोंका सवाल तो मंत्री आप ही हल कर सकते हैं। दूसरा प्रश्न तो अिससे बहुत लम्बा-चौड़ा है और अुसमें बहुत बारीकीसे जांच पड़ताल करनेकी जरूरत होगी। मैं तो यह माननेको हमेशा तैयार हूं कि मंत्रियोंको फौरन ही अपने अपने प्रान्तमें अिस कामको अपने हाथमें लेना चाहिये और सबसे पहले नीचेके नौकरीवालोंकी तनख्वाहों पर सोच विचार करके जहां जरूरी हो तनख्वाह बढ़ा दी जानी चाहिये।

हरिजनसेवक ९-६-४६ पृ० १७६

७६

संरक्षकताका सिद्धान्त

[श्री महादेव देसाईने गांधी-सेवा-संघ-सम्मेलन—३ लगाम।]

संरक्षकताका सिद्धान्त तो मेरी समझमें नहीं आता। क्या आप हमसे इसे समझा सकेंगे? अेक सदस्यने कहा।

गांधीजी : भला कुछ मिनटोंमें मैं अुसे कैसे समझा सकता हूं? और जब कुछ मिनटोंमें मैं अुसे नहीं समझा सकता तो कुछ घंटोंमें भी मैं अुसे समझा सकूंगा या नहीं यह मैं नहीं जानता। फर्ज कीजिये कि विरासतके या अुद्योग व्यवसायके द्वारा मुझे प्रचुर सम्पत्ति मिल गअी तब मुझे यह जानना चाहिये कि वह सब सम्पत्ति मेरी नहीं है बल्कि मेरा तो अुस पर अितना ही अधिकार है कि जिस तरह दूसरे लाखों आदमी गुजर करते हैं अुसी तरह मैं भी अिज्जतके साथ अपना गुजर बसर करूं। मेरी शेष सम्पत्ति पर राष्ट्रका हक है और अुसीके हिताथ अुसका अुपयोग होना आवश्यक है। अिस सिद्धान्तका प्रतिपादन मैंने तब किया था जब कि जमींदारों और राजाओंकी सम्पत्तिके सम्बन्धमें समाजवादी सिद्धान्त देशके सामने आया था। समाजवादी अिन सुविधाप्राप्त वर्गोंका खातमा कर देना चाहते हैं जब कि मैं यह चाहता हूं कि वे (जमींदार और राजा) अपने लोभ और सम्पत्तिके स्वामित्वकी भावनाको छोड़ दें और अपनी सम्पत्तिके बावजूद अुन लोगोंके समकक्ष बन जायें जो मेहनत करके रोजी कमाते हैं। मजदूरोंको भी यह महसूस करना होगा कि मजदूरका काम करनेकी शक्ति पर जितना अधिकार है मालदार आदमीका अपनी सम्पत्ति पर अुससे भी कम है।

‘यह दूसरी बात है कि अिस तरहके सच्चे ट्रस्टी कितने हो सकते हैं। अगर सिद्धान्त ठीक है तो यह बात गौण है कि अुसका पालन अनेक लोग कर सकते हैं या केवल अेक आदमी ही कर सकता है। यह प्रश्न आत्म विश्वासका है। अगर आप अहिंसाके सिद्धान्तको स्वीकार करें तो आपको अुसके अनुसार आचरण करनेकी कोशिश करनी चाहिये। चाहे अुसमें आपको सफलता मिले या असफलता। आप यह तो कह सकते हैं कि अिस पर अमल करना मुश्किल है लेकिन अिस सिद्धान्तमें अैसी कोअी बात नहीं है जिसके लिअे यह कहा जा सके कि वह बुद्धिग्राह्य नहीं है।

हरिजनसेवक ३–६–३९ पृ० १२३

ट्रस्ट क्या है ?

[गांधीजीकी पदल यात्राकी डायरी से ।]

आपन धनवानोंको सरक्षक (ट्रस्टी) बन जानेको कहा है। क्या असका अर्थ यह है कि अन्हें अपनी सपत्तिका निजी स्वामित्व छोड़ देना चाहिये और अुसका असा ट्रस्ट बना देना चाहिये जो कानूनकी नजरमें जायज हो और जिसका प्रबध लोकशाहीके ढगसे हो ? वर्तमान अधिकारीके मरने पर अुसका वारिस कसे तय किया जायगा ?

अिस प्रश्नके अुत्तरमें गांधीजीने कहा धन-सपत्तिके विषयमें मेरे विचार आज भी वही हैं जो वर्षों पहले थे यानी प्रत्यक वस्तु अीश्वरकी है और अीश्वरने ही अुसे बनाया है। अिसलिअ वह असकी सारी मनुष्य-सृष्टिके लिअ है न कि किसी व्यक्ति विशेषके लिअ। यदि किसी व्यक्तिके पास जितना अुसे मिलना चाहिये अससे अधिक हो तो वह असका सरक्षक है यानी असका अुपयोग लोगोंके हितमें होना चाहिये।

अीश्वर सर्वशक्तिमान है अिसलिअ अुसे जमा करके रखनेकी जरूरत नहीं होती। वह नित्य पदा करता है अिसी प्रकार सिद्धान्तके रूपमें मनुष्यको भी रोजका काम रोज चलाना चाहिये और चीजें अिकट्ठी करके नहीं रखना चाहिये। यदि लोग आम तौर पर अिस सत्यको अंगीकार कर ले तो अुसे कानूनी रूप मिल जाय और सरक्षकता कानून-सम्मत संस्था बन जाय। मैं चाहता हूँ कि यह ससारके लिअ भारतकी देन बन जाय। फिर कोअी शोषण नहीं रहेगा और न आस्ट्रेलिया तथा दूसरे देशोंकी तरह गोरों और अुनकी सतानोंके लिअ स्थान सुरक्षित रखना पड़ेगा। अिन भेदभावोंमें अेक युद्धके बीज विद्यमान हैं जो पिछले दोनों युद्धोंसे भी अधिक प्रचण्ड होगा। रही बात अुत्तराधिकारीकी सो अधिकारारूढ़ ट्रस्टीको अपना उत्तराधिकारी नामजद करनेका हक होगा बशर्ते कि कानून अुसे मजूर कर ले।

हरिजन २३-२-४७ पृ० ३७ ३९

संरक्षकताके बारेमें कुछ प्रश्न

प्र० — क्या जो चीज केवल हिंसासे ही प्राप्त की जा सकती है अुसकी रक्षा अहिंसा द्वारा की जा सकती है?

अु० — जो वस्तु हिंसासे हासिल की जाती है अुसकी अहिंसासे रक्षा नहीं की जा सकती। अितना ही नहीं, अहिंसाकी शर्त यह है कि अुस पापकी कमाअीको छोड़ दिया जाय।

प्र० — क्या खुली या छिपी हुअी हिंसाके सिवा और किसी तरह पूंजी अेकत्र करना संभव है?

अु० — खानगी व्यक्तियों द्वारा अिस प्रकारका धन-संचय हिंसक अुपायोंके सिवा और किसी तरह असंभव है, परंतु अहिंसक समाजमें राज्य द्वारा असा संचय संभव ही नहीं है, वांछनीय और अनिवार्य भी है।

प्र० — मनुष्य भौतिक संपत्ति अिकट्ठी करे या नैतिक, परंतु वह करता है समाजके दूसरे सदस्योंकी सहायता या सहयोगसे ही। तो क्या अुसका कुछ भी भाग मुख्यतः व्यक्तिगत लाभके लिअे काममें लेनेका अुसे कोअी नैतिक हक है?

अु० — नहीं, कोअी नैतिक हक नहीं है।

प्र० — किसी संरक्षक (ट्रस्टी) का अुत्तराधिकारी कैसे तय किया जायगा? क्या अुसे किसीके नामका सिर्फ प्रस्ताव करनेका ही अधिकार होगा और अन्तिम निर्णय राज्यके हाथमें रहेगा?

अु० — चुनावका अधिकार प्रथम संरक्षक बननेवाले मूल मालिकको होना चाहिये, परंतु अिस चुनावको अन्तिम रूप राज्य दे। असी व्यवस्थासे राज्य और व्यक्ति दोनों पर अंकुश रहता है।

प्र० — संरक्षकताके सिद्धान्त पर अमल होनेसे जब अिस प्रकार व्यक्तिगत संपत्तिकी जगह सार्वजनिक संपत्ति आ जायगी, तब क्या स्वामित्व राज्यका होगा, जो हिंसाका साधन है, या राज्यके कानूनोंसे अधिकार पानेवाली परन्तु राजी-खुशी और सहकारके आधार पर बनी हुअी पंचायतों और म्युनिसिपालिटियों आदि संस्थाओंका होगा?

अु० — अिस प्रश्नमें विचारोंकी कुछ गड़बड़ है। बदली हुअी सामाजिक स्थितिमें कानूनी स्वामित्व संरक्षकका रहेगा, राज्यका नहीं। राज्य मिल्कियतका

जन न कर और समाजका सवाल ऊन पूंजी या मिल्कियतके साथ मालिककी योग्यता भी समाजके काममें आने अिसलिअ सरक्षकताका सिद्धान्त अमलमें लाया जाता है'। यह भी जरूरी नहीं कि राज्यका आधार सच्ची अहिंसा पर ही हो। सिद्धान्तके रूपमें असा हो सकता है परन्तु अिस सिद्धान्तको कार्यान्वित करनेके लिअ काफी हद तक अहिंसाके आधार पर चलनेवाले राज्यकी जरूरत होगी।

हरिजन १६-२-४७ पृ० २५

७९
मैं क्यों सरक्षकताके सिद्धान्तको तरजीह देता हूं?

[९ और १० नवम्बर १९३४को श्री निर्मलकुमार बोसने गांधीजीके साथ अिस विषयकी चर्चा की थी जिसका गांधीजी द्वारा संशोधित विवरण दि माडर्न रिव्यू के अक्तूबर १९३५ के अंकमें प्रकाशित हुआ था। अस विवरणमें से कुछ प्रश्नोत्तर नीचे दिये जाते हैं।]

प्र० — क्या प्रेम या अहिंसा परिग्रह या शोषणसे किसी भी रूपमें संगत है? यदि परिग्रह और अहिंसा साथ-साथ नहीं रह सकते हैं तो क्या आप जमीन और कारखानोंकी वैयक्तिक मालिकीको अनिवार्य बुराओंके रूपमें अुस समय तक समर्थन करेंगे जब तक लोग जितने अधिक परिपक्व या शिक्षित नहीं हो जाते कि [illegible] अपना काम चला सकें? अगर असा खयाल हो तो [illegible] क्या यह अधिक अच्छा नहीं होगा कि सारी जमीन [illegible] अधिकारमें हो और राज्य जनताके नियंत्रणमें रहे?

अु० — प्रेम और वजनशील परिग्रह एकसाथ कभी नहीं रह सकते। सिद्धान्तके तौर पर जब प्रेम परिपूर्ण होता है तब अपरिग्रह भी परिपूर्ण होना चाहिये। यह शरीर हमारा अन्तिम परिग्रह है। अिसलिअ कोओी मनुष्य केवल तभी संपूर्ण प्रेमका व्यवहारमें ला सकता है और पूर्णतया अपरिग्रही हो सकता है जब कि वह मानव जातिकी सेवाके खातिर मृत्युका आलिंगन करने तथा देहका त्याग करनेके लिअ भी तैयार रहता है। लेकिन यह सिद्धान्तमें ही सत्य है। यथार्थ जीवनमें हम मुश्किलसे ही संपूर्ण प्रेमका व्यवहार कर सकते हैं क्योंकि यह शरीर परिग्रहके रूपमें हमेशा हमारे साथ रहनेवाला है'। मनुष्य सदैव अपूर्ण रहेगा और फिर भी वह सदैव पूर्ण बननेकी कोशिश करेगा। अतअव जब तक हम जीवित रहेंगे तब तक

पूर्ण ब्रह्मचर्य या पूर्ण अपरिग्रह अलभ्य आदर्शके रूपमें ही रहेंगे। परन्तु अुस आदर्शकी ओर बढ़नेकी हमें निरंतर कोशिश करते रहना चाहिये।

जिनके पास आज संपत्ति है अुनसे कहा जाता है कि वे अपनी संपत्तिके ट्रस्टी बन जायं और गरीबोंके खातिर अुसकी रक्षा और सार-संभाल करें। आप कह सकते हैं कि ट्रस्टीशिप या संरक्षकता तो कानूनकी अेक कल्पनामात्र है; व्यवहारमें अुसका कहीं कोओ अस्तित्व नहीं दिखाओ पड़ता। लेकिन यदि लोग अुस पर सतत विचार करें और अुसे आचरणमें अुतारनेकी कोशिश भी करते रहें तो मानव-जातिके जीवनकी नियामक शक्तिके रूपमें प्रेमकी आज जितनी सत्ता दिखाओ देती है अुससे कहीं अधिक दिखाओ देगी। बेशक पूर्ण संरक्षकता तो युक्लिडकी बिन्दुकी व्याख्याकी तरह अेक कल्पना ही है और अुतनी ही अप्राप्य भी है। लेकिन यदि हम अुसके लिअे कोशिश करें तो दुनियामें समानताकी सिद्धिकी दिशामें हम दूसरे किसी अुपायसे जितने आगे जा सकेंगे अुसके बजाय अिस अुपायसे ज्यादा आगे बढ़ सकेंगे।

प्र० — अगर आप कहते हैं कि वैयक्तिक परिग्रहका अहिंसाके साथ कभी मेल नहीं बैठ सकता तो फिर आप अुसे क्यों बरदाश्त करते हैं?

अु० — यह छूट हमें अुन लोगोंके लिअे रखनी होती है, जो धन तो कमाते हैं लेकिन अपनी कमाअीका अुपयोग स्वेच्छासे मानव-जातिकी सेवामें नहीं करना चाहते।

प्र० — तब वैयक्तिक संपत्तिके स्थान पर राज्यके स्वामित्वकी स्थापना करके हिंसाको कमसे कम क्यों न किया जाय?

अु० — यह वैयक्तिक मालिकीसे अधिक अच्छा है। लेकिन हिंसाके सहारे अैसा किया जाय तो यह भी आपत्तिजनक है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि राज्यने पूंजीवादको हिंसाके द्वारा दबानेकी कोशिश की तो वह खुद ही हिंसाके जालमें फंस जायगा और कभी भी अहिंसाका विकास नहीं कर सकेगा। राज्य हिंसाका अेक केन्द्रित और संगठित रूप ही है। व्यक्तिमें आत्मा होती है परन्तु चूंकि राज्य अेक जड़ यंत्रमात्र है अिसलिअे अुसे हिंसासे कभी अलग नहीं किया जा सकता। क्योंकि हिंसा पर ही अुसका अस्तित्व निर्भर करता है। अिसलिअे मैं संरक्षकताके सिद्धान्तको तरजीह देता हूं।

प्र० — हम अेक विशिष्ट अुदाहरण पर आयें। कल्पना कीजिये कि अेक कलाकार कुछ चित्र अपने पुत्रके पास छोड़ जाता है। वह पुत्र राष्ट्रके लिअे अुनका कोओ मूल्य नहीं समझता है अिसलिअे वह अुन्हें बेच देता या बरबाद कर देता है। अिससे राष्ट्र अेक व्यक्तिकी मूर्खताके कारण कुछ बहुमूल्य चित्रोंसे वंचित रहता है। अगर आपको यह विश्वास करा दिया

जाय कि वह पुन अुस अर्थमें सरक्षक कभी नही बन सकेगा जिस अर्थमें आप अुसे बनाना पसद करते हं और असी स्थितिमें राज्य कमसे कम हिंसाका प्रयोग करके वे चित्र असमे छीन ले तो क्या राज्यके अिस कदमको आप अुचित नही मानेंगे?

अु० — हा, राज्य सचमुच अन चित्रोंको छीन लेगा और म मानता हूं कि राज्य यदि अिस काममें कमसे कम हिंसाका अुपयोग करे तो वह न्यायसगत होगा। लेकिन यह डर हमेशा बना रहता है कि कहीं राज्य अन लोगोंके खिलाफ जो असमे मतभेद रखते ह बहुत ज्यादा हिंसाका अुपयोग न करे। सम्बन्धित लोग यदि स्वेच्छासे सरक्षकोंकी तरह व्यवहार करने लगें तो मुझे सचमच बडी खुशी होगी। लेकिन यदि वे असा न करें तो म मानता हूं कि हमें राज्यके द्वारा भरसक कम हिंसाका प्रयोग करके अुनकी सपत्ति ले लेनी पडेगी। अिसी कारणसे मने गोलमेज परिषदमें यह कहा था कि सभी निहित हितवालोंकी सम्पत्तिकी जाच होनी चाहिये और जहा आवश्यक मालूम हो वहा अनकी सम्पत्ति राज्यको — स्थितिके अनुसार मुआवजा देकर या मुआवजा दिये बिना — अपने हाथमें कर लेनी चाहिये।

व्यक्तिगत तौर पर म अिसे ज्यादा पसद करूगा कि राज्यके हाथमें सत्ता केन्द्रित होनेके बजाय सरक्षकताकी भावना समाजमें व्यापक बने। क्योंकि मेरी रायमें राज्यकी हिंसाकी तुलनामें वयक्तिक मालिकीकी हिंसा कम हानिकर है। लेकिन यदि राज्यकी मालिकी अनिवार्य ही हो तो म राज्यकी कमसे कम मालिकीका समर्थन करूगा।

प्र० — तब क्या हम यह समझें कि आपमें और समाजवादियोंमें मौलिक अन्तर यह है कि आपका विश्वास है कि मनुष्य अपने जीवनकी व्यवस्थामें आदतकी अपेक्षा आत्म-निर्देशन या सकल्प-शक्तिसे अधिक प्रेरित होते ह और अुनका विश्वास है कि मनुष्य सकल्प शक्तिकी अपेक्षा आदतसे अधिक प्रेरित होते हैं? क्या अिसी कारणसे आप आत्म-सुधारके लिअे प्रयत्न करते ह जब कि वे असी पद्धतिकी रचनाका प्रयत्न करते ह जिसमें लोगोंके लिअे दूसरोंका शोषण करनेकी अपनी अिच्छाको कार्यान्वित करना असभव हो जायगा?

अु० — यह स्वीकार करते हुअे भी कि मनुष्य वास्तवमें आदतोंके बल पर जीवित रहता है मेरा विचार है कि अुसका अपनी सकल्प-शक्तिको आचरणमें अुतारकर जीना अधिक अच्छा है। म यह भी विश्वास रखता हूं कि मनुष्यमें अपनी सकल्प-शक्तिको अिस हद तक विकसित करनेकी क्षमता है जो शोषणको घटाकर कमसे कम कर दे। म राज्यकी सत्ताकी वृद्धिको बडसे बड भयकी दृष्टिसे देखता हू। क्योंकि जाहिरा तौर पर तो

वह शोषणको कमसे कम करके समाजको लाभ पहुंचाती है, परन्तु मनुष्यके व्यक्तित्वका — जो सब प्रकारकी अुन्नतिकी जड़ है — नष्ट करके वह मानव जातिको बड़ीसे बड़ी हानि पहुंचाता है। हम अैसे कितने ही अुदाहरण जानते हैं जिनमें लोगोंने संरक्षकताको अपनाया है, लेकिन अैसा अेक भी अुदाहरण नहीं है जहां राज्यका अस्तित्व सचमुच गरीबोंके लिअे हो।

प्र० — लेकिन संरक्षकताके अुदाहरणोंके रूपमें आप जिन लोगोंके नाम कभी कभी पेश करते हैं, अुनकी अिस विफलताका कारण क्या आपका व्यक्तिगत प्रभाव ही नहीं है? आपकी कोटिके शिक्षक कभी कभी ही आते हैं। अतअेव यह क्या अधिक अच्छा न होगा कि आप जैसे मनुष्योंके प्रासंगिक आगमन पर निर्भर रहनेके बजाय मनुष्यमें अिन आवश्यक परिवर्तनोंको सिद्ध करनेका काम किसी संगठनको सौंप दिया जाय?

अु० — मेरी बात छोड़ दीजिये। आप तो यह याद रखिये कि मानव जातिके सभी महान शिक्षकोंका प्रभाव अनके जीवनके बाद भी कायम रहा है। मुहम्मद, बुद्ध या अीसाके समान हरअेक पैगम्बरकी शिक्षाओंमें कुछ स्थायी अंश होता है और कुछ अैसा जो तत्कालीन जरूरतोंकी दृष्टिसे लिया गया होता है और अिसलिअे जिसकी अुपयोगिता अुसी कालके लिअे होती है। हम अुनकी शिक्षाके स्थायी पहलूके साथ साथ अस्थायी पहलूको भी पालनेकी कोशिश करते हैं, अिसीलिअे धार्मिक आचारोंमें अितनी विकृतियां पैदा हो जाती हैं। लेकिन यह तो आप देख सकते हैं कि अनकी मृत्युके बाद भी अुनका प्रभाव निरंतर बना रहा है।

अिसके सिवा, मुझे जो बात नापसन्द है वह है बल पर आधारित संगठन। राज्य अैसा ही संगठन है। स्वेच्छापूर्वक किया जानेवाला संगठन जरूर होना चाहिये।

खाओको पाटनेके लिओ पुल

[श्री महादेव देसाआके साप्ताहिक पत्र स मसूर नगरपालिकाके मानपत्र पर गांधीजी द्वारा दिय गय अुत्तरका अक अंश।]

म राजाके महलसे और लखपतिकी शानदार हवेलीसे औष्यां नहीं करता हूं। लेकिन मेरा अुनसे सानरोध निवेदन है कि अुन्हें अुस खाओको पाटनेके लिये कुछ करना चाहिये जो अन्हें किसानोंसे अलग करती है। वे अस पुलका निर्माण करें जो अुन्हें गरीब किसानोंके नजदीक लाय। वे अपना जीवन असा बनायें कि अनके जीवनमें और अुनके आसपासके गरीबोंकी जिन्दगीमें कहीं कुछ मेल तो हो। म अपनी बद्धिके अनुसार अिस पुलको बनानेकी कोशिश कर रहा हूं और म अत्यन्त नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि आप यह पुल आपकी सोनेकी खदानों और भद्रावती जसे कारखानोंसे नहीं बना सकते ह।

यंग अिंडिया ४–८–’२७ पृ० २४२–४३

कानूनी ट्रस्टीशिप

[श्री प्यारेलालके गांधीजीका साम्यवाद नामक लेखसे।]

आजके धनवानोंको वर्ग-संघर्ष और स्वेच्छासे धनके ट्रस्टी बन जानके दो रास्तोंमें से अेक रास्ता चुन लेना होगा। अुन्हें अपनी जायदादकी रक्षाका हक होगा। अुन्हें यह भी हक होगा कि अपने स्वार्थके लिअ नहीं बल्कि देशके भलेके लिअे और अिसलिअे दूसरोंका शोषण किय बिना वे धनको बढ़ानेमें अपनी बद्धिका अुपयोग करें। अुनकी सेवा और अुसके द्वारा होनेवाले समाजके कल्याणको ध्यानमें रखकर राज्य अुन्हें निश्चित कमीशन भी देगा। अनके बच्चे योग्य हुअ तो ही वे अुस जायदादके सरक्षक बन सकेंगे।

खयाल कीजिये कि कल हिन्दुस्तान आजाद हो जाता है, तो अुस हालतमें सारे पूंजीपतियोंको अपने धनके कानूनी ट्रस्टी होनेका मौका दिया जायगा। मगर असा कोअी कानून अन पर अपरसे लादा नहीं जायगा। वह नीचेसे आयगा। जब लोग ट्रस्टीशिपके मानी समझ लेंगे और अिसके लिअे देशमें

वातावरण पैदा हो जायगा तो लोग खुद ग्राम-पंचायतोंसे ऐसे कानून बनायेंगे और उस पर अमल करेंगे। इस तरहकी बात जब नीचेसे पैदा होगी तो सब उसे खुशी-खुशी मंजूर कर लेंगे। ऊपरसे लादने पर वह जड़ चीजके समान बोझिल मालूम होगी।

हरिजनसेवक ३१-३-'४६ पृ० ६३

८२

संरक्षकताका व्यावहारिक फार्मूला

[श्री प्यारेलालके 'गांधीजीका संरक्षकताका सिद्धान्त' नामक लेखसे।]

जेलसे छूटने पर हम लोगोंने इस प्रश्नको आगाखाँ महलकी नजरबन्दी छावनीमें जहाँ छोड़ा था वहाँसे फिर हाथमें लिया। किशोरलालभाई और नरहरिभाई भी संरक्षकताका एक सादा-सीधा और व्यावहारिक फार्मूला तैयार करनेमें शरीक हो गये। वह बापूके सामने रखा गया। उन्होंने उसमें थोड़ेसे फेरबदल किये। अन्तिम मसौदा इस प्रकार है :

१ संरक्षकता (ट्रस्टीशिप) ऐसा साधन प्रदान करता है, जिससे समाजकी मौजूदा पूँजीवादी व्यवस्था समतावादी व्यवस्थामें बदल जाती है। इसमें पूँजीवादको तो गुंजाइश नहीं है, मगर यह वर्तमान पूँजीपति-वर्गको अपना सुधार करनेका मौका देता है। इसका आधार यह श्रद्धा है कि मानव-स्वभाव ऐसा नहीं है, जिसका कभी उद्धार न हो सके।

२ यह संपत्तिके व्यक्तिगत स्वामित्वका कोई हक मंजूर नहीं करता, हाँ उसमें समाज स्वयं अपनी भलाईके लिए किसीको हक दे तो उसे इजाजत दे सकता है।

इसमें धनके स्वामित्व और उपयोगके कानूनी नियमनकी मनाही नहीं है।

४ इस प्रकार राज्य द्वारा नियन्त्रित संरक्षकतामें कोई व्यक्ति अपनी स्वार्थसिद्धिके लिए या समाजके हितके विरुद्ध संपत्ति पर अधिकार रखने या उसका उपयोग करनेके लिए स्वतन्त्र नहीं होगा।

५ जिस प्रकार न्यूनतम जीवन-वेतन निश्चित करनेकी बात कही गयी है, ठीक उसी तरह यह भी तय कर लिया जाना चाहिये कि समाजमें किसी भी व्यक्तिकी ज्यादासे ज्यादा कितनी आमदनी हो।

न्यूनतम और अधिकतम आमदनियोंके बीचका फर्क अुचित न्यायपूर्ण और समय समय पर अिस प्रकार बदलता रहनेवाला होना चाहिये कि अुसका झुकाव अुस फर्कको मिटानेकी तरफ हो।

६ गांधीवादी अर्थ-व्यवस्थामें अुत्पादनका स्वरूप समाजकी जरूरतसे निश्चित होगा न कि व्यक्तिकी सनक या लालचसे।

हरिजन २५–१–५२ पृ ३०१

८३

अहिंसक समाजमें संरक्षकका स्थान

प्र —आपके लेखोंसे यह खयाल होता है कि आपका संरक्षक अेक बहुत सद्भावनाशील परोपकारी और दानदातासे अधिक कुछ नहीं है — वैसा ही जैसे कि प्रथम पारसी बैरोनेट ताता वाडिया बिड़ला और श्री बजाज आदि हैं। क्या यह ठीक है? क्या आप कृपा करके समझा येंगे कि किसी धनवानकी संपत्तिसे लाभ अुठानेका सबसे पहला हक आप किसका समझते हैं? आय और पूंजीके हिस्से या रकमकी वह मर्यादा आप बता सकते हैं जहां तक वह अपने पर अपने रिश्तेदारों पर और सार्व जनिक कामों पर खर्च कर सकता है? जो अिस सीमाका अुल्लंघन करे अुसे अैसा करनेसे रोका जा सकता है? यदि वह संरक्षकके नाते अपनी जिम्मे दारी पूरी करनेके लिअे अयोग्य हो या अन्यथा असफल सिद्ध हो तो क्या वह अुस संपत्तिके लाभके अधिकारी व्यक्ति द्वारा या राज्य द्वारा हटाया जा सकता है और हिसाब देनेको मजबूर किया जा सकता है? क्या राजाओं और जमींदारों पर भी यही सिद्धान्त लागू होते हैं या अुनकी संरक्षकता भिन्न प्रकारकी है?

अु० —यदि संरक्षकताका विचार जोर पकड़ जायगा तो परोपकारको जिस रूपमें हम जानते हैं वैसा वह नहीं रहेगा। जिन जिनके नाम आपने गिनाये हैं अुनमें से जमनालालजी ही अिसके निकट पहुंचे थे परन्तु सिर्फ निकट ही। संरक्षकका जनताके सिवा कोअी अुत्तराधिकारी नहीं होता। अहिंसा पर आधारित राज्यमें संरक्षकोंका कमीशन नियन्त्रित होगा। राजाओं और जमींदारोंका दर्जा दूसरे धनवानोंका-सा ही होगा।

हरिजन १२–४–४२ पृ० ११६

८४

अपने धनका संरक्षक

[श्री महादेवभाअी देसाअीके 'अेक रसिक संवाद—२' 'अेक बहनके प्रश्न' नामक लेखसे।]

प्र० — अहिंसाके सिद्धान्तको माननेवाला क्या धन-दौलत रख सकता है? अगर हां तो अहिंसा द्वारा वह अुसकी रक्षा कैसे करेगा?

अु० — अहिंसावादी अपनी दौलतका मालिक नहीं हो सकता। भले अुसके पास लाखों रुपये हों, मगर वह अपनेको अुस धनका संरक्षक ही समझेगा। अगर चोर या डाकुओंमें जाकर अुसे रहना है, तो कमसे कम सामान अुसे अपने पास रखना होगा। शायद अुसे लंगोटसे ही अुसे संतोष मानना पड़े। अगर वह असा करेगा तो वह चोर-डाकुओंका हृदय जरूर पलट सकेगा।

मगर अितने पर हम कोअी व्यापक सिद्धान्त नहीं बना सकते। अहिंसक राज्यमें तो बहुत कम चोर-डाकू होंगे असा मान लेना चाहिये। व्यक्तिके लिअे यही सहज नियम समझा जाये कि अुसे पूरा अपरिग्रही बनकर रहना है। फर्ज कीजिये कि मैंने जरायम पेशा कहलानेवाली कौमके बीचमें जाकर रहनेका निश्चय किया है तो मुझे चाहिये कि मैं अपने पास कुछ भी न रखूं। खानेको भी अुनसे मांग लूं और अगर वे कुछ न दें तो भूखा रहूं। जब वे देखेंगे कि मैं अुन लोगोंके बीचमें शुद्ध सेवाभावसे ही रहता हूं तो वे मेरे मित्र बन जायेंगे। अिस मनोवृत्तिमें ही सच्ची अहिंसा है।

हरिजनसेवक १४-९-'४० पृ० २६१

अस्तेय और अपरिग्रह

अिन व्रतों पर ज्यादा लिखनेकी जरूरत नहीं। पांच बड़े व्रतोंमें से ये हैं। जो आत्म-दर्शन करना चाहते हैं अनुके लिअ ये व्रत जरूरी हैं। अिसलिअ अिन्हें आश्रमके व्रतोंमें स्थान दिया गया है।

अस्तेय

अिस व्रतके पालनके लिअ सिर्फ अितना ही काफी नहीं है कि दूसरेकी चीज असकी अिजाजतके बिना न ली जाय। जो चीज हमें जिस कामके लिअ मिली हो असुसे ज्यादा समय तक असे काममें लेना यह भी चोरी ही है। अिस व्रतकी बुनियादमें यह सूक्ष्म सत्य है कि परमात्मा प्राणियोंके लिअ हमेशाकी जरूरतकी चीजें ही हमेशा पैदा करता है और अुन्हें देता है। अससे ज्यादा वह पैदा ही नहीं करता। अिसका अर्थ यह हुआ कि अपनी कमसे कम जरूरतसे ज्यादा मनुष्य जितना लेता है वह चोरीका लेता है।

अपरिग्रह या गरीबी

अपरिग्रह अस्तेयके भीतर ही समाया हुआ है। अनावश्यक चीजें जैसे ली नहीं जानी चाहिये वैसे ही अुनका संग्रह भी नहीं होना चाहिये। यानी जिस खुराक या साज-सामानकी हमें जरूरत न हो असुका संग्रह करना अिस व्रतका भंग करना है। जिसका कुर्सीके बिना काम चल सकता है अुसे कुर्सी रखनी ही न चाहिये। अपरिग्रही मनुष्य अपना जीवन हमेशा सादेसे सादा बनाता जाय।

अपरिग्रह और अस्तेय मनकी स्थितियां ही हैं। शरीरके लिअ अुनका पूरा अमल असंभव है। शरीर खुद ही अेक परिग्रह है। और जब तक वह है तब तक दूसरे परिग्रहोंकी आशा रखता ही है। कुछ परिग्रह अनिवार्य है। कुछकी तादाद भी हर मानसिक स्थितिके अनुसार होगी। जैसे जैसे वह अिन व्रतोंकी तरफ मुड़ती जायगी वैसे वैसे मनुष्य शरीरका मोह छोड़ता जायगा और अपनी जरूरतें घटाता जायगा। सबके लिअ अेक ही माप निश्चित नहीं किया जा सकता। चींटीका परिग्रह दूसरा ही होगा। कणसे ज्यादा जमा करनेवाली चींटी परिग्रही है। हजारों कण समा जाय अितनी घास जिस हाथीके सामने पड़ी हो असे परिग्रही नहीं माना जा सकता।

अभी परेशानियोंसे संन्यासकी प्रचलित कल्पना पैदा हुअी मालूम होती है। असे संन्यासका पालन करना आश्रमका ध्येय नहीं। किसीके लिअ जैसा

संन्यास जरूरी भले ही हो। भले किसीमें दिगम्बर बनकर समाधि लगाकर गुफामें बैठकर विचारमात्रसे जगतका कल्याण करनेकी शक्ति हो। पर सभी गुफामें बैठ जायँ तो नतीजा खराब ही होगा। साधारण स्त्री-पुरुषोंके लिअे मानसिक संन्यास ही संभव है। दुनियामें रहते हुअे भी सेवाभावसे और सेवाके लिअे ही जो जीता है वह संन्यासी है।

असा संन्यास सिद्ध करनेकी आश्रमकी आशा है। वह अुसी दिशामें जा रहा है। अिस मानसिक संन्यासमें जरूरी चीजोंका संग्रह रहता है फिर भी परिग्रहमात्रके (शरीर तकके) त्यागकी तैयारी होनी चाहिये। मानो अेक भी वस्तुको जानसे ज्यादा न रखनी चाहिये। और जब तक शरीर है तब तक सेवामें जो काम आये वह किया जाय। खाने-पहननेको मिले तो ठीक, न मिले तो भी ठीक। असी परीक्षाका समय आये तब कोअी आश्रमवासी हारे नहीं।

सत्याग्रह आश्रमका अितिहास पृ० ३८–४० १९५९

८६

अस्तेय-व्रत

[ता० १६–२–१६ को मद्रासमें वाय० अेम० सी० अे० के सभागृहमें दिये गये भाषणसे।]

मैं कहना चाहता हूँ कि अेक दृष्टिसे हम सब चोर हैं। जिस चीजका मेरे लिअे तुरन्त अुपयोग न हो असी चीज अगर मैं लेता हूँ और अुसे अपने पास रख छोड़ता हूँ, तो मैं अुस चीजकी चोरी करता हूँ। मैं यह कहना चाहता हूँ कि बिना किसी अपवादके सृष्टिका यह नियम है कि वह हमारी जरूरतकी चीजें रोज पैदा करती है। और अगर हर आदमी अपनी जरूरत जितना ही ले, अुससे अधिक न ले तो अिस दुनियामें गरीबी न रहे और न कोअी मनुष्य भुखमरीका ही शिकार हो। हमारे बीच यह असमानता मौजूद है अिसका अर्थ ही है कि हम सब चोरी करते हैं। मैं समाजवादी नहीं हूँ। और जिनके पास सम्पत्ति है अुनसे मैं अुसे छीनना भी नहीं चाहता। लेकिन मैं अितना जरूर कहना चाहता हूँ कि हममें से जो लोग अंधकारसे प्रकाशमें आना चाहते हैं अुन्हें जरूर यह अस्तेय-व्रत पालना चाहिये। मैं किसीकी सम्पत्तिका अपहरण नहीं करना चाहता। अगर मैं असा करता हूँ तो अहिंसा धर्मसे विमुख होता हूँ। अगर मेरी अपेक्षा किसी दूसरेक

पास अधिक सम्पत्ति हो। लेकिन मुझे कहना चाहिये कि कमसे कम अपना जीवन व्यवस्थित करनेके लिअे तो मैं जिस चीजकी जरूरत नहीं है वह मैं अपने पास नहीं रख सकता। हिन्दुस्तानमें असे तीस लाख मनुष्य हैं जिन्हें अेक जून खाकर ही संतोष मानना पड़ता है। और वह भी केवल सूखी रोटी और चुटकीभर नमकसे ही। जब तक अिन तीस लाख मनुष्योंको पूरे वस्त्र और भोजन नहीं मिल जाता तब तक आपको और मुझे हमारे पास जो कुछ है अुसे रखनेका अधिकार नहीं। मुझे और आपको जिन्हें अधिक ज्ञान है अपनी जरूरतें नियमित करनी चाहिये और स्वेच्छापूर्वक भूखे भी रहना चाहिये ताकि अिन लोगोंका सेवा-शुश्रूषा भोजन और वस्त्रकी व्यवस्था हो सके। जिसमें से अपने-आप ही अपरिग्रह-व्रतका अुद्भव होता है।

स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज आफ महात्मा गांधी चतुर्थ संस्करण पृ ३७७-८४

८७
अिच्छित गरीबी

[ता २५-९-३१ को लन्दनके गिल्ड हाअुसमें दिये गये भाषणसे।]

जब मैंने अपने-आपको राजनीतिक जीवनकी भंवरोंमें खिंचा हुआ पाया तब मैंने अपने-आपसे पूछा कि मुझे अनैतिकतासे असत्यसे और जिसे राजनीतिक लाभ कहा जाता है अुससे अछूता रहनेके लिअे क्या करना जरूरी है। मैं आपको अपने अिस प्रयत्नकी तफसीलमें नहीं ले जाना चाहता यद्यपि असके सम्बन्धमें मैंने जो कुछ किया वह दिलचस्प है और मेरे लिअे पवित्र भी है — मैं आपसे सिर्फ यह कह सकता हूं कि आरम्भमें मुझे काफी कठिन संघर्षसे गुजरना पड़ा और अपनी पत्नीके साथ तथा जैसा कि मैं खूब स्पष्टतापूर्वक याद कर सकता हूं अपने बच्चोंके साथ भी बहुत झगड़ना पड़ा। लेकिन जो हुआ अुसे जाने दीजिये मतलबकी बात यह है कि मैं अिस दृढ़ निश्चय पर पहुंचा कि यदि मुझे अुन लोगोंकी सेवा करना है जिनके बीच मेरा जीवन आ पड़ा है और जिनकी कठिनाअियोंको मैं दिन प्रतिदिन देखता हूं तो मुझे समूची संपत्ति तथा सारे परिग्रहका त्याग कर देना चाहिये।

मैं आपसे यह नहीं कह सकता कि ज्यों ही मैं अिस निश्चय पर पहुंचा त्यों ही मैंने अेकदम प्रत्येक चीजका परित्याग कर दिया। मुझे आपके सामने

स्वीकार करना चाहिये कि पहले-पहल प्रगति धीमी रही। और अब जब मैं संघर्षके अुन दिनोंको याद करता हूँ तो मैं देखता हूँ कि आरम्भमें यह दुःखद भी था। लेकिन ज्यों ज्यों दिन बीतते गये मैंने महसूस किया कि कभी अन्य चीजोंको भी जिन्हें मैं तब तक अपनी मानता था त्याग करना चाहिये और अब समय आया जब अुन वस्तुओंका त्याग मेरे लिये निश्चित रूपसे हर्षका विषय हो गया। और तब अनेक बाद अब ये सारी वस्तुअें बहुत तेजीसे मुझसे छूटती गयीं। और आपको अपने ये अनुभव सुनाते हुअे मैं कह सकता हूँ कि मेरे कन्धोंसे अेक भारी बोझ अुतर गया। मुझे महसूस हुआ कि अब मैं राहतके साथ चल सकता हूँ तथा अपने बन्धुओंकी सेवाके अपने कार्यको भी अधिक निश्चिन्तता और अधिक प्रसन्नताके साथ कर सकता हूँ। फिर तो किसी भी चीजका परिग्रह मेरे लिअे कष्टदायक और भाररूप बन गया।

अुस हर्षके कारणकी खोज करते हुअे मैंने पाया कि यदि मैं किसी भी चीजको अपनी मानकर अपने पास रखता हूँ तो मुझे अुसकी सारी दुनियासे रक्षा भी करनी पड़ती है। मैंने यह भी देखा कि कभी लोग हैं जिनके पास यह चीज नहीं है यद्यपि वे अुसे चाहते तो हैं और यदि वे भूखे अकाल-पीड़ित लोग मुझे अेकान्त स्थानमें पायें तो वे केवल मेरे पासकी अुस चीजका बँटवारा करके ही सन्तुष्ट नहीं होंगे बल्कि अुसे मुझसे छीन भी लेंगे और अैसी हालतमें मुझे पुलिसकी सहायता भी प्राप्त करनी होगी। मैंने अपने-आपसे कहा : यदि वे अिसे चाहते हैं और लेते हैं तो अैसा वे किसी चौर्यपूर्ण हेतुसे नहीं करते हैं लेकिन वे अैसा अिसलिअे करते हैं कि अुनकी आवश्यकता मेरी आवश्यकतासे कहीं अधिक है।

और तब मैंने अपने-आपसे कहा : परिग्रह अपराध है। मैं तब ही अमुक चीजोंका संग्रह कर सकता हूँ जब मुझे ज्ञात हो कि दूसरे भी जो अुन चीजोंका संग्रह करना चाहते हैं अैसा कर सकते हैं। लेकिन हम जानते हैं — हममें से हरअेक यह अनुभवसे कह सकता है कि अैसा होना असंभव है। अतअेव अेक ही चीज अैसी है जो सबके द्वारा संग्रह की जा सकती है और वह है अ-परिग्रह। दूसरे शब्दोंमें स्वेच्छापूर्ण त्याग।

तब आप मुझे कह सकते हैं : लेकिन जब आप स्वेच्छा-स्वीकृत गरीबी तथा अपरिग्रहके बारेमें बोल रहे हैं अुसी समय हम देखते हैं कि आप अपने शरीर पर कुछ चीजें धारण किये हुअे हैं। और यदि आप जिस चीजके बारेमें मैं अभी कह रहा हूँ अुसके अर्थको अूपरी तौर पर ही समझते हैं तो आपका यह कहना ठीक भी होगा। किन्तु आप अुसके अूपरी अर्थको नहीं आन्तरिक अर्थको समझिये। जब तक आपके पास शरीर है

तब तक आपको शरीरको कुछ-न-कुछ पहनाना भी पड़ेगा लेकिन। तब आप अपने शरीरके लिअे वह सब नहीं लेंगे जो आपको मिल सकता है लेकिन यथासंभव कम लेंगे जितनेसे आपका काम चल जाय अुतना ही लेंगे। आप अपने मकानकी आवश्यकताकी पूर्तिके लिअे अनेक हवेलियां नहीं चाहेंगे बल्कि मामूली झोपड़ीसे ही संतोष कर लेंगे। आपके भोजन आदिके सम्बन्धमें भी यही नियम लागू होगा।

अब आप देख सकते हैं कि आप और हम जिस चीजको सभ्यता समझते हैं और जिस आनन्दपूर्ण तथा अभीष्ट अवस्थाका मैं आपके सामने चित्रण कर रहा हूं अुन दोनोंके बीच संघर्ष है — अैसा संघर्ष जो रोज रोज चल रहा है। दूसरी ओर सभ्यताका आधार आवश्यकताओंकी वृद्धि समझा जाता है। यदि आपके पास अेक कमरा है तो आप दो तीन कमरोंकी अिच्छा करते हैं और जितने अधिक कमरे होंगे हैं अतने ही खुश होते हैं और अिसी तरह आप आपके मकानमें जितना आ सकता हो अतना ही ज्यादा साज-सामान रखनेकी अिच्छा रखते हैं। जिस तरह आप अपनी आवश्यकतायें बढ़ाते रहते हैं और आपकी अिस अिच्छाका कोअी अन्त नहीं होता। और जितना अधिक आप संग्रह करते हैं माना जाता है कि आप अतनी ही अुत्तम संस्कृतिका प्रतिनिधित्व करते हैं। शायद मैं अिसे अुतनी अच्छी तरहसे आपके सामने नहीं रख पा रहा हूं जितना कि मुझे अिस सभ्यताके हिमायती रखेंगे। परन्तु जैसा मैं अिसे समझता हूं अुसी ढंगसे आपके सामने पेश कर रहा हूं।

दूसरी तरफ आप पाते हैं कि जितना कम आप रखते हैं जितना कम चाहते हैं अतने ही आप अधिक अच्छे बनते हैं। अच्छे किसके लिअे? अिस जीवनके सुखभोगके लिअे नहीं लेकिन अपने सहजीवियोंकी अैसे व्यक्तिगत सेवाका सुखका स्वाद लेनेके लिअे जिसके लिअे कि आप अपनी देह बुद्धि और आत्माका अर्पण करते हैं। यह शरीर भी आपका नहीं है। वह आपको अस्थायी परिग्रहके तौर पर दिया गया है। और जिसने दिया है वह अुसे आपसे ले भी सकता है।

अिसलिअे अपनेमें यह अडिग विश्वास रखकर मुझे हमेशा अैसी अिच्छा करना चाहिये कि अीश्वरकी अिच्छाके अनुसार जिस शरीरका भी समर्पण हो और जब तक वह मेरे पास है अिसका अुपयोग विलासमें न हो न भोग-आराममें हो बल्कि सेवाके लिअे ही हो और हमेशा — अपनी जागृतिके हर क्षणमें — सेवाके लिअे ही हो। और यदि यह नियम देहके लिअे सही है, तो फिर वस्त्रादि वस्तुओंके सम्बन्धमें तो कितना ज्यादा सही है?

और जिन्होंने जिस स्वेच्छा-स्वीकृत गरीबीके व्रतका सचमुच यथासंभव सम्पूर्णताकी सीमा तक पालन किया है (सम्पूर्णता तक पहुंचना असंभव है लेकिन मनुष्य जिस सीमा तक जा सकता है अुस सीमा तक), जो जिस आदर्श दशा तक पहुंचे हैं वे गवाही देते हैं कि जब आप अपने संग्रहकी हरअेक चीजका त्याग कर देते हैं तब दुनियाकी सारी धन-सम्पत्ति आपकी हो जाती है। दूसरे शब्दोंमें आपको वे सब वस्तुअें अनायास मिल जाती हैं जो आपके लिअे सचमुच जरूरी हैं। यदि आपको भोजनकी आवश्यकता है, तो आपको भोजन मिल जाता है।

आपमें से कअी स्त्री-पुरुष प्रार्थना करनेवाले हैं और मैंने बहुतसे अैसा कहते सुना है कि अुनकी अन्न-वस्त्रकी आवश्यकताओंकी पूर्ति प्रार्थनाके फलस्वरूप होती है। मेरा अुनकी जिस बातमें विश्वास है। लेकिन मैं चाहता हूं कि आप मेरे साथ अेक कदम और आगे आयें और मेरे साथ विश्वास करें कि जो पृथ्वीकी हरअेक चीजका स्वेच्छापूर्वक त्याग देते हैं — यहां तक कि अपने शरीरको भी अर्थात् जो हरअेक चीजको छोड़नेके लिअे तैयार हैं (और अुन्हें अपनी जिस तैयारीकी जांच बारीकीसे और सख्तीसे करनी चाहिये व अपने विरुद्ध हमेशा प्रतिकूल निर्णय देना चाहिये) — जो जिस व्रतका पूरा-पूरा पालन करते वे सचमुच कभी भी किसी अभावका अनुभव नहीं करते।

अभावका शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जाना चाहिये। पृथ्वीतल पर मैंने ईश्वर जैसा कठोर मालिक नहीं देखा। वह आपकी पूरी पूरी परीक्षा लेता है। और जब आपको असा लगता है कि आपकी श्रद्धा या आपका शरीर आपका साथ नहीं दे रहा है और आपकी नैया डूब रही है तब वह आपकी मददको किसी न किसी तरह पहुंच जाता है और आपको विश्वास करा देता है कि आपको श्रद्धा नहीं छोड़नी चाहिये और यह कि वह आपको संकट पाते ही थामनेको तैयार है, परन्तु आपकी शर्त पर नहीं अपनी ही शर्त पर। मैंने यही पाया है। मुझे अेक भी मौका असा याद नहीं आता जब अैन वक्त पर अुसने मेरा साथ छोड़ दिया हो।

स्पीचेज अण्ड राअिटिंग्ज आफ महात्मा गांधी, चतुर्थ संस्करण, पृ० १०६६

'आशीर्वादरूप गरीबी'

मेरे अक मित्र अच्छे पढे लिखे हैं और पैसे-टकेसे भी काफी सुखी हैं। संसारी भोगोंका भी अुन्होंने खासा अनुभव किया है। अिधर कुछ वर्षोंसे अुन्होंने सभी प्रकारकी सवारियोंका त्याग कर दिया है। वर्षामें जाडेमें धूपमें तन्दुरुस्तीमें बीमारीमें आग्रहपूर्वक अुन्होंने सवारीके त्यागका प्रण निबाहा है। मुझे अुनके अिस प्रण-पालनमें कअी जगह अति जान पडी है। पर अुनके आचरणका निर्णय करनेवाला मैं कौन होता हूं? मुझे वे बराबर चिट्ठी-पत्री लिखते रहते हैं। अुनका अेक पत्र मुझे हरिजन-यात्रामें मिला था। अुसे मैंने हरिजनबन्धु के पाठकोंके लिअे रख छोडा था। अुस पत्रमें से अुन सज्जनके कुछ अनुभव मैं नीचे देता हूं

यों तो मैंने अनेक व्रत ग्रहण किये पर यह पैदल चलनेका व्रत तो मुझे बडा ही आनन्ददायक लगा। अिसमें मुझे अनेक अनुभव प्राप्त हुअे और होते जा रहे हैं। अीश्वर पर मेरी श्रद्धा बहुत बढ गअी है। अहमदाबादसे दो बरस पहले जब मैं भ्रमणके लिअे निकला था तबसे आज मेरी वह श्रद्धा शायद तिगुनी बढ गअी है।

अिस पैदल यात्रामें मैंने गरीबी भी देखी और अमीरी भी। अमीरीमें अधिकतर मैंने मगरूरी ही पायी और अनेक जगह धनवानोंका अमर्यादित या अुच्छृंखल जीवन दिखाअी दिया। अधिकारियोंमें प्राय हुकूमतका मद देखा। और गरीबीमें स्वभावत अीश्वर-परायणता सेवाभाव और संकट झेलनेकी शक्ति देखनेमें आअी। गरीबी प्रभुको प्यारी है अमीरी क्या बिचारी है? अिसका मुझे डग डग पर अनुभव मिला। अीश्वर मुझे हमेशा गरीबी या फकीरीकी ही हालतमें रखे गरीबीमें ही मैं सदा गुजरान करता रहूं। किसी भी चीजको जेबमें रखनेका मुझे मोह न हो। कलके लिअे रोटीका अेक टुकडा रख छोडूं असी परिग्रह-वृत्तिसे भी अीश्वर मुझे दूर रखे। मैं तो अपने रामकी दी हुअी फकीरीमें ही हरदम मगन रहूं।

और क्या देखा संसारी लोगोंमें पापी मनुष्योंके प्रति तिरस्कार। *अरे हममें से कौन अिस दोषसे मुक्त हो सकता है?* पापके प्रति घृणाभाव रखो पापीके प्रति नहीं यह महासूत्र भी मेरी समझमें आ गया।

अिन सज्जनने गुजरातसे लेकर ठेठ अुत्तर तक — देहरादूनसे भी आगे — पैदल यात्रा की है। सैकडों गांवोंसे ये गुजरे और गांववालोंके संपर्कमें आये

है। अिसलिअ अुनका यात्रानुभव आदरणीय है। सभी देशों और सभी युगोंके पुरुषोंको पद-पर्यटन तथा अपरिग्रहके चमत्कारका असा ही अनुभव हुआ है। थोरोकी पद्यात्राकी स्तुति पुस्तक 'वाल्डेन' को कौन नहीं जानता? संसारके जिन महान सुधारकोंने समय समय पर धर्ममें संशोधन किये हैं अुन्होंने शायद ही सवारीका अुपयोग किया हो। अुन्होंने तो हजारों कोस पैदल चलकर ही अपने धर्मचक्रका प्रवर्तन किया था। आज हवाओ जहाजमें बैठकर अेक जगहसे दूसरी जगह अुड़नेवाले मनुष्योंसे जो नहीं हो सकता, अुस कामको हमारे पूर्वजोंने निश्चय ही किया था। 'अुतावला सो बावरा, धीर सो गंभीर'—ठीक असी ही अेक कहावत* अंग्रेजोंमें भी है। ये कहावतें जिस तरह पूर्वकालमें सच्ची थीं अुसी तरह आज भी हैं।

हरिजनसेवक ५-१०-३४ पृ० ३२४-२५

८९

धनिकोंका प्रश्न

[श्री महादेव देसाओके साप्ताहिक पत्र से।]

पीअर सेरेसोल[1] और जॉ विल्किन्सन[2] को २३ जूनको यूरोप जाना था, अिसलिअ वर्धासे बम्बअी तक वे हमारे साथ ही आये। वर्धामें सेरेसोल्को अेक असी पुस्तक पढ़नी थी जिसमें कम्युनिस्ट लेखकने अहिंसा सिद्धान्तकी आलोचना की थी। सेरेसोल्ने कहा, "मुझे अिस आलोचनाकी परवाह नहीं। लेखककी कुछ दलीलोंके साथ तो मैं भी सहमत हूँ। पर यह बात किसी तरह मेरी समझमें नहीं आ रही है कि ये साम्यवादी लोग बिलकुल ही असत्य और सत्यके विकृत रूपको पेश करके अपनी स्थितिके समर्थनका प्रयत्न आखिर किसलिअे कर रहे हैं। मुझे यह देखकर दुःख होता है कि अिस पुस्तकमें निरा असत्य ही असत्य भरा हुआ है। गांधीके सिद्धान्तके परिणामस्वरूप पूंजीवादके साथ अेक बुरी तरहका समझौता करना पड़ता है—यह कहकर संतोष माननेके बजाय यह आदमी कहता गया है कि गांधी गरीब लोगोंके साथ प्रेमभाव दिखानेका ढोंग रचता है और

* Not mad rush but unperturbed calmness brings wisdom

१ आन्तरराष्ट्रीय सेवासंघके संस्थापक अध्यक्ष।

२ दीनबंधु अेण्ड्रूजके कहनेसे ये भाओी बिहार भूकम्प-पीड़ित लोगोंकी सहायताके लिअे सेरेसोल्के साथ आये थे।

धनिकोंके प्रति असका जो सच्चा प्रेम है असे वह अिस ढोंगके ढकनसे ढांक रहता है और अिस तरह पूंजीवादको टिकाये हुअे है। पूंजीवाद और पूंजीपतियोंके साथ हमारा क्या सम्बन्ध है अिस विषयकी शंकायें तो मेरे मनमें भी भरी हुअी हैं। मगर यह असत्य तो मेरी समझमें आ ही नहीं सकता। रेल्में सेरेसोल्ने अपनी अिस विषयकी कुछ शंकाओंको गांधीजीके आगे खूब सोच विचार कर रखा।

धनिकोंके लिअे अनके रहन-सहनका कोअी नियम क्या हम निश्चित कर सकते हैं? अर्थात् क्या यह निश्चित किया जा सकता है कि धनिकोंका अधिकार कितने धन पर हो और कितने पर नहीं?

गांधीजीने मुस्कराते हुअे कहा, हां, यह निश्चित किया जा सकता है। धनी मनुष्य अपने खर्चके लिअे अपनी सम्पत्तिका पांच प्रतिशत या दस प्रतिशत अथवा पंद्रह प्रतिशत भाग ले सकता है।

पर ८५ प्रतिशत तो नहीं?

मैं तो २५ प्रतिशत तक जानेका विचार कर रहा था। पर ८५ प्रतिशत लेनेका विचार तो अेक लुटेरेको भी नहीं करना चाहिये।

पीअर सेरेसोल्की असली कठिनाअी यह थी कि धनिकके गलेसे यह बात अुतारनेके लिअे हमें कब तक राह देखनी चाहिये।

गांधीजीने कहा, यहीं साम्यवादियोंके साथ मेरा मतभेद है। मेरी अंतिम कसौटी अहिंसा है। हमें यह हमेशा याद रखना चाहिये कि अेक दिन हम लोग भी धनिकों जैसी ही स्थितिमें थे। हमें अपनी संपत्तिका त्याग करना आसान नहीं मालूम हुआ था। हमने जिस तरह स्वयं अपने प्रति धीरज रखा अुसी तरह हमें दूसरोंके प्रति भी रखना चाहिये। अिसके अतिरिक्त मुझे यह मान लेनेका कोअी हक नहीं कि मैं सच्चा हूं और वह धनी झूठा है। जब तक मैं असके गले अपनी बात नहीं अुतार सकता तब तक मुझे राह देखनी ही चाहिये। अिस बीचमें अगर वह कहे कि मैं २५ प्रतिशत अपने लिअे रखकर बाकीका ७५ प्रतिशत परोपकारके कामोंमें लगानेको तैयार हूं, तो मैं असकी बात मान लूंगा। क्योंकि मैं जानता हूं कि संगीनके भयसे लिये हुअे १० प्रतिशत धनसे स्वेच्छापूर्वक लिया हुआ ७५ प्रतिशतका यह दान कहीं अच्छा है। अहिंसाका अंचल तो हम दोनोंको ही पकड़ रखना चाहिये।

अिस पर शायद आप यह कहें कि जो मनुष्य आज बलात्कारसे अपना धन सुपुर्द कर देता है वह कल अपनी अिच्छासे अिस स्थितिको कबूल कर लेगा। यह संभावना मुझे बहुत दूरकी मालूम होती है और अिस पर मैं अधिक निर्भर नहीं करता। अितनी बात पक्की है कि यदि

मैं आज हिंसाका अुपभोग करता हूँ तो कल निश्चय ही मुझे अधिक भारी हिंसाका सामना करना पड़ेगा। अहिंसाको अगर हम जीवनका नियम बना लेते हैं तो अिसमें संदेह नहीं कि जीवनमें हमें अनेक समझौते करने पड़ेंगे। किन्तु अनन्त अखण्ड कलहकी अपेक्षा यह स्थिति अधिक अच्छी है।'

'धनी मनुष्यकी न्याय्य स्थितिका वर्णन अेक शब्दमें आप किस प्रकार करेंगे?'

"वह ट्रस्टी है। मैं अैसे कितने ही मित्रोंको जानता हूँ जो गरीबोंके लिअे पैसा कमाते हैं और खर्च करते हैं और खुदको अपनी संपत्तिका स्वामी नहीं किन्तु ट्रस्टी मानते हैं।'

'मेरे भी कुछ अमीर और गरीब मित्र हैं। मैं खुद अपने पास कोअी संपत्ति नहीं रखता, पर मेरे धनी मित्र जो धन मुझे देते हैं अुसे मैं स्वीकार कर लेता हूँ। अिस बातको मैं किस तरह अुचित मान सकता हूँ?'

'आप खुद अपने लिअे कुछ भी स्वीकार न करें। सैर-सपाटेकी गरजसे स्विट्जरलैण्ड जानेके लिअे आप कोअी चैक स्वीकार न करें, पर हरिजनोंके लिअे कुअें, स्कूल अथवा औषधालय बनवानेके लिअे आप लाखों रुपये भी स्वीकार कर लें। स्वार्थकी भावना छोड़ देनेसे यह प्रश्न सहज ही हल हो जाता है।'

'पर मेरा निजी खर्च कैसे चलेगा?'

'आपको अिस सिद्धान्तके अनुसार चलना होगा कि हरअेक मजदूरको समान मजदूरी मिलनी चाहिये। आपको अपनी कमसे कम मजदूरी लेनेमें कोअी संकोच नहीं होना चाहिये। हम सब यही तो करते हैं। भणसालीकी मजदूरी केवल गेहूँका आटा और नीमकी पत्तियाँ हैं। हम सब भणसाली तो नहीं हो सकते। लेकिन वे जैसी जिन्दगी बसर कर रहे हैं अुसके नजदीक पहुँचनेका प्रयत्न तो हम कर ही सकते हैं। मैं अपनी आजीविका प्राप्त करके संतोष मान लूँगा, पर मैं किसी धनी आदमीसे यह सिफारिश नहीं कर सकता कि वह मेरे लड़केको अपने यहाँ किसी अच्छी जगह पर रख ले। मुझे तो अितनी ही चिन्ता रखनेकी जरूरत है कि जब तक मैं समाजकी सेवा करता रहूँ, तब तक मेरा यह शरीर टिका रहे।'

'किन्तु जब तक मैं किसी धनवानसे अपने निर्वाहका खर्च लेता हूँ, तब तक निरंतर अुससे यह कहते रहना क्या मेरा कर्तव्य नहीं है कि तुम्हारी स्थिति किसीके लिअे अीर्षाकी चीज नहीं है और तुम्हारी आजीविका पर जितना खर्च होता है अुसके सिवा बाकीकी सम्पत्ति परसे तुम्हें अपना स्वामित्व हटा लेना चाहिये?'

हा अवश्य असा कहना आपका कतव्य है।

पर ये धनी मनुष्य भी सब अेक समान थोड ही होते ह? अुनमें से कुछ तो शराबके व्यापारसे मालामाल बन जात ह।

हा भेद आप अवश्य करे। आप खुद कलवारका पसा न लें पर आपन अगर किसी सेवाकायके लिअ धनकी अपील निकाली हो तो आप क्या करेग? क्या आप लोगोसे यह कहते फिरेग कि जिन्होन न्यायके पथ पर चलकर पसा कमाया हो वे ही अिस फण्डमें पसा दें? अिस बात पर अेक पाओीकी भी आशा रखनके बजाय म अपीलको ही वापस ले लेना पसन्द करूगा। यह निणय करनवाला कौन है कि अमुक मनुष्य धमवान है और अमुक अधर्मी। और धम भी तो अेक सापेक्ष वस्तु है। हम अपन ही दिलसे पूछें तो पता चलेगा कि हम आजीवन धम या न्यायका अनुसरण करके नही चले। गीतामें कहा है कि सबका अेक ही लेखा है अिसलिअ दूसराके गुण दोष देखते फिरनके बजाय दुनियामें अलिप्त बनकर रहो। अहभावका नाश ही सच्चा जीवन रहस्य है।

सेरेसोलन कहा ठीक अिसे म समझता हू। और थोडा देर वे शात रहे। फिर आह भरकर अुन्होन कहा पर कभी कभी स्थिति अत्यन्त कठिन कर मालूम होती है। बिहारमें म कुछ असे आदमियोसे मिला हू जो दो आनसे भी कम और कभी कभी तो अेक आनसे भी कमकी मजदूरीके लिअ सवेरेसे शाम तक जी-तोड परिश्रम करते ह। अुन लोगोन मुझ अक्सर यह कहा है कि अमीर आदमी आज अन्यायका पसा जोड जोडकर खूब मौज अडा रहे ह क्या ही अच्छा हो कि अनसे यह पसा छीन लिया जाय। म यह सुनकर अवाक हो जाता था और आपकी याद दिलाकर अुनका मुह बन्द कर दिया करता था।

सेरेसोलकी सभी शकाओका समाधान तो नही हुआ। तमाम दिन काम करनके बाद गाधीजीको मारे थकानके नीद आ रही थी नही तो सेरेसोलकी बातोका सिलसिला जारी ही रहता। पर अुन्होन अपनी मनोदशाका जिस वेदनाके साथ आग रखा और अिस प्रश्नकी चर्चा करत हुअ अनके चेहरे पर जो विषादकी रेखा दिखाओी देती थी अुसे देखकर असा लगता था कि यह हो नही सकता कि अन्यायकी असी असी बातें सुनकर किसीके अतरको चोट न पहुचे। अुन्हे अितना तो प्रकट ही हो गया कि यह प्रश्न अतमें अहिंसाका बन जाता है और तब यह सवाल हमारे सामन आ जाता है कि अहिंसाके पालनमें हम कहा तक आग बढनको तयार ह।

हरिजनसेवक ७-६-३५ पृ १२६-२७

९०

धनी संरक्षक हैं

अेक मित्र लिखते हैं

'आपको यह जानकर खुशी होगी कि धनियोंकी संरक्षकता (ट्रस्टीशिप) के बारेमें आपके जो विचार हैं अुनकी कल्पना १३०० वर्ष पूर्व भी की गअी थी। पवित्र ग्रंथ हदीसमें अिस आशयका पद्य है—'लोगोंके पास जो कुछ धन-दौलत है वह मेरी सम्पत्ति है क्योंकि गरीब मेरे बच्चे हैं और धनी अुनके पास जो धन-दौलत है अुसके संरक्षक। अिसलिअे जो धनी मेरे गरीब बच्चोंकी आराम खर्च नहीं करेंगे अुन्हें मैं दोजख (नरक) में भेज दूंगा जहां अुनकी कोअी सार-सम्हाल नहीं होगा।

यह पत्र गुजरातीमें है और अुसमें किसी अखबारसे लिया हुआ जिसका नाम नहीं दिया गया है वह सारा पद्य गुजराती लिपिमें अुसके गुजराती अनुवादके साथ लिया हुआ है। देवनागरी लिपिमें अुसका अविकल रूप अिस प्रकार है

अल मानु मारी बन फकराओ अयाली बल अग्नियाओ बकलाआ कमन बतलाय मारो अला अमाला अुदखलहुमार बला अुवाली।'

पाठकोंको यह जानकर आश्चर्य होगा कि गुजराती पाठक पच्चीस प्रतिशत शब्दोंको आसानीसे समझ लेते हैं यानी अुनकी भाषामें वे प्रचलित हैं।

हरिजनसेवक ३०-९-३९ पृ० २६३

९१

अच्छिक गरीबी बनाम धनवानोंकी संरक्षकता

प्र०—धर्ममय अुपायोंसे लाखों रुपये कम कमाये जा सकते हैं? स्व० श्री जमनालालजी जो अुत्तम व्यवसायी थे कहा करते थे कि धन कमानेमें पाप तो होता ही है। धनिक कितना ही सज्जन क्यों न हो वह अपने कमाये हुअे धनमें से अपनी सच्ची जरूरतसे कुछ अधिक तो खर्च कर ही डालता है। यह भी पाप है। अिसलिअे ट्रस्टी बननेकी बात छोड़कर धनवान न बनने पर ही जोर क्यों न दिया जाय?

अु०—प्रश्न अच्छा है। अिससे पहले भी यह सवाल पूछा जा चुका है। जमनालालजीने जो यह कहा कि धन कमानेमें पाप तो है ही वह ठीक कहा ही है जैसा गीतामें कहा गया है कि आरम्भमात्र दोषपूर्ण है। मेरा यह विश्वास

है कि जानबूझकर पाप न करते हुए भी धन कमाया जा सकता है। अदाहरणके लिअ अगर मुझे अपनी अक अकड़ जमीनमें सोनेकी कोअी खान मिल जाय तो मैं धनवान बन जाअूँगा। पर धनवान न बनने पर तो मेरा जोर है ही। मैं जो धन कमाना छोड़ दिया अुसका मतलब ही यह है कि धनी लोग अपने धनका अपयोग सेवाके लिअ करें। यह भी ठीक है कि धन वाले भरसक कोशिश करने पर भी अक्सर अपने गरीब साथियोंके मुकाबले कुछ ज्यादा ही खर्च कर डालेंगे। लेकिन यह कोअी नियम नहीं है। आम तौर पर स्व० जमनालालजी मध्यम श्रेणीके अनेक लोगोंकी और अपने साथियोंकी तुलनामें कम ही खर्च करते थे। मैंने असे सैकड़ों धनवानोंको देखा है जो अपने लिअ बड़े कंजूस होते हैं। वे जैसे तैसे अपना गुजारा करते हैं। यह भी नहीं कि जिसमें वे किसी तरहका गौरव अनुभव करते हैं। अपने अूपर कम खर्च करनेका अनका अेक स्वभाव ही बन जाता है।

धनवानोंके दृष्टिकोणके बारेमें भी मुझे यही कहना है। मेरा आशय तो यह है कि धनवान लोग अपनी सन्तानके लिअ धनके रूपमें कुछ न छोड़ें। हां अनको अच्छी शिक्षा दें रोजगार धंधेके लिअ तैयार करें और स्वावलम्बी बना दें। परन्तु दुःख तो यह है कि वे असा नहीं करते। अुनके बालक पढ़ते हैं गरीबीकी महिमा भी गाते हैं लेकिन अपने लिअ वे अधिकसे अधिक धन चाहते हैं। असी हालतमें मैं अपनी व्यावहारिक बुद्धिका अुपयोग करके अुन्हें वही सलाह देता हूं जो अनके बसकी होती है। हम लोगोंका जो गरीबीको पसन्द करते हैं अुसे अपना धर्म मानते हैं और अधिक समानताके हामी हैं धनवानोंसे द्वेष न करना चाहिये। यदि वे अपने धनका सदुपयोग करते हैं तो असेसे हमें संतोष होना चाहिये। साथ ही हमें यह श्रद्धा रखनी चाहिये कि अगर हम अपनी गरीबीमें सुखी और आनन्दित रहेंगे तो धनवान लोग भी हमारी नकल करेंगे। सच तो यह है कि गरीबीमें धर्मका दर्शन करनेवाले और मित्रोंके पर भी धनका त्याग करनेवाले लोग दुनियामें गिनगिने ही पाये जाते हैं। अिसलिअ हमें अपने जीवनके द्वारा यह सिद्ध कर दिखाना होगा कि असलमें धर्मके रूपमें स्वीकार की गयी गरीबी ही सच्ची सम्पत्ति है।

हरिजनसेवक १-३-४२ पृ ६२

९२

गरीबोंके संरक्षक और सेवक बनें

[७ मार्च १९३१ को दिल्लीमें भारतीय व्यापारी-मंडलके सम्मुख दिये गये गांधीजीके भाषणसे।]

आपके अध्यक्ष महोदयने कांग्रेसकी बहुत तारीफ की है और साथ ही अुन्होंने यह भी सुझाया है कि आर्थिक मामलोंमें कोओ भी निर्णय करनेसे पहले कांग्रेसको व्यापारी-विशेषज्ञोंका अभिप्राय ले लेना चाहिये। मैं अिस सुझावका स्वागत करता हूँ। कांग्रेस हमेशा आपकी सलाह और सहायता पानेको अुत्सुक रहेगी। लेकिन मुझे आपसे कहना चाहिये कि कांग्रेस किसी अेक खास वर्गकी संस्था नहीं है। वह तो सभी वर्गोंकी है। मगर चूँकि हिन्दुस्तानकी आबादी खास ज्यादा किसानोंकी है अिसलिअे वह किसानोंकी प्रतिनिधि बनना चाहती है। कांग्रेसको दरअसल हिन्दुस्तानके गरीबोंका ही प्रतिनिधित्व करना चाहिये। लेकिन अिसका यह अर्थ नहीं कि और सब वर्गों — मध्यम वर्ग, व्यापारी वर्ग या जमींदारों — का नाश करके गरीबोंका हित साधना है। अिसका अर्थ मात्र अितना ही है कि दूसरे सब वर्गोंको गरीबोंके हितके अनुकूल होकर रहना है। कांग्रेस हिन्दुस्तानमें व्यापार अुद्योगकी अुन्नति चाहती है। अिसके लिअे वह सतत प्रयत्नशील है। धीरे धीरे व्यापारी वर्ग कांग्रेसकी ओर आकृष्ट होता चला आ रहा है। पिछले वर्ष व्यापारियोंने आन्दोलनमें जो मदद दी है वह स्तुत्य है। मुझे भी आपने निमंत्रण देकर जो आज यहाँ बुलाया है वह मेरे नेताके कारण नहीं बल्कि अिसलिअे कि मैं कांग्रेसका नम्र सेवक हूँ और दरिद्र-नारायणका प्रतिनिधि हूँ। व्यापारी वर्गकी ओरसे की गयी सेवाओंको मैं भूल नहीं सकता। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप अेक कदम और आगे बढ़ें। आप कांग्रेसको अपनाअिये, अुसे अपनी बना लीजिये, तो हम खुशी खुशी आपके हाथोंमें अुसकी लगाम सौंप देंगे। यह काम आपके हाथों ज्यादा अच्छी तरह होगा। लेकिन कांग्रेसकी लगाम आप अपने हाथमें अिसी शर्त पर ले सकेंगे कि आप अपनेको गरीबोंके संरक्षक और सेवक समझें या पंडित मालवीयजीके शब्दोंमें कहूँ तो आपको [illegible] थोड़ा पाकर संतोष मानना चाहिये। आप कहेंगे कि यह असम्भव है। लेकिन अैसी बात नहीं। शुद्ध नीतिसे व्यापार करनेवाले अनेक मित्रोंको मैं जानता हूँ। अब यह खुली बात है कि आप चाहें तो आसानीसे कांग्रेसकी बागडोर अपने हाथमें ले सकते हैं। आप जानते हैं कि कांग्रेसके विधानमें अैसा कोओ [illegible] विधान

नही है। वह पिछले दस वर्षसे बिना किसी रुकावटके काम करता रहा है। वह वस्तुत व्यक्तिगत मताधिकारके आधार पर ही रचा गया है।

यग अिडिया १६–४–३१ पृ० ७८ ७९

९३

अपनी दौलतका त्याग करके तू अुसे भोग

[खेडा जिलेके अक गावमें हुअी अक सशस्त्र डकैतीके सिलसिलेमें गाधीजी द्वारा लिखित अक दुखद घटना शीर्षक लेखसे।]

धनवानोको अपना धर्म सोच लेना है। अगर अपनी जायदादकी रक्षाके लिअ अुन्होंने सिपाही वगैरा रखे तो मुमकिन है कि लूट-मारके हगाममें ये रक्षक ही अुनके भक्षक बन जायेंगे। अिसलिअ धनवानोको या तो हथियार चलाना सीख लेना चाहिये या अहिंसाकी दीक्षा ले लेनी चाहिये। अिस दीक्षाको लेने और देनेका सबसे अुत्तम मत्र है तेन त्यक्तेन भुजीथा — अपनी सपत्तिका त्याग करके तू अुसे भोग। अिसको जरा विस्तारसे समझाकर कहू तो यह कहूगा तू करोडो खुशीसे कमा। लेकिन समझ ले कि तेरा धन सिर्फ तेरा नही सारी दुनियाका है अिसलिअ जितनी तेरी सच्ची जरूरतें हो अुतनी पूरी करनेके बाद जो बचे अुसका अुपयोग तू समाजके लिअ कर। शान्तिकी साधारण अवस्थामें तो अिस नसीहत पर अमल नही हुआ। लेकिन सकटके अिस समयमें भी अगर धनिकोने अिसे नही अपनाया तो दुनियामें वे अपने धन और भोगके गुलाम बनकर ही रह सकेंगे और अन्तमें शरीर-बलवालोकी गुलामीमें बध जायेंगे।

मै अुस दिनको आता देख रहा हू जब धनकी सत्ताका अन्त होनेवाला है और गरीबोका सिक्का चलनेवाला है फिर चाहे वह शरीर-बलसे चले या आत्मबलसे। शरीर-बलसे प्राप्त की हुअी सत्ता मानव-देहकी तरह क्षणभगुर होगी जब कि आत्मबलसे प्राप्त की हुअी सत्ता आत्माकी तरह अजर-अमर रहेगी।

हरिजनसेवक १–२–४२ पृ० २

[गाधीजीके अुपरोक्त नोटके सिलसिलेमें श्री शकरराव देवने जो प्रश्न पूछा था अुसका जवाब देते हुअे गाधीजी द्वारा हरिजनसेवक के १ मार्च १९४२ के अकमें पृ० ६३ पर लिखित अगाढ ही नही शीर्षक लेख।]

श्री शंकरराव देव लिखते हैं :

'पिछले 'हरिजनसेवक' के अेक दुसरे घटना आपने अपने लेखमें आप धनवानोंसे कहते हैं कि वे करोड़ों खुशीसे कमायें, लेकिन यह समझ लें कि अुनका यह धन सिर्फ अुन्हींका नहीं, सारी दुनियाका है, अिसलिअे अपनी सच्ची जरूरतोंको पूरा करनेके बाद जितना धन बचे अुसका अुपयोग अुन्हें समाजके लिअे करना चाहिये। जब मैंने अिसे पढ़ा तो पहला सवाल मनमें यह अुठा कि अैसा क्यों होना चाहिये? पहले करोड़ों कमाना और फिर समाजके हितके लिअे अुन्हें खर्च करना? आजकी अिस समाज रचनामें करोड़ों कमानेके साधन अशुद्ध ही हो सकते हैं, और जो आदमी अशुद्ध साधनोंसे करोड़ों कमाता है अुससे 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' मन्त्रके अनुसार चलनेकी आशा नहीं रखी जा सकती, क्योंकि अशुद्ध साधनों द्वारा करोड़ों कमानेकी क्रियामें कमानेवालेका चरित्र दूषित या भ्रष्ट हुअे बिना रह ही नहीं सकता। अिसके सिवा आप तो हमेशासे शुद्ध साधनों पर जोर देते रहे हैं। मुझे डर है कि अिस मामलेमें कहीं लोग गलतीसे यह न समझ लें कि आप साधनोंकी अपेक्षा साध्य पर ज्यादा जोर दे रहे हैं।

अतअेव मेरा निवेदन है कि आप कमाअीके साधनोंकी शुद्धता पर भी अधिक नहीं तो अुतना जोर अवश्य दीजिये, जितना कमाये हुअे धनको लोकहितके कामोंमें खर्च करने पर देते हैं। मेरे विचारमें यदि साधनोंकी शुद्धिका दृढ़तासे पालन किया जाय, तो कोअी आदमी करोड़ों कभी कमा ही नहीं सकेगा और अुस दशामें समाजके हितके लिअे अुसे खर्च करनेकी कठिनाअी बहुत गौण रूप ले लेगी।'

मैं अिससे सहमत नहीं हूँ। मैं निश्चित रूपसे यह मानता हूँ कि आदमी बिलकुल शुद्ध साधनोंसे करोड़ों रुपये कमा सकता है। अिसमें यह मान लिया गया है कि अुसे कानूनन सम्पत्ति रखनेका अधिकार है। दलीलके तौर पर मैंने यह माना है कि निजी सम्पत्ति अपने आपमें अशुद्ध नहीं समझी गअी है। अगर मेरे पास किसी खेतका पट्टा है और मुझे अुसमें से अचानक कोअी अनमोल हीरा मिल जाता है, तो मैं अेकाअेक करोड़पति बन जाता हूँ और कोअी मुझ पर अशुद्ध साधनोंका अुपयोग करनेका दोष नहीं लगा सकता। ठीक यही बात अुस समय हुअी थी जब कोहिनूरसे बड़ा अ[illegible] कलीनन नामक हीरा मिला था। अैसे और कअी अुदाहरण आसानीसे गिनाये जा सकते हैं। निःसन्देह करोड़ों कमानेकी बात मैंने अैसे ही मामलोंके लिअे कही थी।

मैं अिस रायके साथ निःसंकोच अपनी सम्मति जाहिर करता हूं कि आम तौर पर धनवान — केवल धनवान ही क्या बल्कि ज्यादातर लोग — अिस बातका विशेष विचार नहीं करते कि वे पैसा किस तरहसे कमाते हैं। अहिंसक अुपायका प्रयोग करते हुअे हमें यह विश्वास तो होना ही चाहिये कि कोअी आदमी कितना ही पतित क्यों न हो, यदि असका अिलाज कुशलतासे और सहानुभूतिके साथ किया जाय तो असे सुधारा जा सकता है। हमें मनुष्योंमें रहनेवाले दैवी अंशको जगानेका प्रयत्न करना चाहिये। और आशा रखनी चाहिये कि असका अनुकूल परिणाम निकलेगा। यदि समाजका हरअेक सदस्य अपनी शक्तियोंका अपयोग वैयक्तिक स्वार्थ-साधनके लिअे नहीं बल्कि सबके कल्याणके लिअे करे, तो क्या अिससे समाजकी सुख-समृद्धिमें वृद्धि नहीं होगी? हम अैसी जड़ समानताका निर्माण नहीं करना चाहते जिसमें कोअी आदमी अपनी योग्यताओंका पूरा पूरा अुपयोग कर ही न सके। अैसा समाज अन्तमें नष्ट हुअे बिना नहीं रह सकता। अिसलिअे मेरी यह सलाह बिल्कुल ठीक है कि धनवान लोग चाहे करोड़ों रुपये कमायें (बेशक केवल औमानदारीसे) लेकिन अुनका अुद्देश्य वह सारा पैसा सबके कल्याणमें समर्पित कर देनेका होना चाहिये। 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' मंत्रमें असाधारण ज्ञान भरा पड़ा है। मौजूदा जीवन-पद्धतिकी जगह, जिसमें हरअेक आदमी पड़ोसीकी परवाह किये बिना केवल अपने ही लिअे जीता है, सबका कल्याण करनेवाली नयी जीवन-पद्धतिका विकास करना हो, तो अुसका सबसे निश्चित मार्ग यही है।

९४

'कलकी चिंता न करें'

['सार्वजनिक खर्च' शीर्षक लेखका बीचका भाग लिया गया है।]

जब हम अैसी निश्चिन्तता हासिल कर लें कि खानेको मिल जाये तो ठीक न मिले तो हरि अिच्छा तब हम अनेक झगडोंसे मुक्ति पा जायेंगे और स्वतंत्रता हमारे आँगनमें आकर नाचने लगेगी। कोअी यह न माने कि निश्चिन्त लोगोंको अन्तमें भूखका ही शिकार होना पडता है। कीडीको कन और हाथीको मन भर देनेवाला भगवान मनुष्यके लिअे भी अुसकी रोजकी खुराक जुटा ही देता है। सृष्टिके जीव कलकी चिंता न करके दूसरे दिनकी प्रतीक्षा भी करते हैं। पर मनुष्यने घमंडमें आकर यह मान लिया कि मैं ही सृष्टिका निर्माता और नाशका स्वामी हूँ। अुसका यह घमंड ओश्वर रोज अुतारता है मगर मनुष्य अुसे छोडना नहीं चाहता। सत्याग्रह यह घमंड दूर करनेके लिअे ही आयोजित वस्तु है।

यंग अिंडिया २१-५-३१, पृ० ११८

९५

अपरिग्रहकी ओर

क्या जरूरत है कि हम सब लोग जायदाद रखें? हम अुसे कुछ अर्से तक रोककर बादमें छोड क्यों न दें? धर्माधर्मका जिन्हें खयाल नहीं अैसे व्यापारी [illegible] मतलबोंके लिअे अैसा करते हैं तो फिर हम अेक बडे और नीतियुक्त मतलबको हासिल करनेके लिअे अैसा क्या करें? हिन्दुओंके लिअे अेक समय अैसा हो चुका है जब यह मामूली बात थी। प्रत्येक हिन्दूसे यह आशा रखी जाती थी कि अेक अुमर तक गृहस्थाश्रममें रहनेके बाद वह अैसा ही जीवन अख्तियार करे जिसमें जायदाद पास नहीं रखी जाती। यह पुरानी प्रथा [illegible] हम फिरसे ताजी क्यों न करें? आखिर अिसका अर्थ यही होता है कि हम अपने निर्वाहके लिअे अुनकी दया पर निर्भर रहते हैं जिन्हें हमने अपनी जायदाद सौंप दी है। यह विचार मेरे लिअे बडा आकर्षक मालूम होता है। मेरे विचारमें लाखों अुदाहरणोंमें अेक भी दृष्टान्त अैसा नहीं मिलता जिसमें विश्वासका दुरुपयोग हुआ हो।

अवश्य अिसमें से कितने ही नैतिक सवाल पैदा होते हैं। अब पिता-पुत्रका दृष्टांत लीजिये। यदि पुत्र पिताके जैसा ही असहयोगी है तो फिर पिता अपनी जायदादकी मालिकीके हकका बोझ अुस पर लादकर अुसे क्या हल्का करे? अैसे सवाल तो हमेशा ही पैदा होंगे। मनुष्यकी नैतिक कीमत कितनी है अिसकी जांच सदाचारके अैसे गूढ़ प्रश्न बारीकीसे तौलनेकी अुसकी शक्ति कितनी है अिस पर निर्भर है। वर्तमान संस्थाका अिसका दुरुपयोग करनेका मौका न देकर यह रूढ़ि किस तरह व्यवहारमें लाओी जा सकती है अिसका निर्णय तो अेक बड़े अर्सेके अनुभवके बाद ही हो सकता है। फिर भी अिस खयालसे कि अुसका दुरुपयोग होगा किसीको अिसका प्रयोग करनेके प्रयत्नसे रुकना न चाहिये। गीताके दिव्य रचयिता हिन्द गीता का सन्देश देनेसे न रुके यद्यपि वे शायद जानते थे कि सब प्रकारकी बुराअियां यहां तक कि खूनको भी शास्त्रसंगत ठहरानेके लिअे अुसको खूब तोड़ा-मरोड़ा जायगा।

हिन्दी नवजीवन ६-७-२४ पृ० ३८२

९६

पूंजीपतियोंका कर्तव्य

श्री घनश्यामदास बिड़लाने अेक दिन महाराष्ट्र व्यापारी सम्मेलन (शोलापुर) का अध्यक्षपद करते हुअे अेक भाषण दिया जिसमें अुन्होंने अपने विचार श्रोताओंके सामने बहुत निःसंकोच भावसे प्रगट किये।

पूंजीपतियोंके कर्तव्य पर बोलते हुअे अुन्होंने अेक अैसा आदर्श पेश किया जिसमें कोओी सुधार या संशोधन करना अेक श्रमिकके लिअे भी कठिन होगा। व्यापारी-वर्गके बीच अेकताकी वकालत करते हुअे अुन्होंने कहा

> लेकिन मुझे स्पष्ट करने दीजिये कि मैं व्यापारियोंके लिअे जिस अेकताकी सूचना कर रहा हूं अुस अेकताका अुद्देश्य सेवा होना चाहिये शोषण नहीं। आधुनिक पूंजीपतियोंकी अिधर कुछ समयसे काफी निन्दा की जाती रही है। लोगोंकी अैसी धारणा हो गयी है कि अुनका अेक पृथक वर्ग है। लेकिन प्राचीन कालमें परिस्थिति बिलकुल भिन्न थी। अगर हम प्राचीन कालके वैश्यके कार्योंका विश्लेषण करें तो हम पायेंगे कि अुन्हें व्यक्तिगत लाभके बजाय सामाजिक भलाओीके लिअे अुत्पादन और वितरणका कर्तव्य सौंपा गया था। अपनी सारी सम्पत्ति वह राष्ट्रके हितके लिअे अेक संरक्षकके रूपमें रखता था।

पूंजीपति यदि अपना वास्तविक कार्य पूरा करना चाहते हैं तो अुन्हें मालिकोंके रूपमें न रहकर समाजके सेवकोंके रूपमें रहना चाहिये। अगर हम अपना कर्तव्य समझें और अुसका पालन करें तो साम्यवाद या बोल्शेविज्म नहीं पनप सकता। मैं तो यहां तक कहूंगा कि अपने कर्तव्यकी अुपेक्षा करके हम खुद ही साम्यवाद और बोल्शेविज्मको बढ़नेके लिअे अुपजाअू जमीन प्रदान करते हैं। अगर हम अपने कर्तव्यको समझें और अुसका श्रद्धापूर्वक पालन करें तो मुझे पूरा भरोसा है कि हम समाजको बड़ी बुराअियोंसे बचा सकते हैं। मैं बता चुका हूं कि हमारा सच्चा कार्य अुत्पादन और वितरण करना है। आअिये हम समाजकी सेवाके लिअे अुत्पादन और वितरण करें। हम जीयें और यदि सबके हितके लिअे हमें अपना बलिदान भी करना पड़े तो अुसके लिअे तैयार रहें।

यंग अिंडिया १९-१२-२९ पृ० ४१३

९७

विशेष प्रतिनिधित्व

[लन्दनकी दूसरी गोलमेज परिषद्की फेडरल स्ट्रक्चर कमेटीमें दिये हुअे गांधीजीके अेक विनम्र निवेदन नामसे छपे दूसरे भाषणसे।]

अब मैं अुस प्यारी चीज — विशेष वर्गोंके विशेष मतदार मंडलोंके प्रतिनिधित्व पर आता हूं। बालिग मताधिकारमें मजदूरों और अुनके जैसे वर्गोंके खास प्रतिनिधित्वकी कोअी जरूरत नहीं है, जिसका कारण मैं आपको समझाअूंगा। कांग्रेसकी या मेरे गरीबोंकी यह अिच्छा बिलकुल नहीं है कि जमींदारोंसे अुनकी मिलकियत छीन ली जाय। वे तो केवल यह चाहते हैं कि जमींदार मजदूरोंके सरपरस्त बन जायें। मेरे खयालसे जमींदारोंको अिस बातका गौरव महसूस करना चाहिये कि अुनकी रैयत, ये लाखों ग्रामवासी, बाहरके आनेवाले लोगों या अपनेमें से किसीके बजाय जमींदारोंको ही अपने प्रतिनिधि चुनना पसन्द करती है।

अिसलिअे जमींदार अपनी रैयतका साथ दें अिससे भला और सुन्दर क्या हो सकता है? लेकिन अगर जमींदारोंने यह आग्रह रखा कि दो सभाअें हों तो दोनोंमें से अेकमें अथवा अेक सभा हो तो अुसमें अुनके खास प्रतिनिधि लिये जायें, तो वे सचमुच झगड़ेका बीज बोयेंगे। और मैं आशा

करता हूँ कि जमींदारों या असे किसी वर्गकी तरफसे असी माग नहीं की जायगी।

यग अिंडिया ८–१०–३१ पृ० २९६ २९८

९८

वैध परिग्रह

अपरिग्रह अस्तेयके साथ जुडा हुआ है। कोअी चीज मूलमें चुराअी हुअी न हो तो भी असे चोरीका माल ही कहा जायगा यदि हम असे बिना जरूरतके अपने पास रखते हैं। परिग्रहका अर्थ है भविष्यके लिअ व्यवस्था करना। कोअी सत्यशोधक प्रमपथका पथिक कलके लिअ कोअी वस्तु नहीं रख सकता। अीश्वर कलके लिअ कुछ भी जमा नहीं रखता। वह वर्तमानके लिअ जितना आवश्यक हो अतना ही पैदा करता है असुसे अधिक कभी पैदा नहीं करता। असिलिअ यदि हमें असकी शक्ति और व्यवस्थामें विश्वास है, तो हमें अिस बारेमें निश्चिन्त रहना चाहिये कि वह हमें अपनी नित्यकी रोटी दे देगा अर्थात् वह हमारी हर जरूरत पूरी कर देगा। सन्तों और भक्तोंने जिनका जीवन अिस प्रकार श्रद्धामय रहा है अपने अनुभवसे अिस श्रद्धाको सही पाया है। अीश्वरीय कानून मनुष्यको असकी दैनिक आजीविका देता है, असससे अधिक नहीं देता। अिस कानूनके हमारे अज्ञान या अवहेलनाके कारण असमानतायें पैदा हो गअी हैं और अनुसे तरह तरहकी मुसीबतें हमें अुठानी पडती हैं। अमीरोंके पास अनावश्यक चीजोंके भंडार भरे रहते हैं जिनकी अुन्हें जरूरत नहीं होती और अिसलिअ जिनकी अवहेलना और बरबादी होती है। अुधर करोडों लोग जीविकाके अभावमें भूखों मरते हैं। यदि हरअेक अतनी ही चीजें अपने पास रखे जितनीकी असे जरूरत हो तो किसीको भी तंगी न रहे और सब सतोषसे रहें। आज तो अमीरोंको गरीबोंसे कम असन्तोष नहीं है। गरीब आदमी लखपति बनना चाहता है और लखपति करोडपति बनना चाहता है। सन्तोषकी वृत्तिको सर्वत्र फैलानेकी गरजसे धनवानोंको अपरिग्रहकी दिशामें पहल करनी चाहिये। यदि वे अपनी सपत्तिको ही साधारण मर्यादाके भीतर रखें तो भी भूखोंको आसानीसे खाना दिया जा सकता है और वे भी अमीरोंके साथ साथ सन्तोषका पाठ सीख लेंगे। अपरिग्रहके आदर्शकी सम्पूर्ण सिद्धिकी शर्त यह है कि पक्षियोंकी तरह मनुष्यके पास कोअी आसरा न हो कोअी वस्त्र न हो और कलके लिअ भोजन सामग्री न हो। बेशक असे अपनी रोजकी रोटीकी जरूरत होगी मगर असे

जुगाना ओीश्वरका काम होगा अुसका नहीं। अिस आदर्श तक विरले ही लोग पहुंच सकते हैं। अूपरसे असंभव दिखाओी देनेवाले अिस आदर्शसे हमें साधारण जिज्ञासुओंको दूर नहीं भागना चाहिये। हमें अिस आदर्शको सदा दृष्टिमें रखना चाहिये और अुसके प्रकाशमें अपने परिग्रहकी जांच करते रहना चाहिये तथा अुसे कम करनेका प्रयत्न करना चाहिये। सच्ची सभ्यता आवश्यकताओंकी वृद्धिमें नहीं है, परन्तु जान-बूझकर और स्वेच्छापूर्वक अुनके घटानेमें है। जिससे सच्चे सुख और सन्तोषकी वृद्धि तथा सेवाशक्तिकी वृद्धि होती है। अिस कसौटी पर कसकर देखनेसे हमें मालूम होता है कि हम आश्रमवासियोंके पास अभी बहुतसी चीजें हैं जिनकी जरूरत हम साबित नहीं कर सकते और जिस प्रकार हम अपने पड़ोसियोंको चोरी करनेका प्रलोभन देते हैं।

शुद्ध सत्यकी दृष्टिसे शरीर भी अेक परिग्रह ही है। यह सच कहा है कि भोगकी अिच्छाके कारण आत्माके लिअे शरीरकी सृष्टि होती है। जब यह अिच्छा मिट जाती है तब फिर शरीरकी आवश्यकता नहीं रह जाती और मनुष्य जन्म मरणके कुचक्रसे मुक्त हो जाता है। आत्मा सर्वव्यापक है अैसे पिंजड़े जैसे शरीरमें बन्द रहने या अुस पिंजड़ेके खातिर बुराओी करने या किसीके प्राण लेनेकी भी चिन्ता क्या करनी चाहिये? अिस प्रकार हम संपूर्ण त्यागके आदर्श तक पहुंच जाते हैं और जब तक शरीर रहता है तब तक सेवाके काममें अुसका अुपयोग करना सीखते हैं यहां तक कि सेवा न कि रोटी हमारे जीवनका आधार बन जाती है। हम केवल सेवाके लिअे खाते पीते सोते और जागते हैं। अैसी मनोवृत्तिसे समय पाकर हमें सच्चा सुख और आनन्दमय दृष्टि प्राप्त होती है। हम सबको अिस दृष्टि कोणसे आत्म निरीक्षण करना चाहिये।

हमें याद रखना चाहिये कि अपरिग्रहका सिद्धान्त वस्तुओंकी भांति विचारों पर भी लागू होता है। जो मनुष्य अपने मस्तिष्कको व्यर्थ ज्ञानसे भर लेता है वह अुस अमूल्य सिद्धान्तका भंग करता है। जो विचार हमें ओीश्वरसे विमुख करते हैं या अुसकी ओर नहीं ले जाते वे हमारे मार्गमें बाधक होते हैं। अिस सम्बन्धमें हम गीताके १३ वें अध्यायमें दी हुआी ज्ञानकी व्याख्याका विचार कर सकते हैं। वहां हमें यह बताया गया है कि अमानित्व (नम्रता) आदि ज्ञान है अन्य सब कुछ अज्ञान है। यदि यह सच है—और अिसके सच होनेमें कोओी शंका नहीं है—तो आज हम ज्ञान समझकर जिस ढेरका ज्ञान लेते हैं वह सब निरा अज्ञान है और अिस लिअे अुससे कोओी लाभ होनेके बजाय अुलटी हानि ही होती है। अिससे दिमाग भटकता है और अन्तमें खाली हो जाता है। असन्तोष फैलता है

और अनर्थ बढ़ते हैं। कहना न होगा कि यह जड़ताकी वकालत नहीं है। हमारे जीवनका अेक अेक क्षण मानसिक या शारीरिक प्रवृत्तिसे भरा होना चाहिये। परन्तु वह प्रवृत्ति सात्त्विक सयोमुख होनी चाहिये। जिसने अपना जीवन सेवाके लिअे अर्पण कर दिया है वह अेक क्षण भी बेकार नहीं रह सकता। परन्तु हमें सत्प्रवृत्ति और दुष्प्रवृत्तिमें भेद करना सीखना होगा। सेवापरायण मनुष्यको यह विवेक सहज ही प्राप्त होता है।

फ्राम यरवडा मंदिर प्रक० ६

९९

बंध परिग्रहका बचाव

प्र० — जब तक धन-दौलत है हर हालतमें असकी हिफाजत भी होनी चाहिये। फिर क्या वजह है कि आप अिस चीजको समझ नहीं पाते? प्रत्येक स्थितिमें हिंसासे बचे रहनेका आपका आग्रह बिल्कुल अव्यावहारिक और असंगत है। मेरे विचारमें अहिंसा कुछ चुने हुअे लोगोंके ही कामकी चीज हो सकती है।

अु० — अिस सवालका जवाब अिन पृष्ठोंमें और यंग अिंडिया में भी कअी बार किसी न किसी रूपमें दिया जा चुका है। लेकिन यह अेक सनातन सवाल है। अिसलिअे मेरा काम है कि जितनी बार यह पूछा जाय मैं अिसका जवाब दूं। और जब प्रश्नकर्ताके समान सच्चे जिज्ञासु पूछते हैं तब तो जवाब देना ही चाहिये। मेरा दावा यह है कि आज भी जब हमारे समाजकी रचनाका आधार सोच-समझकर अपनाअी हुअी अहिंसा नहीं है सारे संसारमें मनुष्य-जाति अेक-दूसरेकी भलमनसाहत पर ही जी रही है और अपनी दौलतको बचाये हुअे है। अगर अैसा न होता तो दुनियामें बहुत ही थोड़े और बहुत ही क्रूर आदमी बचे होते। लेकिन हकीकत यह नहीं है। परिवारमें लोग परस्पर स्नेहके बंधनमें बंधे रहते हैं। और परिवारोंकी तरह ही सभ्य माने जानेवाले मानव-समाजमें राष्ट्रोंके अलग अलग दल भी परस्परके अिन बंधनोंसे बंधे हुअे हैं। फर्क अितना ही है कि वे जीवनमें अहिंसाके नियमको सर्वोपरि नहीं मानते। अिसका मतलब यह हुआ कि अभी अुन्होंने अिसकी असीम शक्तियोंकी थाह नहीं लगाअी है। मैं यह कहूंगा कि अब तक सिर्फ अपनी जड़ताके कारण ही हम यह मानते रहे हैं कि अहिंसाका संपूर्ण पालन अपरिग्रह आदि संयम-सूचक व्रतोंको धारण करनेवाले कुछ अिनगिने लोग ही कर सकते हैं। बात यह है कि अगर हमें अहिंसाके

क्षेत्रमें नित-नयी शोध करता हो और मानव जाति पर शासन करनेवाले इस सनातन और महान नियमकी नयी नयी शक्तियोंका समय समय पर संसारको परिचय कराता हो, तो उसके लिए इस नियमोंका पालन आवश्यक है। अगर संसारका यही सर्वश्रेष्ठ नियम है तो यह सबके लिए कल्याणकारक होना चाहिये। जो अनेक असफलतायें हमारे देखनेमें आती हैं वे इस नियमकी नहीं, उसका पालन करनेवालोंकी हैं। क्योंकि उनमें से कइयोंको यह पता तक नहीं रहता कि वे जाने-अनजाने इस नियमके अधीन बरत रहे हैं। जब माँ अपने बच्चेके लिए खुद मरनेको तैयार हो जाती है, तो वह अनजाने ही इस नियमका पालन करती है। मैं पिछले पचास बरससे लोगोंको यह समझाता रहा हूँ कि वे इस नियमको समझ-बूझकर अपनायें और असफल होने पर भी उसके पालनमें दत्तचित्त बने रहें। पचास वर्षके इस प्रयोगका परिणाम आश्चर्यजनक हुआ है और अहिंसामें मेरी श्रद्धा उत्तरोत्तर बढ़ती गयी है। मैं दावेके साथ कहता हूँ कि लगातार प्रयत्न करते रहनेसे एक समय वह आयेगा जब लोग सबके ईमानदारीसे कमाये हुए धनका स्वेच्छासे आदर करेंगे और उसकी रक्षामें सहायक होंगे। उसमें शर्त यह कि वह धन पापका धन न होगा और उसमें असमानताओंका वह उद्धत प्रदर्शन भी न होगा जिससे आज हम घिरे हुए हैं। अहिंसक व्यापारीको अन्याय और अनीतिसे कमाये जानेवाले धनसे आसक्ति न होना चाहिये, क्योंकि उसके पास हिंसाका सफल प्रतिकार करनेके लिए सत्याग्रह और असहयोगका अचूक शस्त्र मौजूद है। जहाँ कहीं इस शस्त्रका सचाईके साथ यथोचित उपयोग किया गया है वहाँ हिंसक शस्त्रोंकी कोई आवश्यकता ही नहीं रह गयी है। अहिंसाके सम्पूर्ण शास्त्रका जानकार होनेका दावा तो मैंने कभी नहीं किया। किसीके लिए ऐसा दावा कभी किया भी नहीं जा सकता। उसी तरह मैं जानता हूँ कि किसी भी भौतिक शास्त्रके लिए, ऐसा तक कि गणित जैसे निश्चित शास्त्रके लिए भी इस तरहका दावा नहीं किया जा सकता। मैं तो एक सत्यशोधक मात्र हूँ और प्रयत्नशीलकी तरह सत्यका। इस शोधमें मेरा अनुसरण करनेवाले मेरे कुछ साथी भी हैं। अपने इन साथियोंको मैं आमंत्रण देता हूँ कि सत्यकी इस अत्यन्त कठिन किन्तु अविनाशी रसपूर्ण शोधमें वे मेरा साथ दें।

हरिजनसेवक १-२-’४२ पृ० ६२-६४

१००

अन्यायपूर्वक कमाये हुअे धनका त्याग

[श्री महादेव देसाओके 'साप्ताहिक पत्र' से।]

ग्रामसेवक विद्यालयके विद्यार्थियोंकी ओरसे अक प्रश्न यह पूछा गया था ... लोगोंके अन्यायपूर्वक कमाये हुअे धनको कैसे छीना जाय ? समाजवादी यही करना चाहते हैं।

गांधीजीने जवाब दिया : अिस बातका निर्णय कौन करेगा कि यह न्यायपूर्वक कमाया हुआ है और यह अन्यायपूर्वक ? जिसका निर्णय तो केवल अन्तर्यामी औश्वर ही कर सकता है या फिर धनिकों और निर्धनोंके द्वारा नियत किये गये योग्य निर्णायक जिसका निर्णय कर सकते हैं। पर अगर तुम यह कहते हो कि सभी तरहकी मिल्कियत और धन-दौलतका रखना चोरी है तो फिर सभीको अपनी अपनी सम्पत्तिका त्याग कर देना चाहिये। क्या हमने यह त्याग किया है ? यह आशा रखकर कि दूसरे हमारा अनुसरण करेंगे हम खुद सम्पत्ति-परित्यागका आरम्भ कर दें। अन लोगोंके लिअे जिनका यह विश्वास है कि अुनकी सच्ची सम्पत्ति अन्याय-अर्जित है अिसके सिवा दूसरा कोअी मार्ग ही नहीं।

हरिजन, १-८-'३६, पृ० १९३, १९५

१०१

अगर धनवान संरक्षक न बनें तो

प्र० — आप कहते हैं कि राजा, जमींदार या पूंजीपति संरक्षक (ट्रस्टी) बनकर रहें। आपके खयालमें क्या असे राजा, जमींदार या पूंजीपति अभी मौजूद हैं ? या वर्तमान राजा वगैरामें से किन्हींके अिस प्रकार बदल जानेकी अुम्मीद है ?

अु० — मेरे खयालसे असे कुछ राजा, जमींदार और पूंजीपति आज भी हैं। जिसका मतलब यह नहीं कि वे पूरे पूरे संरक्षक बन चुके हैं। लेकिन अुनकी गति अुस ओर है। यह पूछा जा सकता है कि क्या वर्तमान राजाओं और दूसरे लोगोंसे गरीबोंके संरक्षक बननेकी आशा रखी जा सकती है। यदि वे अपने आप ऐसे नहीं बन जाते हैं, तो परिस्थितियां जोर जबरदस्ती अुनमें यह सुधार करा देंगी। हां, वे संपूर्ण विनाशको आमंत्रित करें तो दूसरी बात है। जब पंचायत राज स्थापित हो जायगा, तो लोकमत वह काम

करेगा जो हिंसा कभी नहीं कर सकता। जमींदारों पूंजीपतियों और राजाओंकी वर्तमान सत्ता तभी तक कायम रह सकती है जब तक साधारण लोग अपनी सुप्त ताकतको पूरी तरह पहचान नहीं लेते। यदि लोग जमींदारी या पूंजीवादकी बुराईके साथ असहयोग कर दें तो वह निष्प्राण होकर मर जायगा। पंचायत राजमें पंचायतकी ही बात मानी जायगी और पंचायत अपने बनाये हुए कानूनके जरिये ही काम कर सकती है।

हरिजनसेवक १–६–४७ पृ १४८

१०२
विपत्तिसे बचें

हालके अुत्तर प्रदेशके दौरेमें मुझे जितना इस जिस बातका दुःख हुआ अुतना और किसी बातसे नहीं हुआ कि यूपीके बड़े जमींदारों और तालुकेदारोंने अपने जीवनको काफी सादा बना लिया है और स्वाभिमानपूर्ण अुत्साहसे प्रदर्शित होकर वे किसानोंका भार कम कर रहे हैं। मैंने बहुतसे जमींदारोंके कथित अत्याचारोंके भयंकर वर्णन सुने थे और यह भी सुना था कि वे तरह तरहके मौकों पर किस तरह नाजायज और नाजायज पर वसूल करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप किसानोंकी स्थिति बिल्कुल गुलामों-सी हो गयी है। अिसलिअे जिस तरहके बड़ा नौजवान तालुकेदार जब मेरे संपर्कमें आये तो मुझे सानन्द आश्चर्य हुआ।

परन्तु अिस सुधारके और आगे बढ़ने और संपूर्ण होनेकी जरूरत है। अुनमेंसे अलग अलग और किसानोंके बीच अभी भी जरूर बड़ा फासला है। जो थोड़ासा काम किया गया है अुसके लिअे अुनके मनमें उपकार बुद्धि दृष्टि और आत्म-संतोषकी भावना भी है जो नहीं होना चाहिये। असल बात यह है कि कुछ भी किया जाय वह किसानोंका अुतना ही ऋण लौटाना होगा मिथ्या और कुछ नहीं है। यह वर्णाश्रम धर्मका भयंकर विकृतिका परिणाम है कि तथाकथित क्षत्रिय अपनेको ऊंचा मानता है और गरीब किसान परम्परागत निष्क्रियताके बश होकर यह मानकर स्वीकार कर लेता है कि अुसका स्थान यहीं लिखा है। यदि आजकल समाजका शांतिपूर्ण मार्ग पर सच्चा प्रगति करनी है तो धनिक वर्गको निश्चित रूपसे यह स्वीकार कर लेना होगा कि किसानमें भी वही आत्मा है जो अुनमें है और अपना दौलतके कारण वे गरीबसे ऊंचे नहीं हैं। अुन्हें जापानके अमीरोंकी तरह अभी काम करके भी अुनके आदर्श अनुसार चलना चाहिये। यदि लोग ऐसा करते हैं और यह समझकर अच्छे रहना चाहिये कि अुनकी भुगतान और अपने

सरक्षित किसानोंकी भलाओीके लिये करता है। अुस हालतमें व अपने परिश्रमके वमीशनके रूपमें वाजिब रकमसे ज्यादा नहीं लेंगे। अिस समय धनिक वर्ग रावथा अनावश्यक ठाटबाट और फिजूलखर्चीमें तथा जिन किसानोंके बीचमें वे रहते हैं अनके गदगी भरे वातावरण और कुचल डालने वाले दारिद्र्यमें कोओी अनुपात नहीं है। अिसलिये अक आदर्श जमींदार किसानोंका बहुत कुछ बोझा जो वह अभी अन पर रख रहा है अवश्य घटा देगा। वह किसानोंके गहरे सपर्कमें आयेगा और अनकी आवश्यकताओंको जानकर अन निराशाके स्थान पर जो अनके प्राणोंको सुखाये डाल रही है अनमें आशाका सचार करेगा। वह किसानोंके सफाओ और तन्दुरुस्तीके नियमोंके अज्ञानको दर्शककी तरह देखता नहीं रहेगा बल्कि अिस अज्ञानको दूर करेगा। किसानोंके जीवनकी आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेके लिये वह स्वय अपनेको दरिद्र बना देगा। वह अपने किसानोंकी आर्थिक स्थितिका अध्ययन करेगा और अस स्कूल खोलेगा जिनमें किसानोंके बच्चोंके साथ साथ वह अपने बच्चोंको भी पढ़ायेगा। वह गावके कुअें और तालाबको साफ करायेगा। वह किसानोंको अपनी सड़कें और अपने पाखाने खुद आवश्यक परिश्रम करके साफ करना सिखायेगा। वह किसानोंके बरोकटोक अिस्तेमालके लिये अपने सुन्दर बाग निसकोच भावसे खोल देगा। जो गैरजरूरी अिमारतें वह अपनी मौजके लिये रखता है अुनका अपयोग अस्पताल स्कूल या असे ही दूसरे कामोंके लिये करेगा। यदि पूजीपति वर्ग कालका सकेत समझकर सम्पत्तिके बारेमें अपने अिस विचारको बदल डाले कि अस पर अुसका ओीश्वर प्रदत्त अधिकार है तो जो सात लाख घूरे आज गाव कहलाते हैं अुन्हें आननफाननमें शान्ति स्वास्थ्य और सुखके धाम बनाया जा सकता है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि पूजीपति जापानके अमरावोंका अनुसरण करे तो वह सचमुच कुछ खोयेगा नहीं और सब कुछ पायेगा। केवल दो मार्ग हैं जिनमें से पूजीपतियोंको अपना चुनाव कर लेना है। अक तो यह कि पूजीपति अपना अतिरिक्त सग्रह स्वेच्छासे छोड दें और अुसके परिणामस्वरूप सबको वास्तविक सुख प्राप्त हो जाय। दूसरा यह कि अगर पूजीपति समय रहते न चेतें तो करोडो जाग्रत किन्तु अज्ञान और भूखे लोग देशमें असी गडबड़ मचा दें जिसे अक बलशाली हुकूमतकी फौजी ताकत भी नहीं मिटा सकती। मैंने यह आशा रखी है कि भारतवर्ष अिस विपत्तिसे बचनेमें सफल रहेगा। अुत्तर प्रदेशके कुछ नौजवान ताल्लुकेदारोंसे मेरा जो घनिष्ठ सपर्क हुआ है अससे मेरी यह आशा बलवती बनी है।

यग अिन्डिया ५-१२-२९ पृ० ३९६

सूची

अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघ ७४ —स्वेच्छापूर्ण गरीबी-प्रथमका अक प्रयोग है १०२

अखिल भारत चरखा-संघ १३ ७४ १२२

अटुल्मिन ट्रस्ट ३२, ४१, ९६ ९८

अपरिग्रह १७०–७१ १७२–७५ १८७–८८

अमरिका ३३ ४६

असहयोग आन्दोलन —जनतामें आत्म गौरव और शक्तिका भान जाग्रत करनेका प्रयत्न है ३५

अस्तेय १७० १७१–७२

अस्पताल —दुर्व्यसन पीड़ा नैतिक पतन और सच्ची गुलामीको कायम रखते हैं ४

अस्पृश्यता ११–१२

अहमदाबादका मजदूर-संघ ४२ १०६

अहिंसा १५४

आर्थिक समानता १४७ १४८ १४० १५० १५१–१४

इंग्लैण्ड १

इर्विन ३०–३१

औपनिवेशिक ७०

उमेशचन्द्र बनर्जी ११

अली हसन डॉ० ११

अड्रूज दीनबन्धु १२२

अन्न आत्मनिर्भर ह्यूम —कांग्रेसके जनक ११

अम अल राय ८०

अम० डी० (महादेव देसाई) १०३

अल पी० जगत १४२

कनु गांधी १८७

कजन वाजिद मर ३१

कलकत्ता—आधुनिक सभ्यतारूपी महामारीका अड्डा है ३

कांग्रेस १८३ —का उद्देश्य १०–१३ —का अेकमात्र लक्ष्य है भारतके सभी वर्गोंके हितोंकी रक्षा ३६ —का कराचीके अधिवेशनवाला प्रस्ताव १०–१४ —ने १९२० में अस्पृश्यता निवारणको राजनीतिक कार्यक्रमका अंग बनाया ११–१२ —मूलतः किसानोंका संगठन है १२ —राजाओंके घरेलू और आन्तरिक मामलोंमें हस्तक्षेप किये बिना अनकी सेवा करता है १२ —सब भारतीय हितों और सब वर्गोंकी प्रतिनिधि होनेका दावा करती है ११

कार्ल मार्क्स ८३

कालीचरण बनर्जी ११

कावूर ३०

किशोरलाल मशरूवाला ११७

के० टी० पाल ११

कर्मी मि० १२६

कलीवलैण्ड २४

गांधीजी—अहिंसक प्रतिरोधके बारेमें ६२–६३ —अहिंसक सेनाके बारेमें ६०–६१ —का आर्थिक समानताका अर्थ १४७–४८ —का रामराज्य १८–१० —का हृदयकी शान्तिमय परिवर्तनों पड़ने वाला असर सब कमजोर शासन किया गया मारण १०–१८ —का यत्न अहिंसा सच्चा स्वराज्य अमा

सिपाहनकी प्रचार-समितिके पर्चेका जवाब ७-८ —की कल्पनाके स्वराज्यमें राजा और रकका स्थान ८८-४ —की गांधी राज्य की व्याख्या ७-८ —की गांवोंकी अप रचनामें जमींदार और साहूकारका स्थान ७६-७७ —की दृष्टिमें अहिंसा व सत्य अब ही सिक्केके दो पहलू ४३ —की दृष्टिमें धन नहीं श्रम श्रेष्ठ है ४२ —की दृष्टिमें सत्ता साध्य नहीं साधन है ८७ —की दृष्टिमें सत्य और अहिंसा समाजवादके मूल आधार है ४४-४५ —की दृष्टिमें समाजवाद ४२-४३ —की पूजिपतियोंकी कल्पना ६३-६५ —की रायमें अगर सब लोग रोटीके लिए श्रम करें तो दुनिया स्वर्ग बन जाय १०५ —की रायमें अहिंसक मार्गसे बगवड़े टाला जा सकता है ७५ —की रायमें अहिंसक विरोधकी शक्ति रचनात्मक कार्यक्रम पर अमल करनेसे ही पैदा हो सकती है १ ७ —की रायमें अहिंसाके कायम पराजय जैसा शब्द नहीं ७४ —की रायमें कार्यक्रम जब सत्य और अहिंसाको न छोडें ६८ ७० —की रायमें कांग्रेसी सत्ता और अहिंसा ६६-६८ —की रायमें काम ही गरीबोंका अद्भुत जरिया है १३६ —की रायमें क्रांतिकारी तरीका भारतमें सफल नहीं हो सकता ३५ —की रायमें गांवोंका या अमन ही है १००-०४ —की रायमें बढ़िपूर्वक किया हुआ शरीर श्रम समाज सेवाका उत्तम प्रकार है ११५-१९ —की रायमें भारतके पंजीपति जापान व अमरीकाका अनुसरण कर तो पुरा जायेंगे नहीं १ ६ —की रायमें भौतिक सुविधाओंकी वृद्धि नैतिक विकासमें मदद नहीं करती ८ —की रायमें युद्धके द्वारा भारतका स्वराज्य असभव ३५ —की रायमें वर्ग विग्रह अनिवार्य नहीं है ७६-७८ —की रायमें शरीर-श्रमका अर्थ ९५ —की रायमें शारीरिक श्रम हमारा जन्मप्राप्त कर्तव्य है १०३ —की रायमें सत्य व अहिंसाको कांग्रेस के विधानसे निकाल देना चाहिये ६९ —की रायमें समाजवादी क्रांति रामराज्यकी ओर ले जायगी ७८ —की रायमें समाजवादी क्रांतिसे हिंदू मुसलमानका झगडा शांत होगा ७८ —की रायमें सर्वोदय की निशानी ९८-९९ —की रायमें हम सबको खुदके भंगी बन जाना चाहिये ९७ —की रायमें हिंसा या अत्याचारोंसे स्वराज्य नहीं मिलेगा ३२-३४ —की हिन्दुस्तानकी आजादीकी व्याख्या २१-२३ —के गरीबोंकी आजादी १८-१९ —के स्वराज्य पर कुछ विचार ३५-३८ —को अगर अयत्रा काजी भी स्वेच्छाचारी मंजूर नहीं ७९ —द्वारा ब्रिटनके साथ समान भागीदारीके विषयमें १४-१५ —पर रस्किनकी

पुन्नार जर दिस गम्र का प्रभाव ९/ -पश्चियाक वतनर धार्मे १५२-१८ -सरकारना के सिद्धान्तका क्या तरश्रीन्त है? १६२-६५ -सत्ताका स्नानरण आवश्यक मानते थे पर जनतार गापणका अत चाग्ग २-६ -सि स्वराय में आधुनिक सम्यता का जोरदार खण्डन करते है ३-६
गाधा जिवित समझौता ८१
गाना-सत्याग्रह १७२
गीता १८८ -का गानकी व्याख्या १९१
गरावास्नी २ -३०
गाम्भज परिषद १८०
ग्रामस्वराज्य २५-२७
धनश्यामदास बिड़ला १८८ -की व्यापारी वर्ग के बीच जनताकी वकालत १८८-८९
चरखा ८
चर्चिल १० -र भाषणका मागरा ७०-७१
जमनालालजी (बजाज) ६० ७७ १६८ १८१
जमान सान्त १ ८
जमाखर १८० १०८ १० - ६
जयप्रकाशनारायण ८६ -का गांधीजी का किया गया प्रभाव ४८-५०
जवाहरलाल नेहरू ७१ ७७
जो विद्दिमन १७७
मानन्द १११
टाल्स ग्रूर ८५
टॉल्स्टॉय ८३ ५ ९९ १०७ १०८ ११९ १२०
टॉल्स्टॉय फाम ८१
टस्टीशिप ११२-१३
तिलक डा० ११०
तुर्कागम १३१
थोरो १७७
दादाभूच ६०
नानाभाई नौरोजी ११-१२ -न काश्मीर और मथुराका प्रश्न हल किया १२ -भारतके वृद्ध पितामह ११
निम न्यू रिव्यू १६२
नजी तालाम १२१
नन्ति पगार १२०
निमलकुमार बोस १५ १६२
पजापत गाय २४ ११४-०५
परिग्रह १९०-९२
पीअर सरमा १७७-८०
पूंजीपति १०८-०९
अच० अस० पोलाक ९८
प्यारेलाल ४
फिरोजशाह मेहता ११
फास
फ्रान्सिस अगम ८
बल्लभान नवजा ११
बम्बई-आधुनिक सभ्यताकी मगमारा अड्डा है ५
बाबूगव राव १४२
बाजिदा
बारडाग १०९
बालगांधर गर -६०
बामान मल्लर ७६
बिहार धम न्स जिल्टपा १७०
बुद्ध १११
ब्रा ९५ ९९ १०६ १०७ १०८ १२०

योग्यविम ७९–८० –का अथ ८०–८६
ब्रड लेबर ११६–१८ देखिये रोटीके लिअ श्रम
भगवदगाता ९६
भणसाली १७९
भारत १६ –का अतीत अतिशय सु वर है १६ –मस्लिम और हिंदू मस्ह तिका प्रतिनिधित्व करता है १६
मदनलाल धींगरा ३१–३२
मधुसूदन दास १२९
मुस्लिम लीग ६४
मुहम्मदअली मौलाना ११
मेजिनी २९–३
मोतीलालजी नहरू ६
मार्क्स ३२
रस्किन ३२ ३४ ४१ ९६ ९८ ११९
रानडे ११
रामराज्य १८ ३८
रामायण ६१
रूस ४६
रोटीके लिअ श्रम १ ७ १०८ ११६–१८ देखिये ब्रड लेबर
लालकुर्तीवाले ४१
लुअी फिशर ४५–४७
लेनिन ४७ ८ ८४
वगयुद्ध ७५–७६ ८८–८९
वल्लभभाई पटेल १ ६
वाल्डन १७७
विभीषण ३९ ६१
शकरराव देव ६८ १८५ –का पत्र गाधीजीका ६६–६७
शरीर-श्रम ९५ ९६–९७ १ ६– ८ १२ १३५ १३८ १४ –४१ १४२–४४ –का आश्रम जीवन में स्थान १ ८–११
श्रम १३० –यज्ञ १ ०–०२
सरक्षक (ट्रस्टी) ८९ –का अहिंसक समाजमें स्थान १६८
सरक्षकता (ट्रस्टीशिप) १६१–६२ १६६ १६७–६८ १६९ १८१ –का सिद्धात १५९ –क्या है? १६० –धनवानोंकी १८१–८२
सत्याग्रह –के जरिये राजनीतिक आर्थिक और नतिक रागोंका मिटाया जा सकता है ४५ –लोकशिक्षा और लोक जागृतिका सबसे बडा साधन ४
समाजवाद ७१
सरोजिनी नायडू ११ ८७
सर्वोदय ४६
सट साअिमन ८३
सेवाग्राम ६२
स्मटस जनरल ३३
स्टालिन ४७
स्वराज्य ७–८ २८ ३३ ३९ –की योजनामें धनवानों और शिक्षितो का अपने स्वार्थोंको विलीन करना होगा ३६ –की व्याव हारिक परिभाषा ९ –जनताको सत्ताका नियमन और नियत्रण करनेकी शक्तिका भान करानेसे होगा ३७ –नीतिके रास्तेसे पाना है ३४ –में रेल अस्पताल यत्र और सेना जनताके भलेके लिअ काम करेंगे ७–८
हरिजन १३७
हिंद स्वराज्य ३ ८

मेरे सपनोंका भारत

लेखक गांधीजी

जिस संग्रहमें भारतके सामाजिक आर्थिक राजनीतिक धार्मिक आदि सारे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर गांधीजीके विचार पेश किये गये हैं। जिनसे पता चलता है कि राष्ट्रपिता स्वतंत्र भारतसे क्या क्या आशायें रखते थे और उसका कैसा निर्माण करना चाहते थे। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद अपनी प्रस्तावनामें लिखते हैं "मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक गांधीजीकी शिक्षाके दुनियाको अनूठापन प्रस्तुत करनेवाले साहित्यमें एक कीमती वृद्धि करेगी।"

कीमत २.५० डाकखर्च १.००

शरीर-श्रम

लेखक गांधीजी

हमारे समाजमें शरीरकी मेहनतको और मेहनत करके रोटी कमानेवालोंको हलकी नजरसे देखा जाता है। गांधीजीने श्रमकी प्रतिष्ठाको बढ़ानेका प्रयत्न किया। यहां अिस विषयमें गांधीजीके जो विचार पेश किये गये हैं, अुनसे शरीर-श्रमकी व्याख्या और अुसके महत्त्वका, युगकी आवश्यकताका और समाजको अुससे होनेवाले लाभोंका पता चलता है।

कीमत ०.२५ डाकखर्च ०.१३

सर्वोदय

लेखक गांधीजी

गांधीजीके मतानुसार सर्वोदयका अर्थ आदर्श समाज-व्यवस्था है। अिस पुस्तकमें सर्वोदयकी विस्तृत चर्चा की गयी है और बताया गया है कि यह कैसे सिद्ध किया जा सकता है। अिस संग्रहका अुद्देश्य समाजके सामने गांधीजीका शांति और स्वतंत्रताका अुदात्त स्वप्न पेश करना है।

कीमत २.०० डाकखर्च ०.८५

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद-१४